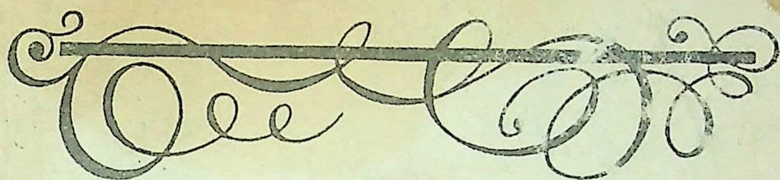
कुलीन घराना

ТУРГЕНЕВ

…РЯНСКОЕ ГНЕЗДО



…ТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва



१

वसंत का सुहावना दिन था। सांझ हो रही थी। स्वच्छ आकाश में खूब ऊंचे छोटे-छोटे गुलाबी बादल तैर रहे थे, ऐसा मालूम होता था जैसे वे, धीरे-धीरे, नीली गहराइयों में खो जाने के लिए [illegible] रहे हों।

तहसीली नगर 'ओ' की बाह्य बस्ती में स्थित एक सुन्दर मकान की खुली खिड़की के सामने (यह १८४२ की बात है) दो स्त्रियां बैठी थीं। एक की आयु क़रीब पचास वर्ष की था और दूसरी सत्तर वर्ष की एक बूढ़ी महिला थी।

पहली का नाम मारिया दिमीत्रियेवना कलीतिना था। उसका पति, दस साल हुए, मर गया था। वह तहसील का पब्लिक प्रौसीक्यूटर रह चुका था और अपने ज़माने में एक बेलाग, सक्रिय और प्रभावशाली आदमी समझा जाता था। स्वभाव का ज़िद्दी और मिज़ाज का तेज़ था। उसने अच्छी शिक्षा पाई थी, विश्वविद्यालय का वह स्नातक था, लेकिन गरीबी में जन्म लेने के कारण अपने जीवन के प्रारम्भ में ही उसने दुनिया में आगे बढ़ने और अपनी गांठ को पक्का रखने का गुर सीख लिया था। मारिया दिमीत्रियेवना ने, उसके प्रेम में पड़ कर उससे यह विवाह किया था। देखने में वह सुन्दर था, चतुर था, और मन चाहने पर हृदय में घर करना जानता था। मारिया

दिमीत्रियेवना (गायके का नाम पेस्तोवा) के माता-पिता छुटपन में ही मर गए थे। कुछ साल तक वह मास्को में महिलाओं की एक इन्स्टीट्यूट में रही और वहां से लौट कर अपनी बुआ और बड़े भाई के साथ, 'ओ' से क़रीब चालीस मील दूर, पोक्रोवस्कोये गांव की खानदानी जागीर में रहने लगी। उसका यह भाई, शीघ्र ही, पीटर्सबर्ग चला गया। वहां वह किसी सरकारी पद पर नियुक्त था। अपनी बहन और चाची को जब तक वह जिया बुरी तरह सताता रहा। लेकिन मृत्यु ने उसके जीवन का अचानक अन्त कर दिया। पोक्रोवस्कोये की जागीर पर अब मारिया दिमीत्रियेवना का उत्तराधिकार क़ायम हुआ, लेकिन वह अधिक दिनों तक वहां नहीं रह सकी। कलीतिन के साथ उसके विवाह के एक वर्ष बाद – कुछ ही दिनों के भीतर जिसने उसके हृदय पर कब्ज़ा कर लिया था – पोक्रोवस्कोये के बदले में अन्य अधिक लाभप्रद जागीर खरीद ली गई। लेकिन यह जागीर अनाकर्षक थी और उसमें रिहाइश के लिए कोई जगह नहीं थी। इसी के साथ-साथ कलीतिन ने 'ओ' नगर में एक मकान भी खरीदा जिस में वह और उसकी पत्नी स्थायी रूप से निवास करने लगे। यह घर काफ़ी बड़े बाग़ में स्थित था जिसके एक ओर खुला देहात नज़र आता था। कलीतिन देहाती आसाइशों का प्रेमी नहीं था, सो उसने निश्चय किया "अब देहात की धूल फांकने की ज़रूरत नहीं रहेगी।" लेकिन मारिया दिमीत्रियेवना, भीतर से, अपने सुन्दर पोक्रोवस्कोये को खोकर दुःखी थी। उसके छलछलाते हुए झरनों, विशाल चरागाहों और हरियाले कुंजों की याद जब-तब उसे कचोटती, लेकिन उसने कभी भी किसी भी रूप में अपने पति से शिकायत नहीं की जिसकी बुद्धि और दुनियावी जानकारी का उसपर बेहद रोब छाया था। यह सब होने पर भी पन्द्रह वर्ष के विवाहित जीवन के बाद एक लड़का और दो लड़कियां छोड़ कर जब वह मरा, तब तक मारिया दिमीत्रियेवना अपने इस घर और नागरिक

जीवन की इतनी अभ्यस्त हो चुकी थी कि 'ओ' छोड़ कर कहीं जाने की उसने कोई इच्छा तक नहीं की।

युवावस्था में सुनहरी रेशमी बालों वाली युवती के रूप में उसका सौन्दर्य प्रसिद्ध था। और अब पचास साल की हो जाने पर भी उसकी मुखाकृति आकर्षण से एकदम सूनी नहीं हुई थी, बावजूद इसके कि वह अपेक्षाकृत कुछ अधिक मोटी हो गई थी और उसमें अब वह पहले वाली कमनीयता नहीं थी। सहृदय वह इतनी नहीं थी जितनी कि भावुक थी, और इतनी उम्र पक जाने पर भी स्कूली जीवन के अपने अन्दाज़ों को उसने अब तक नहीं छोड़ा था। वह अपने को दुलराती थी, आसानी से चिढ़ जाती थी और अपनी आदतों में बाधा पड़ने पर आंखों में आंसू तक भर लाती थी। लेकिन गुदगुदाए जाने और अपनी बात के काटे न जाने पर वह बहुत ही मृदु और भली भी बन जाती थी। उसका घर नगर के अत्यन्त सुहावने घरों में से था। सम्पत्ति भी उसके पास भरपूर थी, विरासत की इतनी नहीं जितनी कि उसके पति की किफ़ायतशारी के कारण। दोनों लड़कियां उसके साथ रहती थीं, और लड़का पीटर्सबर्ग के एक श्रेष्ठतम सरकारी कालेज में पढ़ रहा था।

वृद्ध महिला जो मारिया दिमीत्रियेवना के साथ खिड़की के पास बैठी थी, उसकी वही बुआ थी जिसके साथ पोक्रोवस्कोये में किसी समय कई वर्ष उसने एकाकी जीवन बिताया था। उसका नाम मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना पेस्तोवा था। वह आज़ाद चरित्र की एक झक्की बुढ़िया के रूप में प्रसिद्ध थी और चाहे जो भी हो ठीक उसके मुंह पर ही खरी-खरी सुनाने की उसे आदत थी, और अत्यन्त तंगी के दिनों में भी वह अमीरी की हवा बांधने में सफल होती थी। कलीतिन से उसे सख्त नफ़रत थी और जैसे ही उसकी भतीजी ने उससे विवाह किया, वह अपने छोटे-से गांव में लौट गई, जहां वह—पूरे दस साल तक—एक किसान की जर्जर झोंपड़ी में रहती रही। मारिया दिमीत्रियेवना मन ही मन उससे कुछ भय खाती थी। छोटा कद और नुकीली नाक, काले बाल और पैनी आंखें

जिनकी धार इस बुढ़ापे में भी मन्द नहीं हुई थी, मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना बड़ी चपलता से डग उठा कर चलती थी, सीधी-सतर रहती थी और ऊंची गूंजती आवाज़ में जल्दी-जल्दी किन्तु स्पष्टता के साथ बोलती थी। वह सदा सफ़ेद गोटे की टोपी और सफ़ेद ड्रैसिंग जाकेट पहनती थी।

"अरे, यह क्या?" अचानक उसने मारिया दिमीत्रियेवना से पूछा, "तुम इस तरह लम्बे उसांस क्यों भर रही हो, मेरी बिट्टो?"

"कुछ नहीं," दूसरी ने जवाब दिया, "बादल कितने प्यारे मालूम होते हैं!"

"तो क्या उन्हीं के लिए तुम्हारा हृदय इतना कसक उठा है?"

मारिया दिमीत्रियेवना ने कोई जवाब नहीं दिया।

"पता नहीं क्यों, गेदेओनोवस्की इधर नज़र नहीं आया," अपनी सलाइयों को चपलता से चलाते हुए (वह एक बड़ा ऊनी गुलूबन्द बुन रही थी) मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने कहा, "उसांस छोड़ने में वह तुम्हारा हाथ बंटाता या कुछ ऊलजलूल बातें ही बतियाता।"

"ओह, तुम हमेशा उसपर अपने दांत पैनाए रहती हो! सेर्गेई पेत्रोविच बहुत मान्य आदमी हैं।"

"मान्य?" वृद्धा ने घिना कर प्रतिध्वनि की।

"और मेरे मृत पति के लिए तो जैसे वह जान तक देने को तैयार रहता था!" मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा, "आज भी उसकी याद कर वह अपना हृदय भर लाता है।"

"सो तो करेगा ही। आखिर तुम्हारे पति ने भी तो उसे मोरी में से उबारा था!" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना बुदबुदाई और उसकी सलाइयां और भी तेज़ी से चलने लगीं।

"उससे सचेत रहना," उसने फिर कहना शुरू किया, "वह देखने में इतना निरीह मालूम होता है,—एकदम सफ़ेद बाल, लेकिन मुंह

खोलते देर नहीं होती कि उसकी ज़बान कोई न कोई झूठ या किसी वदमाशी का क़िस्सा उगलने लगती है। तिस पर तुर्रा यह कि वह सिविल सर्विस में भी है, – कौन्सिलर का पद सुशोभित करता है। लेकिन, कुछ भी हो, आख़िर को है तो वह एक गांव के पादरी का लड़का ही!"

"यों तो, बुआ, दोष सभी में होते हैं। यह उसका कमज़ोर पक्ष है, इसमें शक नहीं। सेर्गेई पेत्रोविच कोई ख़ास शिक्षा प्राप्त आदमी नहीं है। मैं मानती हूं, वह फ़्रेंच नहीं बोल सकता। लेकिन, तुम कुछ भी कहो, आदमी वह काफ़ी पसन्द करने लायक है।"

"बेशक, तभी तो वह हमेशा तुम्हारे हाथों को चूमता रहता है। फ़्रेंच नहीं बोलता तो इससे क्या। और सच पूछो तो मैं ख़ुद ही कौन फ़्रेंच भाषा की माहिर हूं। अच्छा तो यह होता कि वह किसी भी भाषा में क़तई न बोल पाता। कम से कम तब झूठ बोलने से तो बच जाता। लेकिन यह लो, शैतान को याद किया नहीं कि वह आ मौजूद हुआ!" सड़क की ओर नज़र डालते हुए मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने कहा, "तुम्हारा वह मन-पसन्द आदमी चला आ रहा है। इतना दुबला-पतला और लम्बा कि एकदम बगुला मालूम होता है!"

मारिया दिमीत्रियेवना ने अपनी घुंघराली लटों को संवारा। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने व्यंग-भरी नज़र से उसे ताका।

"क्या है मेरी बिट्टो, कहीं कोई सफ़ेद बाल तो नहीं झांक रहा? उस पलाश्का को फटकारना ही होगा। न जाने उसकी आंखें कहां टिकी रहती हैं?"

"बस-बस बुआ, तुम हमेशा..." आहत स्वर में, अपनी उंगलियों से कुर्सी की बांह पर तबला बजाती, मारिया दिमीत्रियेवना बुदबुदा उठी। "सेर्गेई पेत्रोविच गेदेओनोवस्की," दरवाज़े में से झट अन्दर प्रवेश कर गुलाबी गालों वाले छोकरा-नौकर ने नफ़ीरी ऐसी आवाज़ में सूचना दी।

साफ़-सुथरा फ़्राक-कोट, ऊंची पतलून, भूरे रंग के स्वेड चमड़े के दस्ताने और दोहरा—नीचे सफ़ेद और उसके ऊपर काला—गुलूबंद बांधे एक लम्बे आदमी ने भीतर पांव रखा। उसके समूचे आकार-प्रकार से शाइस्तगी और नफ़ासत टपक रही थी। उसके चिकने-चुपड़े चेहरे और ख़ूब संवरी हुई कनपटी से लेकर नर्म गद्देदार टापबूटों तक, सभी कुछ नफ़ासत में डूबा था। सबसे पहले उसने घर की मालकिन के आगे सिर झुका कर उसका अभिवादन किया, फिर मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के आगे उसने सिर झुकाया, और अपने दस्तानों को धीरे-धीरे उतारते हुए मारिया दिमीत्रियेवना के हाथ के ऊपर झुक गया। अदब के साथ दो बार उसका हाथ चूमने के बाद सजग भाव से वह एक आरामकुर्सी पर बैठ गया, अपनी उंगलियों के छोरों को उसने सहलाया और मुसकराते हुए बोला :

"एलिज़ावेता मिख़ाइलोवना स्वस्थ तो है न?"

"हां," मारिया दिमीत्रियेवना ने जवाब दिया, "वह बाग़ में है।"

"और येलेना मिख़ाइलोवना?"

"लेनोचका भी बाग़ में है। क्यों, कोई नयी खबर है क्या?"

"हां है तो कुछ ऐसा ही," अपनी आंखों को धीरे से मिचकाते और होंठों को भींचते हुए आगन्तुक ने कहा।

"हूँ!... निश्चय ही नयी खबर है, सो भी बहुत आश्चर्यजनक। लावरेत्स्की फ़ियोदोर इवानिच, यहां आया हुआ है।"

"ओह, फ़ेदिया!" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना चिल्ला उठी, "क्या सचमुच, या योंही बना रहे हो, भले आदमी!"

"बिल्कुल नहीं, मैंने ख़ुद अपनी आंखों से उसे देखा है।"

"लेकिन इससे कुछ सिद्ध नहीं होता।"

"वह बेहद भला-चंगा दिखता है," गेदेओनोवस्की कहता गया, इस तरह जैसे उसने मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की टिप्पणी को सुना ही न हो, "उसके कंधे पहले से अधिक चौड़े नज़र आते हैं और रंग खूब निखर आया है।"

"बेहद भला-चंगा दिखता है," मारिया दिमीत्रियेवना ने धीमी आवाज़ में दोहराया, "किसी को ख्याल नहीं था कि वह अच्छा दिख सकता है।"

"बेशक," गेदेओनोवस्की ने बात को पकड़ते हुए कहा, "उसकी स्थिति में अगर कोई अन्य होता तो समाज में अपनी शक्ल दिखाने से पहले दो बार सोचता।"

"सो क्यों?" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने तुरत काटा, "यह निरी बकवास है! वह अपने घर लौट आया है, अब तुम उसे और कहां दफ़ा करना चाहते हो? तुम्हारी बात कुछ समझ में आती, अगर उसका कोई दोष होता।"

"मेरी बात मानो, मदाम, जब किसी की पत्नी उल्टी चाल चलती है तो इसका दोष हमेशा उसके पति के सिर ही थोपा जाता है।"

"तुमने कभी शादी तो की नहीं, भले आदमी, इसीलिए तुम ऐसा कहते हो।"

गेदेओनोवस्की बनावटी मुसकान के साथ सुन रहा था।

कुछ देर चुप रहने के बाद उसने पूछा: "क्या मैं जान सकता हूं कि यह सुन्दर गुलूबन्द किसके लिए बुना जा रहा है?"

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने एक तेज़ नज़र उसपर डाली।

"यह उस आदमी के लिए है जो कभी दूसरों की चर्चा नहीं करता जो चालबाज़ नहीं है और जो झूठ नहीं बोलता,— अगर ऐसा आदमी

दुनिया में हो सकता है तो। फ़ेदिया को मैं अच्छी तरह जानती हूं। उसका एकमात्र दोष यह है कि उसने अपनी पत्नी को सिर पर चढ़ा कर रखा। इसके सिवा कुछ और हो भी नहीं सकता था। उसने प्रेम में पड़कर शादी की थी, और उनका – प्रेम की शादियों का – हमेशा यही हश्र होता है!" अपनी आंख की कोर में से वृद्धा ने मारिया दिमीत्रियेवना की ओर एक नज़र फेंकते और उठते हुए कहा, "और अब तुम्हें, भले आदमी, छूट है कि चाहे जिसकी छीछालेदर करो, – यहां तक कि मेरी भी, – मेरी बला से ! मैं यहां से खिसके जाती हूं, तुम्हारी राह में बाधा नहीं बनूंगी।" यह कहती मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना बाहर चली गई।

"इसका तो मिज़ाज हमेशा ऐसा ही रहता है," बुआ के पीछे नज़र दौड़ाते हुए मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा, "हमेशा।"

"वह भी क्या करे... तुम्हारी बुआ अब सठियाती जा रही है!" गेदेओनोवस्की ने टिप्पणी कसी, "उसने चालबाज़ होने के बारे में कुछ कहा था। लेकिन आज कौन ऐसा है जो चालबाज़ नहीं है। आज का जीवन ही ऐसा है! देखो न, मैं तुम्हें बताता हूं। मेरा एक मित्र है – बहुत ही क़ाबिल और अच्छे ओहदे का आदमी – वह कहा करता था कि आजकल तो बिना बहाना किये मुर्ग़ी एक दाना तक नहीं चुग सकती, – वह उसकी ओर सीधे नहीं, किसी बहाने से जाती है। लेकिन तुम्हारी ओर जब मैं देखता हूं तो, देवीजी, एक फ़रिश्ते की आत्मा मुझे नज़र आती है। आह, मुझे अनुमति दो कि बर्फ़ से धवल तुम्हारे नन्हें हाथ का चुम्बन कर सकूं।"

मारिया दिमीत्रियेवना धीमे से मुसकराई और उसने अपना मांसल हाथ, कनकी उंगली आगे निकली हुई, बढ़ा दिया। गेदेओनोवस्की के होंठ उससे जा लगे। मारिया ने अपनी कुर्सी खींच कर उसके और अधिक निकट कर ली, कुछ आगे की ओर झुकी और दबे स्वर में पूछा :

"नमस्ते, मारिया दिमीत्रियेवना!" घुड़सवार ने गूंजदार सुहावनी आवाज़ में चिल्लाकर कहा, "तुम्हें मेरा यह घोड़ा पसन्द आया?"

मारिया दिमीत्रियेवना खिड़की के पास पहुंच गई।

"नमस्ते, वोल्देमार, ओह, बहुत ही शानदार घोड़ा है यह! इसे कहां ख़रीदा?"

"इसे मैंने फ़ौज के एक ठेकेदार से ख़रीदा है... लेकिन कम्बख़्त ने दाम ख़ूब कस कर वसूल किए!"

"घोड़े का नाम क्या है?"

"ओर्लाण्डो... बड़ा औघड़ नाम हैं। मैं इसे बदलना चाहता हूं... बस भाई औघड़, ज़्यादा शैतानी न कर... बहुत ही चंचल घोड़ा है।"

घोड़ा फुंकार रहा था, थिरक रहा था और झाग उफ़नी अपनी थूथनी को फड़फड़ा रहा था।

"लेनोचका, डरो नहीं। यह लो, इसे पुचकारो।"

छोटी लड़की ने खिड़की में से अपना हाथ बाहर निकाला, लेकिन ओर्लाण्डो सहसा चमक कर कतरा गया।

घुड़सवार ने, पूर्ण स्थिरता के साथ, घोड़े की गरदन में अपना हण्टर छुवाया और उसके बाज़ुओं में अपनी एड़ लगा कर–उसके प्रतिरोध के बावजूद–उसे फिर खिड़की के सामने ले आया।

"सावधान, सावधान!" मारिया दिमीत्रियेवना फ्रेंच भाषा में दोहराती रही।

"यह लो, लेनोचका, अब इसे पुचकारो!" युवक ने कहा, "मेरे सामने यह अपने मन की नहीं कर सकेगा।"

लड़की ने फिर अपना हाथ बाहर निकाला और ज़िद्दी घोड़े की थरथराती-किटकिटाती थूथनी को डरते-डरते थपथपाया।

"बहुत खूब!" मारिया दिमीत्रियेवना ने चिल्लाकर कहा, "लेकिन अब यह खेल छोड़ो और भीतर चले आओ।"

घुड़सवार ने बड़ी चुस्ती से घोड़े का मुंह घुमाया, उसकी पसलियों को अपनी टांगों से कोंचा और सड़क के रास्ते तेज़ दुलकी चाल से अहाते में दाखिल हो गया। इस समय वह, हाल के दरवाज़े को पार कर, अपना हण्टर झुलाता दीवानख़ाने में प्रवेश कर रहा था। इसी के साथ-साथ, दूसरे दरवाज़े में से, उन्नीस वर्ष की एक लड़की ने भी—लम्बा क़द छरहरा बदन और काले बाल—वहां प्रवेश किया। यह मारिया दिमीत्रियेवना की बड़ी लड़की लीज़ा थी।

इस नये युवा आदमी का नाम व्लादीमिर निकोलाइच पान्शिन था। वह पीटर्सबर्ग में एक सरकारी पद पर काम करता था। गृह मंत्रालय ने विशेष कमीशनों का काम उसे सौंपा था। 'ओ' नगर में उसका यह आगमन भी एक अस्थायी सरकारी काम के सिलसिले में हुआ था और वह गवर्नर ज़ोनेनबर्ग के यहां हाज़िरी देता था। वह इस गवर्नर का कोई दूर का रिश्तेदार था। पान्शिन का पिता रिसाले का एक पैन्शनप्राप्त कैप्टेन और नामी जुआरी था। उसकी आंखों से शहद चूता था, उसका चेहरा खूब बना-संवरा रहता था और उसके होंठों के छोर—किसी परेशानी में—बल खाते रहते थे। उसका समूचा जीवन कुलीनों के साथ कंधे से कंधा रगड़ कर चलने, उनसे होड़ लेने, में बीता था। वह दोनों राजधानियों के ब्रिटिश क्लबों में मंडराता था और अपनी चतुराई के लिये प्रसिद्ध था,—एक यारबाश किस्म का आदमी जिसे देख कर हृदय में विशेष विश्वास नहीं उपजता। अपनी चतुराई के बावजूद वह हमेशा दिवालियेपन के छोर चूमता रहता था और जब वह मरा तो अपने

एकमात्र पुत्र के लिए एक नगण्य और भारी कर्ज़ के बोझ से लदी बन्धक मिल्कियत छोड़ गया। लेकिन, यह सब कुछ होते हुए भी, एक तरह से, अपने लड़के को शिक्षित बनाने में उसने कसर नहीं छोड़ी। व्लादीमिर निकोलाइच बहुत ही बढ़िया फ्रेंच बोलता था, अंग्रेज़ी में भी उसका अच्छा दख़ल था और टूटी-फूटी जर्मन भी बोल लेता था। इसके सिवा और चाहिए भी क्या: कुलीनों में यों सही जर्मन बोलना अच्छा नहीं माना जाता था, लेकिन किसी उपयुक्त मौके पर जर्मन भाषा का कोई टुकड़ा चस्पां करना – बहुत कर रौबीले अन्दाज़ से – बहुत ही मौज़ूं समझा जाता था, – बहुत ही चुस्त और दुरुस्त, जैसा कि पीटर्सबर्ग के फ़्रेंचप्रेमी कहते थे। पन्द्रह वर्ष की आयु में ही व्लादीमिर निकोलाइच कुलीनों के दीवान-ख़ाने में बेहिचक प्रवेश कर सकता था, उनके साथ प्रसन्न भाव से चहक सकता था और ठीक मौके पर, क़ायदे से, वहां से विदा होना जानता था। पान्शिन के पिता ने अपने लड़के का परिचय-क्षेत्र बढ़ाने म कोई कोताही नहीं की। ताश के खेलों के बीच पत्तों को फेंटते समय या सफलता के साथ 'शानदार मात' देने के बाद चतुर खेल के शौकीन हर महत्वपूर्ण व्यक्ति के कान में अपने 'वोलोदका' के बारे में दो-चार शब्द डालना वह कभी न भूलता। इसके अलावा ख़ुद व्लादीमिर निकोलाइच ने भी, विश्वविद्यालय में अपने जीवन के दौरान में – जहां से वह कोरा ही निकला था – ऊंची कोटि के कितने ही युवकों से घनिष्ठता प्राप्त की और अच्छे से अच्छे घरानों में अपने लिए रास्ता बना लिया। जहां भी वह जाता, उसका स्वागत किया जाता: देखने में बहुत ही सुन्दर, संकोच-विहीन, दिलचस्प, हमेशा स्वस्थचित्त और मिलनसार, झुकने के लिए तैयार – अगर इसका मौका हो तो, लेकिन अपना पलड़ा भारी रखने में भी चूक न करने वाला, बहुत ही बढ़िया जीव। जीवन ने उसके रास्ते पर फूल बिखेरे।

पान्शिन ने ऊंचे समाज के रहस्यों में बहुत ही जल्दी दक्षता प्राप्त कर ली। सच्चे ग्रादर के साथ वह उसके विधिनिषेधों का निर्वाह करता: छोटी-मोटी बातों को लेकर बहुत ही हल्के ग्रन्दाज़ में, वह गम्भीरता का ऊहापोह रचता ग्रौर गम्भीर बातों के सामने ग्राने पर कृत्रिम ग्रभिनय के साथ वह ऐसा दिखाता जैसे वे कुछ नहीं हों। वह बहुत ही बढ़िया नाचता ग्रौर ग्रंग्रेज़ी काट-छांट के कपड़े पहनता, देखते न देखते, एक ग्रत्यन्त मिलनसार ग्रौर सक्षम युवक के रूप में, वह पीटर्सबर्ग में प्रसिद्ध हो गया। ग्रौर सचमुच, पान्शिन ग्रत्यन्त दक्ष ग्रौर चतुर था, ग्रपने पिता से भी ग्रधिक, लेकिन वह प्रतिभाशाली भी तो कुछ कम नहीं था। वह सभी कुछ कर सकता था – इतना ग्रच्छा गाता था कि मोह ले, चित्र भी सफ़ाई से बनाता था, कविताएं लिखता था ग्रौर ग्रभिनय के क्षेत्र में भी उसकी कुछ कम गति नहीं थी। ग्रभी वह केवल ग्रट्ठाईस साल का था, लेकिन 'कामर-जंकर' की उपाधि से भूषित था। ग्रौर ग्रपने लिए बहुत ही ग्रच्छी स्थिति उसने बना ली थी। ग्रपने में उसे पूर्ण विश्वास था, ग्रपनी बुद्धि ग्रौर सूझबूझ पर उसे पूरा भरोसा था। साहस ग्रौर फुर्ती के साथ वह ग्रपने पथ पर बढ़ रहा था, जीवन में न कोई ग्रड़चन थी ग्रौर न बाधा। बूढ़े ग्रौर जवान, समान रूप से सभी का प्रिय बनने का वह ग्रादी था ग्रौर उसका ख़याल था कि वह लोगों को – ख़ास तौर से स्त्रियों को – ख़ूब जानता है। ग्रौर इसमें कोई शक नहीं कि वह उनके ग्राम छिद्रों से – कमज़ोर स्थलों से – परिचित था। कला के प्रति झुकाव होने के नाते एक ग्रान्तरिक प्रयास का, एक कल्पित उछाह ग्रौर यहां तक कि ग्रानन्दातिरेक का भी, वह ग्रनुभव करता था ग्रौर इसलिए, एक हद तक बंधी हुई लीक से भटकने में ग्रानाकानी नहीं करता था। उच्छृंखलता में वह वह चुका था, भले समाज की सीमाग्रों में न ग्राने वाले लोगों से रब्त-ज़ब्त रखता था ग्रौर, ग्राम तौर से, स्वच्छन्द ग्रौर मनमौजी

अन्दाज़ में विचरता था। लेकिन भीतर से उसका हृदय भावनाशून्य और तिकड़मी था, और अत्यन्त आह्लादपूर्ण तथा उच्छृंखल क्षणों में भी उसकी चतुर भूरी आंखें हमेशा चौकस-चौकन्नी रहकर हर बात को ताड़ती रहती थीं। साहसी और आज़ाद तबीयत का यह युवक, उमंगों के प्रबल आवेग के साथ कभी भी, अपने-आपको पूर्णतया नहीं बहने देता था। और इसका उसे श्रेय देना चाहिए कि वह ख़ुद भी, अपनी 'विजयों' को लेकर, कभी शेख़ी नहीं बघारता था। 'ओ' नगर में आते ही वह सीधे मारिया दिमीत्रियेवना के यहां पहुंचा और देखते न देखते इस तरह घुलमिल गया जैसे यह उसका अपना ही घर हो। मारिया दिमीत्रियेवना उसके सामने बिछी जाती थी।

कमरे में मौजूद हर व्यक्ति का पान्शिन ने झुक कर अभिवादन किया, मारिया दिमीत्रियेवना और येलिज़ावेता मिखाइलोवना से उसने हाथ मिलाया, गेदेओनोवस्की के कंधों को धीमे से थपथपाया और फिर घूम कर, लेनोचका के चेहरे को उसने अपने हाथों में थामा और उसके माथे पर एक चुम्बन अंकित कर दिया।

"इस बिगड़ैल घोड़े पर सवारी करते तुम्हें डर नहीं लगता?" मारिया दिमीत्रियेवना ने पूछा।

"अरे नहीं, सच पूछो तो वह बहुत ही सीधा है, लेकिन मैं तुम्हें बताता हूं कि वास्तव में किस चीज़ से मैं डरता हूं। मैं डरता हूं सेर्गेई पेत्रोविच के साथ ताश खेलने से। कल बेलेनीत्सिन के यहां उसने मुझे वह मात दी कि मैं देखता ही रह गया।"

गेदेओनोवस्की एक हल्की बनावटी हंसी हंसा। वह अपने-आप को पीटर्सबर्ग के इस प्रतिभावान युवक अफ़सर तथा गवर्नर के प्रियपात्र की नज़रों में चढ़ाना चाहता था। मारिया दिमीत्रियेवना से अपनी बातचीत के दौरान में पान्शिन की योग्यताओं का वह बहुधा ज़िक्र करता। "सच,

वह है ही ऐसा कि उसकी तारीफ़ किए बिना नहीं रहा जा सकता," वह कहता, "यह युवक उच्चतम हल्कों में सफलता प्राप्त कर रहा है। वह एक कुशल अफ़सर है और दम्भ उसे ज़रा भी नहीं छू गया है।" और यह एक वास्तविकता थी। खुद पीटर्सबर्ग में भी उसे एक योग्य अफ़सर समझा जाता था, उसकी काम करने की क्षमता अद्भुत थी, लेकिन वह बहुत ही हल्के ढंग से इसका उल्लेख करता था, जैसा कि एक दुनियादार आदमी को करना चाहिए जो अपनी मेहनत को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर नहीं देखता। लेकिन वह बहुत ही दक्ष कार्याधिकारी था। उच्च सत्ताधारी ऐसे मातहतों को पसन्द करते हैं। खुद उसे भी कोई शक नहीं था कि समय आने पर, अगर उसने चाहा तो, वह मंत्री-पद तक पहुंच जाएगा।

"आप कहते हैं, श्रीमान, कि मैंने आपको साफ़ मात दी," गेदेओनोवस्की ने कहा, "लेकिन यह तो बताइए कि उस दिन मुझसे बारह रूबल किसने जीते थे? और इसके बाद फिर..."

"ओह, शैतान आदमी!" पान्शिन ने कोमल किन्तु उपेक्षापूर्ण लापर्वाही के साथ कहा और उसकी ओर से मुंह मोड़ लीज़ा के पास खिसक गया।

"यहां ओबेरोन के प्रस्तावना-संगीत की स्वरलिपि नहीं मिली," उसने कहना शुरू किया, "बेलेनीत्सिना खाली शेखी बघारती थी कि उसके पास शास्त्रीय संगीत का समूचा भंडार है लेकिन सच पूछो तो सिवा पोल्का और वाल्ट्ज़ नृत्यों के उसके पास और कुछ नहीं है। लेकिन मैंने मास्को लिखा है और एक सप्ताह के भीतर प्रस्तावना-संगीत आ जाएगा। प्रसंगवश," वह कहता गया, "कल मैंने एक नया गीत तैयार किया है। उसके बोल भी मेरे हैं। क्या उसे सुनना पसन्द करोगी? पता नहीं, कैसा बना है। बेलेनीत्सिना को तो अच्छा लगा, लेकिन उसकी राय का कोई

ख़ास मूल्य नहीं। मैं जानना चाहता हूं कि तुम्हें कैसा लगता है। लेकिन ऐसी कोई जल्दी नहीं, यह बाद में भी..."

"क्यों, बाद में क्यों?" मारिया दिमीत्रियेवना ने बीच में ही कहा, "अभी क्यों नहीं?"

"जैसा तुम चाहो," पान्शिन ने एक मधुर प्रसन्न मुसकान के साथ कहा जो उसके चेहरे पर से उतनी ही अचानक विलीन हो गई जितनी अचानक कि वह प्रगट हुई थी। घुटने से स्टूल को खिसका कर वह पियानो पर बैठ गया। पियानो के पर्दों को उसने छेड़ा और, अपन गीत के बोलों का सुस्पष्ट उच्चारण करते हुए, गाने लगा:

आंसुओं की घाटी ऊपर तैरता चांद
तैरता और बादलों के बीच से फांदता
करता संचालन अपनी जादू-भरी किरनों से
सागर की लोनी तरंगों को!

ओ मेरी प्रिय, तुम्हीं हो वह चांद
जिसे देख उमड़ उठता मेरा हृदय
एक सीमाहीन सागर
उमड़ता-घुमड़ता और लपकता
छलछलाता और सिर धुनता
हर्ष और शोक का आरोह-अवरोह
बंधा तेरे स्वर की गति से।

ललकता और करता विलाप
हो जाता मैं बेसुध प्रेम से
लेकिन तुम हो कि रहती
शान्त और दूर
उतनी ही दूर... जितनी
दूर बसता है प्यारा चांद

दूसरे पद को पान्शिन ने विशेष प्रबलता और भावनाओं के उभार के साथ व्यक्त किया। पियानों के उमड़ते-घुमड़ते स्वरों में लहरों की ध्वनि गूंज रही थी। "हो जाता मैं बेसुध प्रेम से," ये शब्द जैसे एक धीमी उसांस की भांति प्रकट हुए। उसकी आंखें झुक गईं और आवाज़ उत्तरोत्तर धीमी होती हुई विलीन हो गई। गीत के समाप्त होने पर लीज़ा ने उसकी धुन की प्रशंसा की, मारिया दिमीत्रियेवना ने उसे 'मुग्धकारी' बताया, और गेदेओनोवस्की छलछला उठा, "आह्लादपूर्ण! संगीत और कविता दोनों ही आह्लादपूर्ण हैं!" लेनोचका, विस्मय से अपनी आंखों को फाड़े, बालभाव से गायक की ओर देख रही थी। संक्षेप में यह कि संगीत के चलते-फिरते शौकीन इस युवक प्रेमी की रचना से सभी बहुत प्रसन्न थे। लेकिन हाल के द्वार-मार्ग में एक वृद्ध आदमी खड़ा था जो सम्भवतः अभी आया था। उसके चेहरे की उदासीनता और जिस तरह वह अपने कंधों को बिचका रहा था, उससे पता चलता था कि पान्शिन के गीत ने, एक सुन्दर रचना होते हुए भी, उसमें आह्लाद का संचार नहीं किया। एक मोटा-सा रूमाल निकालकर अपने जूतों की धूल साफ़ करने के लिए रुकते हुए सहसा उसने अपनी आंखों को सिकोड़ा, नाराज़ी से अपने होंठों को कसा, पहले से झुके हुए अपने शरीर को और भी दोहरा कर लिया और धीरे-धीरे दीवानख़ाने में उसने प्रवेश किया।

"क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच, नमस्ते!" अन्य सब से पहले और अपनी जगह से उछल कर खड़े होते हुए पान्शिन ने चिल्ला कर कहा, "मुझे कोई ख़्याल नहीं था कि तुम यहां हो, — नहीं तो तुम्हारे सामने अपना गीत गाने का मैं कभी साहस न करता। मैं जानता हूं कि तुम हल्का-फुल्का संगीत पसंद नहीं करते।"

"इसीलिए मैंने सुना नहीं!" बहुत ही टूटी-फूटी रूसी भाषा में उसने कहा और अभिवादन में हरेक के सामने सिर झुका कर अटपटी मुद्रा में कमरे के बीचों बीच स्थिर हो गया।

"मोसिये लेम्म," मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा, "मैं समझती हूं कि आप लीज़ा को संगीत का अभ्यास कराने आए हैं?"

"नहीं, येलिज़ावेता मिखाइलोवना को नहीं, बल्कि येलेना मिखाइलोवना को।"

"ओह ठीक, बहुत ठीक। लेनोचका, जाओ, मिस्टर लेम्म को ऊपर कमरे में ले जाओ।"

वृद्ध छोटी लड़की के साथ ऊपर जा ही रहा था कि पान्शिन ने उसे टोका।

"अभ्यास के बाद चुपचाप खिसक न जाना, क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच," उसने कहा, "येलिज़ावेता मिखाइलोवना और मैं मिलकर बीटहोवन की एक धुन बजाने जा रहे हैं।"

वृद्ध होंठों ही होंठों में कुछ गुर्राया, और पान्शिन शब्दों को ग़लत ढंग से उच्चारित करते हुए जर्मन भाषा में कहता गया:

"येलिज़ावेता मिखाइलोवना ने मुझे तुम्हारा वह भजन दिखाया था जो तुमने उसे अर्पित किया है,—सच! बहुत ही सुन्दर चीज़ है। कृपया यह न समझो कि गम्भीर संगीत मेरी सामर्थ्य से बाहर है। बल्कि बात ठीक इससे उल्टी है। कभी-कभी वह बोझिल अवश्य मालूम होता है, लेकिन कुल मिलाकर होता वह हितकर है।"

लाज के मारे वृद्ध के बालों की जड़ें तक लाल हो गईं, और वह लीज़ा पर कनखियों से नज़र डालता तुरत कमरे से चला गया।

मारिया दिमीत्रियेवना ने पान्शिन से अनुरोध किया कि वह अपना गीत एक बार और सुनाए। लेकिन वह कतरा गया, यह कहकर कि वह विद्वान जर्मन के कानों को आहत् नहीं करना चाहता। उसके बजाय उसने लीज़ा से बीटहोवन की धुन के स्वरों को साधने के लिए कहा। यह सुन मारिया दिमीत्रियेवना ने एक उसांस भरी और, अपनी ओर

से, गेदेओ्रोनोवस्की के सामने सुझाव रखा कि चलो, हम-तुम बाग़ में चलकर टहलें। "मैं चाहती हूं," उसने कहा, "कि हमारी बातों का सिलसिला जारी रहे। मैं तुमसे सलाह लेना चाहती हूं कि अपने बिचारे फ़ेदिया के बारे में क्या किया जाए।" गेदेओ्रोनोवस्की एक बनावटी हंसी हंसा, स्वीकृति में उसने अपना सिर झुकाया, साथ की दो उंगलियों से उसने अपना हैट उठाया जिसके कगारे पर उसने बहुत ही सावधानी से तहाए हुए अपने दस्ताने रख छोड़े थे, और मारिया दिमीत्रियेवना के साथ कमरे से बाहर चला गया। कमरे में अब पान्शिन और लीज़ा अकेले रह गए। उसने बीटहोवन की धुन बाहर निकाली और उसे खोल कर सामने रख लिया। इसके बाद, खामोशी में, वे पियानो पर बैठ गए। ऊपर के कमरे में छोटी लेनोचका अपनी अटकती हुई उंगलियों से रियाज़ कर रही थी और पियानो के स्वरों की हल्की आवाज़ आ रही थी।

५

क्रिस्टोफ़ोर थियोदोर गोत्तलिब लेम्म का जन्म १७८६ में सेक्सोनी राज्य के चेमनित्ज़ नगर में हुआ था। वह संगीतज्ञों के घर में जन्मा था, उसका पिता फ़ान्सीसी हौर्न बजाता था और मां वीणा। जब वह केवल पांच वर्ष का था तभी तीन विभिन्न वाद्य-यंत्रों का रियाज़ करने लगा था। आठ वर्ष का होते न होते वह अनाथ हो गया और दस वर्ष की आयु से वह अपनी कला के बल पर रोज़ी कमाने लगा। एक लम्बे अर्से तक उसने चलता-फिरता जीवन बिताया—जहां भी मौका मिलता जाकर अपनी कला का प्रदर्शन करता—सरायों में, मेलों में, किसानों की ब्याह-शादियों में, नृत्य-समारोहों में। इसके बाद वह एक आर्केस्ट्रा में—वादकों के एक दल में—शामिल हो गया और धीरे-धीरे तरक़्क़ी

करता आर्केस्ट्रा-मास्टर के पद तक पहुंच गया। वादक के रूप में यों वह निखर नहीं पाता था, लेकिन संगीत का उसे पूरा ज्ञान था। अट्ठाईस वर्ष की आयु में वह रूस चला आया। यहां एक बहुत बड़े सामन्त ने जो संगीत से घृणा करते हुए भी शान की खातिर एक आर्केस्ट्रा रखता था, उसे आमंत्रित किया। संगीत-निर्देशक के रूप में सात साल तक वह उसके यहां रहा और जब वह उससे अलग हुआ तो पहले की भांति ही खाली हाथ था। उस श्रीमन्त का दिवाला निकल गया था। उसके मन में लेम्म को एक प्रामिसरी-नोट देने की इच्छा ज़रूर उठी थी, लेकिन बाद में अपनी इस इच्छा को वह पी गया,—संक्षेप में यह कि उसने लेम्म को एक कौड़ी नहीं दी। जान-पहचानियों ने सलाह दी कि वह अपने देश चला जाए, लेकिन वह रूस से—उस महान रूस से जो कलाकारों का भूस्वर्ग था, एक भिखारी के रूप में अपने घर नहीं लौटना चाहता था। उसने यहीं रहने और अपना भाग्य आज़माने का निश्चय किया। सो यह बेचारा जर्मन बीस साल से अपना भाग्य आज़मा रहा था, अनेक श्रीमन्तों और कुलीनों का उसने दामन पकड़ा, मास्को और प्रान्तीय नगरों दोनों की धूल उसने छानी, गरीबी का स्वाद चखा और लहरों के थपेड़े खाए, लेकिन इस समूची उथल-पुथल और मुसीबतों के बीच भी अपने देश लौटने का विचार उसने कभी नहीं छोड़ा—बल्कि यह विचार ही था जिसने उसे जीवित रखा। लेकिन भाग्य ने उसकी इस आखिरी और सब से पहली ख़ुशी को पूरा नहीं होने दिया। पचास वर्ष की आयु में, रुग्ण और समय से पहले ही क्षीण, जीवन के थपेड़ों ने उसे 'ओ' नगर में ला पटका और रूस से—जिससे वह घृणा करता था—विदा होने की तमाम आशा छोड़ हमेशा के लिए वहीं वह बस गया। कच्चे धागे से उसका जीवन लटका था, और संगीत सिखा कर जैसे-तैसे—बड़ी मुश्किल से—वह अपनी गुज़र करता था।

लेम्म देखने में सुन्दर नहीं था। उसका कद छोटा और झुका हुआ था। उसके कंधे ऐंड़े-बेंड़े और पेट अन्दर को धंसा था। उसके पांव चपटे और बड़े-बड़े थे, उसके लाल हाथों में नीली नसें उभरी थीं और कड़ी, गट्टे-पड़ी उंगलियों के नाखूनों की सफ़ेदी में नीलापन छाया था। उसका चेहरा झुर्रियोंदार था, गालों में गड्ढे पड़े थे, और उसके होंठ भिंचे रहते थे जिन्हें वह हमेशा ऐंठता और चबाता रहता था। इससे उसका चुप्पापन – जो कि उसकी आदत थी – और भी भयानक मालूम होता था। उसके संकरे माथे के ऊपर सफ़ेद बालों के लच्छे छितरे थे और उसकी छोटी-छोटी निश्चल आंखें बुझते हुए अंगारों की भांति धुंधला गई थीं। वह लचक कर चलता था और उसका अटपटा शरीर हर डग पर आगे की ओर झूल जाता था। उसके हाव-भाव देख कर कभी-कभी ऐसा मालूम होता जैसे वह पिंजरे में बंद और लोगों की नज़रों से सहमे उल्लू की भांति औघड़ ढंग से अपने पैरों को समेटने और अपनी बड़ी-बड़ी पीले रंग की उनींदी आंखों को मिचमिचा कर निराश भाव से इधर-उधर देखने के सिवा और कुछ न कर पा रहा हो। गहरे और घुन की भांति चट कर जाने वाले शोक की एक अमिट छाप अभागे संगीतज्ञ पर अंकित थी जिसने उसके पहले से ही बहुत कुछ आकर्षण-विहीन पहलुओं को और भी विकृत तथा कुण्ठित बना दिया था। लेकिन उन लोगों को जो पहली ही झांकी में एकदम विमुख नहीं हो जाते, इस ध्वस्त जीव में भी बहुत कुछ अच्छाई, ईमानदारी और असाधारणता के दर्शन होते थे। अगर जीवन की लहरों ने साथ दिया होता तो–कौन कह सकता है कि – बाख़ और हाण्डेल का यह प्रशंसक, अपनी कला का गुणी, सजीव कल्पना का धनी और बुद्धि की उस शक्ति से लैस जो कि जर्मन जाति की एक निजी विशेषता है, समय आने पर अपने देश का महान गीतकार न होता। लेकिन उसने अच्छे ग्रहों में जन्म नहीं लिया

था। एक ज़माने में उसने बहुत कुछ लिखा, लेकिन उसकी एक भी रचना प्रकाशित नहीं हो सकी। वह चीज़ों को ठीक ढंग से निबाहना, सही लोगों को खुश रखना, और सही मौके पर चेतन होना नहीं जानता था। एक बार, यह बहुत पहले की बात है, उसके एक प्रशंसक और मित्र ने–जो उसकी ही भांति जर्मन और उसकी ही भांति ग़रीब था—अपने खर्च से उसके गीतों की दो स्वरलिपियां प्रकाशित की थीं; लेकिन उनकी सारी की सारी प्रतियां संगीत दुकानों की अलमारियों में पड़ी रहीं, अंधकार ने उन्हें इस तरह निगल लिया, जैसे उन्हें रात के अंधेरे में किसी ने नदी में फेंक दिया हो। अन्त में लेम्म ने भाग्य के आगे घुटने टेक दिए, फिर उसकी आयु भी ढल चुकी थी और उसका मस्तिष्क, उसकी उंगलियों की भांति, बेदर्द और बेहिस हो गया था। कलीतिन परिवार से थोड़ी ही दूर एक छोटे से घर में वह रहता था। केवल एक बूढ़ी बावर्चिन–जिसे वह भिखारी घर से ले आया था–उसके साथ रहती थी (उसने कभी विवाह नहीं किया था)। वह खूब दूर तक टहलने जाता था। बाइबल का पाठ करता था, प्रोटैस्टैण्ट धर्मगीतों के पन्ने पलटता था या श्लेगेल द्वारा अनुवादित शैक्सपीयर की रचनाएं पढ़ता था। बहुत दिनों से उसने कोई संगीतमय रचना नहीं की थी। लेकिन उसकी श्रेष्ठतम शिष्या लीज़ा ने, प्रत्यक्षतः, उसके आलस को तोड़ उसे कुछ जगा दिया था। नतीजा इसका यह कि लीज़ा के लिये उसने एक भजन की रचना की जिसका कि पान्शिन ने उल्लेख किया था। इस भजन के बोल उसने धर्मगीतों की अपनी पुस्तक से लिए थे। साथ ही कुछ पंक्तियां अपनी ओर से भी उसने जोड़ दी थीं। यह एक तरह से दोहरा कोरस था–एक तो सुखी लोगों का कोरस, दूसरा दुःखी लोगों का, और ये दोनों अन्त में मिलकर संयुक्त रूप से गाते थे: "हे दयामय, हम गुनाहगारों को क्षमा करना; बुरे विचारों और सांसारिकता के मोह

से हमें उबारना।" उसके मुखपृष्ठ पर बहुत ही मेहनत से और सजावटी अक्षरों में निम्न विवरण लिखा था: "न्याय उनके साथ है जो नेक हैं। एक भजन गीत और स्वरकार क्रि० थ० लेम्म द्वारा अपनी प्रिय शिष्या कुमारी येलिज़ावेता कलीतिना को अर्पित।"

'न्याय उनके साथ है जो नेक हैं' और 'येलिज़ावेता कलीतिना'—ये शब्द किरनों के मण्डल से घिरे थे। इनके नीचे जर्मन में यह और लिखा हुआ था: "केवल तुम्हारे लिए।" इसी वजह से लेम्म का चेहरा लाल हो उठा था और लीज़ा की ओर कनखियों से उसने देखा था। पान्शिन ने जब उसके ही सामने उसके भजन का ज़िक्र किया तो उससे वह अत्यधिक आहत हो उठा था।

६

पान्शिन ने बड़े ज़ोरों और दृढ़ता से गीत के प्रथम स्वरों को छेड़ा। (वह अब उसके तार-स्वर बजा रहा था) लेकिन लीज़ा ने साथ न दिया। उसने रुक कर लीज़ा की ओर देखा। लीज़ा की आंखें उसपर जमी थीं, उनमें अप्रसन्नता झलक रही थी, उसके होंठ मुसकरा नहीं रहे थे, और उसका चेहरा कठोर—क़रीब-क़रीब उदास—हो गया था।

"क्यों, क्या हुआ?" उसने पूछा।

"तुमने अपना वचन क्यों तोड़ा?" उसने कहा, "क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच का भजन इस शर्त पर मैंने तुम्हें दिखाया था कि उसके बारे में तुम उससे कोई ज़िक्र नहीं करोगे।"

"मुझे इसका दुःख है, येलिज़ावेता मिखाइलोवना। मैं अपने-आप को रोक न सका, शब्द मुंह से निकल ही गए।"

"तुमने उसके लिए, और मेरे लिए भी, एक परेशानी खड़ी कर दी। वह अब मेरा भी विश्वास नहीं करेगा।"

"वह मेरे वश से बाहर की बात थी, येलिज़ावेता मिखाइलोवना। छुटपन से ही जर्मनों से मेरी कभी पटरी नहीं बैठी। उनकी शक्ल देखते ही मैं उन्हें चिढ़ाने के लिए कसमसा उठता हूं!"

"तुम ऐसी बात कैसे कह सके व्लादीमिर निकोलाइच। यह जर्मन एक गरीब, अकेला और दुःखों का मारा आदमी है, क्या तुम्हें उसपर तरस नहीं आता? उसे चिढ़ाने को ही तुम्हारा जी चाहता है?"

पान्शिन जैसे कट कर रह गया।

"तुम ठीक कहती हो, येलिज़ावेता मिखाइलोवना," उसने कहा, "यह मेरी उसी चिरन्तन विवेकहीनता का नतीजा है। नहीं, प्रतिवाद न करो, मैं अपने को जानता हूं। अपनी इस विवेकहीनता से काफ़ी नुक्सान मैंने उठाया है। इसी की बदौलत मुझे लोग अहम्भावी करार देते हैं।"

पान्शिन रुक गया। जिस विषय को भी लेकर वह बातचीत शुरू करता था, अन्त में अदबदाकर वह अपने आपको बीच में घसीट लाता था, और यह वह कुछ इतनी निरस्त्र कर देनेवाली नफ़ासत, अकृत्रिमता और हार्दिकता से करता था—बिना किसी प्रयास के, जैसे अनायास ही—कि कुछ कहते नहीं बनता था।

"मिसाल के तौर पर तुम अपने घर को ही लो," वह कह रहा था, "तुम्हारी मां, इसमें शक नहीं, मुझे अच्छी नज़र से देखती हैं,—इतनी भली है वह! और तुम... सच मैं नहीं जानता कि तुम मेरे बारे में क्या सोचती हो। और जहां तक तुम्हारी बुआ का सम्बन्ध है, वह तो मुझे फूटी आंखों नहीं देख सकती। शायद वह भी मेरी किसी उद्धत, मूर्खता-भरी बात से नाराज़ है। वह मुझे पसन्द नहीं करती,—क्यों ठीक है न?"

"ठीक है," एक क्षण कुछ हिचकिचा कर लीज़ा ने स्वीकार किया, "वह तुम्हें पसन्द नहीं करती।"

पान्शिन की उंगलियां पियानो के पर्दों पर घूम गईं और उसके होंठों पर एक हल्की व्यंगपूर्ण मुसकान थिरकने लगी।

"और खुद तुम," उसने कहा, "क्या तुम भी मुझे अहंवादी समझती हो?"

"मैं तुम्हें बहुत ही कम जानती हूं," लीज़ा ने जवाब दिया, "लेकिन मैं तुम्हें अहंवादी नहीं समझती। उल्टे मुझे तुम्हारा कृतज्ञ होना चाहिए कि..."

"ओह, मैं जानता हूं—मुझे मालूम है कि तुम क्या कहने जा रही हो," पर्दों पर एक बार फिर अपनी उंगलियों को दौड़ाते हुए पान्शिन ने बीच में ही कहा, "संगीत के लिए, उन पुस्तकों के लिए जो मैं तुम्हें देता हूं, और उन भद्दे चित्रों के लिए जो मैंने तुम्हारे अलबम में टांक दिए हैं,—आदि-आदि। लेकिन यह सब करते हुए भी तो मैं अहंवादी हो सकता हूं। मैं यहां तक आशा करने का दुस्साहस करता हूं कि तुम्हें मेरा साथ उबा देने वाला नहीं मालूम होता, या यह कि तुम मुझे बुरा आदमी नहीं समझती। लेकिन, यह सब होने पर भी, शायद तुम सोचती हो कि मैं—भला, क्या है वह कहावत—केवल छेड़छाड़ की ख़ातिर भी किसी को नहीं बख़्श सकता,—न मित्र को, न पिता को।"

"बात यह है कि तुम," लीज़ा ने कहा, "अन्य सभी यारबाशों की भांति, कुछ ध्यान नहीं रख पाते और बड़ी जल्दी भूल जाते हो। बस इतना ही, और कुछ नहीं।"

पान्शिन की भौंहों में हल्के बल पड़ गए। "बस-बस," उसने कहा, "मेरे बारे में बातें बहुत हो लीं। अब गीत की ओर ध्यान दो। लेकिन एक बात है जो मैं तुमसे पूछना चाहता हूं," स्टैण्ड पर रखी

संगीत-पुस्तक के पन्नों की सलवट सीधी करते हुए उसने कहा, "तुम्हें पूरी छूट है कि मेरे बारे में जो जी में सोचो, – चाहो तो तुम मुझे अहंवादी तक करार दे सकती हो, – मैं बुरा नहीं मानूंगा। लेकिन मुझे यारबाश न कहो। यह एक घिनौना बिल्ला है – मैं भी एक कलाकार हूं, और यह – यह तथ्य कि मैं एक दुर्बल कलाकार हूं – अभी इसी समय सिद्ध हो जाएगा। अच्छा तो अब शुरू करें ।"

"हां, अब शुरू करें," लीज़ा ने कहा।

पहली विलम्बित स्वरावली काफ़ी अच्छी तरह सम्पन्न हो गयी, हालांकि पान्शिन रह-रह कर भटक जाता था। खुद अपने गीतों और धुनों को, जिनका उसे रियाज़ होता था, वह अच्छा बजाता था। लेकिन स्वर-लिपि को देख कर बजाने का वह अभ्यस्त नहीं था। गीत का दूसरा अंश – जो कि काफ़ी गतिशील द्रुत-स्वरावली थी – एकदम जान-मार सिद्ध हुआ। बीसवें स्वर तक पहुंचते न पहुंचते, – वह दो स्वर पीछे रह गया था – पान्शिन ने उसे धता बताई और हंसते हुए अपनी कुर्सी को पीछे खींच लिया।

"बेकार!" उसने चिल्लाकर कहा, "आज मामला कुछ जम नहीं रहा। ग़नीमत यही है कि लेम्म ने हमें नहीं सुना, नहीं तो उसे दौरा आ जाता।"

लीज़ा उठकर खड़ी हो गई, पियानो को उसने बन्द कर दिया और पान्शिन की ओर घूम गई।

"हां, तो अब हम क्या करें?" उसने पूछा।

"यह सवाल ठीक तुम्हारे ही जैसा है, – एकदम तुम्हारे अनुरूप। तुम पल-भर भी सुस्त नहीं बैठ सकतीं। अच्छी बात है, अगर तुम चाहो तो कुछ देर चित्र बना सकते हैं। अभी रोशनी है। हो सकता है कि कला की यह देवी – चित्रकला की देवी... जाने क्या नाम है उसका, कुछ

याद नहीं पड़ता... मुझसे कुछ अधिक प्रसन्न नज़र आए। तुम्हारा अलबम कहां है? अगर मैं भूलता नहीं तो मेरा वह दृश्यचित्र अभी अधूरा ही पड़ा है..."

लीज़ा दूसरे कमरे से अपना अलबम लाने के लिए बाहर चली गई। पान्शिन कमरे में अकेला रह गया। उसने अपनी जेब से कैम्ब्रिक कपड़े का रूमाल निकाला, उससे अपने नाखूनों को रगड़ा और फिर, आंखों को कुछ सिकोड़ कर, अपने हाथों का मुआइना करने लगा। उसके हाथ खूब गोरे और कमनीय थे। बाएं हाथ के अंगूठे में वह सोने का एक बलदार छल्ला पहने था। लीज़ा लौट आई। पान्शिन खिड़की के पास जाकर बैठ गया, और उसने अलबम को खोल लिया।

"ठीक," उसने कहा, "सो तुमने मेरे दृश्यचित्र की अनुकृति बनानी शुरू कर दी,– बहुत बढ़िया। सच, बहुत बढ़िया! केवल यहां–ज़रा अपनी पेंसिल तो दो–छाया काफ़ी गहरी नहीं है। यह देखो, इधर।"

और पान्शिन ने अनेक लम्बी धारियां खींच दीं। वह हमेशा यही एक दृश्यचित्र बनाता था–अग्रभूमि में बड़े-बड़े टेढ़े-मेढ़े पेड़, पृष्ठभूमि में चरागाह का कुछ अंश और आकाश-रेखा पर कगारेदार पर्वत-शृंखला। लीज़ा उसके पीछे चित्र को देख रही थी।

"चित्रांकन में, और इसी प्रकार आम तौर से जीवन में भी," अपने सिर को पहले दाहिनी ओर फिर बाईं ओर झुकाते हुए पान्शिन ने कहा, "मुख्य चीज़ है: हल्कापन और साहसिकता!"

ठीक तभी लेम्म ने कमरे में प्रवेश किया और, रुखाई के साथ अपने सिर को थोड़ा झुकाने के बाद खिसकने ही वाला था कि अलबम और पेंसिल को दूर फेंकते हुए पान्शिन ने उसका रास्ता छेंक लिया।

"तुम जा कहां रहे हो, मेरे प्रिय क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच? क्या चाय के लिये भी नहीं रुकोगे?"

"मुझे घर जाना है," लेम्म ने रूखी आवाज़ में कहा, "मेरा सिर दर्द कर रहा है।"

"अरे, छोड़ो भी। थोड़ी देर रुको। शैक्सपीयर पर कुछ बातें करेंगे।"

"मेरा सिर दर्द कर रहा है," लेम्म ने फिर दोहराया।

"तुम्हारे पीछे हमने यहां बीटहोवन की एक धुन बजानी शुरू की," दुलार से उसके कन्धे पर अपनी बांह डालते और मधुर मुसकान से मुसकराते हुए पान्शिन कहता गया, "लेकिन कुछ बना नहीं। शायद तुम यकीन नहीं करोगे कि मैं लगातार दो स्वर भी सही नहीं निकाल सका।"

"अच्छा होता अगर तुम बीटहोवन को बख़्श देते और अपने उसी गीत को एक बार गा लेते।" पान्शिन की बांहों को हटाते हुए लेम्म ने पलटकर जवाब दिया, और वहां से चल दिया।

लीज़ा उसके पीछे लपकी और पोर्च में उसके निकट जा पहुंची।

"सुनो तो, क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच," अहाते की हरियाली ज़मीन को उसके साथ पार करते और दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए उसने जर्मन भाषा में कहा, "मैंने तुम्हारा जी दुखाया है। मुझे माफ़ करो।"

लेम्म ने कोई जवाब नहीं दिया।

"मैंने तुम्हारा भजन व्लादीमिर निकोलाइच को दिखा दिया। मुझे विश्वास था कि वह उसे पसन्द करेगा, —और सचमुच वह उसे बहुत पसन्द आया है।"

लेम्म ठिठक गया।

"ठीक है," उसने रूसी भाषा में कहा और उसके बाद अपनी मातृभाषा में बोला, "लेकिन क्या तुम यह नहीं जानती कि वह कुछ समझता-वमझता नहीं है? वह केवल खोखला चना है, —बस, और कुछ नहीं!"

"यह तुम उसके साथ अन्याय करते हो," लीज़ा ने बल देकर कहा,

"वह सब कुछ समझता है और शायद ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे वह खुद न कर सकता हो।"

"ठीक है। लेकिन उसकी हर चीज़ घटिया क़िस्म की, हल्की और बाज़ारू होती है। लोगों को ऐसी चीज़ें पसन्द आती हैं, इसलिए वे उसे पसन्द करते हैं, और वह इससे खुश है,—सो सभी कुछ वाह-वाह है। मैं ग़ुस्सा नहीं करता। वह भजन और मैं,—दोनों ही मूर्ख खूसटपन की निशानी हैं। मैं थोड़ा लज्जित ज़रूर हूं, लेकिन यह कोई ऐसी बात नहीं जिसे लेकर परेशान हुआ जाए।"

"मुझे माफ़ करो। क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच," लीज़ा फिर बुदबुदाई।

"ठीक है," उसने फिर रूसी में दोहराया, "तुम बहुत अच्छी लड़की हो... लेकिन यह देखो, इधर कोई आ रहा है। अच्छा तो विदा। तुम बहुत ही अच्छी लड़की हो।"

और लेम्म ने दरवाज़े की ओर जल्दी डग बढ़ाया। तभी एक अजनबी ने भीतर पांव रखा। वह भूरे रंग का कोट और चौड़े छज्जेवाला सीकों का हैट पहने था। लेम्म ने विनम्रता से झुक कर उसका अभिवादन किया (अजनबी लोगों का हमेशा अभिवादन करना और राह-बाट में मिल जाने पर परिचितों से कतराना उसका नियम था) और उसके पास से गुज़रता हुआ बाड़े के पीछे ओझल हो गया। अजनबी, अचरज भरा, उसे ओझल होता हुआ देखता रहा और फिर, लीज़ा पर ध्यान से नज़र जमाए, उसकी ओर बढ़ गया।

७

"तुमने मुझे नहीं पहचाना," अपने हैट को उठा कर अभिवादन करते हुए उसने कहा, "लेकिन मैंने तुम्हें पहचान लिया, हालांकि आठ साल हुए जब पिछली बार मैंने तुम्हें देखा था तब तुम छोटी थीं। मेरा

नाम लावरेत्स्की है। क्या तुम्हारी मां घर पर हैं? उनसे भेंट तो हो सकती है न?"

"मेरी मां आपसे मिलकर खुश होंगी," लीज़ा ने कहा, "वह आपके आगमन के बारे में सुन चुकी हैं।"

"तुम्हारा नाम, अगर मैं भूलता नहीं तो, येलिज़ावेता है?" पोर्च की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए लावरेत्स्की ने कहा।

"हां।"

"तुम मुझे ख़ूब अच्छी तरह से याद हो। उस समय भी तुम्हारा चेहरा ऐसा था कि आसानी से नहीं भूला जा सकता। मैं तुम्हारे लिए मिठाई लाया करता था।"

लीज़ा के गाल लाल हो गए और उसने मन ही मन सोचा: कितना अजीब आदमी है! लावरेत्स्की एक क्षण के लिए हाल में ठिठक गया। लीज़ा दीवानखाने की ओर बढ़ गई जहां से पान्शिन के बोलने और हंसने की आवाज़ आ रही थी। वह मारिया दिमीत्रियेवना और गेदेओनोवस्की को जो बाग़ में टहलने के बाद लौट आए थे, नगर का कोई छंटा हुआ किस्सा सुना रहा था और ख़ुद अपनी बातों पर ज़ोरों के साथ हंस रहा था। लावरेत्स्की का नाम सुनते ही मारिया दिमीत्रियेवना हड़बड़ा उठी, उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसे भेंटने के लिए आगे बढ़ चली।

"कहो, अच्छी तरह तो हो, भतीजे मेरे," उसने निःसत्व, क़रीब-क़रीब आंसुओं में भीगी, आवाज़ में चिल्ला कर कहा, "तुम्हें देखकर बेहद खुशी हुई!"

"और तुम कैसी हो, मेरी चाची?" उसके हाथ को मित्र-भाव से दबाते हुए उसने कहा, "तुम्हारे साथ तो खैर से गुज़र रही है न?"

"अरे खड़े क्यों हो, बैठ जाओ, फ़ियोदोर इवानिच। बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर। सब से पहले अपनी लड़की लीज़ा से परिचय करा दूं..."

"येलिज़ावेता मिख़ाइलोवना से तो मेरा परिचय हो गया," लावरेत्स्की ने बीच में ही कहा।

"और यह है मोसिये पान्शिन... और यह सेर्गेई पेत्रोविच गेदेओ-नोवस्की... अरे, बैठ जाओ, खड़े क्यों हो! सो तुम आ गए। सच, एकाएक आंखों को विश्वास नहीं होता: कहो, अच्छी तरह तो हो?"

"देख ही रही हो, मैं भला-चंगा तुम्हारे सामने मौजूद हूँ। और तुम... मेरी चाची... तुम भी अछूती मालूम होती हो। बिल्कुल वैसी ही जैसी कि आठ साल पहले थीं।"

"ज़रा सोचो तो, कितने दिनों बाद हम एक-दूसरे से मिल रहे हैं,—एक मुद्दत गुज़र गई," मारिया दिमीत्रियेवना ने कुछ सोच में कहा, "तुम कहां से आ रहे हो? तुम कहां... मेरा मतलब यह," अपने को संभालते हुए उसने कहा, "मतलब यह कि क्या तुम यहां काफ़ी दिन ठहरोगे?"

"मैं अभी बर्लिन से आ रहा हूं," लावरेत्स्की ने जवाब दिया, "और कल ही मैं देहात चला जाऊंगा—शायद एक लम्बे अर्से के लिए।"

"सो तुमने लावरिकी में रहने का निश्चय किया है,—क्यों?"

"नहीं, लावरिकी में नहीं। यहां से बीसेक मील दूर मेरा एक छोटा-सा गांव है। मेरा इरादा वहीं जाने का है।"

"क्या यह वही गांव है जो तुम्हें ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना से विरासत में मिला है?"

"हां वही।"

"लेकिन फ़ियोदोर इवानिच, लावरिकी में तुम्हारे पास इतना प्यारा घर है।"

लावरेत्स्की की भौंहों में कुछ बल पड़ चले।

"हां . . . लेकिन उस गांव में भी एक छोटा-सा घर है। फिलहाल मेरे लिए वह बहुत काफ़ी है। उससे अधिक की मुझे अभी कुछ ज़रूरत भी नहीं है।"

मारिया दिमीत्रियेवना कुछ इतनी अचकचा गई थी कि उसका सारा लोच ग़ायब हो गया और कुर्सी में अकड़कर बैठे हुए अनमनी-सी उसने अपना हाथ हिलाया। उसकी मदद के लिए पान्शिन आगे बढ़ा और लावरेत्स्की से बतियाने लगा। मारिया दिमीत्रियेवना ने अपने को संभाल लिया और आरामकुर्सी में अपना वदन ढीला छोड़ कर बैठ गई। बीच-बीच में एकाध शब्द बोल देती, नहीं तो आगन्तुक की ओर देखती रहती। वह कुछ ऐसे करुण भाव से देख रही थी, कुछ इतनी अभिभूत होकर अपनी गरदन को हिला और भारी उसासें भर रही थी कि अन्त में आगन्तुक से नहीं रहा गया और खीज कर तीखी आवाज़ में उसने पूछा कि कहीं उसकी तबीयत तो खराब नहीं है।

"भला हो भगवान का, मैं अच्छी तरह हूं," मारिया दिमीत्रियेवना ने जवाब दिया, "लेकिन तुमने यह क्यों पूछा?"

"ऐसे ही। मुझे कुछ ऐसी झलक मिली जैसे तुम अपने-आप में नहीं हो।"

मारिया दिमीत्रियेवना भीतर से आहत हो उठी। मन ही मन उसने सोचा: "अगर इतना ही है तो कोई बात नहीं। मैं निश्चय ही अपने को परेशान नहीं करूंगी। तुम्हारा क्या है, तुम तो बत्तख के समान हो,— जिसपर पानी की बूंद नहीं टिकती। तुम्हारी जगह कोई दूसरा होता तो घुलघुल कर छाया-मात्र बन गया होता, लेकिन तुम हो कि स्वास्थ्य फूट पड़ता है।" मारिया दिमीत्रियेवना मन ही मन शब्दों को उछालने में इतनी दक्ष नहीं थी, बल्कि बोल कर बहुत ही नफ़ासत के साथ अपने-आप को व्यक्त करती थी।

लावरेत्स्की सचमुच ऐसा नहीं मालूम होता था कि वह भाग्य का सताया हुआ हो। लाल दमकता हुआ उसका विशिष्ट रूसी चेहरा, ऊंचा और सफ़ेद माथा, कुछ मांसल नाक, और चौड़ा सुघड़ मुंह बहुत ही सजीव और प्राणवान मालूम होता था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह स्तेप की – उन सुविस्तृत मैदानों की जिनका कि वह रहनेवाला था– आदिम स्वच्छन्दता से छलछला रहा हो। उसका बदन बहुत ही चुस्त और गठा हुआ था, और उसके भूरे बाल लड़कों की भांति घुंघराले थे। केवल उसकी आंखों में – जो नीली, बहुत ही उभरी हुई और कुछ निश्चल-सी थीं – उदासी का – या थकावट का – पुट नज़र आता था। और उसकी आवाज़ भी कुछ ज़रूरत से ज़्यादा सपाट थी।

इस बीच पान्शिन बातचीत के सिलसिले को किसी प्रकार चालू रखे रहा। इस समय वह चीनी साफ़ करने के फ़ायदों के बारे में बतिया रहा था। हाल ही में फ़्रान्सीसी भाषा में इस विषय की दो पुस्तिकाएं उसने पढ़ी थीं और थिर विनम्रता के साथ, उन पुस्तकों का कुछ भी हवाला दिए बिना, वह उनमें लिखी बातों का प्रतिपादन कर रहा था।

"अरे, यह तो फ़ेदिया मालूम होता है," सहसा अगले कमरे के अधखुले दरवाज़े में से मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की आवाज़ सुनाई दी, "निश्चय ही यह फ़ेदिया है!" और वृद्धा तेज़ी से कमरे में आ गई। इससे पहले कि लावरेत्स्की को खड़े होने का मौका मिलता, उसने उसे अपनी बांहों में लपेट लिया। "अरे, ज़रा तुम्हारी शक्ल तो देखूं।" उसने छलछला कर कहा और एक डग पीछे हट कर उसे देखने लगी। "ओह, कितने सलोने आदमी हो तुम। कुछ बुढ़ा ज़रूर गए हो, लेकिन सच, इससे तुम्हारे सलोनेपन में फ़र्क़ नहीं आया। अरे नहीं, मेरे हाथों को नहीं, मगर चूमना ही हो तो यह लो, मुझे चूमो – अगर मेरे

झुर्रियोंदार गालों से तुम्हें घिन न ग्राती हो तो। मैं नहीं समझती कि तुम्हें मेरी कभी याद ग्राती होगी, ग्रौर तुमने पूछा होगा कि क्या बुग्रा ग्रभी तक जिन्दा है? ग्ररे, तुम्हें क्या मालूम कि तुमने मेरे इन हाथों में ही जन्म लिया था। ग्ररे नहीं, मेरी बातों का बुरा न मानना। तुम्हें मेरी याद भला ग्रा भी कैसे सकती थी। तुमने बहुत ही ग्रच्छा किया जो यहां ग्राए। ग्ररे सुनो तो, मेरी बिट्टो," मारिया दिमीत्रियेवना की ग्रोर मुड़ते हुए उसने कहा, "इसकी कुछ खातिर-वातिर भी की या यों ही?..."

"ग्ररे नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए," लावरेत्स्की ने तुरत घोषित किया।

"लेकिन, मेरे प्रिय, कम से कम एक प्याला चाय तो होना ही चाहिए। हाय भगवान, जाने कितनी दूर से यह ग्रा रहा है ग्रौर इसे एक प्याला चाय तक किसी ने नहीं दी। लीज़ा, ज़रा लपक कर जाग्रो ग्रौर जल्दी से कुछ करो। मुझे याद है कि जब यह छोटा था तो खाने की चीज़ों पर बुरी तरह टूटता था। बचपन की ग्रादत क्या ग्रासानी से छूटती है?"

"मेरा सादर प्रणाम स्वीकार करें, मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना," गरदन झुकाते ग्रौर हड़बड़ाहट में डूबी वृद्धा के बराबर पहुंचते हुए पान्शिन ने कहा।

"माफ़ करना, महाशय," मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने कहा, "इस हलचल में मैंने तुम्हें देखा तक नहीं। तुम ग्रब भी वैसे ही हो,–ठीक ग्रपनी मां की भांति," लावरेत्स्की की ग्रोर मुड़ते हुए उसने कहना शुरू किया, "केवल तुम्हारी नाक को छोड़ कर, जो तुम्हारे पिता के समान थी ग्रौर ग्राज भी वैसी ही है। हां तो ग्रब कुछ दिन जमकर रहोगे न?"

"नहीं, मैं कल ही जा रहा हूं, चाची।"

"कहां जा रहे हो?"

"वसीलेवस्कोये अपने घर।"

"कल ही जा रहे हो?"

"हां, कल ही।"

"अच्छी बात है। अगर कल जाना है तो कल ही सही। भगवान सब भला करेगा। जैसा ठीक समझो करो। लेकिन जाने से पहले मिलना न भूलना।" वृद्धा ने उसका गाल थपथपाया, "मुझे तो ख़याल तक नहीं था कि तुम्हें फिर कभी देख सकूंगी। इसलिए नहीं कि मैं मौत से गले मिलने जा रही हूं,—अरे नहीं, अभी कम से कम दस साल तक तो मेरा बाल बांका होता नहीं। हम पेस्तोव काफ़ी कड़ी जान वाले जीव हैं। तुम्हारे दादा कहा करते थे कि हम दोहरी ज़िन्दगी लेकर जन्मे हैं। लेकिन यह शायद भगवान भी नहीं जानता कि विदेशों में तुम कब तक भटकते रहते। चलो तुम प्यारे लड़के हो। क्या तुम अब भी अपने एक हाथ से चार मन भारी वज़न उठा सकते हो, जैसे कि तुम पहले उठाया करते थे? तुम्हारे पिता ने, बेहूदा आदमी होते हुए भी—मुझे माफ़ करना ऐसा कहने के लिए—यह अच्छा काम किया जो उन्होंने तुम्हारी शिक्षा के लिए स्वीटज़रलैंड के उस निवासी को नियुक्त कर दिया। क्या तुम्हें याद है कि तुम दोनों किस तरह मुक्का-युद्ध किया करते थे? अगर मैं भूलती नहीं तो इसे कसरत कहा जाता था। हाय हाय, मैं हूं कि बराबर कुड़कुड़ाए जा रही हूं और नाहक श्री पन्शीन की बातों में खलल डाल रही हूं (वह उसे कभी पान्शिन नहीं कहती थी जो कि उसका सही नाम था)। जो हो अब चाय पी ली जाए। चलो, बाहर बरामदे में चलें। बहुत ही बढ़िया मलाई है हमारे पास, उस तरह की नहीं जैसी कि तुम्हारे लन्दन और पेरिस-वैरिस में मिलती है। चलो अब, अरे, चलो भी,—और तुम, मेरे प्रिय फ़ेदिया, ज़रा अपनी बांह इधर करो। हाय हाय, कितनी मज़बूत है यह। गिरने का डर सपने भी नहीं।"

गेदेग्रोनोवस्की को छोड़ जो चुपचाप बाहर खिसक गया था, पूरी मण्डली उठ कर बरामदे में पहुंच गई। घर की मालकिन, पान्शिन ग्रौर मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के साथ लावरेत्स्की की बातचीत के समूचे दौरान में गेदेग्रोनोवस्की एक कोने में बैठा ध्यान से ग्रांखें मिचमिचा रहा था ग्रौर बालकों की भांति कौतुक से मुंह बाए था। ग्रब वह, नगर में इस नये ग्रतिथि की खबर फैलाने, तेज़ी से लपक गया था।

उसी दिन, रात के ग्यारह बजे, मदाम कलीतिना के घर पर, निम्न दृश्य प्रस्तुत हुग्रा। नीचे, दीवानखाने की ड्योढ़ी पर, उपयुक्त मौका पाकर, व्लादीमिर निकोलाइच लीज़ा से विदा ले रहा था ग्रौर उसका हाथ ग्रपने हाथ में थामे कह रहा था: "तुम जानती हो कि मैं यहां क्यों ग्राता हूं, तुम्हें मालूम है कि मैं क्यों बराबर तुम्हारे घर के चक्कर लगाता हूं, जो चीज़ इतनी साफ़ है, उसके बारे में कुछ कहने की ज़रूरत नहीं?" लीज़ा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह मुसकराई तक नहीं, केवल ग्रपनी भौंहों को कुछ ऊंचा उठाए फ़र्श की ग्रोर देखती ग्रौर लाज से लाल होती रही। ग्रौर उसने ग्रपना हाथ भी खींच कर ग्रलग नहीं किया। इसी समय, ऊपर मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के कमरे में, काली-पड़ी देव प्रतिमाग्रों के सामने लटकते तेल-लैम्प की धुंधली रोशनी में लावरेत्स्की एक ग्रारामकुर्सी पर बैठा था, ग्रपनी कोहनियों को घुटनों पर टिकाए ग्रौर चेहरे को हाथों से ढके। वृद्ध महिला, उसके सामने खड़ी, चुपचाप उसके बालों को सहला रही थी। घर की मालकिन से विदा लेने के बाद एक घंटे से भी ग्रधिक से वह उसके साथ था। ग्रपनी इस वृद्ध सहृदया मित्र से मुश्किल से ही उसने कुछ कहा होगा, ग्रौर उसने भी उससे कोई पूछताछ नहीं की... सच तो यह है कि कुछ बतियाने या पूछताछ करने की ग्रावश्यकता भी नहीं थी। वह सब कुछ समझती थी। उसके हृदय में उस ग्रभागे के लिए पूरी सम्वेदना थी।

फ़ियोदोर इवानोविच लावरेत्स्की (कुछ देर के लिए कहानी के सूत्र को छोड़ देने के लिए हम अपने उदार पाठकों से क्षमा चाहते हैं) पुराने कुलीन घराने की पौध था। लावरेत्स्की परिवार के प्रथम पूर्वज वसीलि त्योम्नी के शासन-काल में प्रशिया से रूस में आकर बस गए थे और उन्हें बेज्जेत्स्क-वेर्ख में एक सौ एकड़ भूमि जागीर में मिल गई थी। उनके वंशजों में अनेक ओहदों पर पहुँचे और सुदूर प्रान्तों में राजाओं और कुलीनों की सेवा करते रहे। लेकिन उनमें से एक भी 'डेपीफर' के दर्जे से अधिक ऊंचा पद या विशेष सम्पत्ति प्राप्त नहीं कर सका। इन सबमें ज़्यादा धनी और ज्यादा उल्लेखनीय फ़ियोदोर इवानिच का परदादा आन्द्रेई था। वह बहुत ही क्रूर, उद्धत, चौकस और चालबाज़ आदमी था। उसकी निरंकुशता, उसके तूफ़ानी स्वभाव, विकट उदारता और कभी न बुझनेवाली लालच के किस्से आज दिन भी प्रचलित थे। वह ख़ूब मोटा-ताज़ा और लम्बे कद का आदमी था। सांवले रंग का था, और चेहरा दाढ़ी-विहीन। वह बर्रा कर बोलता था और उनींदा-सा नज़र आता था। लेकिन उसकी आवाज़ जितनी अधिक मुलायम होती थी, उतना ही अधिक आस-पास के लोग उससे थर्राते थे। उसकी पत्नी भी ठीक उसकी जोड़ की थी। अटेरन-सी आंखें, तोते ऐसी नाक, गोल-मटोल पीलापन लिए मुंह, जन्म से जिप्सी, ज़ुबान की तेज़ और प्रतिशोध की भावना से पूर्ण। पति उसके लिए मानों मौत था, लेकिन वह उसके आगे कभी नहीं झुकती थी। कुत्ते-बिल्ली की तरह जीवन-भर पति के साथ झगड़ते रहने पर भी वह उसके तुरन्त बाद ही चल बसी। आन्द्रेई का लड़का प्योत्र — फ़ियोदोर का दादा — अपने पिता से बिलकुल भिन्न था: स्तेप का एक सीधासादा ज़मींदार, — अस्थिर-दिमाग़,

चिल्लाकर बोलने वाला, निश्चल और भावशून्य, रूखा लेकिन स्वभाव का भला, मेहमाननवाज़ और कुत्तों को साथ लेकर शिकार खेलने का शौकीन। वह तीस वर्ष की अवस्था में ही दो हजार बन्धक दासों से युक्त एक बहुत अच्छी जागीर का–जो उसे विरासत में मिली थी–मालिक बन गया। लेकिन उसने शीघ्र ही उन सब दासों को इधर-उधर खदेड़ दिया, अपनी पैतृक सम्पति का एक भाग बेच दिया और हाली मवालियों को सिर पर चढ़ा लिया। दुनिया-भर के ऐरे-गैरे, नियमित रूप से आनेवाले भी और अजनबी भी, उसके विशाल, सुहावने, लेकिन अस्तव्यस्त प्रासाद में तिलचट्टों की भांति रेंगते रहते थे। यह पूरी फ़ौज जो कुछ भी मिलता ठूंस-ठूंस कर खाती, इतना पीती कि नशे में धुत्त हो जाती, जिस चीज़ पर हाथ पड़ता उसे साफ़ कर देती, अपने उदार मेज़बान के गुण गाती और उसकी खैर के लिए दुआ मांगती, और उनका मेज़बान, खीज उठने पर, अपने इन मेहमानों को खाऊ और लफ़ंगे कहता, लेकिन उनके अभाव में उसे जीवन नीरस मालूम होता। प्योत्र आन्द्रेइच की पत्नी बहुत ही मृदु और कोमल स्त्री थी। अपने पिता के आदेश और चुनाव के अनुसार अपने एक पड़ोसी परिवार में से उसने उसे ग्रहण किया था। उसका नाम आन्ना पावलोवना था। वह कभी किसी चीज़ में दख़ल नहीं देती थी, वह बहुत ही प्रसन्न मेज़बान थी, बड़ी खुशी से दूसरे के यहां खुद मिलने-जुलने जाती थी, हालांकि पाउडर पोतवाना–उसी के शब्दों में–उसे एक बहुत बड़ी ज़हमत मालूम होती थी। वृद्ध होने पर वह अपने संस्मरण सुनाती: "सिर पर वे फेल्ट का एक कनटोप लगा देते, बालों को खींचतान कर घंटों उनमें कंघी करते, चिकनाई में उन्हें लथेड़ते, आटे से उन्हें छा देते और समूचे सिर में इतनी पिनें लगाते कि कसम खाने को भी कोई जगह न बचती,–सब कुछ इतना पक्का कि लाख धोने पर भी उससे छुटकारा न मिले, तिस पर

मुसीबत यह कि बिना पाउडर पोतवाए किसी के सामने जाने का साहस तक नहीं किया जा सकता था—लोग इसे अपना अपमान समझते थे। ओह, कितनी भारी यंत्रणा थी वह!" गाड़ी में घुड़दौड़ के तेज़ घोड़े जोतवा कर घूमने जाने की वह शौकीन थी, सुबह से सांझ तक ताश खेलने के लिए तैयार रहती थी, और जब कभी उसका पति ताश खेलने की मेज़ के निकट आ जाता था तो अपनी जीत का हिसाब छिपा लेती थी, हालांकि अपना समूचा दहेज, अपना समूचा धन, उसने अपने पति के हाथों में पूर्णतया सौंप रखा था। उसके दो बच्चे हुए—एक लड़का इवान, फ़ियोदोर का पिता, और एक लड़की ग्लाफ़ीरा। इवान का लालन-पालन घर पर नहीं हुआ, बल्कि एक धनी चाची ने—रानी कुबेन्स्काया ने—उसे पाला-पोसा, और उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया (अन्यथा उसका पिता उसे कभी न जाने देता)। वह गुड़िया की भांति उसका सिंगार करती, उसके लिए दुनिया-भर के शिक्षकों की फ़ौज बटोरती। उसके संरक्षण के लिए एक फ्रान्सीसी ट्यूटर को उसने नियुक्त किया। वह रूसो का चेला और भूतपूर्व पादरी था। उसका नाम कोर्तिन दे वोसेल था—बहुत ही चिकना और चतुर, जोड़-तोड़ लगाने में दक्ष और, जैसा कि वह कहा करती अत्युत्कृष्ट प्रवासी। अन्त में, सत्तर वर्ष की भरी-पूरी और पक्की उम्र में इस प्रवासी के साथ उसने विवाह कर लिया, अपनी समूची सम्पत्ति उसके नाम कर दी। इसके कुछ ही दिन बाद, साज-सिंगार और पाउडर-लाली से लिपी-पुती, फ़्रान्सीसी इत्र में बसी, हब्शी, छोकरा-टहलुवों, गोदी के कुत्तों और टिटियाते हुए तोतों के बीच, हाथ में मीने के काम की एक नन्ही-सी सुंघनी की डिबिया लिए, लुई पन्द्रहवें के समय के एक टेढ़े रेशमी दीवान पर इस दुनिया से विदा हो गई,—एकदम अकेली, पति द्वारा परित्यक्ता। उसका मिठबोला पति मोसिये कोर्तिन, और किसी चीज़ में सार न देख, उसकी सारी पूंजी बटोर

पहले ही पेरिस के लिए चम्पत हो गया था। इवान उस समय बीस वर्ष का था जब यह अप्रत्याशित दुर्घटना (हमारा आशय रानी के विवाह से है, उसकी मृत्यु से नहीं) उसके सिर पर आकर गिरी। अपनी चाची के घर में रहना अब उसके लिए दूभर हो गया। कहां तो वह बड़ी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी था, और कहां वह अब—एकाएक पराये माल पर जीने वाला बन गया था। पीटर्सबर्ग का समाज भी, जिसकी हवा में वह सांस लेता था, उसके लिए बन्द हो गया। मेहनत के काम और सिविल सर्विस में टुच्ची नौकरी से वह भन्नाता था (यह सम्राट अलेक्सान्द्र के शासन के आरम्भिक-काल की बात है)। सो, मजबूर होकर, उसे देहात में अपने पिता के घर की शरण लेनी पड़ी। पुराना घर उसे गंदा, गरीबी में डूबा और भद्दा मालूम होता था। दूर देहात का सूनापन और गंद हर डग पर उसे कचोटती थी। वह बुरी तरह ऊब चला। उधर घर का हर व्यक्ति—केवल मां को छोड़ कर—उसे टेढ़ी नज़रों से देखता था। उसके पिता को उसके शहरी रंग-ढंग से नफ़रत थी। उसका फ़्राक कोट, उसकी चुनटें, पुस्तकें, उसकी बांसुरी, उसकी नफ़ासत-पसन्दी – प्रकट रूप में हर चीज़ पर उसका नाक-भौंह सिकोड़ना, उसके पिता को नहीं सुहाता और अपने पुत्र को लेकर वह अक्सर बड़बड़ाता और शिकायतों का तूमार बांधे रहता। "इसका मिज़ाज ही नहीं मिलता," वह कहा करता, "हर चीज़ पर नाक सिकोड़ता है। खाना देखते ही माथे में बल पड़ जाएंगे और खाने से इन्कार कर देगा। लोगों को देखकर इसे उबकाई आती है और कमरों में इसका दम घुटता है। नशे में किसी को देखता है तो उसके सारे तार झनझना उठते हैं, और इसके रहते किसी बंधक दास को पीटना तो और भी मुसीबत है। सिविल सर्विस में जाएगा नहीं,—क्या करे, तबीयत इतनी नाज़ुक है कि नौकरी का बोझ बरदाश्त नहीं कर सकती! आदमी क्या है पिंजरे की मैना है। और सब केवल

इसलिए कि उसके दिमाग में वाल्टेयर की खुराफ़ात भरी है।" वृद्ध को वाल्टेयर और ईश्वर द्रोही डिडेरो से खास चिढ़ थी, हालांकि उसने उनका लिखा हुआ एक शब्द भी नहीं पढ़ा था, — पुस्तकों की दुनिया से उसका कोई वास्ता नहीं था। लेकिन प्योत्र आन्द्रेइच का अन्दाज़ा गलत नहीं था। डिडेरो और वाल्टेयर, और साथ ही रूसो, रेनाल, हेलवेतियस और इसी तरह के अन्य कितने ही लेखक, उसके पुत्र के दिमाग में गड़बड़ मचाए थे। लेकिन यह गड़बड़ उसके दिमाग तक ही सीमित थी। इवान पेत्रोविच का भूतपूर्व निर्देशक और अवकाश प्राप्त पादरी हर तरह की किताब खुद पढ़ता था और उसने अठारहवीं शती का समूचा बुद्धिचातुर्य उसके दिमाग में उंडेल दिया था, उसे खूब ठसाठस भर दिया था। लेकिन वह सब उसके रक्त में नहीं समा सका, या उसके अन्तर्तम में उसने प्रवेश नहीं किया, या दृढ़ विश्वासों के रूप में वह प्रकट नहीं हुआ... और पचास साल पहले के एक युवक से दृढ़ विश्वासों की मांग करना क्या ठीक होगा, — खास तौर से उस हालत में जब कि हम खुद आज दिन भी, उन्हें अपने जीवन में नहीं उतार सके हैं। उसके पिता के मेहमान तक इवान पेत्रोविच की उपस्थिति में संकोच का अनुभव करते। वह उनसे घृणा करता और वे उससे डरते। और जहां तक उसकी बहिन ग्लाफ़ीरा का सम्बन्ध था — वह उससे बारह साल बड़ी थी — उसके साथ उसकी ज़रा भी पटरी न बैठती। यह ग्लाफ़ीरा भी एक अजीब जीव थी: बदसूरत, कूबड़ी और दुबली-पतली, कठोर और फैली हुई आंखें, पतले और कसे हुए होंठ, — शक्लसूरत में, बोलचाल में, अंगों के नोकनुकीलेपन और द्रुत संचालन में वह अपनी जिप्सी नानी — आन्द्रेई की पत्नी — से मिलती थी। ज़िद्दी और अहम्मन्य, विवाह का नाम तक सुनकर भड़क उठती। इवान पेत्रोविच का घर लौट आना उसे अच्छा नहीं लगा। जब तक वह रानी कुबेन्स्काया के संरक्षण

में रहा, तब तक उसे उम्मीद थी कि उसके पिता की जागीर का कम से कम ग्राधा हिस्सा तो उसे मिल ही जाएगा। कंजूसी में भी वह ग्रपनी नानी से पीछे नहीं थी। इसके ग्रलावा वह ग्रपने भाई से ईर्ष्या करती थी। वह इतना पढ़ा-लिखा था ग्रौर फ़्रान्सीसी उच्चारण के साथ बहुत ही बढ़िया फ़्रेंच बोलता था, जबकि वह बड़ी मुश्किल से फ़्रेंच भाषा में केवल "शुभ दिवस" ग्रौर "ग्रच्छी तरह तो हो" कह पाती थी। यह सच था कि उसके माता-पिता फ़्रेंच भाषा से एकदम कोरे थे, लेकिन इससे उसकी खीज दूर न होकर ग्रौर बढ़ जाती थी। सो इवान पेत्रोविच बुरी तरह उकता गया था, ग्रौर समय काटे नहीं कटता था। देहात में रहते ग्रभी एक साल भी नहीं हुग्रा था, लेकिन यह एक साल भी दस के बराबर मालूम होता था। केवल एक मां ही ऐसी थी जिसके सामने वह ग्रपना हृदय हल्का कर सकता था। नीची छतवाले कमरों में वह घंटों उसके पास बैठा रहता, उस भली स्त्री की सौष्ठव-विहीन बातें सुनता ग्रौर मुरब्बे की रकाबियां खाली करता जाता। ग्रान्ना पावलोवना की दासियों में एक बहुत ही सुन्दर लड़की थी। स्वच्छ कोमल ग्रांखें ग्रौर कोमल नख-शिख, – मलानिया नाम – बहुत ही चतुर ग्रौर लजीली लड़की। वह उसकी कल्पना में तुरत समा गई, ग्रौर वह उससे प्रेम करने लगा। उसका सहमा-सा ग्रन्दाज़, लाज में डूबे उसके जवाब, उसकी कोमल ग्रावाज़ ग्रौर मृदु मुसकान, उसे बड़ी प्यारी मालूम होती। उसका यह प्रेम दिन-दिन लहकता ग्रौर ज़ोर पकड़ता गया। वह खुद भी, ग्रपनी ग्रात्मा की समूची शक्ति से, इवान पेत्रोविच को चाहने लगी। वह उसे इस तरह प्यार करती जैसे कि केवल एक रूसी लड़की ही प्यार कर सकती है, – ग्रौर वह उसके प्रेम में ग्रपने को न्योछावर कर देती। एक देहाती श्रीमन्त के घर में कोई भी भेद ग्रधिक दिनों तक छिपा नहीं रह सकता। मलानिया के साथ छोटे मालिक की सांठ-गांठ का हाल शीघ्र

ही सब पर ज़ाहिर हो गया। अन्ततोगत्वा इसकी खबर प्योत्र आन्द्रेइच के कानों तक भी पहुंची। अगर और कोई समय होता तो इतनी मामूली-सी बात को वह नज़रन्दाज़ कर जाता, लेकिन वह अपने लड़के के विरुद्ध बहुत दिनों से खार खाए बैठा था, सो पीटर्सबर्ग के इस विद्याधारी छैलचिकनिया को नीचा दिखाने का यह मौका उसने हाथ से नहीं जाने दिया,—बल्कि झपट कर उसे लपक लिया।

इसके बाद खूब हल्लागुल्ला मचा, एक तूफ़ान-सा उठ खड़ा हुआ। मलानिया को लकड़ियों के गोदाम में बंद कर दिया गया और इवान पेत्रोविच की पिता के सामने पेशी हुई। आन्ना पावलोवना हल्लागुल्ला सुन लपक कर बाहर आ गई। उसने अपने पति को शांत करने की कोशिश की, लेकिन प्योत्र आन्द्रेइच ने समझाने-बुझाने की ओर ध्यान तक नहीं दिया। वह अपने लड़के पर झपटा, चरित्रहीनता के आरोपों और धर्म-द्रोह तथा छल-कपट के लांछन उसपर थोप दिये। अपने समूचे अवरुद्ध विक्षोभ को—उसे भी जो कि रानी कुबेन्स्काया के विरुद्ध उसके हृदय में जमा था—उसने उसपर उंडेला और खुलकर अपमानों की उसपर बौछार की। शुरू-शुरू में इवान पेत्रोविच ने कुछ नहीं कहा, वह अपने-आपको रोके रहा, लेकिन जब उसके पिता के दिमाग पर उसे अपमानजनक सजा तक देने का फ़ितूर सवार हुआ तो उससे नहीं रहा गया। "सो," उसने मन ही मन कहा, "धर्मद्रोही डिडेरो को तुम फिर खींच लाए,—अच्छी बात है, अब तुम उसका भी रंग देखना। ज़रा ठहरो, अभी सब मालूम हो जाएगा।" इसके बाद बहुत ही शान्त और स्थिर आवाज़ में—हालांकि उसका अन्तर थरथरा रहा था—इवान पेत्रोविच ने अपने पिता को बताया कि चरित्रहीनता का उसका आरोप बेमानी है, और यह कि अपने अपराध की सफ़ाई देने का उसका कोई इरादा नहीं है, लेकिन वह उसका भुगतान करने के लिए तैयार है,—इसलिए और भी

अधिक क्योंकि वह अपने-आपको सभी तास्सुबों से मुक्त मानता है—और सच पूछो तो—वह मलानिया से विवाह करने के लिए तैयार है। इन शब्दों के उच्चारण के साथ, बिला शक, इवान पेत्रोविच ने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया। प्योत्र आन्द्रेइच को जैसे काठ मार गया और एक क्षण तक, हत्‌बुद्धि-सा, अपने लड़के की ओर ताकता रहा। लेकिन अगले ही क्षण उसने अपने-आप को संभाला और जिस हालत में भी वह उस समय था—गिलहरी की खाल की जाकेट और नंगे पांवों में स्लीपर पहने—वैसे ही वह अपने लड़के पर टूट पड़ा और मुक्कों की बौछार करने लगा। लड़के ने भाग्य की बात, उस दिन टिट्यू-ढंग से अपने बालों को संवारा था, अंग्रेज़ी काट का नया फ़ाककोट, छोटे-छोटे फुन्दने लगे ऊंचे जूते और साबर की खूब चुस्त ठाठदार ब्रिचेज़ वह पहने था। आन्ना पावलोवना फुक्का मार कर चीख उठी और हाथों में उसने अपना मुंह छिपा लिया। लड़का घर के बीच से लपका, भाग कर तरकारियों के बगीचे को पार किया और बाग़ में से होता बाहर सड़क पर निकल आया। वह अपनी समूची शक्ति से भागता ही गया और उस समय तक भागता रहा जब तक कि उसे अपने पिता के पीछा करते डगों की भारी आवाज़ और हंफहफी के बीच उसकी चीख पुकार सुनाई देना बन्द न हो गया... "ठहर!" वह फनफना रहा था, "भागता कहां है, बदमाश! तेरे सिर पर वह गाज गिरेगी कि याद रखेगी!" इवान पेत्रोविच ने पड़ोस के एक स्वतन्त्र किसान के घर में घुस कर शरण ली और प्योत्र आन्द्रेइच निःसत्व और पसीनों में चूर पांवों को घसीटता घर लौट आया। वह अभी तक हांफ रहा था, और हांफते-हांफते ही उसने ऐलान किया कि आज से वह अपने लड़के को उत्तराधिकार और संरक्षण से वंचित करता है। साथ ही उसने आदेश दिया कि उसकी तमाम बेहूदा किताबों को जला दिया जाए और उस मलानिया

4—103

को दूर के किसी गांव में तुरत निर्वासित कर दिया जाए। कुछ भले लोगों ने इवान पेत्रोविच की खोज-बीन की, वे उससे मिले और सारी बातें उसे बताईं। अपमान और गुस्से में उसने प्रतिज्ञा की कि वह अपने पिता से इसका बदला लेगा, और उसी रात किसान की उस गाड़ी पर टूट पड़ा जिसमें कि मलानिया को जलावतन करने के लिए ले जाया जा रहा था। लड़की को उसने छीन लिया, घोड़े पर उसे बिठा कर निकटतम कस्बे में पहुंचा और वहां उससे शादी कर ली। एक सहृदय पड़ोसी ने धन से उसकी मदद की। वह एक अवकाश प्राप्त खलासी था और हमेशा अपने प्यालों में गड़गच्च रहता था, लेकिन—जैसा कि वह कहा करता था—हर किस्म के "रोमाण्टिक कारनामे" में गहरा रस लेता था। अगले दिन इवान पेत्रोविच ने प्योत्र आन्द्रेइच के नाम निर्मम किन्तु शिष्टतापूर्ण एक पत्र लिखा और उस गांव के लिए चल दिया जहां उसका रिश्ते से चचाजाद भाई—दिमीत्री पेस्तोव—अपनी बहिन मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के साथ रहता था जिससे कि पाठक परिचित हैं। उसने उन्हें समूची घटना सुनाई और बताया कि उसका इरादा अब पीटर्सबर्ग जाकर नौकरी की खोज करना है। उसने अनुरोध किया कि इस बीच, कम से कम कुछ दिनों के लिए वे उसकी पत्नी को अपने पास रख लें। "पत्नी" शब्द का उच्चारण करते समय, अपनी शहरी शिक्षा और दार्शनिकता के बावजूद, वह फफक-फफक कर रो पड़ा और निम्नवर्ग के प्रार्थी की भांति विनत भाव से घुटनों के बल गिर गया,—यहां तक कि उसका सिर फ़र्श से जा टकराया। पेस्तोव दम्पती कोमल हृदय के और संवेदनशील लोग थे। उन्होंने राज़ी से उसका अनुरोध मान लिया। तीन सप्ताह तक वह उनके साथ रहा। वह अपने हृदय में यह गुप्त आशा संजोए था कि हो सकता है उसके पिता का हृदय पसीजे, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ, और न ही ऐसा कुछ हो सकता था। अपने लड़के के विवाह की बात सुनकर प्योत्र

आन्द्रेइच अपने बिस्तरे पर जा लेटा और उसने मुमानियत कर दी कि लड़के के नाम तक का कोई उच्चारण न करे। लेकिन उसकी मां ने, लुक छिप कर, बड़े पादरी से पांच सौ रूबल उधार लिए और उसकी पत्नी के लिए एक छोटी-सी देव-प्रतिमा के साथ उन्हें उसके पास भेज दिया। पत्र लिखने का तो वह साहस न कर सकी लेकिन एक कड़ियल दहकान के द्वारा, जो एक दिन में चालीस मील तक पैदल चल सकता था, इवान पेत्रोविच के पास जुबानी सन्देश भेजा कि वह ज्यादा दुःखी न हो, भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जाएगा और उसका पिता उसे क्षमा कर देगा, और यह कि वह खुद भी कोई अन्य बहू घर में लाना अधिक पसंद करती, लेकिन भगवान को–प्रत्यक्षतः–यही मंजूर था, सो वह मलानिया सेर्गेयेवना को मातृ-हृदय से अपना आशीर्वाद देती है। कड़ियल नाटे दहकान ने–यह सब कष्ट उठाने के लिए–इनाम में एक रूबल प्राप्त किया, उसने इच्छा प्रकट की कि उसे नयी मालकिन को–जिसका कि संयोगवश वह धर्म-पिता भी होता था–देखने की अनुमति दी जाए। इसके बाद उसने मालकिन का हाथ चूमा, और वहां से चला गया।

इस बीच, हल्के हृदय से, इवान पेत्रोविच पीटर्सबर्ग के लिए रवाना हो चुका था। भविष्य अंधकारमय था और गरीबी, सम्भवतः, उसे दबोचने के लिए अपने पंजे फैलाए थी, फिर भी यह तो था ही कि घिनौने देहाती जीवन से उसका पिण्ड छूट गया था, और सब से बढ़ कर यह कि अपने गुरुओं के साथ उसने विश्वासघात नहीं किया था, बल्कि उसने वस्तुतः रूसो, डिडेरो और "मानवीय अधिकारों की घोषणा" को अमल में उतारा और सही सिद्ध किया। इस चेतना से कि उसने अपना कर्तव्य पूरा किया गर्व तथा उल्लास से, उसका हृदय उमड़ा था। अपनी पत्नी से अलग होने का दुःख उसे अधिक नहीं सताता था, सच

तो यह है कि एक ही छत के नीचे उसके साथ रहने की मजबूरी उसे ज्यादा परेशान करती। उधर से वह निश्चिन्त था, और अब दूसरी ओर उसे भी ध्यान देना था। तमाम धारणाओं के बावजूद पीटर्सबर्ग में भाग्य ने उसका साथ दिया। मोसिये कोर्तिन द्वारा परित्यक्ता लेकिन अभी तक जीवित रानी कुबेन्स्काया ने, किसी तरह अपने भतीजे की क्षतिपूर्ति करने के इरादे से, अपने सभी मित्रों से उसकी सिफ़ारिश की और पांच हज़ार रूबल–करीब-करीब अपना समूचा धन जो कि उसके पास बच रहा था–उसे सौंप दिया। साथ ही उसे एक लेपीक घड़ी भी भेंट की जिसपर कामदेवताओं की छवि के साथ, उसका नाम अंकित था। तीन महीने बीतते न बीतते लन्दन स्थित रूसी मिशन में उसे एक जगह मिल गई और बन्दरगाह से विदा होने वाले प्रथम अंग्रेज़ी पोत (भाप के जहाज़ों का तब तक पता नहीं था) से वह विदेश के लिए रवाना हो गया। इसके कुछ मास बाद उसे पेस्तोव का एक पत्र मिला। उस नेक आदमी ने पुत्र का जन्म होने के उपलक्ष्य में इवान पेत्रोविच को बधाई दी थी। बीस अगस्त १८०७ के शुभ दिन पोक्रोवस्कोये गांव में पुत्र जन्म हुआ और पवित्र सन्त फ़ियोदोर के सम्मान में उसका नाम फ़ियोदोर रखा गया। मलानिया सेर्गेयेवना ने भी, बहुत दबे-दबे गिनती की दो-चार पंक्तियां पत्र में जोड़ दी थीं जिन्हें देख कर इवान पेत्रोविच चकित रह गया,–उसे नहीं मालूम था कि मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने उसकी पत्नी को पढ़ना और लिखना सिखा दिया है। लेकिन पिता बनने के गर्व की कोमल भावना में इवान पेत्रोविच अधिक देर तक नहीं रम सका। उन दिनों की किसी सरनाम फ़्रीना या लाईसा (क्लासिकल नामों का तब तक प्रचलन था) के दरबार में वह जाता था। तिलज़ित की शान्ति

संधि* अभी-अभी हुई थी और दुनिया के पांव जैसे ज़मीन पर नहीं पड़ते थे, –वह रास-रंग में उन्मत्त थी। किसी रसीली लड़की की काली आंखों में वह भी उन दिनों डूब-उतर रहा था। उसके पास अब धन कम था, लेकिन वह ताश के खेल में खुशकिस्मत था। बहुतों से उसकी जानपहचान और दोस्ती थी, हर किस्म के आमोद-प्रमोदों में वह शामिल होता था। एक शब्द में यह कि उसका जीवन पूरे रंग में था।

९

वृद्ध लावरेत्स्की के हृदय में उसके पुत्र के विवाह का कांटा बहुत दिनों तक खटकता रहा। अगर इवान पेत्रोविच छै-एक महीने बाद पश्चाताप पूर्ण हृदय लिये उसके पास जाता और अपने पिता से दया की याचना करता तो यह सम्भव था कि वह उसे माफ़ कर देता। पहले वह उसे कुछ झिड़कता, अपना रोब दिखाने के लिए एक या दो बार अपनी गांठ-गंठीली लाठी को पटकता और इसके बाद वह उसे माफ़ कर देता। लेकिन इवान पेत्रोविच विदेश जा बसा था और इस ओर उसका ध्यान तक नहीं था। "बस चुप रहो! मेरी ओर से वह मर चुका!" हर बार प्योत्र आन्द्रेइच की पत्नी जब भी उसका हृदय नर्म करने का प्रयत्न करती, वह उसे झिड़कते हुए कहता "कमीना कुत्ता! ग़नीमत समझो कि मैंने अपने अभिशाप की गाज उसपर नहीं गिराई। मेरा पिता होता तो खुद अपने हाथों से उस बदमाश का गला घोंट डालता। और ऐसा

---

* सन् १८०७ में रूस और फ़्रांस के बीच युद्ध की स्थिति समाप्त हुई और तिल्ज़ित नामक स्थान पर शान्ति-सन्धि हुई जिसका यहां ज़िक्र किया गया है।

करना बिल्कुल ठीक होता। " अपने पति की इस भयानक बौखलाहट पर आन्ना पावलोवना, थोड़ा ओट में हो, केवल अपने कानों को छूती और क्रास का चिन्ह बनाती। और जहां तक लड़के की पत्नी का सम्बन्ध था, प्योत्र आन्द्रेइच ने शुरू में तो उसे एकदम ध्यान से उतार दिया, और पेस्तोव के एक पत्र के जवाब में जिसमें उस नेक आदमी ने उसकी पतोहू का जिक्र किया था, उसने दो टूक शब्दों में कहा कि वह किसी भी पतोहू के बारे में कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं है, और उसे यह चेतावनी देना अपना कर्तव्य समझता है कि भागी हुई बन्धक दासी को शरण देना कानून क खिलाफ़ ह। लेकिन, आगे चल कर, जब पोते के जन्म की खबर उसके पास पहुंची तो वह पिघल गया, गुप्त रूप से यह मालूम करने के उसने आदेश दिए कि बच्चे के जन्म के बाद युवती मां अच्छी तरह से है कि नहीं, और उसे कुछ धन भी भेजा, बिना यह जताए कि धन भेजने वाला वह ख़ुद है। फ़ेदिया अभी साल भर का भी नहीं हुआ कि आन्ना पावलोवना घातक रूप में बीमार पड़ी। अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले, —उस समय जबकि बिस्तरे से वह लगी थी और उसकी धुंधली आंखों में आंसू तैर रहे थ, —पादरी की मौजूदगी में उसने अपने पति से कहा कि वह बहू को आखिरी बार देखना, उससे विदा लेना और अपने पोते को आशीर्वाद देना चाहती है। वृद्ध ने ढारस बंधाया और बहू को लाने के लिए अपनी निजी गाड़ी को तुरत रवाना कर दिया। पहली बार उसने उसे मलानिया सेर्गेयेवना कह कर याद किया। वह अपने लड़के और मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के साथ आई जो उसे किसी तरह भी अकेले भेजने के लिए तैयार नहीं थी और यह इरादा करके आई थी कि अगर ज़रूरत पड़ेगी तो वह उसका पक्ष लेगी। मलानिया सेर्गेयेवना ने, —भय से वह इतनी त्रस्त थी कि जीवित से अधिक मृत मालूम होती थी—प्योत्र आन्द्रेइच के अध्ययन-कक्ष में पांव रखा। उसके पीछे-पीछे एक नर्स थी

जो फ़ेदिया को अपनी गोद में लिए थी। प्योत्र आन्द्रेइच ने खामोश नज़र से उसकी ओर देखा। उसका हाथ चूमने के लिए वह आगे बढ़ी। उसके होंठ कांप रहे थे और उनमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि एक निःशब्द चुम्बन के आकार में अपने-आप को ढाल सकें।

"अच्छी तरह तो हो, मेरी अल्हड़ लड़की!" आखिर उसने खामोशी तोड़ी, "चलो, अब मालकिन के पास चलें।"

वह उठा और फ़ेदिया के ऊपर झुक गया। बच्चा हंसने लगा और उसने अपने छोटे-छोटे पीले हाथ उसकी ओर बढ़ा दिये। इससे वृद्ध का हृदय तुरत पुलकित हो उठा।

"ओह," वह बुदबुदाया, "बेचारा नन्हा छौना! अपने बाप की ओर से दादा से मनुहार करता है! मैं तेरी ओर से हाथ नहीं खींचूंगा, मेरे नन्हें मुन्ने!"

मलानिया सेर्गेयेवना आन्ना पावलोवना के शयनकक्ष में पहुंचते ही दरवाज़े के पास घुटनों के बल गिर पड़ी। आन्ना पावलोवना ने इशारे से उसे बिस्तरे के पास आने के लिए कहा। उसे अपने हृदय से लगाया और उसके बच्चे को आशीर्वाद दिया। इसके बाद, निर्मम पीड़ा से क्षत उसका चेहरा उसके पति की ओर मुड़ा, और उसने कुछ कहना चाहा...

"ठीक है ठीक है। मैं समझता हूं कि तुम क्या कहना चाहती हो," प्योत्र आन्द्रेइच बुदबुदाया, "अपने को दुःखी न करो। यह हमारे साथ ही रहेगी, और इसकी खातिर मैं वान्या को भी माफ़ कर दूंगा।"

आन्ना पावलोवना ने, बड़े प्रयास से अपने पति का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे अपने होंठों से छुवाया। उसी सांझ उसके जीवन की जोत सदा के लिए बुझ गई।

प्योत्र आन्द्रेइच ने अपने वचन का पालन किया। उसने अपने पुत्र को सूचना दी कि उसकी मां की अन्तिम इच्छा और बेबी फ़ेदिया की

ख़ातिर वह उसे फिर अपने आशीर्वाद का संरक्षण प्रदान करता है और मलानिया सेर्गेयेवना को अपने घर में रहने के लिए जगह दे रहा है। उसने उसे दूसरी मंज़िल के दो कमरे दे दिए और अपने अत्यन्त सम्मानित अतिथियों से—एकाक्षी ब्रिगेडियर स्कुरेहिन और उसकी पत्नी से —उसे मिलाया, उसकी सेवा-टहल के लिए दो दासियां और बाहर का काम करने के लिए एक लड़का नियुक्त कर दिया। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना न उससे विदा ली। ग्लाफ़ीरा से, एक ही दिन में, तीन बार मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की झड़प हुई और उसके लिए उसके हृदय में गहरी घृणा पैदा हो गयी।

शुरू-शुरू में तो अभागिन स्त्री को अपनी स्थिति काफ़ी कठिन और परेशान करने वाली मालूम हुई। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, वह उसकी—और अपने श्वसुर की—अभ्यस्त होती गई। वह ख़ुद भी उसका अभ्यस्त हो गया,—यहां तक कि उसे पसंद भी करने लगा, हालांकि वह बिरले ही उससे बोलता और उसकी भलमनसाहत तक में एक अचेतन तिरस्कार का पुट मिला होता। मलानिया सेर्गेयेवना के हृदय की सब से बड़ी मुसीबत थी ग्लाफ़ीरा,—उसकी ननद। ग्लाफ़ीरा ने अपनी मां के जीवन काल में ही, धीरे-धीरे समूचा घर अपने नियंत्रण में कर लिया था। हर कोई, उसका पिता तक, उसके इशारों पर चलता था। उसकी इजाज़त के बिना चीनी की एक डली तक किसी को दी नहीं जा सकती थी। वह मर भले ही जाए, लेकिन किसी अन्य मालकिन को रत्ती-भर भी अपने अधिकार पर हाथ नहीं रखने दे सकती। और मालकिन भी कैसी! अपने भाई के विवाह की उसके हृदय में प्योत्र आन्द्रेइच से भी अधिक गहरी गांठ पड़ी थी। उसने निश्चय किया कि मोरी की इस ईंट को वह सिर पर नहीं चढ़ने देगी। सो, पहली घड़ी से ही, मलानिया सेर्गेयेवना उसकी गुलाम बन गई। इस ज़िद्दी और उद्धत ग्लाफ़ीरा के सामने, भला, वह टिक भी कैसे सकती थी,—वह जो

इतनी दब्बू, खोई हुई, सकपकाहट-भरी, भीरु और रुग्ण थी। एक भी दिन ऐसा न बीतता जब ग्लाफ़ीरा उसे उसकी पुरानी हैसियत की याद न दिलाती हो, अपनी औक़ात पहचानने के लिए उसे सराहती न हो। मलानिया सेर्गेयेवना इन सब ताने-तिश्नों को—चाहे वे कितने ही तीखे क्यों न होते—सहज ही सह लेती... लेकिन उसे फ़ेदिया से भी वंचित कर दिया गया,—यह सब से भारी मुसीबत थी। इस बहाने कि वह उसका पालन-पोषण करने की योग्यता नहीं रखती, उसे उसके पास तक फटकने नहीं दिया जाता। खुद ग्लाफ़ीरा इसकी निगरानी करती। बच्चा उसके पूर्ण नियंत्रण में था। मलानिया सेर्गेयेवना, शोक से त्रस्त अपने पत्रों में इवान पेत्रोविच से जल्दी घर आने का अनुरोध करती, यों प्योत्र आन्द्रेइच भी अपने लड़के को देखने के लिए उत्सुक था, लेकिन जवाब में वह निरी टालमटोल करता, पत्नी को इतने आराम से रखने और धन भेजने के लिए अपने पिता का धन्यवाद करता, जल्दी घर लौटने का आश्वासन देता,—लेकिन आने का नाम न लेता। आख़िर, १८१२ में, वह घर लौटा। छै साल की जुदाई के बाद जब पहली बार वे मिले तो पिता और पुत्र, पुरानी शिकायतों के बारे में एक शब्द भी कहे बिना, एक-दूसरे के गले से लग गए। और सच तो यह है कि शिकवा-शिकायतों या पुराने घावों को हरा करने का वह समय भी नहीं था। समूचा रूस दुश्मन के विरुद्ध हथियार लेकर उठ खड़ा हुआ था, और दोनों भी अपनी रगों में रूसी रक्त की रवानी अनुभव कर रहे थे। प्योत्र आन्द्रेइच ने राष्ट्रीय सेना की एक पूरी रेजीमैण्ट का अपने खर्च से अभिनन्दन किया। लेकिन युद्ध का अन्त हो गया, खतरा बीत गया, इवान पेत्रोविच को फिर ऊब ने घेर लिया, दूर देशों का मोह उसे फिर अपनी ओर खींचने लगा और उसका हृदय उस दुनिया में जाने के लिए ललक उठा जिसका कि वह आदी हो गया था और जिसमें रह कर वह अपनत्व का अनुभव

करता था। मलानिया सेर्गेयेवना उसे नहीं रोक सकी। उसकी नज़रों में वह न कुछ से अधिक नहीं थी। यहां तक कि उसकी चिरपोषित आन्तरिक आशा भी चकनाचूर हो गई, – उसके पति ने भी यही अधिक उपयुक्त समझा कि फ़ेदिया का लालन-पालन ग्लाफ़ीरा के हाथों में रहे। इवान पेत्रोविच की अभागिन पत्नी इस आघात को न सह सकी, इस बार की जुदाई ने उसे तोड़ दिया, कुछ ही दिनों के भीतर – बिना किसी शिकायत के – उसने अपने अस्तित्व को समर्पित कर दिया। अपने जीवन के समूचे दौरान में उसने कभी भी किसी चीज़ के खिलाफ़ सिर नहीं उठाया था, और अब भी अपनी रुग्णता के खिलाफ़ उसने कोई संघर्ष नहीं किया। बोलने तक की अब उसमें सकत नहीं थी, मौत की परछाइयां उसके चेहरे पर रेंग रही थीं। उसकी मुखमुद्रा पर एक ऐसी सकपकाहट छाई थी जो थिर हो कर रह गई और उसकी कोमल भीरुता ने पहले की भांति अब भी उसका साथ नहीं छोड़ा था। ग्लाफ़ीरा की ओर उसी प्रकार निर्वाक दबी नज़र से ताकती थी। जिस प्रकार आन्ना पावलोवना ने मृत्युशय्या से अपने पति का हाथ चूमा था, उसी प्रकार उसने भी ग्लाफ़ीरा के हाथ का चुम्बन किया और उसके, ग्लाफ़ीरा के, हाथों में उसने अपने हृदय के टुकड़े – अपने एकमात्र पुत्र – को सौंप दिया। इस प्रकार इस भली और कोमल जीव ने अपनी जीवन-लीला का अन्त किया, – उस बूटे की भांति जो – परमात्मा ही जानता है कि क्यों – अपनी धरती से उखाड़ कर मय जड़ के दूर फेंक दिया गया था ताकि धूप में सूख-साक कर निःशेष हो जाए। वह मुर्झा गई, आखिर अतीत के गर्त में समा गई, और किसी ने उसपर आंसू नहीं बहाए। मलानिया सेर्गेयेवना की दासियों और प्योत्र आन्द्रेइच के सिवा अन्य किसी ने भी उसके लिए शोक का अनुभव नहीं किया। उसके संवेदनशील चेहरे और मौन सत्ता की याद कर वृद्ध का हृदय कचोट उठा। "विदा, मेरी निरीह बच्ची,

विदा!" गिरजे में आख़िरी बार उसकी मिट्टी के सामने सिर नवाते समय वह धीमी आवाज़ में बुदबुदाया, और उसकी कब्र में अंजुलि-भर मिट्टी का दान करते समय उसकी आंखों में आंसू डबडबा आए।

इसके बाद वह अधिक दिनों तक—पांच साल तक भी—जीवित नहीं रहा। १८१९ के जाड़ों में, मास्को में—अपने पोते और ग्लाफ़ीरा के साथ वहीं अब वह रहने लगा था—वह चुपचाप इस दुनिया से विदा हो गया। उसने इच्छा प्रकट की कि उसे आन्ना पावलोवना और "मलाशा" के निकट दफ़नाया जाए। इवान पेत्रोविच उस समय पेरिस में मौज-मज़े में डूबा था। १८१५ के शीघ्र बाद ही उसने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुन उसने रूस लौटने का निश्चय किया। जागीर की देख-भाल का प्रबंध करना था और, ग्लाफ़ीरा के पत्र के अनुसार, फ़ेदिया अब तेरहवें वर्ष में पांव रखने जा रहा था। सो उसकी शिक्षा के बारे में भी गम्भीरता से सोचने और ध्यान देने की ज़रूरत थी।

१०

अंग्रेज़ियत का अंध-भक्त बनकर इवान पेत्रोविच रूस लौटा। अंग्रेज़ी ढंग से कटे हुए उसके छोटे बाल, कलफ़ चढ़ा उसका, लम्बे घेर वाला हरी मटर के रंग का फ़्राक कोट जिसमें अनेक कोथलियां लगी थीं तुनुकने के लिए सदा तैयार उसका चेहरा, उसकी चालढाल जिसमें उतावली के साथ लापरवाही का भी पुट मिला था, दांतों को भींच कर बोलने का उसका ढंग, उसकी आकस्मिक ठस हंसी, मुसकराहटविहीन उसकी मुखमुद्रा, उसकी बातचीत का एक वही अटल विषय—राजनीति या राजनीतिक अर्थशास्त्र, अधभुने मांस और पोर्टवाइन (मदिरा) पर उसका जान देना,—उसकी हर चीज़ में अंग्रेज़ियत की बू आती थी। लेकिन, भले ही

यह अजीब मालूम हो, आंग्ल भक्त होने के साथ-साथ इवान पेत्रोविच अपने देश का भी पक्का भक्त बन गया था, – कम से कम वह जताता यही था, हालांकि वह रूस से बहुत ही कम – और सो भी बुरे ढंग से – परिचित था। एक भी रूसी आचार-विचार उसमें नज़र नहीं आता था, रूसी भाषा तक वह बहुत ही अजीब ढंग से बोलता था। साधारण बातचीत में उसकी बोली भोंड़ी, खोई हुई सी और फ़्रान्सीसी ढंग में डूबी रहती थी, लेकिन महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा छिड़ते ही इवान पेत्रोविच के मुंह "आत्म-अध्यवसायशीलता के लिए नयी कसौटियों की व्यवस्था", "यह चीज़ों की मूल प्रवृत्ति तक के अनुकूल नहीं है" आदि-आदि जुमले निकलने लगते। राज्य के संगठन और सुधार सम्बन्धी योजनाओं के अनेक मसविदे इवान पेत्रोविच विदेशों से साथ लाया था। वह हर चीज़ से, जिसपर भी उसकी नज़र पड़ती थी, बेहद नाराज़ था, और व्यवस्था का अभाव देख कर तो उसकी नाराज़ी का खासतौर से कोई ठिकाना नहीं रहता था। अपनी बहिन से मिलने पर उसका सब से पहला काम इस निश्चय की घोषणा के रूप में प्रकट हुआ कि वह आमूल सुधारों का समावेश करने जा रहा है। उसने चेतावनी दी कि आगे से हर चीज़ का संचालन एक नयी पद्धति से किया जाएगा। ग्लाफ़ीरा ने कुछ नहीं कहा। केवल अपनी बत्तीसी भींच कर रह गई, और उसने सोचा, "मेरा क्या होगा?" लेकिन अपने भाई और भतीजे के साथ जब वह देहात लौट कर आई तो उसकी आशंकाएं जल्दी ही शान्त हो गईं। घर में निश्चय ही कुछ परिवर्तन किए गए। हराम की खानेवालों और खुशामदियों को बिना किसी भूमिका के घर से खदेड़ दिया गया; इनमें दो वृद्ध स्त्रियां – एक अंधी और दूसरी लकवामारी और ओचाकोव के समय का एक मेजर था। बालहठ की भांति वह बुढ़ापा-हठ पकड़े था और बावजूद इसके कि उसका पेट सचमुच में अंधा कुआं था, खाने

के लिए उसे केवल काली रोटी और मसूरा घास की भुजिया दी जाती थी। यह फरमान जारी कर दिया गया कि भूतपूर्व अतिथियों की आवभगत न की जाए, — उन सब का स्थान दूर के एक पड़ोसी ने ले लिया, वह गोरे रंग और सुनहरी बालों वाला एक उपाधिधारी था जिसके कण्ठियां और गांठें निकली थीं। बहुत ही परिष्कृत और बहुत ही मूर्ख। मास्को से नया फर्नीचर आ गया। थूकदानों, घंटियों और हाथ धोने के पात्रों का समावेश किया गया, नाश्ता परसने का नया ढंग चालू किया गया, वोदका और घर की खिंची शराबों की जगह विदेशी मंगायी गयीं, नौकरों के लिए नई पोशाकें बनवाई गयीं, परिवार की परम्परा में एक नया लैटिन भाषा का आदर्श वाक्य और जोड़ दिया गया — "सत्य ही में गुण होता है।" यह सब हुआ लेकिन इससे, वस्तुतः, ग्लाफ़ीरा के अधिकार क्षेत्र में कोई कमी नहीं हुई। खरीद और वितरण का सारा काम अभी भी उसी के नियंत्रण में था। अलसाशियन अरदली ने — जो विदेश से लाया गया था — उसके अधिकार को चुनौती देने की कोशिश की थी, नतीजा इसका यह कि उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा, हालांकि उसे मालिक का संरक्षण प्राप्त था। और जहां तक खेती-बारी और जागीर की व्यवस्था का सम्बन्ध था, ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना उसमें भी दखल रखती थी। मतलब यह कि हर चीज़ वैसी ही रहती जैसी कि पहले थी। इवान पेत्रोविच बार बार यह घोषणा अवश्य करता था कि वह इस अराजकता में नया जीवन फूंकना चाहता है। मगर हर चीज ज्यों की त्यों बनी रही। हां, किसानों से रुपया-वसूली में बढ़ती की गयी, बेगार में कड़ाई की गयी और यह फरमान जारी हुआ कि किसान लोग सीधे इवान पेत्रोविच के दरबार में दुहाई या फ़र्याद लेकर नहीं पहुंच सकते। इस तरह, मालूम हुआ कि यह देशभक्त अपने देश-भाइयों से भारी घृणा करता था। इवान पेत्रोविच की नयी प्रणाली, पूरे

ज़ोरशोर से, केवल फ़ेदिया पर ही प्रयोग में लाई जा सकी। उसकी शिक्षा दीक्षा में सचमुच ग्रामूल परिवर्तन हो गया। उसके पिता ने, ग्रन्य सब चीज़ों को छोड़, इस काम को ख़ुद ग्रपने हाथों में संभाल लिया।

११

इवान पेत्रोविच की ग्रनुपस्थिति में—उस समय जब कि वह विदेशों में था—जैसा कि हम पहले कह चुके हैं—फ़ेदिया ग्लाफ़ीरा की देख-रेख में था। मां की मृत्यु के समय वह ग्राठ वर्ष का था। ग्रपनी मां से वह बहुत ही कम मिल पाता था लेकिन सम्पूर्ण हृदय से उसे चाहता था। उसकी स्मृति—उसका वह कोमल पीतवर्ण चेहरा, उदास ग्रांखों से उसका देखना ग्रौर सहमते हुए उसे दुलराना—यह सब ग्रमिट रूप में उसके हृदयपट पर ग्रंकित था। घर में उसकी स्थिति का उसे एक धुंधला सा ग्राभास था। वह उस दीवार का ग्रनुभव करता था जो ग्रलग मां ग्रौर उसके बीच में खड़ी थी, पर जिसे लांघने या तोड़ने का न तो उसने कभी साहस किया, ग्रौर न ही उसमें इसकी क्षमता थी। वह ग्रपने पिता से कतराता था ग्रौर उसका पिता भी कभी उसे प्यार नहीं करता था। उसका दादा ग्रवश्य जब-तब उसका सिर थपथपाता ग्रौर उसे ग्रपना हाथ चूमने देता था, लेकिन वह उसे ग्रल्हड़ छौना कहता ग्रौर बुद्धू समझता था। मलानिया सेर्गेयेवना की मृत्यु के बाद वह पूर्णतया ग्रपनी बुग्रा के चंगुल में फंस गया। फ़ेदिया उससे डरता, उसकी पैनी चमकीली ग्रांखों ग्रौर तीखी ग्रावाज़ से भय खाता। उसकी मौजूदगी में वह चीं तक नहीं कर सकता था। ग्रगर वह ग्रपनी कुर्सी में ज़रा भी कसमसाता तो वह तभी फुंकार उठती, "फिर वही? थिर नहीं बैठा जाता!" रविवार के दिन, सामूहिक प्रार्थना के बाद, उसे खेलने की इजाज़त दी

जाती, – यानी उसके हाथों में एक मोटी-सी किताब थमा दी जाती, एक रहस्यमय किताब जिसे मक्सिमोविच - ग्राम्बोदिक नाम के किसी आदमी ने लिखा था और जिसका नाम था: "प्रतीक और संकेत - चिन्ह"। इस किताब में क़रीब एक हज़ार चित्र थे – अधिकतर बहुत ही गूढ़ और रहस्यमय – और हर चित्र के साथ पांच भाषाओं में उतनी ही रहस्यमय व्याख्याएं दी हुई थीं। इन चित्रों में निरावरण और मोटे - ताजे कामदेवता की छवि का प्राधान्य था। इनमें से एक चित्र के नीचे – जिसका शीर्षक "केसर और इन्द्रधनुष" था – निम्न व्याख्या दी हुई थी: "इसका असर अत्यन्त व्यापक होता है।" एक अन्य चित्र के नीचे जिस में बैंगनी रंग का एक फूल अपनी चोंच में दबाए सारस उड़ता हुआ जा रहा था, लिखा था: "तू सब को जानता है।" कामदेव और अपने बच्चे को चाटते हुए भालू का अर्थ था "थोड़ा-थोड़ा।" फ़ेदिया इन चित्रों का अध्ययन करता, उन सभी से वह परिचित हो गया था – उनकी हर बारीकी उसके ज़हन में उतर चुकी थी, उनमें से कुछ – हर बार जब भी वह उन्हें देखता – उसे सोच में डाल देते और उसकी कल्पना को उकसाते। इसके सिवा मनबहलाव का और कोई भी साधन हो सकता है, यह वह नहीं जानता था। जब वह भाषाएं और संगीत सीखने योग्य हुआ तो ग्लाफ़ीरा ने, बहुत ही सस्ते में, खरगोश - जैसी आंखों वाली एक खूसट बुढ़िया को रख लिया। वह स्वेडन की रहनेवाली थी, फ़्रेंच और जर्मन भाषा में कुछ फटफटा लेती थी, पियानो को जैसे अपनी चुटकी में रखती थी और, सबसे बढ़ कर, खीरों का बहुत ही बढ़िया अचार डालती थी। इस गवर्नेस, अपनी चाची और बूढ़ी दासी वसीलियेव्ना की संगत में फ़ेदिया ने और कुछ नहीं तो चार साल बिताए। प्रतीकों और संकेत - चिन्हों की अपनी किताब लिए वह अक्सर एक कोने में बैठा दिखाई देता, और इसी तरह बैठे-बैठे लम्बे दिन बिता देता। नीची छत

वाला कमरा जिरानियम की सुगंध से महकता रहता, मोमबत्ती की एकाकी धुंधली लौ थिरकती-कांपती, झींगुर अलस और उनींदी झंकार करते, छोटी सी दीवार घड़ी उतावली में टिकटिक कर भागती जाती, दीवार पर लगे तख़्ते के पीछे, किसी जगह से, चूहे के कुतरने और नोचने की लुकीछिपी आवाज़ आती, और तीनों वृद्ध स्त्रियां – विधात्रियों की भांति बैठी – चपलता के साथ चुपचाप अपनी सलाइयां चलाती रहतीं, उनके हाथ उदास अंधेरे में अजीब आकार की कांपती हुई परछाइयों की रचना करते, – और उतने ही अजीब तथा उदासी-भरे विचार बालक के मस्तिष्क में मंडराने लगते। फ़ेदिया निश्चय ही उन बालकों में नहीं था जिन्हें दिलचस्प कहा जाता है। रंग अपेक्षाकृत पीला, लेकिन बदन थलथल, औघड़ और अटपटा, – पक्का दहकान, जैसा कि ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना कहा करती थी। अगर उसे कुछ अधिक बार ताज़ी हवा में निकलने दिया जाता तो उसके गालों पर सुर्ख़ी आ जाती। पढ़ने में वह काफ़ी अच्छा था, हालांकि बहुधा अलसा जाता था। वह रोता भी नहीं था, लेकिन कभी-कभी झुंझला कर ज़िद्द पकड़ जाता, और तब किसी के बस में न आता। आस-पास के लोगों में कोई ऐसा नहीं था जिसे फ़ेदिया प्यार करता... सच, अभागा है वह हृदय जिसने किशोरावस्था में किसी को प्यार नहीं किया।

यह थी फ़ेदिया की स्थिति जो इवान पेत्रोविच ने यहां आकर देखी और, बिना किसी विलम्ब के, उसने अपनी प्रणाली का प्रयोग उसपर शुरू कर दिया।

"सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख," उसने ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना से कहा, "मैं उसे एक आदमी बनाना चाहता हूं... एक आदमी," फ़्रेंच भाषा में उसने दोहराया, "केवल आदमी ही नहीं, बल्कि उसे मैं स्पार्टन बनाना चाहता हूं।"

इवान पेत्रोविच ने अपनी योजनाओं का श्रीगणेश सब से पहले अपने लड़के को स्कौच वेश-भूषा से लैस करके किया। बारह वर्षीय फ़ेदिया अब घुटन्ने पहने और सिर पर लगी टोपी जंचाए घूमता नज़र आता था। स्वेडन निवासी महिला को विदा कर दिया गया और उसकी जगह एक नया ट्यूटर आ गया। यह स्विटज़लैण्ड का निवासी था,–कसरत का माना हुआ माहिर। संगीत का, उसे पुरुषोचित न समझ, सर्वथा बहिष्कार कर दिया गया। पदार्थ विज्ञान, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, गणित, लकड़ी का काम,–रूसो के आदेशों के अनुसार और वीरोचित भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए हैरल्डरी। इन विषयों के सहारे "भावी आदमी" का निर्माण शुरू हुआ। सुबह चार बजे उसे उठा दिया जाता, वह ठंडे पानी से नहाता, रस्सी पकड़ कर एक ऊंचे बांस के इर्दगिर्द दौड़ता, दिन में एकबार भोजन करता–सादा भोजन, जिसमें केवल एक तश्तरी होती, घुड़सवारी करता, तीरन्दाज़ी सीखता, हर उपयुक्त मौके पर अपनी इच्छा-शक्ति को दृढ़ करने का अभ्यास करता,–आदर्श रूप में अपने पिता को सामने रख कर। इसके बाद, हर रात को, एक विशेष नोटबुक में, वह दिन भर का विवरण और अपने संस्मरण लिखता,–यह कि उसके हृदय पर किस चीज़ की कैसी छाप पड़ी। इवान पेत्रोविच भी अपनी ओर से फ़्रान्सीसी भाषा में उसकी नोटबुक में कुछ उपदेश-वाक्य टांक देता जिसमें वह उसे "मेरे बेटे" कह कर पुकारता और 'तुम' कह कर सम्बोधित करता। फ़ेदिया भी, रूसी भाषा में, अपने पिता को यों 'तू' कह कर सम्बोधित करता, लेकिन उसकी उपस्थिति में बैठने तक का साहस न करता। "प्रणाली" ने बालक को चकरा दिया, उसका मस्तिष्क गड़बड़ाया और ठसाठस भर गया। लेकिन जीवन के इस नये ढंग का उसके स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ा। शुरू में तो उसे बुखार तक हो आया, लेकिन शीघ्र ही चंगा हो गया और एक हट्टा-कट्टा

किशोर बन गया। उसके पिता को उसपर गर्व था और अपनी विचित्र शब्दावली में उसे "प्रकृति का एक पुत्र, मेरी कारीगरी का नमूना" कहता। जब फ़ेदिया सोलह वर्ष का हुआ तो उसके पिता को लगा कि वह अब इस योग्य है कि उसमें,—समय रहते स्त्री जाति के प्रति घृणा के अंकुर उपजा दिए जाएं,—और हमारा किशोर स्पार्टन, जिसकी मसें भीग चली थीं और हृदय लाज से कुड़मुड़ाता था,—पुरुषत्व, वीर्य और जवान रक्त से छलछलाता था—उपेक्षा, अलगाव और उद्धत्तता में रमने लगा।

इस बीच समय गुज़रता गया। इवान पेत्रोविच साल का अधिकांश लावरिकी में बिताता (यह उसकी मुख्य पैतृक जागीर का नाम था), लेकिन जाड़ों में अकेले ही मास्को पहुंच जाता, दीवानख़ानों में अपनी योजनाओं की चर्चा और उनका प्रतिपादन करता, और पहले से भी अधिक बढ़चढ़ कर अपनी अंधी अंग्रेज़ियत का, अपनी खीज और नेतागीरी का परिचय देता। इसके बाद, दुःख और शोक की पोट लिए, १८२५* का वर्ष आया। इवान पेत्रोविच के घनिष्ठ मित्रों और परिचितों को मुसीबतों का कड़वा प्याला पीना पड़ा। इवान पेत्रोविच तुरत देहाती घर के निरालेपन में आ छिपा और उसने अपने-आपको दुनिया से अलग कर लिया। एक साल और निकल गया, इवान पेत्रोविच का स्वास्थ्य सहसा गिरना शुरू हुआ, दुर्बलता और रोग

---

*सन् १८२५ में पीटर्सबर्ग में कुछ प्रगतिशील कुलीन सैनिक अफ़सरों एवं नागरिकों ने निरंकुश ज़ारशाही के विरुद्ध तथा बन्धकदास प्रथा को ख़त्म करने के उद्देश्य से विद्रोह किया था। पर यह विद्रोह बड़ी निर्ममता से कुचल दिया गया।

ने उसे जकड़ लिया। स्वतंत्र विचारक अब गिरजे में जाता और सामूहिक प्रार्थनाओं का आयोजन करता। यूरोप का अंधभक्त अब भाप के रूसी हम्मामों में स्नान करता, दो बजे खाना खाता, नौ बजे बिस्तरे पर पहुंच जाता और वृद्ध अरदली के किस्से सुनता-सुनता ऊंघ जाता। नेता ने अपनी सारी योजनाएं जला डालीं, चिट्ठी-पत्रियों को नष्ट कर दिया। गवर्नर के सामने रिरियाता और दारोगा के आगे गिड़गिड़ाता था। कड़ी इच्छाशक्ति का धनी एक फुड़िया निकलने या शोरबे के ठंडा होने पर आंखें मिचमिचाता और झींकने लगता। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को मौका मिला। एक बार फिर उसने समूचे घर को अपनी मुट्ठी में कर लिया, और कारिन्दे, पटवारी और सभी किसान लोग "बूढ़ी चकमक" से —नौकर-चाकरों ने उसका यही नाम रख छोड़ा था—बतियाने के लिए एक बार फिर पिछले दरवाज़े से झांकने लगे। इवान पेत्रोविच के परिवर्तन ने उसके लड़के को एकदम चकित कर दिया। वह अब उन्नीसवें वर्ष में पांव रख रहा था, और वह अपने पिता के दमघोट चंगुल से मुक्त होने के बारे में सोचने लगा। अपने पिता की कथनी और करनी के बीच, उदारपंथ के पक्ष में उसकी प्रचुर घोषणाओं और उसकी भयानक निरंकुशता के बीच की खाई से तो वह पहले भी परिचित था, लेकिन उसका इस बुरी तरह पल्टा खा जाना उसके लिए अप्रत्याशित था। लाइलाज अहंवादी अब अपने असली रंगों में प्रकट हो गया था। और ठीक उस समय जबकि युवक लावरेत्स्की विश्वविद्यालय की तैयारी करने के लिए मास्को जाने वाला था, इवान पेत्रोविच के सिर पर एक और गाज गिरी—वह अंधा हो गया, निपट अंधा, एक ही दिन के भीतर!

रूसी डाक्टरों की दक्षता पर भरोसा न कर उसने विदेश जाने की अनुमति लेने के लिए आवेदन पत्र भेजा जो रद्द कर दिया गया। इसके बाद अपने पुत्र को साथ लेकर पूरे तीन साल तक उसने समूचा रूस छान

डाला, – इस डाक्टर से उस डाक्टर के पास जाता – बराबर एक नगर से दूसरे नगर का चक्कर लगाता और अपनी खीज तथा कायरता से अपने डाक्टरों, अपने लड़के और नौकरों की जान आफ़त करता। एक निरीह, रोते-झींकते और झगड़ालू बच्चे की भांति अन्त में वह लावरिकी लौटा। घर में जितने भी लोग थे, सब के लिए कड़वे दिनों का सूत्रपात हो गया। केवल खाने के समय इवान पेत्रोविच चुप रहता, – इतना अधिक और इतने मरभुक्खेपन से वह पहले कभी नहीं खाता था। बाक़ी समय न वह ख़ुद चैन से बैठता, न दूसरों को बैठने देता। वह प्रार्थना करता, भाग्य को लेकर झींकता, अपने-आपको, राजनीति और अपनी प्रणाली को कोसता। हर उस चीज़ को लथेड़ता जिसे वह पहले उछालता और गर्व का अनुभव करता था, – हर उस चीज़ को जिसे एक आदर्श के रूप में किसी समय अपने लड़के के सामने वह रखता था। वह ज़ोरों से घोषणा करता कि किसी चीज़ में उसका विश्वास नहीं है, और इसके बाद फिर अपनी प्रार्थना में जुट जाता। एक क्षण के लिए भी वह अकेला न रहता – यह उसके लिए असह्य था – और ज़िद्द करता कि समूचा घर दिन और रात उसके पास बना रहे, कहानियों से उसका मन बहलाए, जिन्हें सुनते समय वह रह-रह कर चिड़चिड़ा उठता और चिल्लाता, "यह सब कोरा झूठ है, महज़ बकवास!"

सब से ज़्यादा मुसीबत पड़ती ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना के सिर पर, – उसके बिना जैसे उसे ज़रा चैन न पड़ता। रुग्ण आदमी की हर सनक को वह आख़िर तक पूरा करती। लेकिन कभी-कभी, इस डर से कि कहीं उसके भीतर उमड़ता-घुमड़ता और उसका दम घोटता गुस्सा प्रकट न हो जाए, वह तुरत जवाब न देती। इस प्रकार वह दो साल और खींच ले गया और मई के शुरु में, बाहर छज्जे पर धूप में घूमने ले जाए जाने के बाद, वह मर गया। "ग्लाश्का, ग्लाश्का, – बूढ़ी बवकूफ़! अभी

तक मुझे शोरबा नहीं दिया..." धीमी होती हुई लड़खड़ाती आवाज़ में उसने कहा। और, बात के खत्म होते न होते, सदा के लिए शान्त हो गया। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना, बटलर के हाथ से शोरबे का प्याला झपट कर जो लपकी आ रही थी, एकदम थिर खड़ी हो गई, अपने भाई के चेहरे पर उसने नज़र डाली, – और फिर धीरे-धीरे, उसने क्रास का चिन्ह बनाया और चुपचाप पीछे हट गई। उसका लड़का भी, जो वहां मौजूद था, कुछ नहीं बोला। छज्जे पर झुक कर देर तक बाग में देखता रहा – जहां महक थी, हरियाली थी और वसन्त की धूप सुनहरी किरनों से एक-एक पत्ती का सिंगार कर रही थी। वह अब तेईस वर्ष का था। कितनी भयानक गति से, और कितनी निर्ममता से, आनन-फ़ानन में निकल गए थे ये तेईस वर्ष...! जीवन उसके सामने उदित हो रहा था।

१२

अपने पिता की मिट्टी को ठिकाने लगाने और घर के मामलों तथा अपने कारिंदों की निगरानी का काम अपरिवर्तनीय ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को सौंपने के बाद युवक लावरेत्स्की मास्को चला गया जिसके प्रति अपने हृदय में वह एक अस्पष्ट लेकिन अदम्य आकर्षण का अनुभव करता था। उसने अपनी शिक्षा के दोषों का अनुभव किया और यथाशक्ति उन्हें दूर करने का संकल्प किया। पिछले पांच सालों में उसने बहुत कुछ पढ़ा था और कुछ न कुछ देख भी लिया था। विचारों से उसका मस्तिष्क भरा था, और उसकी कितनी ही उपलब्धियों पर कोई भी प्रोफ़ेसर ईर्ष्या कर सकता था, फिर भी वह अनेक ऐसी चीज़ों से अनभिज्ञ था जिन्हें हर स्कूली लड़का जानता था। लावरेत्स्की ने अनुभव किया कि वह उन्मुक्त नहीं है, मन ही मन यह तथ्य उसके हृदय को कचोटता,

कि वह अजीब मालूम होता है। अंग्रेज़ियत के अंधभक्त उसके पिता ने अपने लड़के के साथ एक निर्मम मज़ाक किया था: उसकी विकट शिक्षा के फल अब प्रकट हो रहे थे। लम्बे सालों तक, बिना चूं किए, वह अपने पिता की इच्छा का पालन करता रहा, और अन्त में उसकी आंखें खुलीं भी तो उस समय जबकि ज़हर अपना काम कर चुका था—उसकी आदतें उसकी दूसरी प्रवृत्ति बन चुकी थीं। वह लोगों के साथ घुलमिल नहीं पाता था। तेईस वर्ष की अवस्था, लजीले हृदय में प्रेम करने की न बुझने वाली चाह, लेकिन अब तक किसी स्त्री की आंखों में झांकने का वह साहस नहीं कर सका था। किसी हद तक भारी लेकिन सुलझी हुई अपनी बुद्धि और आम समझबूझ के सहारे हठ पकड़ने की अपनी आदत, सोच-विचार में उलझे रहने की अपनी प्रवृत्ति और अपनी काहिली से जीवन के भंवर में कूद कर बहुत पहले ही उसे छुटकारा पाना चाहिए था, लेकिन ऐसा हुआ नहीं, बजाय इसके कृत्रिम निराले में उसे रहना पड़ा! ... वह सब चक्र अब टूट गया था, लेकिन वह अभी भी उसी स्थल पर खड़ा था, दुविधा में जकड़ा और अपने-आप में बंद। इस उम्र में छात्र की वर्दी धारण करना हास्यास्पद था। लेकिन वह हंसी का पात्र बनने से डरने वाला नहीं था—उसकी स्पार्टन शिक्षा-दीक्षा ने कम से कम इतना तो किया ही था कि वह दूसरों के मतामत की उपेक्षा कर सकता था,—और उसने, बिना किसी परेशानी के, छात्र का बाना धारण किया। वह भौतिक विज्ञान और गणित के विभाग में दाखिल हो गया। अच्छा डीलडौल, दमकते लाल-कपोल, मुंहबंद, दाढ़ी पूरी उगी हुई,—अपने साथी छात्रों को वह अजीब मालूम होता। उनके लिए यह जानना भला कैसे सम्भव था कि भारी-भरकम दिखाई पड़ने वाला यह मुंहबंद आदमी जो दो घोड़ों की गाड़ी पर सवार होकर बिला नागा ठीक वक्त पर क्लास में आता है, भीतर से निरा बच्चा है। वे उसे एक अजीब विद्या-

दम्भी पंछी समझते, उसकी संगत से बचते और न ही इसकी कोई आवश्यकता समझते, और वह सब से अलग रहता। विश्वविद्यालय में अपने जीवन के पहले दो सालों में वह केवल एक छात्र से घनिष्ठता प्राप्त कर सका, जिससे वह लेटिन पढ़ता था। मिख़लेविच इस छात्र का नाम था। वह कवि था और उछाह से भरा रहता था। लावरेत्स्की को वह सच्चे हृदय से चाहता था और उसकी वजह से, अनजाने ही, लावरेत्स्की के जीवन ने एक महत्वपूर्ण करवट ली।

एक दिन नाट्यशाला में (मोचालोव की ख्याति उन दिनों अपने पूरे उभार पर थी और लावरेत्स्की उसका एक भी खेल अनदेखा नहीं छोड़ता था) ड्रैस-सर्किल के बौक्स में एक लड़की पर उसकी नज़र पड़ी। यों तो हर स्त्री, जो भी पास से गुज़रती थी, धीर-गम्भीर शरीर के भीतर छिपे उसके हृदय के तारों को झनझना देती थी, लेकिन उसके हृदय के तार इतने ज़ोरों से पहले कभी नहीं झनझनाए थे। बौक्स की मखमली ओटक पर अपनी कोहनियों को टिकाए वह निश्चल बैठी थी, उसके सांवले गोल-मटोल और आकर्षक चेहरे की हर भंगिमा में यौवन की सुहावनी प्रफुल्लता थिरक रही थी, उसकी सुन्दर आंखों में जो कोमल भौंहों के नीचे, आदर का एक मृदुभाव लिए देख रही थीं, भाव-प्रवण उसके होंठों की गतिशील मुसकान में, उसके सिर, बाहों और गरदन की उस मुद्रा विशेष में उसके मस्तिष्क की कमनीयता झलकती थी। कपड़े भी वह बहुत ही उत्कृष्ट पहने थी। उसके पास ही, चेहरे पर पीलापन और झुर्रियां लिए, पैंतालीस वर्ष की एक महिला बैठी थी। वह नीचे गले की पोशाक और सिर पर काले रंग की ज़नानी टोपी पहने थी। वह सप्रयास एकाग्रता से देख रही थी और उसके भावशून्य दन्तविहीन चेहरे पर मुसकान खेल रही थी। बौक्स के पिछले हिस्से में एक वयस्क आदमी दिखाई दे रहा था। वह एक ढीलाढाला फ़्राककोट पहने और गले में ऊंचा

गुलूबंद डाले था। उसके चेहरे पर एक ठस गम्भीरता का नकाब चढ़ा था और अपनी छोटी-छोटी सन्देहशील-आंखों को चढ़ाये बुरी तरह घूर रहा था। उसके गलमुच्छों में खिज़ाब लगा था। उसका माथा विशाल और अत्यन्त साधारण था। उसके गालों में चुन्नटें पड़ी थीं। उसकी हर चीज़ उसके पेन्शनयाफ़्ता जनरल होने की घोषणा कर रही थी। लावरेत्स्की की आंखें उस सुन्दर मोहिनी पर जमी थीं। सहसा बौक्स का दरवाज़ा खुला और मिखलेविच ने प्रवेश किया। इस आदमी का जो कि मास्को में उसका करीब-करीब एक मात्र परिचित था—उसके समूचे आकर्षण के केन्द्र उस युवती के बौक्स में प्रकट होना लावरेत्स्की को अजीब और महत्वपूर्ण मालूम हुआ। उसकी नज़र बराबर बौक्स पर जमी थी, और उसने देखा कि बौक्स में मौजूद सभी लोग मिखलेविच से पुराने मित्र की भांति व्यवहार कर रहे हैं। रंगमंच पर हो रहे प्रदर्शन में अब लावरेत्स्की का मन नहीं लगा। यहां तक कि मोचालोव भी, जो उस रात अपने पूरे 'रंग' में था, सदा की भांति उसे प्रभावित नहीं कर सका। एक बार उस समय जबकि मंच पर बहुत ही करुणाजनक दृश्य प्रस्तुत था, लावरेत्स्की की नज़र अनायास ही उस रूपसी की ओर उठ गई। वह आगे की ओर झुक आई थी, उसके गाल दमक रहे थे, और उसकी आंखें—जो मंच से चिपकी थीं, लावरेत्स्की की अडिग नजर से मन ही मन अवगत होने के कारण—धीरे-धीरे घूम कर उसपर टिक गईं... उन आंखों ने सारी रात उसका पीछा नहीं छोड़ा। कृत्रिम रूप से बनाया गया बांध आखिर टूट गया। उसका रोम-रोम थरथरा रहा था। अगले ही दिन वह मिखलेविच से मिलने गया। उससे मालूम हुआ कि सौन्दर्य की उस प्रतिमा का नाम वरवारा पावलोवना कोरोबिना था, और यह कि बौक्स में मौजूद वृद्ध दम्पती उसके माता और पिता थे, और यह कि पिछले साल मास्को के निकट काउण्ट 'एन' के घर जहां वह पढ़ाने का काम करता

था, उसका उनसे परिचय हुआ था। उछाह में भर कर उसने वरवारा पावलोवना की इतनी तारीफ़ की कि उसे आसमान पर चढ़ा दिया। "मेरे मित्र," उसने अपनी मधुर आवाज़ में कहा, "वह लड़की, सच कहता हूं, चमत्कार से कम नहीं है—एक अद्‌भुत प्रतिमा, सच्चे मानी में एक कलाकार, और साथ ही बेहद सहृदय भी।" लावरेत्स्की की बातों में वरवारा पावलोवना के प्रति उसकी जिज्ञासा का आभास पाकर वह उसे उसके पास ले जाने के लिए तैयार हो गया। उसने बताया कि परिवार के एक सदस्य की भांति वे उसके साथ व्यवहार करते हैं,—यह कि जनरल ज़रा भी दिमाग़चढ़ा आदमी नहीं है,—और यह कि उसकी मां इतनी भोली है कि चांद को ताज़ा पनीर का थाल समझती है। लावरेत्स्की के गाल लाल रंग गए, बुदबुदा कर उसने कुछ कहा जो समझ में नहीं आया, और उसके पास से लौट आया। पूरे पांच दिन तक वह अपने संकोच से संघर्ष करता रहा, लेकिन छठे दिन युवक स्पार्टन ने नयी वर्दी पहनी और मिख़लेविच के हाथों में अपने-आपको सौंप दिया। परिवार का आदमी होने के कारण मिख़लेविच ने केवल अपने बालों में कंघा किया और दोनों कोरोबिन-परिवार के लिए चल दिए।

१३

वरवारा पावलोवना के पिता, अवकाश-प्राप्त मेजर जनरल पावेल पेत्रोविच कोरोबिन का समूचा जीवन पीटर्सबर्ग में सर्विस करते बीता था। युवावस्था में एक अच्छे नृत्यकार और सैनिक के रूप में वह सरनाम था। तंग परिस्थितियों में दो या तीन अच्छे-न-बुरे जनरलों की एडजुटैण्टी कर चुका था। इन्हीं में से एक की लड़की के साथ उसने शादी की और उसके दहेज में पच्चीस हज़ार रूबल उसने प्राप्त किए। सैनिक परेड और सैनिक कवायद

की कला में पूरी उत्कृष्टता के साथ उसने दक्षता प्राप्त की और इस प्रकार, घिसटते-घिसटते, बीस साल की सर्विस के बाद, जनरल का ओहदा उसने प्राप्त किया और रेजिमेंट का कमान वह करने लगा। अब मौक़ा था कि वह कुछ चैन की सांस लेता और फ़ुरसत के साथ अपने घोंसले को संवारता, और वास्तव में उसका इरादा भी यही था, लेकिन उसकी योजनाओं में एक हल्की सी चूक हो गई, और वह ऐसा नहीं कर सका। सार्वजनिक धन जमा करने का एक नया तरीका उसने ईजाद किया था,—और यह तरीका अपने-आपमें बहुत ही बढ़िया मालूम होता था, लेकिन उसने वहीं खींच की जहां कि उसे नहीं करनी चाहिए थी, सो उसके खिलाफ़ रिपोर्ट की गई, एक बहुत ही अप्रिय—बल्कि कहिए कि बहुत ही बुरा बखेड़ा खड़ा हो गया। जनरल ने किसी प्रकार अपने-आपको तो बचा लिया, लेकिन उसकी नौकरी खत्म हो गई और उसे सलाह दी गई कि वह अवकाश प्राप्त कर घर बैठे। इसके बाद पीटर्सबर्ग में ही दो साल तक वह और इधर-से-उधर भटकता रहा—किसी ऐसे पद की आशा में जिससे बिना जान खपाये, धन की अच्छी व्यवस्था हो जाए। लेकिन ऐसी कोई चीज़ पल्ले नहीं पड़ी। इस बीच उसकी लड़की बालिका-विद्यालय की छात्रा बन चुकी थी और खर्च दिन-दिन बढ़ते जा रहे थे... अपनी इच्छा के बहुत कुछ विरुद्ध उसने मास्को जाने का निश्चय किया जहां वे सस्ते में गुज़र कर सकते थे। स्तारो-कोन्यूशेन्नी स्ट्रीट में एक छोटा-सा निम्न घर जिसका अग्रभाग भीमाकार ढाल से सज्जित था, उन्होंने किराये पर लिया और २७५० रूबल वार्षिक की आय पर अवकाश प्राप्त जनरल का मास्को-जीवन शुरू हो गया।

मास्को एक बहुत ही आतिथ्यपूर्ण नगर है—सारी दुनिया का स्वागत करने के लिए प्रस्तुत, किसी जनरल की तो बात ही क्या। सो

पावेल पेत्रोविच का भारी ढांचा – जिसका फ़ौजी अन्दाज़ अभी भी कायम रहा – मास्को के श्रेष्ठतम दीवानख़ानों में शीघ्र ही नज़र आने लगा। खिज़ाब लगे उसके बालों के लच्छे जो उसकी गुद्दी पर छितराए रहते थे, और सन्त आन्ना के पदक का मैला फ़ीता जिसे वह कौवे जैसे काले अपने गुलूबंद के ऊपर लगाता था, एक जानी-पहचानी चीज़ बन गए। क्षीणकाय और पीले चेहरे वाले वे सभी युवक उनसे परिचित हुए जो नाच के दौरान में निराश भाव से ताश की मेज़ों के इर्दगिर्द मंडराया करते हैं। पावेल पेत्रोविच सभासमाज में अपना पावना वसूल करना जानता था। वह कम बोलता और, आदत से मजबूर, नाक से गुनगुना कर आवाज़ निकालता, – लेकिन, कहने की आवश्यकता नहीं, अपने से बड़े आदमी के सामने उसका यह गुनगुना स्वर ग़ायब हो जाता। ताश के खेलों में वह काफ़ी चौकस रह कर योग देता, घर पर एक-एक दाना गिन कर भोजन करता और भोजों में खूब लम्बे हाथ मारता, – अकेला ही छै के बराबर खा जाता। जहां तक उसकी पत्नी का सम्बंध था, उसके बारे में इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कहा जा सकता कि उसका नाम काल्लियोपा कारलोवना था, उसकी बाईं आंख कुछ नम रहती थी जिसकी वजह से काल्लियोपा कारलोवना (प्रसंगवश, मूलतः वह जर्मन थी) अपने-आपको भावनाओं की पुतली समझती थी; वह हमेशा किसी बेचैनी से कसमसाती नज़र आती, – मानो उसे भरपेट खाना न मिला हो। बदन पर बहुत ही कसी हुई मखमली पोशाक, सिर पर ज़नानी टोपी और हाथों में खोखले मैलखाए कड़े पहने रहती थी। वरवारा पावलोवना उनकी – पावेल पेत्रोविच और काल्लियोपा कारलोवना की – एक मात्र सन्तान थी। सत्रह वर्ष की आयु में ही उसने कालेज की उपाधि प्राप्त कर ली थी और कालेज में अगर सुन्दरतम नहीं तो कम-से-कम चतुरतम छात्रा और

श्रेष्ठतम संगीतज्ञ अवश्य मानी जाती थी। गाने-बजाने में उसने "मोहर"* प्राप्त की थी। लावरेत्स्की ने जब उसे पहले पहल देखा उस समय वह अपने उन्नीसवें वर्ष में पांव रख रही थी।

१४

मिखलेविच ने जब उसे लेकर कोरोबिन के श्रीविहीन दीवानखाने में प्रवेश किया और उनके साथ उसका परिचय कराया, उस समय स्पार्टन के घुटने कांप रहे थे। लेकिन उसकी यह बेचैनी शीघ्र ही विलीन हो गई। सभी रूसियों की भांति जनरल एक मगन हृदय और मिलनसार जीव था, — बल्कि इस दिशा में और भी दो डग बढ़ा हुआ, जैसा कि उन सभी लोगों की एक अपनी विशेषता होती है जिनके नाम के साथ बदनामी का कोई पुछल्ला चिपक जाता है। जनरल की पत्नी ने अपने-आपको शीघ्र ही शून्य बना लिया। जहां तक वरवारा पावलोवना का संबंध था, वह इतनी थिर, शान्त और कमनीय थी कि उसे देख कर सारी घबराहट दूर हो जाती थी। सचमुच, उसका अत्यन्त सुघड़ आकार, उसकी मुसकराती हुई आंखें, उसके कंधों का अद्भुत बांकपन, गुलाबी रमक लिए उसकी बांहें, उसके हल्के-फुल्के लेकिन अलसभाव से उठते डग, यहां तक कि उसके बोलने की आवाज़ भी, जिसकी मधुर ध्वनि बड़ी देर तक हिली रहती थी, बहुत ही मोहक — मुग्ध कर लेने वाले — आकर्षण का संचार करती थी, एक भीनी सुगंध की भांति जिसे पकड़ना-पहचानना कठिन होता था, मृदु और कोमल, अभी तक लाज में डूबी, अलसाती,

---

*शाही चिन्ह (साइफर) से युक्त डिस्टिन्क्शन का सूचक सोने का मोनोग्राम।

एक ऐसी चीज़ जिसे शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता लेकिन जो हृदय में उथल-पुथल मचाती और उसे विचलित कर देती थी, – और जो, निश्चय ही, संकोच और भीरुता को नहीं टिकने देती। लावरेत्स्की ने बातचीत का सिलसिला नाटकों की ओर – पिछले दिन के प्रदर्शन की ओर – मोड़ दिया। वरवारा पावलोवना ने बिना किसी बाधा के मोचालोव पर बोलना शुरू किया। और उसके बोलने में केवल उसांसें और अचरज-भरे उद्‌गार ही नहीं थे, बल्कि उसने उसके अभिनय के बारे में बहुत ही संगत टिप्पणियां भी कीं, – ऐसी जिन्हें एक स्त्री की आंखें ही परख-पकड़ सकती थीं। मिखलेविच ने संगीत की चर्चा की। वह ज़रा भी नहीं हिचकिचायी और पियानो पर बैठ गई। बहुत ही सधे हाथों से उसने चोपिन कृत माज़ुरका की कुछ धुनें बजाईं जिनका फ़ैशन अभी शुरू हुआ था। भोजन का समय हुआ। लावरेत्स्की ने विदा लेना चाहा, लेकिन उसे अनुरोध के साथ रोक लिया गया। बढ़िया लाफ़िते मदिरा से जनरल ने उसकी खातिर की। डेप्रे के मदिराघर से, किराये की गाड़ी में अपने अरदली को तुरत भेज, जनरल ने उसके लिए यह मदिरा मंगवाई। लावरेत्स्की गई सांझ अपने घर लौटा और बहुत देर तक, वैसे ही कपड़ों से लदा, बैठा रहा – हाथों से अपनी आंखों को ढंके, मंत्र-मुग्ध-सा। ऐसा मालूम होता था जैसे वह पहली बार उस चीज़ का अनुभव कर रहा हो जो जीवन को जीने-योग्य बनाती है। उसकी वे तमाम धारणाएं और मन्सूबे, वह सारा ऊहापोह और खुराफ़ात, पलक झपकते हवा में विलीन हो गयी थी। उसकी समूची आत्मा एक ही भावना में, एक ही आकांक्षा में लीन हो गई थी – सुख की आकांक्षा में, पाने की, प्रेम की, स्त्री के मधुर प्रेम की आकांक्षा में। उस दिन से कोरोबिन-परिवार के घर का रास्ता उसके लिए एक जाना-पहचाना रास्ता हो गया। वह अक्सर वहां जाता। छै महीने बाद उसने वरवारा पावलोवना से अपना

प्रेम प्रकट किया और उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा जो स्वीकार कर लिया गया। जनरल ने बहुत पहले ही, करीब-करीब उसी दिन जब लावरेत्स्की पहली बार उनके घर गया था, बातों ही बातों में मिख़लेविच से यह जान लिया था कि वह कितने बन्धक-दासों का स्वामी है। वरवारा पावलोवना ने प्रणयप्रसंग के दौरान में और उस समय भी जबकि वह उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रख रहा था, सदा की भांति अपने सन्तुलन और मस्तिष्क की थिरता को बनाए रखा। लेकिन यह वह भी जानती थी कि उसका प्रेमी एक धनी आदमी है। जहां तक उसकी मां काल्लियोपा कारलोवना का सम्बंध था, उसने जर्मन भाषा में सोचा, "मेरी बच्ची ने बहुत ही बढ़िया वर चुना है।" और अपने लिए नयी ज़नानी टोपी खरीद ली।

१५

सो उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया, लेकिन कुछ प्रारम्भिक शर्तों के साथ। सब से पहली तो यह कि लावरेत्स्की को विश्वविद्यालय से विदा लेनी होगी। भला, कौन ऐसी लड़की है जो एक छात्र से विवाह करना चाहेगी, फिर कितना अजीव मालूम होता है यह कि एक भूपति, सम्पत्ति का स्वामी, छब्बीस वर्ष की आयु में एक स्कूली बच्चे की भांति क्लास में पढ़ने जाए। दूसरी यह कि दुलहिन के लिए कपड़े सिलवाने-खरीदने तथा दुलहे के उपहारों का चयन करने का काम खुद वरवारा पावलोवना के ज़िम्मे रहेगा। वह व्यावहारिक सूझबूझ की धनी थी, उसकी रुचि उत्कृष्ट थी और आराम-आसाइश की भारी शौकीन होने के साथ-साथ उसे उपलब्ध करना भी जानती थी। लावरेत्स्की उसकी इस क्षमता पर उस समय विशेषरूप से चकित हुआ जब, विवाह के तुरत बाद, एक आरामदेह गाड़ी में जिसे उसने खरीदा था,

वे लावरिकी के लिए रवाना हुए। अपने चारों ओर की हर चीज़ को जब वह देखता तो वरवारा पावलोवना की दूरदृष्टि सावधानी और पूर्व-तैयारियों का कायल हो कर रह जाता। साफ़-सुथरे और विभिन्न कोनों में एक से एक आकर्षक ड्रैसिंग केसों का उदय हो गया। सिंगारदान और काफ़ी-पात्र – सब कितने बढ़िया थे, और कितनी सुन्दर मालूम होती थी खुद वरवारा पावलोवना जब, सुबह की बेला में, वह काफ़ी तैयार करके देती थी। और लावरेत्स्की उस समय, आलोचक की दृष्टि से नहीं, बल्कि मुग्ध प्रेमी के हृदय से – प्रसन्नता और सौन्दर्यानुभूति से छल-छलाता – यह सब देखता और बच्चों की भांति विह्वल हो उठता। और वह – यह शिशुहृदय युवक – सचमुच बच्चों की भांति निश्छल था। फिर हृदय को लुभा लेनेवाली उसकी पत्नी, – क्या वह प्रफुल्लता का ही मूर्त रूप नहीं थी, क्या वह उमंगों से छलछलाते अकथनीय आनन्दों की सम्भावनाओं को अपने हृदय में नहीं छिपाए थी? और इन सम्भावनाओं को उसने आशा से भी अधिक प्रत्यक्ष किया। ठेठ गर्मी के दिनों में वह लावरिकी आई थी। घर धुंधला और गंदा पड़ा था। नौकर थे, लेकिन बाबा आदम के ज़माने के और अटपटे। लेकिन उसने अपने पति से इसकी कभी भूल कर भी शिकायत नहीं की। अगर उसे लावरिकी म बसना होता तो वह वहां की हर चीज़ बदल डालती और, कहने की आवश्यकता नहीं, घर से ही इस की शुरुआत करती, लेकिन खुदा के त्यागे इन सूने मैदानों में बसने की बात एक क्षण के लिए भी उसके मस्तिष्क में नहीं उपजी। इसे तो वह एक पड़ाव समझ कर रह रही थी, सभी असुविधाओं को सहन करती थी और सनक में आकर उनका मज़ाक उड़ाती थी। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना फिर अपने पालक-पुत्र को देखने आई। वरवारा पावलोवना ने उसे बेहद पसन्द किया, लेकिन वह वरवारा पावलोवना को पसन्द नहीं कर सकी। नयी मालकिन ग्लाफ़ीरा

पेत्रोवना का भी साथ नहीं निभा सकी। वह उसे ग्राराम से रहने भी देती, अगर वृद्ध कोरोबिन ने अपने दामाद का बन्दोबस्त संभालने की इच्छा न प्रकट की होती। अपने इतने निकट-सम्बंधी की जागीर की देख भाल करना – उसने कहा – एक जनरल तक की शान के खिलाफ़ नहीं हो सकता। फिर यह कल्पना से बाहर की चीज़ नहीं है कि, सर्वथा अजनबी आदमी की जागीर में हाथ लगाने से भी पावेल पेत्रोविच गुरेज़ न करता। वरवारा पावलोवना ने बड़ी चतुराई से निशाना साधा। वह खुद सामने नहीं आई, – प्रत्यक्षतः वह अपनी मधुरात्रि के उल्लास में, देहाती जीवन के हवाई सुखों में, अपने संगीत और पठन-पाठन में पूर्णतया डूबी नज़र आती रहती, और ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को धीरे-धीरे उकसाती। यहां तक कि एक दिन सुबह के समय ग्लाफ़ीरा फनफनाती और झाग उगलती लावरेत्स्की के अध्ययनकक्ष में पहुंची और तालियों का गुच्छा मेज़ पर पटकते हुए ऐलान कर उठी कि घर का बन्दोबस्त करना उसके बस की बात नहीं। वह जा रही है। लावरेत्स्की को पहले ही इसके लिए अच्छी तरह से तैयार कर दिया गया था। उसने उसका विदा होना तुरत स्वीकार कर लिया। ग्लाफ़ीरा के लिए यह अप्रत्याशित था। "अच्छी बात है," उसने कहा और उसकी आंखों में एक छाया-सी तैर गई – "लगता है कि मैं यहां सब से फ़ालतू हूँ। मैं जानती हूं कि मुझे यहां से – अपने ही पुश्तैनी घर से – कौन खदेड़ रहा है। लेकिन मेरी यह बात गांठ बांध लेना, भतीजे, – कि तुम खुद भी कभी कोई घर बना कर नहीं बैठ सकोगे, चिरकाल तक भटकते ही रहोगे। बस, तुम से मुझे और कुछ नहीं कहना।" ग्लाफ़ीरा उसी दिन अपने छोटे से देहात के लिए रवाना हो गई। इसके एक सप्ताह बाद जनरल कोरोबिन आ विराजा। उदासीनता का मज़ेदार अभिनय करते हुए समूची जागीर का बन्दोबस्त उसने अपने हाथों में सँभाल लिया।

सितम्बर में वरवारा पावलोवना अपने पति को लेकर पीटर्सबर्ग चली गई। पीटर्सबर्ग में उन्होंने दो जाड़े बिताए (गर्मियों में वे त्सारस्कोये सेलो चले जाते थे)। उनका फ्लैट बहुत ही सुन्दर हवादार और बढ़िया साज़-सामान से सजा था। समाज के मध्यम एवं ऊंचे हल्कों में भी, उन्होंने अपना परिचय बढ़ाया। वे उनके यहां जाते, खूब दावतें देते, आकर्षक संगीत-समारोहों और नृत्य-पार्टियों का आयोजन करते। वरवारा पावलोवना अतिथियों को इस तरह खींचती जैसे दीये की लौ पतिंगों को खींचती है। लेकिन इस तरह का व्यस्त जीवन फ़ियोदोर इवानिच की रुचि के अनुकूल नहीं था। उसकी पत्नी ने परामर्श दिया कि वह कोई सरकारी नौकरी कर ले। लेकिन अपने पिता की स्मृति और खुद अपनी रुचि के कारण सरकारी सर्विस में प्रवेश करना उसे बुरा मालूम हुआ। फिर भी, वरवारा पावलोवना की खातिर, वह पीटर्सबर्ग में ही बना रहा। लेकिन, इसके बाद शीघ्र ही, उसे इसका भी आभास मिलने लगा कि एकान्तवास धारण करने के मार्ग में कोई बाधा नहीं है। और, सच पूछो तो, क्या पीटर्सबर्ग में उसका अध्ययनकक्ष बहुत शान्त और आरामदेह नहीं था? और हर तरह से उसका ध्यान रखनेवाली उसकी पत्नी क्या इसमें भी उसकी मदद करने के लिए तैयार नहीं थी? और इसके बाद हर चीज़ ठीक से चलने लगी। वह एक बार फिर, जैसा कि वह समझता था, अपनी अधूरी शिक्षा को पूरा करने में जुट गया। उसने फिर पढ़ना शुरू कर दिया, यहां तक कि अंग्रेज़ी भाषा का भी अध्ययन करने लगा। बड़ा अजीब मालूम होता जब चौड़े कंधों वाला उसका कसा-गठा बदन सदा मेज़ के ऊपर झुका नज़र आता और उसका भरा-पूरा दाढ़ी युक्त लाल चेहरा किसी शब्दकोष या नोटबुक के पन्नों की ओट में आधा ढका रहता। सुबह का समय वह अध्ययन में बिताता, इसके बाद दिन का बहुत ही बढ़िया भोजन करता (वरवारा पावलोवना

अत्यन्त दक्ष गृहिणी थी) और सांझ को वह जादूभरी, सुगंधों में डूबी, चकाचौंध कर देने वाली दुनिया में प्रवेश करता जिसमें प्रसन्नता से छलछलाते युवा चेहरे तैरते नज़र आते, – और इस दुनिया का केन्द्रीय आकर्षण होती वही उद्यमशीला गृहिणी – उसकी पत्नी। उसने एक पुत्र को जन्म देकर उसकी खुशी में चार चांद लगा दिए, लेकिन वह गरीब अधिक न जिया, – बसन्त में वह मर गया, और गर्मियों में – डाक्टरों की सलाह के अनुसार – अपनी पत्नी के साथ लावरेत्स्की विदेश चला गया, किसी ऐसी जगह जहां पानी स्वास्थ्यप्रद हो। क्योंकि इस दुखद घटना के बाद उसे मनबहलाव की जरूरत थी और उसके स्वास्थ्य के लिए गरम वातावरण आवश्यक था। गर्मी और शरद के दिन उन्होंने जर्मनी और स्विज़रलैण्ड में बिताए और जाड़ों में – जैसी कि आशा थी – वे पेरिस चले गए। पेरिस में वरवारा पावलोवना इस तरह खिल उठी जैसे गुलाब खिलता है, और उतनी ही जल्दी तथा सूझबूझ से जितनी जल्दी और सूझबूझ से कि उसने पीटर्सबर्ग में अपना घर बनाया था, यहां भी उसने एक घोंसला बना लिया। शान्त और फैशनेबुल बस्ती में उसे एक बहुत ही सुन्दर रिहाइश मिल गई, अपने पति के लिए उसने एक ड्रैसिंग गाउन बनवाया जैसा कि उसने पहले कभी नहीं पहना था, एक दासी को उसने नियुक्त किया जो बहुत ही चुस्त-चपल थी, एक बढ़िया बावर्ची और एक अरदली को उसने रखा जो खूब फुर्तीला और तेज़ था। उसने एक आकर्षक कोच और एक बहुत ही नफ़ीस पियानो खरीदा। एक सप्ताह के भीतर ही वह अपना शाल ओढ़े, छतरी लगाए और दस्ताने पहने – ठेठ पेरिस में जन्मी युवती की भांति, – सड़क पर चलती नज़र आने लगी। और उसने शीघ्र ही अपने परिचितों का एक दल जमा कर लिया। शुरू-शुरू में केवल रूसी ही उसके यहां आते थे, फिर फ़्रान्सीसी भी दिखाई देने लगे, – बहुत मिलनसार और शिष्ट, अनव्याहे, उत्कृष्ट रंग-ढंग और सुनने में बहुत ही प्रिय लगने

वाले नामों से युक्त। वे सब के सब बड़े प्रवाह से बोलते, सहज कमनीयता के साथ झुक कर अभिवादन करते और जब अपनी आंखों को सिकोड़ कर देखते तो बड़े भले मालूम होते। उनके गुलाबी होंठ खुलते और उनके मोती से सफ़ेद दांत बिजली की भांति कौंध जाते, और जब वे मुसकराते तो बस, लासानी। वे अपने मित्रों को भी लाते और देखते न देखते, ला बेल मदाम दे लावरेत्स्की*, शोस्से दे आन्तेन से लेकर रू दे लिल** तक विख्यात हो गई। उन दिनों (यह १८३६ की बात है) पत्रकार और संवाददाता आजकल की तरह चींटियों के दल की भांति मंडराते नज़र नहीं आते थे, — उनकी नसल तब तक इतनी नहीं बढ़ी थी, फिर भी जूल नाम का एक जीव वरवारा पावलोवना के यहां आने से न चूकता। कोई उसे चाहता नहीं था, और वह सब जगह बदनाम था। उद्धत और घृणित, वैसा ही जैसा कि द्वन्द्वयुद्ध करने वाले और पछाड़ खानेवाले लोग होते हैं। जूल नाम का वह जीव वरवारा पावलोवना को बहुत ही घिनौना मालूम होता, फिर भी वह उसका स्वागत करती, यह इसलिए कि वह अनेक पत्रों में लिखता था और उसके नाम को बराबर उछालता रहता था। कभी वह उसे मदाम दे ला... त्स्की कहता था, कभी मदाम दे ... महान और शानदार रूसी महिला जो "पी" स्ट्रीट में रहती है। इस प्रकार वह समूची दुनिया को, या पत्र के एकाध सौ पाठकों को जिन्हें मदाम दे ला ... त्स्की में कोई दिलचस्पी नहीं थी, बताता कि वह कितनी आकर्षक और कोमल-करुण महिला है, फ्रेंच स्त्रियों की भांति कितनी बुद्धिचतुर — फ्रान्स के निवासियों के लिए इससे अधिक प्रशंसा की और कोई बात नहीं हो सकती — संगीत में अद्भुत प्रतिभा की धनी और वाल्टज़ नृत्य करने में बेजोड़ — (सचमुच,

---

* सुंदरी लावरेत्स्काया (फ्रेंच भाषा में)

** पेरिस की सड़कों के नाम

वरवारा पावलोवना जब नाचती थी तो हृदय उसके लहराते हुए घाघरे के छोर के साथ साथ फड़फड़ा उठते थे)... एक शब्द में यह कि वह उसकी ख्याति को चारों ग्रोर फैला रहा था ग्रौर यह, निश्चय ही, एक सुखद बात थी। कुमारी मार्स उन दिनों रंगसंच से विदा हो चुकी थी ग्रौर कुमारी रशेल का तब तक मंच पर उदय नहीं हुग्रा था। वरवारा पावलोवना के थिएटर-प्रेम में फिर भी कोई कमी नहीं थी। इटली का संगीत सुन कर वह मंत्रमुग्ध हो जाती ग्रौर ग्रभिनेता ग्रोदरी के मसखरेपन ग्रौर वेषभूषा पर खूब हंसती, कामेडी फ़ान्सेज़ देख कर बड़े सलीके से जुमहाई लेती ग्रौर ग्रति-रोमाण्टिक भाव-नाटकों में मदाम दोरवाल का ग्रभिनय देख कर ग्रांखों से ग्रांसू चुग्राने लगती, ग्रौर सब से बढ़ कर यह कि उसके ग्रतिथिगृह में स्वयं संगीतकार लिस्त दो बार कला-प्रदर्शन कर चुका था—वह कितना नफीस ग्रौर कितना सरल था—एकदम हृदयस्पर्शी! इस तरह की प्रिय ग्रनुभूतियों ग्रौर हिलौरों के बीच जाड़े गुज़र गए, जिनके ग्रन्त में वरवारा पावलोवना को दरबार में भी उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुग्रा। जहां तक फ़ियोदोर इवानिच का सम्बंध था, वह उकताया नहीं, हालांकि कभी-कभी जीवन एक भारी बोझ की भांति उसके कंधों को झुका देता,—इतना सारहीन था वह। वह समाचार पत्र पढ़ता, सोरबोन्न ग्रौर कालेज दे फ़ान्स* में लेक्चर सुनने जाता, फ़ान्सीसी संसद की बहसों का बराबर ग्रध्ययन करता, यहां तक कि सिंचाई पर एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक निबंध का ग्रनुवाद-कार्य भी उसने हाथ में उठा लिया। "मैं ग्रपने पांवों के नीचे घास नहीं उगने दूंगा," वह सोचता, "यह सब वक्त पर काम ग्राएगा। लेकिन ग्रगले जाड़ों में, चाहे जो भी हो, मुझे रूस लौट जाना ग्रौर कस कर काम करना है।" यह कहना कठिन है कि उसके मस्तिष्क में कोई

---

*फ़ांस के सुप्रसिद्ध विद्यालय

सुस्पष्ट ख़ाका था या नहीं, – इस बात का कि रूस लौट कर वह ठीक क्या काम करेगा, और कौन जानता है कि अगले जाड़ों में रूस लौटने में वह सफल हो सकेगा, – अभी तो अपनी पत्नी के साथ उसे बाडेन-बाडेन जाना था। एक अप्रत्याशित घटना ने उसकी सारी योजनाओं को उलट दिया।

१६

एक दिन, संयोगवश, वरवारा पावलोवना की अनुपस्थिति में, लावरेत्स्की उसके निजी कमरे में पहुंच गया। वहां बहुत ही सावधानी से तहाया हुआ एक कागज़ फ़र्श पर पड़ा था। लावरेत्स्की ने यंत्रवत उसे उठा लिया, यंत्रवत उसकी तहों को खोला और उसे पढ़ गया। फ़्रेंच भाषा में उसमें लिखा था: "मेरी परी, – प्रिय बेत्सी! (बार्ब या वरवारा कह कर तुम्हें सम्बोधित करते मुझसे नहीं बनता) उद्यानवीथि के मोड़ पर मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन तुम नहीं आईं। कल डेढ़ बजे हमारे छोटे-से घर की ही शोभा बढ़ाना। तुम्हारा प्यारा मोटू पति उस समय सदा की भांति अपनी किताबों से सिर मारता होगा। हम दोनों तुम्हारे कवि 'पूस्किन' का वही गीत फिर गाएंगे जो कि तुमने मुझे सिखाया था: 'खूसट पति, निर्मम पति!' तुम्हारे नन्हे हाथ और नन्हे चरण पर हज़ारों चुम्बन। तुम्हारी प्रतीक्षा में,

– अर्नेस्ट।"

लावरेत्स्की पत्र पढ़ गया और उसका मस्तिष्क एकाएक उसकी गहराई को न पकड़ सका। उसने उसे दो बार पढ़ा – और उसका सिर चकरा गया, पांव के नीचे फ़र्श इस तरह डोलने लगा जैसे हिचकोले खाते जहाज़ का डैक डोलता है। उसके मुंह से एक चीख़ निकली, उसका मुंह खुला का-खुला रह गया और वह एकबारगी फफक कर रो उठा।

उसके मस्तिष्क को जैसे काठ मार गया। अपनी पत्नी पर वह इस हद तक आंखें बन्द करके विश्वास करता था कि छल और विश्वासघात की सम्भावना कभी उसके दिमाग़ में प्रवेश तक नहीं करती थी। उसकी पत्नी का प्रेमी यह अर्नेस्ट गोरा-चिट्टा सुनहरी बालों वाला तेईस वर्ष का एक छिछोरा-सा युवक था। बैठी हुई छोटी सी नाक और सलीके से कटी पतली मूछें, उसके जितने भी परिचित थे, उनमें सब से गया-बीता। कई मिनट हो गए, आधा-घंटा गुज़र गया, लेकिन लावरेत्स्की उस घातक पत्र को अपने हाथ में कचरता अभी भी वैसे ही खड़ा सूनी आंखों से फ़र्श की ओर ताक रहा था। उसकी आंखों में अंधेरा उमड़-घुमड़ रहा था और उसके भंवरों की भूल-भुलैयां में पीले चेहरे तैरते नज़र आ रहे थे। उसका हृदय दर्द कर रहा था, जैसे उसे कोई निचोड़ रहा हो। ऐसा मालूम हुआ जैसे वह गिर रहा हो,—किसी अतल गहराई में डूबता जा रहा हो। तभी रेशमी कपड़ों की परिचित सरसराहट ने उसे चेता दिया। वरवारा पावलोवना, शाल और टोपी पहने, टहल कर लौट आई। लावरेत्स्की सिर से पांव तक कांप उठा और फिर तेज़ी से बाहर की ओर लपका। उस समय वह इतना भरा था कि उसका एक-एक अंग नोच डालता, इतना मारता कि मलीदा बना देता,—दहकानों की भांति—खुद अपने हाथों से उसका गला घोट डालता। वरवारा पावलोवना धक्-से रह गई, उसने उसे रोकना चाहा, लेकिन वह—केवल फुंकार के साथ "बेत्सी" कह कर—तेज़ी से घर से बाहर निकल गया।

लावरेत्स्की ने एक गाड़ी पकड़ी और कोचवान को नगर से बाहर चलने का आदेश दिया। बाक़ी सारा दिन और सारी रात वह जहां-तहां भटकता रहा। बीच-बीच में अनवरत रुकता और अपने हाथों को निराशा से हवा में फेंकता। कभी वह पागलों की भांति सिर धुनता, और कभी—एकाएक—सारा मामला उसे एक मज़ाक मालूम होता, और वह खिलखिला

तक उठता। सुबह होने पर जब उसे कुछ ठण्ड मालूम हुई तो नगर के छोर पर एक मनहूस से कहवाखाने में वह चला गया और एक अलहदा कमरा लेकर खिड़की के पास कुर्सी पर बैठ गया। एक के बाद एक, जमुहाइयों ने उसे घेर लिया। उसके पांवों में इतनी शक्ति नहीं थी कि खड़ा हो सके। उसका बदन चूर-चूर हो गया था। लेकिन वह थकान का अनुभव नहीं कर रहा था, — हालांकि थकान, प्रत्यक्षतः उससे अपना पावना वसूल कर रही थी। वह वैसे ही बैठा शून्य में ताकता रहा। उसका मस्तिष्क कुछ पकड़ नहीं पा रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या हो गया है, और वह यहां — इस अजनबी सूने कमरे में — मुंह में कड़वाहट भरे और हृदय पर पत्थर रखे, अकड़े हुए और सुन्न अंगों के साथ — इस तरह अकेला क्यों है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वार्या उस फ़ान्सीसी के सामने कैसे बिछ गई और किस प्रकार वह, यह जानते हुए भी कि वह विश्वासघात कर रही है, पहले की भांति ही थिर बनी रही, उसके प्रति अपना प्यार-दुलार और विश्वास दिखाती रही। "मेरी कुछ समझ में नहीं आता," वह अपने सूखे होंठों से फुसफुसाया, "कौन कह सकता है कि इसी प्रकार वह पीटर्सबर्ग में भी ..." उसने अपने इस सवाल को अधूरा ही छोड़ दिया और, सिर से पांव तक थरथरा कर, एक बार फिर जमुहाई ली। सुखद और दुःखद, दोनों तरह की स्मृतियां समान रूप से उसे कचोट रही थीं। सहसा उसे ख्याल आया कि कुछ ही दिन पहले उसकी और अर्नेस्ट की मौजूदगी में पियानो पर उसने "खूसट पति, निर्मम पति" गाया था। उसके चेहरे का वह भाव, उसकी आंखों की वह विचित्र चमक, और उसके गालों का रंग जाना, — सभी कुछ उसकी आंखों के सामने कौंध गया। वह उछल कर खड़ा हो गया। उसके मन में आया कि जाकर वह उनसे कहे: "तुम मेरे साथ मजाक करने चले थे, — उस आदमी के साथ जिसके परदादा किसानों को पसलियों के बल लटका देते थे, —

ग्रौर नाना खुद दहकान थे," – ग्रौर फिर उन दोनों का काम तमाम कर दे। फिर उसे ऐसा मालूम हुग्रा जैसे वह सब एक सपना हो, – नहीं, सपना भी नहीं – बल्कि एक तरह का खिलवाड़ हो – बस, एक हल्का-सा झटका ग्रौर सब गायब, एक हल्का-सा झटका देकर उसने चारों ग्रोर देखा ... ग्रौर उस बाज़ की भांति जो शिकार को ग्रपने पंजों में दबोचता है, सन्ताप ने उसके हृदय को दबोच लिया ग्रौर ग्रधिकाधिक गहराई के साथ उसे ग्रपने पंजों से नोचने लगा। इससे भी बढ़ कर यह कि लावरेत्स्की, कुछ ही महीने बाद, पिता बनने की ग्राशा कर रहा था... उसका ग्रतीत, उसका भविष्य, उसका समूचा जीवन ज़हर से भर गया। ग्रन्त में वह पेरिस लौटा, होटल में उसने एक कमरा लिया ग्रौर ग्रर्नेस्ट का पुर्ज़ा ग्रपने एक पत्र के साथ वरवारा पावलोवना के पास उसने भेज दिया। ग्रपने पत्र में उसने लिखा :

"साथ वाला पुर्ज़ा तुम्हें सब कुछ बता देगा। लगे हाथ मैं इतना ज़रूर कहना चाहूंगा कि यह तुम से कैसे हुग्रा, – तुम जो सदा इतनी चौकस रहती हो, ऐसे महत्वपूर्ण काग़ज़ को फ़र्श पर गिरा कर चल दी।" (ग्रभागा लावरेत्स्की इस वाक्य पर घंटों तक सोचता ग्रौर उसे ग्रपने हृदय में संजोता रहा) "मैं तुम से मिल नहीं सकता, ग्रौर मैं समझता हूं कि तुम भी मुझसे मिलने का कभी ग्राग्रह नहीं करोगी। मैं तुम्हारे लिए पन्द्रह हज़ार फ़्रान्क वार्षिक का ग्रलाउन्स नियत किए दे रहा हूं, – इससे ग्रधिक मैं नहीं दे सकता। ग्रपना पता देहात के ग्राफ़िस में भेज देना। जो मन चाहे ग्रब तुम करो, जहां जी चाहे रहो। तुम्हें खुशी नसीब हो, यही कामना है। पत्र का कोई जवाब देने की ज़रूरत नहीं।"

लावरेत्स्की ने लिखा तो यह कि उसे जवाब की ज़रूरत नहीं है ... लेकिन उसके पलक-पांवडे बिछे थे, वह जवाब पाने के लिए भूखा था, यह जानने के लिए भूखा था कि इस कल्पनातीत ग्रौर समझ में न ग्राने

वाली घटना के पीछे क्या रहस्य है। वरवारा पावलोवना ने जवाब में उसे एक लम्बा पत्र भेजा, फ़्रेंच भाषा में। इस पत्र में और भी दोहरी चोट थी—जले पर नमक की भांति—उसके बचे-खुचे सन्देह भी गायब हो गए,—और उसने उनके लिए लज्जा का अनुभव किया। वरवारा पावलोवना ने अपना बचाव नहीं किया: कुल मिलाकर एक ही इच्छा उसने प्रकट की,—यह कि वह उससे मिलना चाहती है, और अनुरोध किया था कि उसके बारे में वह कोई अकाट्य फ़ैसला न करे। पत्र ठंडा और संयत था, हालांकि कहीं-कहीं आंसुओं के भी चिन्ह दिखाई देते थे। लावरेत्स्की के मुंह पर एक तीखी मुस्कुराहट दौड़ गयी और पत्र लानेवाले से उसने कहा कि जाओ, सब ठीक है। इसके तीन दिन बाद वह पेरिस में नहीं रहा, लेकिन रूस न जाकर वह इटली पहुंचा। वह खुद नहीं जानता कि उसने इटली को क्यों चुना। कोई और भी जगह होती तो उससे कोई फ़र्क न पड़ता,—केवल घर को छोड़ कर। अपनी पत्नी के अलाउन्स के बारे में उसने अपने कारिन्दे को सूचित कर दिया। और इसी के साथ-साथ यह भी उसे आदेश दिया कि जागीर का बन्दोबस्त वह जनरल कोरोबिन से तुरत अपने हाथों में ले ले, हिसाब-किताव के लिए उसके आने की प्रतीक्षा न करे और महामहिम की लावरिकी से विदाई का प्रबंध कर दे। उसकी कल्पना में निष्कासित जनरल की बेचैनी और आहत मान का बहुत ही सुस्पष्ट चित्र मूर्त हो उठा और बावजूद इसके कि वह शोक में डूबा था, उसने एक प्रकार के वैर-भरे सन्तोष का अनुभव किया। इसी के साथ-साथ उसने ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना को भी एक पत्र लिखा और उससे लावरिकी लौटने का अनुरोध किया। पत्र के साथ-साथ उसके नाम एक अधिकार-पत्र भी लिखकर भेज दिया। लेकिन ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना लावरिकी नहीं लौटी, उसके बजाय उसने पत्रों में एक नोटिस छपाया कि यह अधिकार-पत्र रद्द हो चुका है, जो कि सर्वथा अनावश्यक था।

इटली के एक छोटे से कस्बे में गुप्तावास करते हुए भी लावरेत्स्की, काफ़ी दिनों तक, अपनी पत्नी की हरकतों का पता लगाने के लिए ललकता रहा। समाचारपत्रों से उसे मालूम हुआ कि वह पेरिस से बाडेन-बाडेन चली गई है, जैसी कि उसकी योजना थी। उसके शीघ्र बाद ही, हमारे परिचित मोसिये जूल द्वारा प्रकाशित एक छोटे-से संवाद में उसका नाम फिर दिखाई पड़ा। अपनी उसी लच्छेदार शैली में उसने वह नोट लिखा था, उसने अपना मैत्रीपूर्ण शोक प्रकट किया था। इस नोट को पढ़कर फ़ियोदोर इवानिच गहरी घिन्न से भर गया। फिर उसने पढ़ा कि उसके एक लड़की हुई है। इसके दो महीने बाद उसके कारिन्दे ने सूचना दी कि वरवारा पावलोवना ने अपनी पहली तिमाही का अलाउन्स ले लिया है। इसके बाद की खबरें और अफ़वाहें बद से बदतर होती गईं और अन्त में, सभी समाचारपत्रों में, बड़े-बड़े अक्षरों में एक ऐसी कहानी छपी जो जितनी दुःखद थी, उतनी ही हास्यास्पद भी थी। उसकी पत्नी इस कहानी की बदनाम नायिका थी। अब कुछ भी बाक़ी नहीं रहा था – वरवारा पावलोवना "सरनाम" हो चुकी थी।

लावरेत्स्की ने अब उसकी गतिविधि का अनुसरण करना छोड़ दिया। लेकिन वह अधिक दिनों तक अपने को क़ाबू में नहीं रख सका। अपनी पत्नी के लिए कभी-कभी वह इस क़दर लालायित हो उठता कि उसका जी करता, सब कुछ न्यौछावर करके भी, .. शायद ... उसे माफ़ तक करके उसकी दुलार भरी आवाज़ फिर सुन सके, अपने हाथ में उसके हाथ का स्पर्श अनुभव कर सके। लेकिन समय गुज़रता गया और उसका प्रभाव उसपर पड़े बिना न रहा। वेदनाओं का शहीद बनना उसके भाग्य में नहीं बदा था। उसकी सबल प्रकृति फिर उसपर हावी हो गयी। उसकी आंखें खुलीं। जो आघात उसने सहा था, वह अब इतना अप्रत्याशित नहीं मालूम होता था। अब वह अपनी पत्नी को पहचानता गया, – अपने निकटतम

लोगों का सच्चा रूप हमें तभी नज़र आता है जब हम उनसे अलग होते हैं। अब वह इस योग्य था कि अपने अध्ययन और काम में फिर से जुट सके, हालांकि पहले वाला उत्साह अब उसमें नहीं था। जीवन की परीक्षाओं और उसकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा से उत्पन्न अनास्था उसके हृदय में सदा के लिए सरसरा गई थी। अपने चारों ओर हर चीज़ से वह उदासीन हो गया। अन्त में, चार साल के बाद, वह कुछ आश्वस्त हुआ कि घर लौट कर अब वह अपने लोगों के बीच रह सकता है। पीटर्सबर्ग या मास्को दोनों में से कहीं भी न रुकते हुए वह सीधे 'ओ' पहुंचा, — जहां कि हमने उसे छोड़ा था और जहां चलने के लिए हम अब फिर अपने उदार पाठकों से अनुरोध करते हैं।

१७

अगले दिन, सुबह के दस बजे लावरेत्स्की कलीतिन के घर पहुंचा। वह पोर्च की सीढ़ियों पर डग रख रहा था कि लीज़ा से भेंट हो गई। अपना हैट और दस्ताने पहने वह बाहर आ रही थी।

"किधर जा रही हो?" उसने पूछा।

"सामूहिक प्रार्थना में। आज रविवार है न?"

"क्या तुम गिरजा जाती हो?"

लीज़ा ने चुपचाप चकित भाव से उसे देखा।

"क्षमा करना," लावरेत्स्की ने कहा, "मैं ...मेरा वह मतलब नहीं था। मैं तुमसे विदा लेने आया हूं। घंटे-भर के भीतर मैं देहात के लिए रवाना हो जाऊंगा।"

"तुम्हारा देहात यहां से कोई दूर थोड़े ही है, — क्यों, ठीक है न?" लीज़ा ने पूछा।

"बीसेक मील होगा।"

तभी लेनोचका भी बाहर आ गई। उसके साथ देख-भाल करने के लिए उसकी दासी भी थी।

"अच्छी बात है। हमें भूलना नहीं," सीढ़ियों से उतरते हुए लीज़ा ने कहा।

"यही मैं तुमसे भी चाहता हूं—कि मुझे भूलना नहीं," उसने कहा, और फिर बोला, "एक बात और। तुम गिरजा जा रही हो,—न हो तो मेरे लिए भी दुआ मांगना—मांगोगी न?"

लीज़ा ठिठकी और घूम कर उसकी ओर मुड़ गई।

"अगर तुम चाहते हो तो," सीधे उसकी आंखों में देखते हुए लीज़ा ने कहा, "तुम्हारे लिए भी ज़रूर दुआ मांगूंगी। चलो, लेनोचका, चलें।"

ड्राइंगरूम में जब लावरेत्स्की पहुंचा तो वहां मारिया दिमीत्रियेवना से भेंट हो गई। वह अकेली थी। यू-डि-कोलोन और पीपरमिन्ट से गंधा रही थी। सिर में दर्द था और रात चैन से नहीं बीती थी। सदा की भांति अपनी अलसाई सी हार्दिकता से उसने उसका स्वागत किया और धीरे-धीरे बातों में रम गई।

"व्लादीमिर निकोलाइच एक प्यारा युवक है,—तुम्हारी क्या राय है?" उसने पूछा।

"कौन,—किस व्लादीमिर निकोलाइच का ज़िक्र कर रही हो?"

"अरे वही पान्शिन, जो कल यहां आया था। तुमने तो जैसे उसके हृदय पर अपनी मोहर ही अंकित कर दी,—उसे खूब प्रभावित किया। लेकिन सुनो, तुम्हें मैं एक निजी बात बताती हूं। मों शेर कुज़ें (मेरे प्यारे भतीजे)—हमारी लीज़ा के प्रेम में वह एकदम सराबोर है। मतलब यह कि वह एक अच्छे घराने का लड़का है, उजले भविष्य का धनी, खूब चतुर, और साथ ही कम्मेरजंकर... और अगर भगवान की ऐसी ही इच्छा

है ... तो एक मां के नाते मैं कुल जमा यही कह सकती हूं ... कि मुझे बहुत खुशी होगी ... इसमें सन्देह नहीं, यह एक भारी ज़िम्मेदारी की बात है, बच्चों का सुख सर्वथा उनके माता-पिता पर निर्भर करता है। जानते ही हो, यह ऐसी चीज़ नहीं जिसे टाला जा सके। और यहां, इतने दिनों से मैं एकदम अकेली हूं, हर काम—दुनिया भर का—खुद मुझे ही करना पड़ा है। बच्चों को पालना, पढ़ाना-लिखाना,—सिवा मेरे और कौन था जो यह सब करता? इस समय भी, तुम्हीं देखो, एक फ़्रेंच गवर्नेस को मैंने बुलवाया ..."

मारिया दिमीत्रियेवना घर-बार और अपने बच्चों की चिन्ताओं और देख-रेख सम्बंधी परेशानियों का वर्णन करने में डूब गई। लावरेत्स्की चुपचाप सुनता और अपने हैट को जिसे वह हाथों में लिये था मसोसता रहा। उसकी पथरायी नज़र से बातूनी महिला अचकचा उठी।

"और तुम्हें लीज़ा कैसी लगती है?" उसने पूछा।

"येलिज़ावेता मिखाइलोवना बहुत ही अच्छी लड़की है," लावरेत्स्की ने जवाब दिया। फिर वह उठ खड़ा हुआ, झुक कर उसने महिला से विदा ली और भीतर मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना से मिलने चला गया। मारिया दिमीत्रियेवना ने उसे जाता हुआ देख कर मुंह बिचकाया और सोचा, "कितना गंवार आदमी है यह,—निरा दहकान! अब मालूम हुआ कि इसकी पत्नी क्यों इसे धता बता गई!"

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना अपने कमरे में पालतू जीवों से घिरी बैठी थी। इनकी संख्या पांच थी और सब के सब उसे समान रूप से प्रिय थे—एक उभरे गले का मंजा हुआ बुलफ़िंच पक्षी,—जिससे वह उस दिन से प्यार करने लगी थी जब से कि उसने सीटी बजाना और पानी छिड़कना बन्द किया, रोस्का नामक एक सहमा-सा सिकुड़ा-सिमटा नन्हा कुत्ता, मात्रोस नाम का एक तेज़ मिज़ाज बिल्ला, सांवले रंग की नौ बरस की लड़की शूरोचका जो

निश्चल बैठना नहीं जानती थी और जिसकी आंखें बड़ी-बड़ी तथा छोटी-सी पैनी नाक थी, सफ़ेद पगड़ी-नुमा टोपी और काले कपड़ों पर कत्थई रंग की छोटी जाकेट पहने करीब पचपन वर्ष की एक वृद्ध महिला जिसका नाम नस्तासिया कारपोवना ओगारकोवा था। शूरोचका निम्नवर्ग की जीव थी, मां-बाप से वंचित। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने तरस खा कर उसे भी, रोस्का की भांति, अपने पास रख छोड़ा था। लड़की और कुत्ता, दोनों को वह सड़क से उठा लाई थी। दोनों ही क्षीणकाय और भूख से त्रस्त शरद की वर्षा में भीग रहे थे। रोस्का का कोई नामलेवा नहीं था, और शूरोचका को उसके पियक्कड़ चचा ने—जो मोची का काम करता था—घर से निकाल अपना बोझ हल्का कर लिया था। वह खुद अपना ही दोज़ख नहीं भर पाता था और जब शूरोचका खाने को मांगती थी तो उसके सिर पर लकड़ी का क़ालिब दे मारता था। नस्तासिया कारपोवना से मारिया तिमो-फ़ेयेवना की भेंट उस समय हुई थी जबकि वह सत्संग के लिए एक मठ में गई थी। पहला सम्पर्क गिरजे में हुआ (मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के कथनानुसार प्रार्थना में उसकी मुग्ध तन्मयता के कारण वह उसके मन में बस गई थी), उसके साथ उसने बातचीत की और उसे चाय का निमंत्रण दिया। तब से वह अलग नहीं हुई। नस्तासिया कारपोवना बहुत ही प्रसन्न और नर्म-स्वभाव की महिला थी। वह एक निःसन्तान विधवा थी, गरीब, और भले घर की। उसका गोल सिर सफ़ेद बालों से घिरा था, उसके हाथ मुलायम और सफ़ेद थे, उसके चेहरे की आकृति भी मुलायम और विशाल थी, और उसकी नाक तनिक हास्यास्पद और कुछ अटपटे ढंग से ऊपर को उठी थी। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के प्रति उसके हृदय में गहरी श्रद्धा थी और वह भी, बावजूद इसके कि उसके मुलायम हृदय का वह इतना मज़ाक उड़ाती थी, उसे बहुत चाहती थी। उसका कोमल हृदय, युवकों को देख कर खिंच जाता था और अत्यन्त निर्दोष विनोद करने पर भी उसके गाल लाज से

लाल रंग जाते थे। उसकी जमा पूंजी, कुल मिला कर, बारह सौ रूबल थी। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना उसका सारा खर्च उठाती थी और वह, पूरी समानता के साथ, रहती थी, खुद मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना भी किसी भी प्रकार की दास भावना का प्रदर्शन सहन नहीं करती थी।

"अरे, फ़ेदिया, तुम आ गये!" उसे देखते ही उसने चिल्ला कर कहा, "कल रात तुम मेरे परिवार से तो मिले ही नहीं, —यह देखो, यहां सब चाय के लिए जमा हैं। हम अब यह दूसरी बार चाय पी रहे हैं। तुम इन सबकी कमर थपथपा सकते हो, केवल शूरोचका तुम्हें हाथ नहीं लगाने देगी, और बिल्ली भी नोचेगी। क्या तुम आज जा रहे हो?"

"हां," एक छोटे-से स्टूल पर बैठते हुए लावरेत्स्की ने कहा, "मारिया दिमीत्रियेवना से तो मैं विदा ले भी चुका हूँ। येलिज़ावेता मिखाइलोवना से भी मेरी भेंट हो चुकी है।"

"सीधे लीज़ा क्यों नहीं कहते, मेरे बेटे, तुम्हारे लिए वह मिखाइलोवना कब से हो गई। बस-बस, अब ज़्यादा कसमसाओ नहीं, —ऐसा न हो कि शूरोचका का स्टूल ही तोड़ डालो!"

"वह गिरजा जा रही थी," लावरेत्स्की कहता गया, "मैं नहीं जानता था कि धर्म में उसकी इतनी रुचि है।"

"हां, फ़ेदिया, वह बहुत ही श्रद्धालु है, तुम या मैं—दोनों से कहीं अधिक!"

"तो क्या तुम में श्रद्धा नहीं है?" फुसफुसाती-सी आवाज़ में नस्तासिया कारपोवना ने कहा, "आज प्रभात की प्रार्थना में तुम नहीं गईं, लेकिन दस बजे की प्रार्थना में तो जाओगी।"

"नहीं प्रिय, नहीं! तुम्हें अकेले ही जाना पड़ेगा, —मेरे हाडगोड़ अब अलसा गए हैं," मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने जवाब दिया, "बस, चाय के सहारे किसी तरह अपने-आपको चला रही हूं।"

नस्तासिया कारपोवना के बातें करते समय – बावजूद इसके कि वह उसे अपने बराबर समझती थी – वह उसे 'तू' कह कर सम्बोधित करती थी। आख़िर को थी तो पेस्तोव घराने की ही न? उस घराने की जिसके तीन सदस्य ज़ार निर्मम इवान* की मृतक-सूची में स्थान पा चुके थे।** मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना भला यह कैसे भूल सकती थी?

"मैं एक बात पूछना चाहता था," लावरेत्स्की ने फिर कहना शुरू किया, "मारिया दिमीत्रियेवना ने अभी मुझे बताया कि ... भला, क्या नाम है उसका ... हां, पान्शिन ... हां, तो कैसा आदमी है वह?"

"हे भगवान, यह औरत भी कैसी बातूनी है!" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना बुदबुदाई, "मैं समझती हूं कि तुम्हें भी अपनी गुप्त बात बताने से वह नहीं चूकी, – यह कि कितना बढ़िया 'वर' उसने ढूंढ़ लिया है। यह सारी कानाफूसी पादरी के उस बेटे से ही क्यों नहीं किया करती, दूसरों को क्यों नहीं बख़्शती? शुक्र समझो कि अभी कुछ नहीं है। लेकिन वह है कि खूब तूमार बांधे है!"

"क्यों, शुक्र क्यों समझो?" लावरेत्स्की ने पूछा।

"इसलिए कि वह बढ़िया आदमी मुझे पसंद नहीं है। फिर, इसमें खुशी के मारे इस तरह उलटा होने की क्या बात है?"

"तुम उसे पसन्द नहीं करतीं?"

---

* रूस में ज़ारशाही को स्थापित करनेवाले इवान चतुर्थ (१५३०-८४) को निर्मम इवान कहा जाता है। वह विख्यात राजनयिक था। सारे रूस को एक सुदृढ़ एवं सबल केन्द्रीय सत्ता के अन्तर्गत संगठित करने का श्रेय उसीको था।

** अपने किसी प्रिय मृत व्यक्ति के नाम पर गिरजाघरों में प्रार्थना कराने की प्रथा रूस में प्रचलित थी।

"नहीं, मैं उसे पसन्द नहीं करती। वह हरेक पर अपना जादू नहीं चला सकता। यही क्या कम है कि नस्तासिया कारपोवना को उसने अपने प्रेम में लट्टू बना लिया है।"

बेचारी विधवा परेशान हो उठी।

"ओह यह तुम क्या कहती हो, मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना कम से कम भगवान से तो कुछ डरो!" उसने चीखते हुए कहा और उसका चेहरा तथा गरदन रंग गए।

"और वह जानता है—शैतान!" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने बीच में ही कहा, "वह जानता है कि स्त्रियों के हृदय में किस तरह घुसा जाता है। देखो न, सुंघनी रखने की एक डिबिया उसने भेंट की है। सच, फ़ेदिया, तुम उससे एक चुटकी मांग कर देखना कि कितनी खूबसूरत चीज़ है वह। उसके ढक्कन पर घोड़े पर चढ़े एक रिसालदार का चित्र बना है। समझीं, प्यारी! अब तुम नाहक़ बात छिपाने की कोशिश न करो।"

नस्तासिया कारपोवना निराशा से अपने हाथ फेंकने के सिवा और कुछ नहीं कर सकी।

"और लीज़ा?" लावरेत्स्की ने पूछा, "क्या वह भी उसे पसन्द करती है?"

"मेरी समझ से तो करती है,—लेकिन, कौन जाने? कौन कह सकता है कि उसके हृदय में क्या है? और अनोखा हृदय—तुम तो जानते ही हो—जंगल के समान होता है—लड़कियों का तो और भी अधिक। मिसाल के तौर पर इस शूरोचका का हृदय ही लो,—और ज़रा उसकी थाह पाने की कोशिश करो। जब से तुम आए हो, दुबकी बैठी है,—बाहर जाने का नाम तक नहीं लेती?"

शूरोचका अपनी खिलखिलाहट को रोक कमरे से बाहर भाग गई। लावरेत्स्की अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ।

"हां," उसने धीरे से कहा, "लड़की का हृदय एक पहेली होता है।"

और वह विदा लेने लगा।

"अच्छा तो अब—क्यों, जल्दी ही भेंट होगी न?" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने पूछा।

"बहुत सम्भव है, बुआ! तुम तो जानती ही हो, यहां से कुछ बहुत दूर नहीं जा रहा हूं।"

"हां ठीक, वसीलेवस्कोये ही तो तुम जा रहे हो। लावरिकी में तुम नहीं रहना चाहते। जैसा तुम ठीक समझो। लेकिन एक बात न भूलना,—अपनी मां की समाधि पर ज़रूर जाना, और साथ ही अपनी नानी की भी। विदेश से लौटे हो। काफ़ी चतुराई का पोट बांध कर लाए होगे। लेकिन कौन जानता है, सम्भव है वे अपनी क़ब्रों में यह अनुभव करें कि तुम्हें उनकी याद है। और फ़ेदिया, ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना के लिए प्रार्थना कराना भी न भूलना। यह लो, इसके लिए यह रूबल लेते जाओ। बस-बस, हूं-हां न करो, चुपचाप ले लो। यह मेरी इच्छा है जिसे मैं पूरा करना चाहती हूं। जब वह जीवित थी तो मेरा उससे कोई अधिक प्रेम नहीं था। लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह स्वतंत्र चरित्र की स्त्री थी। सच, बहुत ही समझदार थी वह, और तुम्हारे साथ उसने कोई बुरा व्यवहार भी नहीं किया। अच्छा तो अब जाओ, भगवान तुम्हारा भला करे, नहीं तो तुम उकता कर कहोगे कि बुढ़िया पीछा नहीं छोड़ती!"

और मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने अपने भतीजे को गले से लगा लिया।

"और चिन्ता न करो, लीज़ा पान्शिन से विवाह नहीं करेगी। उसे उससे कहीं अच्छा पति मिलना चाहिए जिसकी कि वह हक़दार है।"

"अरे नहीं, चिन्तित मैं ज़रा भी नहीं हूं!" लावरेत्स्की ने जवाब दिया, और वहां से चल दिया।

चार घंटे बाद उसने अपने घर की राह पकड़ी। उसकी गाड़ी देहात की नर्म सड़क पर तेज़ी से बढ़ रही थी। एक पखवाड़े से बारिश का कुछ पता नहीं था। महीन धुंध की दूधिया चादर हवा में लटकी थी और दूर स्थित जंगल को आंखों से ओझल किये थी। जंगल की ओर से, जलने की गंध आ रही थी। पीले-नीले आकाश में झीने कगारों वाले छाया-सदृश बादलों के झुंड तैर रहे थे। सूखी हवा के काफ़ी कड़े झोंके, तपन को कम किए बिना, बराबर वदन से आकर टकरा रहे थे। अपने सिर को कुशन पर टिकाए और बांहों को अपने वक्ष पर मोड़े लावरेत्स्की भागते हुए खेतों को देख रहा था जो सामने पंखे की भांति फैले थे। कांस की झाड़ियां आतीं और सहज भाव से खिसक जातीं, मूर्ख कौवे और गुरसल उदास कनखियों से गुज़रती हुई गाड़ी की ओर ताकते, चिरायते की झाड़ियां 'मगर्वट' और 'रेबीना'–उगी खेतों की लम्बी मेड़ें–सीमा-पट्टियाँ–सरसराती हुई निकल जातीं। स्तेपीय निर्जनता की इस ताज़ी और उभड़ती करवटें लेती नग्नता को देखकर–यहां की वनस्पति, हरियाली, लम्बे ढलुवानों, बलूत के झुरमुटों से घिरी घाटियों, छोटे-छोटे मटमैले गांवों, कम शाखोंवाले बर्च वृक्षों,–इस समूचे चिर अनदेखे रूसी दृश्यपट ने ऐसे भावों का उसके हृदय में संचार कर दिया जो जितने मधुर थे उतने ही शोकपूर्ण भी। उसका हृदय एक हल्की कसक से भर गया। धीरे-धीरे वह विचारों में भटकने लगा। उसके विचार उतने ही धुंधले और अस्पष्ट थे जितने कि वे बादल जो उसके सिर के ऊपर आकाश में मंडरा रहे थे। उसे अपने बचपन की याद आई, मां की याद और उसकी आंखों के सामने वह चित्र घूम गया जबकि उसकी मां मृत्युशैया पर पड़ी थी,–यह कि किस प्रकार उसे मां के पास लाया गया, किस प्रकार उसने उसका सिर अपने

सीने से सटाया और क्षीण कण्ठ से वह रो उठी, फिर किस प्रकार ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना की ओर उसने देखा और अपने आंसुओं को भीतर ही भीतर पी गई। इसके बाद पिता का चित्र उसकी आंखों के सामने तैर गया, – पहले उछाह से भरा, चिर असन्तुष्ट, गरजती आवाज़, फिर दृष्टिविहीन, दयनीय, उलझी हुई सफ़ेद दाढ़ी। उसे याद आया कि एक दिन, भोजन के समय कुछ अधिक पी जाने और मांस की तरी को अपने नैपकिन पर गिराने के बाद, किस प्रकार सहसा हंस कर उन्होंने अपनी प्रेमकथायें सुनानी शुरू कर दी थीं, – अपनी दृष्टिविहीन आंखों को मिचमिचाते हुए। उनका चेहरा उस समय एकदम लाल रंग गया था। फिर उसे वरवारा पावलोवना का ध्यान आया और वह बरबस सिमट गया, – उस आदमी की भांति जिसे अचानक दर्द ने ग्रस लिया हो और उसने अपने सिर को झटका दिया। इसके बाद उसके विचार लीज़ा पर आकर टिक गए।

"एक अछूता जीव," उसने सोचा, "जो अभी जीवन में पांव रख ही रहा है। बहुत ही अच्छी लड़की। कौन जाने, किस किनारे वह लगेगी? और आकर्षक भी खूब है। पीतवर्ण चेहरा, – ताज़गी से भरी आंखों, होठों में एक निराली गम्भीरता; सीधी और निश्छल नज़र। अफ़सोस यह कि वह अत्युत्साही दिखती है, बहुत ही अच्छी उसकी काठी है, जब चलती है तो मालूम तक नहीं होता, और उसकी आवाज़ भी मुलायम है। और उस समय तो खासतौर से अच्छा लगता है जब वह एकाएक ठिठक कर खड़ी हो जाती है, ध्यान से सुनती है, मुसकराती तक नहीं, जैसे सोच में डूबी हो। फिर अपने सिर को झटकाती और बालों को पीछे कर लेती है। नहीं, मेरा भी यही खयाल है कि पान्शिन उसके उपयुक्त नहीं है। लेकिन, ज़रा बताओ तो, उसमें खराबी क्या है? अरे, मैं भी क्या दिवा-स्वप्न देखने लगा? वह भी उसी राह जाएगी जिस राह सब जाती हैं।

इससे तो यह कहीं अच्छा है कि एक झपकी ले ली जाय।" और लावरेत्स्की ने अपनी आंखें मूंद लीं।

लेकिन वह सो नहीं सका, बल्कि नींद का एक हल्का नशा-सा उसपर छा गया। बीते दिनों की स्मृतियां, एक के बाद एक, धीरे-धीरे उठतीं, उसके हृदय पर दखल जमातीं और अन्य स्मृतियों के साथ घुलमिल जातीं। जाने क्यों, लावरेत्स्की के विचार राबर्ट पील की ओर ...फ़ांस के इतिहास की ओर मुड़ चले... यह कि अगर वह जनरल होता तो किस प्रकार युद्ध में विजय प्राप्त करता ... उसे गोलियों और क्रन्दन की आवाज़ें तक सुनाई देतीं ... उसका सिर नीचे की ओर खिसक गया, उसने अपनी आंखें खोलीं ... वही खेत, स्तेप का वही दृश्यपट। बल खाती उभड़ती धूल के बीच लपकते, तेज़ी से चमकते और फिर ओझल हो जाते। कोचवान का चोगा जिसमें लाल टिकले लगे थे, हवा में फूल और फरफरा रहा था ... "वाह, क्या इसी तरह घर लौटा जाता है!" लावरेत्स्की ने एकाएक सोचा। "ऐ, लपके चलो!" वह चिल्लाया और चोगे को अपने इर्द-गिर्द समेट कर कुशन से सट गया। गाड़ी ने झटका खाया, लावरेत्स्की सकपका कर उठ बैठा और उसने अपनी आंखें खोलीं। सामने की ओर एक पहाड़ी थी जिसके ऊपर एक छोटा-सा गांव नज़र आ रहा था। उससे कुछ हट कर, दाहिनी ओर, जागीरदार का एक छोटा खस्ताहाल-सा प्रासाद था जिसकी खिड़कियों के किवाड़ बंद थे और आगे एक छोटा आंका-बांका ओसारा था। उसका चौड़ा अहाता,—ठीक उसके दरवाज़े से ही—हरी और सन की भांति घनी चुभीली झाड़ियों से घिरा था। साथ ही एक खलिहान भी नज़र आ रहा था जो बलूत की लकड़ी का बना था और अभी काफ़ी मज़बूत था। यही वसीलेवस्कोये था।

कोचवान ने रास खींची और गाड़ी दरवाज़े के पास जाकर रुक गई। लावरेत्स्की का अरदली जो बाक्स पर नीचे कूदने के अन्दाज़ में खड़ा था

चिल्लाया "एइहो!" जवाब में भौंकने की एक रूखी और दबी हुई सी आवाज़ आई, – बस, और कुछ नहीं, कोई कुत्ता तक बाहर निकल कर नहीं आया। अरदली ने कूदने के लिए नया पैंतरा बदला और फिर चिल्ला उठा – "एइहो!" भौंकने की क्षीण आवाज़ फिर सुनाई दी, कुछ ही क्षण बाद प्रत्यक्षतः जाने कहां से एक आदमी प्रकट हुआ और अहाते में से भाग कर आता हुआ दिखाई दिया। वह लम्बी बाहों की पीली कफ़्तान (एक ढीला पहनावा) पहने था और उसका सिर बर्फ़ की भांति सफ़ेद बालों से घिरा था। उसने अपनी आंखों पर हाथ का साया किया और गाड़ी की ओर ताक कर देखा। फिर, दोनों हाथों को सहसा उसने अपनी जंघाओं पर पटका इधर-से-उधर सकपकाया और इसके बाद दरवाज़ा खोलने के लिए लपका। पहियों के नीचे चुभीली झाड़ियों को कचरती गाड़ी अहाते में बढ़ी चली और ओसारे के सामने जाकर रुक गई। रुपहले बालों वाला आदमी, जो पांव का काफ़ी फुर्तीला मालूम होता था, लपक कर अब पोर्च की सीढ़ियों के नीचे खड़ा था। उसकी टांगें आंकी-बांकी और फैली थीं। उसने चमड़े के पर्दे के बटन खोले, झटका देकर हुड को सरकाया, सहारा देकर अपने मालिक को नीचे उतारा और इसके बाद उसका हाथ चूमा।

"नमस्ते, भाई" लावरेत्स्की ने कहा, "तुम्हारा नाम, अगर मैं भूलता नहीं तो, अन्तोन ही है न? सो तुम अभी तक ज़िन्दा हो!"

वृद्ध ने मौन भाव से सिर झुका कर अभिवादन किया और फिर तालियां लाने लुढ़क गया। अपने हाथों को इधर-उधर बगल में दाबे कोचवान निश्चल बैठा था और मुंह बाए बन्द दरवाज़े की ओर देख रहा था। लावरेत्स्की का अरदली, अपने ऊंचे सिंहासन से नीचे उतरने के बाद, चित्रमय मुद्रा में इस तरह खड़ा था जैसे वह वहीं जाम हो गया हो। उसका एक हाथ अभी भी गाड़ी के बक्से पर टिका था। बूढ़ा तालियां ले आया। सांप की भांति हज़ार बल खाते और अपने बदन को नाहक तोड़ते-मरोड़ते हुए,

अपनी कोहनियों को बाहर निकाले, उसने दरवाज़ा खोला फिर एक ओर हट कर खड़ा हो गया और अपनी गरदन को उसने एक बार फिर अभिवादन में झुकाया।

"सो यह है मेरा घर ... मैं फिर अपने घर आ गया!" छोटे-से हाल में पांव रखते हुए लावरेत्स्की ने सोचा। घर की खिड़कियों के किवाड़ एक के बाद एक, चीं-चर और झन्नाटे की आवाज़ के साथ खोल दिये गये और सूने कमरों में दिन का उजाला भर चला।

१६

यह छोटा प्रासाद जिसमें लावरेत्स्की आकर टिका था और दो साल पहले जिसमें ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना का देहांत हुआ था, पिछली शती में देवदार की ठोस लकड़ी से बनाया गया था। वह केवल देखने में ही खस्ताहाल मालूम होता था, अन्यथा उसमें अभी इतना दम था कि पचास या इससे भी अधिक साल तक और टिक सकता था। लावरेत्स्की ने सभी कमरों का चक्कर लगाया और, धूल-चढ़ी बेजान बूढ़ी मक्खियों के लिए भारी परेशानी पैदा करते हुए, सब जगह की खिड़कियों को खुलवा दिया। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना की मृत्यु के बाद से किसी ने भी उन्हें खोलने का कष्ट नहीं किया था। घर की हर चीज़ वैसे ही मानव-स्पर्श से वंचित पड़ी थी— ड्राइंगरूम में नाज़ुक पांवों वाले छोटे दीवान जिनपर भूरे रंग का दमिश्क का मखमल चढ़ा था—जीर्ण और शीर्ण, सम्राज्ञी कैथरीन महान के दिनों की सजीव यादगार थे। यहां ड्राइंगरूम में ही मालकिन की वह प्रिय आराम-कुर्सी भी मौजूद थी जिसकी पीठ सीधी-सतर और ऊंची थी, हालांकि मालकिन ने वृद्धावस्था तक में कभी उसका सहारा नहीं लिया। मुख्य दीवार पर फ़ियोदोर के परदादा आन्द्रेई लावरेत्स्की का एक पुराना चित्र टंगा

था। चित्र की काली टेढ़ी-मेढ़ी ज़मीन में उदास और पीला चेहरा दब सा गया था। उसकी पलकें भारी और झुकी हुई थीं, तेवर चढ़े थे, गुस्सा-भरी छोटी आंखें निर्मम नज़र से घूर रही थीं। उभरा हुआ खुरदरा माथा था और बिना पाउडर किए सिर के कड़े काले बाल सीधे खड़े थे। चौखटे के एक कोने से अमर-फूलों का एक हार लटका था जिसपर धूल की परत चढ़ी थी। "यह हार," अन्तोन ने सूचित किया, "खुद ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना ने गूंथा था।" सोने के कमरे में एक सकरा पलंग पड़ा था जिसके ऊपर जाने किस ज़माने का एक धारीदार तनौवा तना था। बिस्तरे पर रंग-उड़े धुंधले तकियों का ढूह लगा था और एक झीनी चद्दर पड़ी थी। सिरहाने मां मरियम की एक देव प्रतिमा लटकी थी। वृद्धा ग्लाफ़ीरा ने सबकी बिसरी अपनी सूनी मृत्युशैया पर आख़िरी बार इसी प्रतिमा को अपने बर्फ़ से सर्द होठों से लगाया था। खिड़की के पास भराई के काम से अलंकृत लकड़ी की एक छोटी ड्रैसिंग मेज़ रखी थी। इसमें पीतल के कुन्दे-कब्ज़े जड़े थे और एक तुड़ामुडा सा आईना लगा था। शयनागार के पास ही देवघर था। यह एक छोटा-सा कमरा था जिसकी दीवारें सूनी थीं और कोने में देवप्रतिमाओं का एक ठोस पालना रखा था। फ़र्श पर तार-तार हुआ और पिघले हुए मोम से सना कालीन बिछा था। इसी पर घुटनों के बल झुक कर ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना वन्दना किया करती थी। लावरेत्स्की के अरदली को साथ लेकर, अन्तोन अस्तबल और गाड़ी घर का ताला खोलने के लिए चला गया। उसकी जगह क़रीब उतनी ही आयु की एक वृद्ध स्त्री आ मौजूद हुई। वह सिर पर, नीचे भौंहों तक, एक रूमाल बांधे थी। उसका सिर डगमगाता था और उसकी आंखें शून्य दृष्टि से ताक रही थीं, लेकिन व्यग्रता का एक भाव लिये जो कि लम्बे वर्षों तक मूक और निरीह सेवा की देन था। इसके साथ-साथ उनमें एक श्रद्धामय खिन्नता का भाव भी झलकता था। उसने अपने होठों से लावरेत्स्की के हाथ का

स्पर्श किया और चुपचाप द्वार-मार्ग में खड़ी आदेश की प्रतीक्षा करने लगी। लाख कोशिश करने पर भी लावरेत्स्की न तो उसका नाम ही याद कर सका, न ही यह ध्यान आया कि उसने पहले कभी उसे देखा है। उसका नाम ऐसा मालूम होता था कि अपराक्सिया था। चालीस वर्ष पहले ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना ने उसे घर से निकाल कर मुर्गियों के अहाते में खदेड़ दिया था। जो हो, वह कुछ बोल नहीं रही थी, लगता था जैसे वह चेतनाशून्य हो गई हो, केवल निरीह भाव से उसकी ओर ताक रही थी। इन दो वृद्ध प्राणियों और लम्बे झगले पहने मटका-ऐसे पेट वाले तीन बच्चों के अलावा जो कि अन्तोन के परपोते थे, यहां एक टुंडयां-सा किसान और था। उसकी एक बांह ग़ायब थी और उसे खेती के काम से मुक्त कर दिया गया था। खुटक बढ़ई पक्षी की भांति भुनभुनाता वह बस इधर-से-उधर मंडराता था और किसी काम का नहीं था। इसी प्रकार वह जीर्ण-शीर्ण कुत्ता भी अब किसी काम का नहीं रहा था जिसने भौंक कर लावरेत्स्की का अभिवादन किया था। दस साल से वह एक भारी ज़ंजीर से बंधा जीवन बिता रहा था। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना के आदेश से यह ज़ंजीर उसके गले में डाल दी गई थी। उसका बोझ लादे, वह मुश्किल से ही चल-फिर सकता था। घर का चक्कर लगाने के बाद लावरेत्स्की बाग़ में निकल आया। बाग़ की छटा देख कर वह खिल गया। सरकंडे, लोपुख़, गूज़बैरी और रसभरी की झाड़ियां फैली थीं। लेकिन पुरखों के ज़माने के अनगिनत लाइम के पेड़ यहां घनी छाया किए थे। उनका आकार-प्रकार और उनकी टहनियों का निराला क्रम देखते ही बनता था। वे बहुत ही घनता से—एक दूसरे के अत्यन्त निकट उगे थे और किसी ज़माने में—जाने कब—शायद सौ-एक साल पहले उनकी पत्तियों को छांटा गया था। बाग़ के छोर पर एक छोटा-सा स्वच्छ कुण्ड था जिसके किनारों पर भूरे रंग की कोमल झाड़ियां उग आई थीं।

मानवीय जीवन के चिन्ह तेज़ी से धुंधले पड़ जाते हैं। लेकिन ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना का घर अभी वीरान नहीं हुआ था, बल्कि ऐसा मालूम होता था जैसे वह एक शान्त निद्रा में डूबा हो, एक ऐसी निद्रा में, जो इस धरती की इन सब चीज़ों को अपनी चादर में लपेटे रहती है जिन्हें उन्मत्त भीड़ के चरण छू नहीं पाते। फ़ियोदोर इवानिच ने गांव का भी चक्कर लगाया। किसान स्त्रियां अपनी झोंपड़ियों के दरवाज़ों पर खड़ी हथेलियों पर गाल जमाये, उसे देखती रहीं, लोगों ने दूर से ही अभिवादन किया, बच्चे दूर खिसक गए और कुत्ते उदासीन भाव से भौंक कर चुप हो गए। उसे भूख का अनुभव हुआ, लेकिन उसके नौकर-चाकरों और बावर्ची के सांझ से पहले आने की उम्मीद नहीं थी। लावरिकी से रसद के सामान की गाड़ी भी अभी तक नहीं आई थी। सो मजबूर होकर उसने अन्तोन का आसरा लिया। अपने मालिक की इच्छा पूरी करने के लिए वह तुरत लपक गया। एक बूढ़ी मुर्ग़ी को उसने पकड़ा, उसकी गरदन मरोड़ी और पंख नोच डाले। अपराक्सिया ने उसका अन्य कचरा साफ़ किया, मैले कपड़े की भांति उसे खूब पखारा और फिर उसे कड़ाही में छोड़ दिया। अन्त में जब खाद्य तैयार हो गया तो अन्तोन ने कपड़ा बिछा कर मेज़ लगा दी, छुरी-कांटे रख दिए, जंग-लगी तीन टांग की एक नमकदानी और पहलू-कटे कांच की पतली गरदन वाली एक सुराही मेज़ पर सजा दी जिसमें कांच की एक गोल डाट लगी थी। इसके बाद, सुरीली आवाज़ में, उसने अपने मालिक को सूचना दी कि भोजन तैयार है, और उसकी कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया। उसकी दाहिनी मुट्ठी अंगोछे में लिपटी थी और उसके बदन से एक बाबा आदमी तीखी गंध निकल रही थी जो साइप्रेस वृक्ष की गंध की भांति मालूम होती थी। कुछ शोरबा पेट में डालने के बाद लावरेत्स्की ने मुर्ग़ी की ओर हाथ बढ़ाया। उसकी समूची खाल पर बड़े-बड़े मस्से उभरे थे, प्रत्येक टांग में एक कड़ी स्नायु-रज्जु ऊपर

तक लिपटती चली गई थी और मांस में से लकड़ी और सब्जी की गंध आ रही थी। भोजन समाप्त करने के बाद लावरेत्स्की ने कहा कि अगर एक प्याला चाय और हो सके तो ..."अभी लाया," वृद्ध ने बीच में ही कहा और उसने अपना कहा पूरा किया। लाल कागज़ में लिपटी चाय की थोड़ी बुकनी जानें कहां से वह खोज लाया, एक छोटे लेकिन पक्की धातु के बने और खूब शोर करने वाले समोवार (चायदानी) उसने ढूंढ निकाली, और चीनी की छोटी-छोटी पिसपिसाती-सी डलियों का भी उसने पता लगा लिया। लावरेत्स्की ने एक बड़े प्याले में चाय पी। इस प्याले से वह बचपन से ही परिचित था। इसकी बाहर की सतह पर ताश के पत्ते अंकित थे। केवल मेहमानों के लिए ही इसका इस्तेमाल किया जाता था, —और इस समय वह खुद भी एक मेहमान की भांति उसमें चाय पी रहा था। सांझ होने पर नौकर-चाकर आ गए। लावरेत्स्की अपनी चाची के पलंग पर सोने के लिए राज़ी नहीं हुआ, इसलिए उसका बिस्तरा भोजन के कमरे में लगा दिया गया। बत्ती बुझाने के बाद काफ़ी देर तक बैठा वह अपने इधर-उधर देखता रहा। उदासी से भरे विचार उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे। वह कुछ वैसा ही अनुभव कर रहा था जैसा कि हर उस आदमी को अनुभव होता है जिसे किसी बहुत दिनों से गैर-आबाद जगह में रात बितानी पड़ती है। अंधेरा उसके चारों ओर घिरता आ रहा था और ऐसा मालूम होता था जैसे इस नये आसामी से वह विक्षुब्ध हो उठा हो—घर की दीवारें तक चौकन्नी सी मालूम होती थीं। आखिर उसने एक उसांस छोड़ी, कम्बल खींच कर बदन पर डाला और नींद में डूब गया। लेकिन, घर के अन्य सब लोगों के सो जाने के बाद भी, अन्तोन जागता और बहुत देर तक अपराक्सिया के साथ फुसफुसा कर बतियाता और कराहता रहा। एक या दो बार उसने क्रास का चिन्ह भी बनाया। दोनों में से किसी को यह आशा नहीं थी कि मालिक वसीलेवस्कोये में आकर रहेंगे, जबकि

यहां से कुछ ही दूर उनके पास एक अन्य बहुत बढ़िया जागीर और खूब व्यवस्थित कोठी मौजूद थी। उन्हें क्या पता कि वह उस जगह से दूर रहना चाहता है, – इतनी दुःखदायी स्मृतियां उसके साथ सम्बद्ध थीं। फुसफुसाना खत्म करने के बाद अन्तोन ने लकड़ी उठाई और चौकीदार के पटड़े को खड़खड़ाया जो खलिहान के पास इतने दिनों से उपेक्षित लटका था। इसके बाद वहीं, अहाते में, उसने अपने सोने की जुगत लगाई और पड़ा रहा। उसका सफ़ेद सिर खुला था। मई की रात थी, कोमल और सुहावनी। देखते न देखते वृद्ध मीठी नींद की गोद में पहुंच गया।

२०

अगले दिन लावरेत्स्की जल्दी ही उठ खड़ा हुआ, कारिन्दे से बातचीत की, अनाज फटकने की जगह का निरीक्षण किया, घरेलू कुत्ते के गले से ज़ंजीर हटाने का आदेश दिया जो अनिश्चित अन्दाज़ में भौंक कर ही रह गया, लेकिन अपने खूंटे से फिर भी अलग नहीं हुआ। इसके बाद घर लौट कर वह एक प्रकार की शान्त अलसाहट में डूब गया और दिन-भर उसी में डूबा रहा। "बस, अब मैं मानों नदी की तह में आ लगा हूं।" मन ही मन उसने कहा और कई बार उसे दोहराया। वह खिड़की के पास जा बैठा, एकदम निश्चल, जैसे अपने चारों ओर प्रवाहित शान्त जीवन को – देहाती निरालेपन की विरल आवाज़ों को, – सुनने का प्रयत्न कर रहा हो। चुभीली झाड़ियों के नीचे कहीं से एक धुंधला ऊंचा स्वर सुनाई दिया जिसका सूत्र पकड़ कर एक डांस ने भिनभिनाना शुरू कर दिया। वह ऊंचा स्वर तो विलीन हो गया लेकिन डांस का भिनभिनाना जारी रहा। मक्खियों की तालयुक्त अडिग और रुआंसी भिनभिनाहट के बीच एक बड़े भौंरे की ज़ोरदार गुंजार सुनाई दी जो धुनकी सी धुनता बराबर छत से टकरा रहा

था। बाहर एक मुर्गे ने बांग दी जो अन्त में जैसे बैठे हुए गले में अटक कर रह गई। एक गाड़ी खड़खड़ करती लुढ़क गई और गांव में कहीं से किसी के दरवाज़े के चरचराने की आवाज़ आई। "क्या कहा तुमने?" एक किसान स्त्री ने कर्कश आवाज़ में पूछा। "मेरी चुन्नो-मुन्नो!" अन्तोन दो वर्ष की एक लड़की को अपनी बांहों में झुला-खिला रहा था। "जाओ, श्वास ले आओ," स्त्री की आवाज़ ने दोहराया, और इसके बाद सहसा मरघट ऐसी शान्ति छा गई। न कहीं कोई खुड़का, न कहीं कोई आवाज़। एक पत्ता तक नहीं हिल रहा था। अबाबीलें एक के बाद एक हवा में निःशब्द चक्कर लगा रही थीं। "बस, अभी मैं नदी की तह में आ लगा हूं," लावरेत्स्की ने फिर सोचा। "यहां जीवन, हमेशा और अदबदाकर शान्त और मन्द है," उसने सोचना जारी रक्खा, "जिसने भी इसके घेरे में पांव रखा, उसे उसकी शक्ति के सामने घुटने टेकने पड़े। यहां चिन्ताएं पटक नहीं पातीं, कोई चीज़ दिमाग पर भूत बनकर सवार नहीं होती। यहां केवल उसीके साथ अच्छी गुज़रती है जो अपने जीवन के स्वर को—चाल-ढाल को—हल के पीछे चलते किसान की भांति थिर बना लेता है। और इस निष्क्रिय निस्तब्धता के गर्भ में कितनी अधिक शक्ति, कितना अधिक ओज छिपा है। यहां खिड़की के नीचे, घनी घास को बींध कर, सबल लोपुख़ की कोंपलें फूट निकली हैं, इसके ऊपर लवेज की रसीली टहनियां फैली हैं और इससे भी ऊपर वर्जिन लता अपनी लाल शिराओं के छल्ले डाले चढ़ती चली गई है। और उधर खेतों में पकी हुई 'रोश' चमचमा रही है, जौ की बालें निकल आई हैं, और प्रत्येक पेड़ का प्रत्येक पत्ता और घास की प्रत्येक पत्ती बढ़ रही है, अपनी अन्तिम सीमा तक खुलने के लिए कसमसा रही है। अपने जीवन के श्रेष्ठतम साल मैंने एक स्त्री के प्रेम में गंवा दिए," लावरेत्स्की के विचारों का सिलसिला फिर शुरू हुआ, "एकान्त जीवन की यह ऊब सारी उत्तेजना को धो देगी, हृदय

पर मरहम का काम करेगी और मैं निश्चिन्त होकर अपने काम में जुट सकूंगा।" और वह फिर निस्तब्धता में आहट लेने का प्रयत्न करने लगा,–आशाविहीन होने पर भी हृदय में एक उत्सुकता लिए जैसे किसी चीज़ की बाट जोह रहा हो। चारों ओर निस्तब्धता घेरा डाले थी। शान्त नीले शून्य में सूरज अलस भाव से खिसक रहा था और सिर के ऊपर बादल सहमे से तैर रहे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे उन्हें कुछ पता हो कि वे क्यों और किस ओर जा रहे हैं। इस समय अन्य कहीं जबकि जीवन उमड़-घुमड़ रहा था, तेज़ी से ललकता और टकराता हुआ अपने पथ पर आगे बढ़ रहा था, यहां वह दलदली घास पर से तिरते पानी की भांति निःशब्द खिसक रहा था। लावरेत्स्की गई रात तक इस जीवन के बारे में सोचता रहा जो इतने निस्तब्ध भाव से बीत रहा था कि उसका कोई आभास तक नहीं मिलता था। बीते हुए दिनों का शोक वसन्त के प्रारम्भिक हिम की भांति पिघल कर उसके हृदय में घुल गया था,–और भले ही यह अजीब मालूम हो, अपनी जन्मभूमि के प्रति पहले कभी इतनी गहराई और प्रबलता के साथ उसने प्रेम का अनुभव नहीं किया था।

२१

दो सप्ताह के भीतर फ़ियोदोर इवानिच ने ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना का छोटा प्रासाद कायदे में कर दिया। अहाते और बाग़ की सफ़ाई की गई, लावरिकी से आरामदेह फ़र्नीचर आ गया, नगर से मदिरा, पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था की गई, अस्तबल में घोड़े हिनहिनाने लगे,–संक्षेप में यह कि फ़ियोदोर इवानिच ने अपनी आवश्यकता की सारी चीज़ों का प्रबंध कर लिया और यहां जम गया, हालांकि यह कहना कठिन था कि वैरागी का जीवन बिताने के लिए वह वहां जमा था अथवा गांव के

ज़मींदार का। एकरस दिन आए और चले गए, लेकिन वह ऊबा नहीं। वह किसीसे मिला तक नहीं। वह जागीर के मामलों में व्यस्त रहता, घोड़े पर देहात की सैर करता और कुछ पढ़ता। लेकिन पुस्तकों में वह बहुत कम सिर खपाता, इसके बजाय वृद्ध अन्तोन की कहानियां सुनना वह अधिक पसंद करता। आमतौर से लावरेत्स्की खिड़की के पास बैठ जाता, पाइप से धूम्रपान करता और ठंडी चाय की चुस्कियां लेता जाता। अपने हाथों को कमर के पीछे बांधे अन्तोन दरवाज़े में खड़ा रहता और उड़ाऊ ढंग से पुराने ज़माने की – अतीत के उन दिनों की कहानियां सुनाता जबकि जौ और 'रोश' बटखरों से तुलकर नहीं बल्कि बड़े-बड़े बोरों के हिसाब से बिकती थी – दो या तीन कोपेक प्रति बोरा – जबकि अगम जंगल और अछूते स्तेप नगर के चारों ओर दूर-दूर तक फैले थे। "लेकिन अब," अस्सी वर्ष की रेखा पार कर जाने वाला यह वृद्ध शिकायत के स्वर में कहता, "लोगों ने इस हद तक पेड़ों को गिराया और धरती को हल चलाकर बींध डाला है कि कहीं इतनी जगह भी नज़र नहीं आती जहां एक गाड़ी तक आसानी से गुज़र सके।" अपनी मालकिन ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना के बारे में भी अन्तोन अनेक कहानियां सुनाता। यह कि वह कितनी चतुर और किफ़ायतशार थी, किस तरह पड़ोस का एक कुलीन युवक उसका कृपाकटाक्ष पाने के लिए अकसर घर के चक्कर लगाता था। घोड़े पर सवार होकर वह आता और मालकिन, गहरे लाल रंग के फीतों वाली अपनी बढ़िया टोपी तथा त्रू-त्रू-लीवेन्टाइन कपड़े का पीला गाउन पहन कर उसके सामने तक गयी थी। लेकिन, उस समय जब उस कुलीन युवक ने उसकी आय के बारे में सवाल करने की धृष्टता की तो ओह, वह बुरी तरह लाल-पीली हुई और उसने उसका घर आना बंद कर दिया। इसके बाद, बिना किसी दुविधा के, अपनी अन्तिम कौड़ी तक उसने फ़ियोदोर इवानिच के नाम कर दी। और सचमुच फ़ियोदोर इवानिच जब यहां आया तो हर चीज़ –

लाल फीतों वाली बढ़िया टोपी से लेकर त्रू-त्रू लीवेन्टाइन का वह पीला गाउन तक – उसी हालत में उसे मिला जैसी कि वह छोड़ गई थी। पुराने काग़ज़ों और दिलचस्प दस्तावेज़ों में से – जिनके हाथ लगने की लावरेत्स्की आशा करता था – कोई भी उसे नहीं मिली। ले-देकर एक नोटबुक उसके हाथ आई जिसमें उसके दादा प्योत्र आन्द्रेइच ने एक स्थल पर "महामहिम प्रिन्स अलेक्सान्द्र अलेक्सान्द्रोविच प्रोज़ोरोवस्की द्वारा तुर्की साम्राज्य के साथ हुई शान्तिसंधि के उपलक्ष्य में पीटर्सबर्ग में आयोजित समारोह" अंकित था, एक अन्य स्थल पर हृदय के रोग के सम्बंध में एक नुस्खा लिखा हुआ था। इस नुस्खे के साथ एक टिप्पणी दी हुई थी, "यह नुस्खा होली ट्रिनिटी गिरजे के मुख्य पादरी फ़ियोदोर आवक्सेन्तीएविच ने जनरल की पत्नी प्रास्कोव्या फ़ियोदोरोवना सलतिकोवा को बताया था।" इसी प्रकार एक अन्य जगह राजनीतिक समाचार का एक टुकड़ा अंकित था – "फ़्रेंच बघेरों का अब कोई चर्चा नहीं सुनाई देता।"* और इसीकी बगल में यह दर्ज था कि "मोस्कोवस्कीये वेदोमोस्ती" में सीनियर मेजर मिखाइल पेत्रोविच कोलीचेव की मृत्यु की सूचना छपी है। कहीं यह प्योत्र वसीलियेविच कोलीचेव का पुत्र तो नहीं है? साथ ही कुछ पुराने पंचांग, सपनों का भेद बतानेवाली पुस्तकें और श्री आम्बोदिक की रहस्यमय पुस्तक भी लावरेत्स्की को मिली। इस पुस्तक – "प्रतीक और संकेत चिन्ह" को देख कर बहुत पहले की विस्मृत किन्तु परिचित अनेक स्मृतियां उसके हृदय में जाग उठीं। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना की ड्रैसिंग मेज़ में लावरेत्स्की को एक छोटा सा

---

*यह उल्लेख १८-वीं शताब्दी के अन्त में हुई फ़्रांसीसी जन-क्रान्ति के बारे में है।

पकेट मिला जो काले फीते से बंधा था और काली लाख से मोहर-बंद। यह दराज़ के एकदम भीतर कोने में खोंसा हुआ था। इसमें, आमने-सामने मुंह किए, दो छवि-चित्र रखे थे। ये पेस्टल रंगों से बने थे। एक चित्र उसके पिता की युवावस्था का था—घुंघराले बालों के छल्ले भौंहों तक लटक आए थे, बादाम के आकार की क्षीण आंखें और होंठ खुले हुए थे। दूसरा चित्र एकदम धुंधला पड़ गया था। यह एक स्त्री का चित्र था जिसका रंग पीलापन लिए था और जो सफ़ेद गाउन पहने और अपने हाथ में एक सफ़ेद गुलाब लिए थी। यह उसकी मां का चित्र था। ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना अपना छवि-चित्र बनवाने के लिए कभी राज़ी नहीं हुई। "हां तो छोटे बाबू," अन्तोन लावरेत्स्की से कहता, "तुम्हारे परदादा आन्द्रेई अफ़ानासिच की भी मुझे अब तक याद है, हालांकि तब मैं कोठी में नहीं रहता था। सच पूछो तो जब वह मरे, तब मैं केवल अठारह वर्ष का था। एक बार बाग़ में मैं उनके सामने पड़ गया। सच कहता हूं, उन्हें देख कर पांव कांपने लगे। लेकिन वह थे कि उन्होंने कुछ नहीं कहा। केवल मेरा नाम पूछा और मुझे आदेश दिया कि लपक कर उनके कमरे में से मैं उनका रूमाल उठा लाऊं। ओह, वह बहुत ही शानदार रईस थे,—सच, उनकी जोड़ का और कोई नहीं था। और यह सब इसलिए कि उसके पास एक अद्भुत तावीज़ था,—सच, बहुत ही अद्भुत तावीज़ था तुम्हारे परदादा के पास। आथोस पर्वत के एक साधु ने उन्हें वह तावीज़ दिया था। और उसने—उस साधु ने—उनसे कहा—'तुमने मेरी बड़ी ख़ातिर की, सो मैं तुम्हें यह तावीज़ भेंट करता हूं। इसे पहनना, फिर कोई भी अभियोग-आरोप तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकेगा।' और, तुम तो जानते ही हो मालिक, कि वे भी क्या दिन थे। मालिक जो जी चाहता करते। अगर कोई कुलीन उन्हें मात देना चाहता तो वह बस उसकी ओर देखते और कहते—'यह मुंह और मसूर की दाल' यह उनका तकिया-कलाम था। और वह—

तुम्हारे परदादा—खुदा अपने साये में रखे उन्हें—एक छोटे से लकड़ी के घर में रहते थे। और जब वह मरे तो चांदी की रकाबियां और जाने क्या-क्या छोड़ गये। सच, इन चीज़ों से तहखाने भरे थे। वह कमखर्च थे। और कांच की वह सुराही जो तुम्हें इतनी पसंद आई, वह भी उन्हीं की थी,—वह इसमें से लेकर वोदका पिया करते थे। अब अपने दादा प्योत्र आन्द्रेइच की बात सुनो। उन्होंने अपने लिए पत्थर का पक्का मकान बनवाया लेकिन वह हमेशा खस्ताहाल रहे। हर चीज़ उलट-पलट गई और उनकी हालत अपने पिता से भी बदतर हो गई। उन्होंने जीवन का कोई सुख नहीं देखा। उन्होंने अपना सारा धन उड़ा दिया और जब वह मरे तो ऐसी कोई चीज़ नहीं छोड़ गये जो उनकी याद दिलाती,—चांदी की एक चम्मच तक नहीं छोड़ी,—अगर कुछ बचा भी तो वह ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना की किफ़ायत-शारी और सावधानी की बदौलत!"

"क्या यह सच है," लावरेत्स्की ने बीच में ही पूछा, "कि लोग उन्हें 'बूढ़ी चकमक' कहते थे?"

"भला, उनको ऐसा कहने वाला कौन था?" अन्तोन ने नाराज़ी से विक्षोभ प्रकट किया।

एक दिन वृद्ध ने साहस कर पूछा—

"मालकिन का क्या हाल है, मालिक? वह कहां है?"

"मैंने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया है," लावरेत्स्की ने सप्रयास कहा, "सो उसकी चर्चा करना बेकार है।"

"बहुत अच्छा छोटे बाबू," बूढ़े ने दुखी स्वर में जवाब दिया।

तीन सप्ताह बीत जाने के बाद लावरेत्स्की, अपने घोड़े पर सवार हो, कलीतिन परिवार से मिलने फिर 'ओ' पहुंचा, और उसने संध्या वहीं बिताई। लेम्म वहां मौजूद था, और लावरेत्स्की ने उसे बेहद पसंद

किया। अपने पिता की सनक के कारण हालांकि वह कोई वाद्य-यंत्रों से दूर ही रहा, लेकिन संगीत से ... असली पक्के संगीत से – उसे गहरा प्रेम था। पान्शिन उस सांझ वहां नहीं था। गवर्नर-जनरल ने किसी काम से उसे नगर से बाहर भेज दिया था। लीज़ा बहुत ही सधे स्वरों में खुद अपने-आप पियानो बजा रही थी। लेम्म भी तरंग में था और काग़ज़ की एक नलकी सी बना कर उसे ही ताल का निर्देश करने वाली छड़ी के रूप में इस्तेमाल कर रहा था। यह देख मारिया दिमीत्रियेवना पहले तो हंसी, फिर सोने चली गई। बीटहोवन का संगीत – उसने कहा – उसके स्नायुओं को झकझोर डालता है। आधी रात के समय लेम्म को छोड़ने लावरेत्स्की उसके घर तक गया और सुबह के तीन बजे तक वहीं रुक गया। लेम्म दुनिया भर की बातें करता रहा। उसका झुका हुआ बदन सीधा तना था, उसकी आंखें चौड़ी और अधिक चमकदार हो गई थीं, यहां तक कि उसके सिर के बाल भी सीधे-सतर खड़े थे। एक मुद्दत से अन्य किसीने उसमें इतनी दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। लावरेत्स्की प्रत्यक्षतः उसमें काफ़ी दिलचस्पी ले रहा था और बड़ी सहानुभूति तथा सम्वेदन के साथ उससे सवाल पर सवाल कर रहा था। वृद्ध का हृदय इससे अभिभूत हो गया और अन्त में मेहमान के लिए अपने संगीत का उसने प्रदर्शन किया, खुद अपनी रचनाओं के अंशों को बजाकर तथा बेजान आवाज़ में गाकर सुनाया। इनमें शिलर कृत सम्पूर्ण गेय कविता "फ़्रिडोलीन" भी थी जिसका संगीत खुद उसने लिखा था। लावरेत्स्की ने उसे दाद दी, कुछ गीतों को दो-दो बार सुना और विदा लेने से पूर्व उसे निमंत्रित किया कि वह आए और कुछ दिन उसका मेहमान रहे। लेम्म उसे छोड़ने के लिए घर से बाहर तक आया, उसके निमंत्रण को तत्परता के साथ उसने स्वीकार किया और बड़े प्रेम के साथ उससे हाथ मिलाया। इसके बाद ताज़ा और नम हवा में, – अब लेम्म अकेला रह गया था। पौ फट रही थी, – उसने अपने चारों ओर देखा, आंखों को सिकोड़ा, अपराधी की भांति अपने कमरे में रेंग आया और अपने

8*

छोटे तथा कड़े बिस्तरे में घुसते हुए जर्मन भाषा में बुदबुदा उठा—"सुध न रही मुझे तन-मन की।" इसके कुछ ही दिन बाद उसे अपने साथ ले जाने के लिए लावरेत्स्की अपनी गाड़ी में आया। लेम्म ने बीमारी का बहाना किया, लेकिन फ़ियोदोर इवानिच उसके कमरे में आ धमका और उसे अपने साथ चलने के लिए तैयार कर लिया। खास लेम्म के लिए ही नगर से उसने एक पियानो मंगवाया था। इसका उसपर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। दोनों कलीतिन के यहां भी गए और संध्या वहीं बिताई। लेकिन इस बार सांझ उतने सुहावने ढंग से नहीं बीती जितने ढंग से कि पिछली बार बीती थी। पान्शिन भी उस समय मौजूद था, अपनी हाल की यात्रा के बारे में उससे ढेर-सारी बातें कीं और देहात के कुलीनों की, जिनसे कि उसकी भेंट हुई, बहुत ही मज़ेदार ढंग से उसने नकल उतारी। लावरेत्स्की ख़ूब हंसा, लेकिन लेम्म अपने कोने में बैठा चुपचाप घूरता रहा। उसका सिकुड़ा-सिमटा शरीर मकड़ी की भांति थरथरा रहा था। केवल उस समय जब लावरेत्स्की उससे विदा लेने के लिए उठा, उसके चेहरे पर उछाह दिखाई दिया। इसके बाद गाड़ी में भी वृद्ध मौन साधे सिकुड़ा-सिमटा बैठा रहा, लेकिन सुहावनी हवा के मृदु झोंकों ने, हल्की परछाइयों, घास और बर्च वृक्ष की कलियों की गंध ने, तारे-छिटकी चन्द्रविहीन रात की शान्त आभा ने, घोड़ों के नथुनों के फरफराने और उनकी तालयुक्त पदचापों की आवाज़ ने, राह के समूचे आकर्षण, वसंत और रात के जादू ने उस निरीह जर्मन का हृदय उमंगा दिया और उसीने सब से पहले मौन भंग किया।

२२

उसने संगीत के बारे में, लीज़ा के बारे में, और इसके बाद फिर संगीत के बारे में, बातें शुरू कीं। लीज़ा के बारे में जब वह बोलता तो उसके शब्दों का उच्चारण अधिक धीमा हो जाता। लावरेत्स्की ने बातचीत का सिलसिला खुद उसकी रचनाओं की ओर मोड़ा और आधी हंसी में उसके लिए एक लिबरेतो लिखने का वचन दिया।

"ओह, लिबरेतो!" लेम्म ने भी स्वर में स्वर मिलाया, "न बाबा, वह मेरे बस की बात नहीं। मुझमें जीवन का वह स्पन्दन अब कहां है, कल्पना की वह उड़ान कहां है जो आपेरा के लिए आवश्यक होती है। मेरी शक्तियां चुक गई हैं ... लेकिन अगर मुझमें अभी भी कुछ कर सकने की सामर्थ्य होती तो मैं रोमांस से ही सन्तुष्ट रहता, अलबत्ता–यह ज़रूर चाहता कि गीत के बोल एकदम उपयुक्त हों..."

वह चुप हो गया, और अपनी आंखों को आकाश की ओर ऊपर उठाये देर तक वैसे ही निश्चल बैठा रहा।

"मिसाल के तौर पर," उसने फिर कहना शुरू किया, "कुछ इस तरह के: 'तारे, हे निश्छल तारे'..."

लावरेत्स्की ने थोड़ा घूम कर उसे देखा।

"तारे, निश्छल तारे," लेम्म ने दोहराया, "'नेक और बद, सभी के लिए टिमटिमाते... लेकिन केवल वही जो होता निश्छल हृदय'... या ऐसे ही कुछ ... 'समझ सकते' ... नहीं, यह ठीक नहीं ... 'प्रेम कर सकते तुम्हें' ... लेकिन मैं कवि थोड़े ही हूं ... नहीं, मैं कवि ज़रा भी नहीं हूं ... जो हो, बोल कुछ ऐसे ही होने चाहिए, ऊंचे भावों से ओतप्रोत!"

लेम्म ने अपना हैट खिसका कर गुद्दी पर टिका लिया। निर्मल रात की धुंधली सफ़ेदी में उसका चेहरा अधिक चिट्टा और अधिक युवा मालूम हो रहा था।

"'और तुम खुद'," वह कहता गया और उसकी आवाज़ धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई फुसफुसाहट मात्र रह गई, "'जानते हो कि किसका हृदय प्रेम में पगा है, कौन प्रेम कर सकता है, क्योंकि तुम पवित्र हो, दुःखते हृदयों को धीरज बंधाते हो' ... नहीं, यह तो कुछ बना नहीं। मैं कवि नहीं हूं," उसने कहा, "जो हो, गीत के बोल होने ऐसे ही चाहिए..."

"खेद है कि कवि मैं भी नहीं हूं," लावरेत्स्की ने कहा।

"झूठे सपने, झूठी आशा!" लेम्म ने कहा और गाड़ी के कोने में सिमट गया। उसने अपनी आंखें मूंद लीं, जैसे सोने की तैयारी कर रहा हो।

कुछ क्षण बीते ... लावरेत्स्की सुन रहा था ... और वृद्ध फुसफुसा रहा था–"तारे, निश्छल तारे, प्रेम ..."

"प्रेम," लावरेत्स्की ने मन ही मन दोहराया। वह विचारों में खो गया और उसका हृदय बोझिल हो उठा।

"क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच," अन्त में उसने ज़ोर से कहा, "फ़्रिडोलीन को तुमने बहुत ही सुन्दर संगीत में बांधा है। सच, तुम्हें कैसा लगता है ... उस समय जब काउण्ट उसे–फ़्रिडोलीन को–अपनी पत्नी के सामने पेश करता है–यानी जब वह उसका प्रेमी बन जाता है?"

"यह तुम अपने मन की बात प्रकट कर रहे हो," लेम्म ने जवाब दिया, "कारण, यह एक ऐसी बात है जिसका शायद अनुभव..."–लेम्म अचानक चुप हो गया और अस्तव्यस्त सा होकर उसने अपना मुंह

मोड़ लिया। लावरेत्स्की भी, एक बाधित हंसी हंस कर, अपना मुंह मोड़ सड़क की ओर देखने लगा।

तारे फीके पड़ चले थे और आकाश में सफ़ेदी फैलती जा रही थी जब उनकी गाड़ी वसीलेवस्कोए के छोटे पोर्च के सामने जाकर रुकी। अतिथि को उसके कमरे में पहुंचा कर लावरेत्स्की अपन अध्ययनकक्ष में चला गया और खिड़की के पास बैठ गया। बाहर बाग़ में बुलबुल सूर्योदय की अगुवानी में अपने गीत की अन्तिम कड़ी को पूरा कर रही थी। लावरेत्स्की को उस बुलबुल का ध्यान हो आया जिसका संगीत उसने कलीतिन के बाग में सुना था, उसे लीज़ा की उन आंखों का भी ध्यान हो आया जो, पक्षी के प्रथम स्वरों को सुन, बहुत ही मृदु भाव से अंधेरा छाई खिड़की की ओर घूम गई थी। वह उसके बारे में सोचने लगा और उसका हृदय एक बार फिर तरंगित हो उठा। "निश्छल कुमारी," अर्द्धस्फुट आवाज़ में वह मन ही मन बुदबुदाया, "निश्छल तारे," कुछ रुक कर उसने फिर जोड़ा। मुसकरा कर फिर वह खिड़की के पास से उठा और अपने बिस्तर में रेंग गया।

परन्तु लेम्म बहुत देर तक, संगीत की एक पुस्तक घुटनों पर रक्खे, बिस्तरे पर बैठा रहा। एक मधुर अद्भुत स्वर-लहरी उसके हृदय में गूंज रही थी। उसकी प्रेरणा और स्फूर्त्ति से वह स्पन्दित हो उठा। वह उसपर छा गयी थी और उसके माधुर्य एवं मादक स्निग्धता को तो वह अनुभव कर सका ... परन्तु उसे गह नहीं पाया ...

"न कवि हूं न संगीतकार," वह कुछ देर बाद मरमराया ...

और उसका थका-मांदा सिर भारीपन के साथ तकिये में पड़कर धंस-सा गया।

२३

अगले दिन अतिथि और मेज़बान दोनों बाग में लाइम के एक पुराने पेड़ की छाया में चाय पीने बैठे।

"सुनो, उस्ताद!" लावरेत्स्की ने बातों ही बातों में कहा, "शीघ्र ही तुम्हें एक विजयी कैण्टटे की रचना करनी पड़ेगी।"

"किस उपलक्ष्य में?"

"पान्शिन और लीज़ा के मधुर मिलन के उपलक्ष्य में। क्या तुमने नहीं देखा कि कल वह किस तरह उसपर लट्टू हो रहा था? मालूम होता है कि मामला काफ़ी आगे बढ़ गया है।"

"नहीं, यह कभी नहीं हो सकता!" लेम्म चिल्ला उठा।

"क्यों, हो क्यों नहीं सकता?"

"क्योंकि यह असम्भव है। हालांकि," कुछ रुक कर उसने फिर कहा, "इस दुनिया में सभी कुछ सम्भव है। खासतौर से यहां, – तुम लोगों के इस रूस में।"

"रूस की बात फ़िलहाल छोड़ो। यह बताओ कि इस विवाह में आखिर दोष क्या है?"

"दोष? – यह गलत है, एकदम गलत! येलिज़ावेता मिखाइलोवना एक निष्कपट, गम्भीर और ऊंची भावनाओं वाली लड़की है, जबकि वह... संक्षेप में वह – बहुत ह... ल्का... है ...।"

"लेकिन उससे प्यार तो करती है, – क्यों, करती है न?"

लेम्म उठ कर खड़ा हो गया।

"नहीं, वह उससे प्यार नहीं करती। मेरा मतलब यह कि उसका हृदय निश्छल है। वह यह तक नहीं जानती कि प्रेम होता क्या है। मदाम फ़ोन कलीतिना उसके कानों में हर घड़ी यह फूंकती रहती है कि बहुत ही

बढ़िया युवक है, और वह मदाम फ़ोन कलीतिना का कहा मानती है, क्योंकि वह अभी – उन्नीस वर्ष की हो जाने पर भी – निरी बच्ची ही तो है। वह सुबह के समय प्रार्थना करती है, सांझ के समय प्रार्थना करती है, – सो तो ठीक है, लेकिन वह उससे प्रेम नहीं करती। वह केवल उसे ही प्यार कर सकती है जो सुन्दर हो, और वह सुन्दर नहीं है, – यानी उसकी आत्मा सुन्दर नहीं है।"

प्रवाह और आवेग के साथ, चाय की मेज़ के सामने छोटे डगों से इधर-से-उधर टहलते और धरती को अपनी नज़र से नापते, लेम्म ने अपना यह छोटा-सा भाषण दिया।

"सुनो उस्ताद!" अचानक लावरेत्स्की ने कहा, "मुझे लगता है कि तुम खुद भी मेरी इस फुफेरी बहन से प्रेम करते हो।"

लेम्म ठिठक कर खड़ा हो गया।

"कृ-प-या," उसने डगमगाती आवाज़ में कहा, "मेरे साथ ऐसा मज़ाक न करो। मेरे उन्माद के दिन नहीं रहे, – उस पार का अंधकार मेरी आंखों में छाया है, सुनहरी सपनों की लाली अब उनमें नहीं तैरती।"

लावरेत्स्की का हृदय दुःख और खेद से भर गया। वृद्ध से उसने क्षमा मांगी। चाय के बाद वृद्ध ने पियानो पर उसे अपना कैण्टटा सुनाया। भोजन के समय, खुद लावरेत्स्की की शह पाकर, उसने फिर लीज़ा के बारे में बातें शुरू कीं। लावरेत्स्की, ध्यान और उत्सुकता से भरा, सुनता रहा।

"तुम्हारी क्या राय है, क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच," आखिर उसने कहा, "यहां अब हर चीज़ व्यवस्थित मालूम होती है, बाग भी पूरे उभार पर है। कैसा हो अगर हम उसे, उसकी मां और अपनी चाची को, एकाध दिन के लिए यहां आने का निमंत्रण दें? बोलो, तुम्हें बुरा तो नहीं मालूम होगा?"

लेम्म का सिर उसकी रकाबी के ऊपर झुक गया।

"अच्छी बात है," उसने इतनी धीमी आवाज़ में कहा जो मुश्किल से ही सुनाई पड़ती थी।

"और पान्शिन को हम छोड़ सकते हैं?"

"हां, उसे छोड़ सकते हैं," वृद्ध ने स्वर में स्वर मिलाया और बिल्कुल बच्चों ऐसी मुसकान उसके चेहरे पर खेल गई।

इसके दो दिन बाद अपने घोड़े पर सवार फ़ियोदोर इवानिच कलीतिन परिवार से मिलने चल दिया।

२४

जब वह कलीतिन के यहां पहुंचा तो सब घर पर मौजूद थे, लेकिन उसने अपना इरादा तुरंत प्रकट नहीं किया। इस सम्बंध में पहले वह लीज़ा से बात कर लेना चाहता था। इसका मौका भी मिल गया। उस समय ड्राइंगरूम में वे दोनों अकेले थे। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। लीज़ा पहले से ही उसकी अभ्यस्त थी,—सच तो यह है कि वह, नियमतः, किसी से नहीं लजाती थी। वह उसकी बातें सुन रहा था, उसके चेहरे के भावों का अध्ययन कर रहा था और लेम्म के शब्दों को दोहराता मन ही मन उनकी पुष्टि कर रहा था।

कभी-कभी ऐसा होता है कि दो परिचित व्यक्ति जिनमें अभी इतनी घनिष्ठता नहीं है, सहसा और क्षणिक रूप में एक-दूसरे के निकट खिंच आते हैं, और इस घनिष्ठता की अनुभूति कनखियों से एक-दूसरे को देखने, शान्त मित्रभाव से मुसकराने और अंग-संचालन तक में तुरंत प्रकट होने लगती है। लावरेत्स्की और लीज़ा के साथ भी ठीक ऐसा ही हुआ। "सो ऐसा है यह," लीज़ा ने सोचा और हार्दिकता से उसकी ओर देखा, "सो ऐसी हो तुम," वह भी यही सोच रहा था। और उसे अधिक आश्चर्य नहीं

हुआ जब लीज़ा ने, कुछ हिचकिचाहट के साथ, उसे बताया कि एक बात है जो बहुत दिनों से उसके हृदय में उमड़-घुमड़ रही है, लेकिन उसे प्रकट करने का वह अब तक साहस नहीं कर सकी।

"संकोच न करो, बोलो, क्या कहना चाहती हो?" उसने कहा और उसके सामने खड़ा हो गया।

लीज़ा ने अपने स्वच्छ नेत्र उठा कर उसकी ओर देखा।

"आप इतने अच्छे हैं," उसने कहा और मन ही मन दोहराया कि सचमुच, वह इतना अच्छा है। फिर बोली, "माफ़ करना। वस्तुतः यह सब पूछने का मुझे साहस नहीं करना चाहिए ... लेकिन यह कैसे हुआ कि तुम ... तुमने अपनी पत्नी से सम्बंध-विच्छेद कर लिया?"

लावरेत्स्की कुछ चौंका, लीज़ा की ओर उसने देखा और फिर उसके निकट बैठ गया।

"सुनो लीज़ा," उसने कहना शुरू किया, "उस घाव को न छेड़ो। माना कि तुम्हारी उंगलियां कोमल हैं, लेकिन घाव में दर्द तो फिर भी होगा ही।"

"यह मैं जानती हूं," लीज़ा इस तरह कहती गई जैसे उसने उसकी बात को सुना ही न हो, "कि उसने गलती की, मैं उसकी ओर से सफ़ाई देना नहीं चाहती, लेकिन उस सूत्र को कोई कैसे तोड़ सकता है जिसमें खुदा ने दो जीवों को गूंथा है।"

"येलिज़ावेता मिखाइलोवना," कुछ तीखे स्वर में लावरेत्स्की ने जवाब दिया, "इस बारे में हमारे मत इतने भिन्न हैं कि हम एक-दूसरे को समझ नहीं सकते।"

लीज़ा का चेहरा पीला पड़ गया। उसके बदन में एक कंपकंपी-सी दौड़ी। लेकिन वह चुप नहीं रह सकी।

"जो क्षमा करता है," कोमल आवाज़ में वह बुदबुदाई, "क्षमा पाने का अधिकारी भी वही होता है।"

"क्षमा!" लावरेत्स्की बीच में ही फूट पड़ा, "पहले तुम्हें उस जीव के बारे में जानना चाहिए जिसका कि तुम पक्ष ले रही हो। उस स्त्री को क्षमा करना, उस खोखली आत्मा-विहीन पुतली को फिर अपने घर में लाना! लेकिन यह तुमसे किसने कहा कि वह वापिस आना चाहती है? सच तो यह है कि अपनी मौजूदा स्थिति से वह पूर्णतया सन्तुष्ट है ... ओह छोड़ो, बेकार की बातें करने से क्या लाभ? तुम्हें तो उसका नाम अपने होठों पर नहीं लाना चाहिए तुम इतनी निश्छल हो, – तुम्हारे लिए वह कल्पना तक करना कठिन है कि उस तरह की भी कोई स्त्री हो सकती है!"

"उसे लांछित करना क्या ज़रूरी है?" लीज़ा ने अपने पर जबर करते हुए कहा। उसके हाथ अब, प्रकट रूप में कांप रहे थे। "खुद तुम्हींने तो उसे छोड़ा है, फ़ियोदोर इवानिच!"

"लेकिन मैंने बताया न," धीरज खोते हुए लावरेत्स्की कह उठा, "तुम नहीं जान सकती कि वह किस कैंडे की जीव है।"

"ऐसा ही था तो तुमने उसके साथ विवाह क्यों किया?" अपनी आंखें नीची करते हुए लीज़ा ने फुसफुसा कर पूछा।

लावरेत्स्की तेज़ी से उठ खड़ा हुआ।

"मैंने उससे विवाह क्यों किया? मैं युवा और अनुभवहीन था। मैं फंस गया, उसकी बाहरी चमक-दमक ने मुझे बेसुध कर दिया। मुझे स्त्रियों का अनुभव नहीं था, – किसी चीज़ का भी अनुभव नहीं था। भगवान करे, तुम्हें अच्छा वैवाहिक जीवन नसीब हो। लेकिन, मेरी बात का यकीन करो, निश्चय के साथ कोई कुछ नहीं कर सकता।"

"हो सकता है कि मेरा भाग्य भी अच्छा सिद्ध न हो," लीज़ा ने कहा

(उसकी आवाज़ रुंध-सी गयी)। "लेकिन तब भाग्य में जो हो उसे सहना चाहिए। मेरी समझ में नहीं आता कि अपनी बात को कैसे कहूं, लेकिन भाग्य के आगे सिर झुकाने ..."

लावरेत्स्की की मुट्ठियां भिंच गईं और उसने अपना पांव ज़मीन पर पटका।

"कृपा कर नाराज़ न हों। मुझे माफ़ करें," लीज़ा ने सकपकाते हुए कहा।

तभी मारिया दिमीत्रियेवना ने कमरे में पांव रखा। लीज़ा बाहर जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

"ज़रा ठहरो," सहसा लावरेत्स्की ने कहा, "मुझे तुम्हारी मां और तुम से एक अनुरोध करना है–यह कि एक बार मेरे घर को पवित्र करने की कृपा करें, गृह-आगमन की पार्टी में शामिल हों। क्यों, चलेंगी न? तुम्हें मालूम है कि मैंने एक पियानो मंगा लिया है, तिस पर लेम्म भी मेरे साथ ठहरा हुआ है, और लिलक के फूलों ने अपनी पंखुरियां खोलनी शुरू कर दी हैं। देहात की हवा में कुछ देर सांस लेना और उसी दिन वापिस लौट आना। बोलो, तैयार हो न?"

लीज़ा ने अपनी मां की ओर देखा, और मारिया दिमीत्रियेवना ने ऐसा भाव धारण किया जैसे वह त्रस्त हो उठी हो। लेकिन लावरेत्स्की ने उसे मुंह खोलने का अवसर नहीं दिया और उसके दोनों हाथों को वहीं के वहीं चूम लिया। मारिया दिमीत्रियेवना जो इस तरह के हृदय-स्पर्शी प्रदर्शनों से सदा अभिभूत हो उठती थी और इस 'देहाती' से ऐसी विनम्रता की ज़रा भी आशा नहीं करती थी, इन्कार नहीं कर सकी। वह अभी यह सोच ही रही थी कि जाने के लिए कौनसा दिन वह निश्चित करे तभी लावरेत्स्की लीज़ा के पास पहुँचा और फुसफुसाकर बोला, "बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम बड़ी अच्छी लड़की हो, मुझे दुःख है कि..."

और लीज़ा के पीले चेहरे पर एक प्रसन्न और सलज्ज मुसकान की लाली दौड़ गई। उसकी आंखें भी मुसकरा उठीं – वह तो केवल यह सोचकर सहम गई थी कि उसने लावरेत्स्की को नाराज़ कर दिया है।

"क्या व्लादीमिर निकोलाइच भी हमारे साथ चल सकता है?" मारिया दिमीत्रियेवना ने पूछा।

"क्यों नहीं?" लावरेत्स्की ने जवाब दिया, "लेकिन अच्छा होता कि यह एक पारिवारिक पार्टी ही रहती।"

"मुझे लगता है ..." मारिया दिमीत्रियेवना ने कहना शुरू किया, "अच्छी बात है, जैसा तुम चाहो," अन्त में उसने जोड़ा।

लेनोचका और शूरोचका को भी साथ ले चलने का निश्चय हुआ। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने इन्कार कर दिया। "मुझे दुःख है," उसने कहा, "मेरी बूढ़ी हड्डियों में इतनी सकत नहीं। फिर तुम्हारे यहां सोने का भी कुछ ठौर ठिकाना नहीं है। इसके अलावा किसी दूसरी जगह मुझे नींद नहीं आती। सो जो युवा हैं, इसका आनन्द लें। मैं यहीं भली।"

लावरेत्स्की को लीज़ा के साथ अकेले बतियाने का अब अवसर नहीं मिला। लेकिन वह इस तरह उसकी ओर देखता रहा कि लीज़ा का जी हल्का हो गया, उसने कुछ लाज का अनुभव किया, और लावरेत्स्की के प्रति तरस से उसका हृदय भर गया। विदा के समय उसका हाथ अपने हाथ में लेकर, उसने दबाया। उसके चले जाने पर एकान्त में लीज़ा विचारों में डूब गई।

२५

जब लावरेत्स्की घर पहुंचा तो ड्राइंगरूम की देहली पर खड़े एक लम्बे क्षीणकाय आदमी से उसकी भेंट हुई। वह नीले रंग का सिलवटें पड़ा कोट पहने था। उसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ी थीं, लेकिन यों जानदार मालूम

होता था। उसके गलमुच्छे अस्तव्यस्त थे, नाक लम्बी और सीधी-सतर, और आंखें छोटी-छोटी तथा लाली-भरी थीं। उसका नाम मिखलेविच था। वह उसका विश्वविद्यालय का पुराना मित्र था। लावरेत्स्की उसे पहली नज़र में नहीं पहचान सका। लेकिन उसका नाम सुनते ही सीधे उसके गले से लिपट गया। मास्को में जब वे थे, उसके बाद एक-दूसरे से वे एक बार भी नहीं मिले थे। दोनों ने प्रश्नों और विह्वल उद्गारों की एक झड़ी लगा दी। बहुत पहले की भूली हुई स्मृतियां उभर आईं। तेज़ी से एक के बाद एक पाइप की राख झाड़ते, बीच-बीच में चाय की चुस्कियां लेते और अपने लम्बे हाथों को हिलाते हुए वह लावरेत्स्की को अपनी मुहिमों के किस्से सुना रहा था। ये किस्से अपने-आप में कोई खास उछाहपूर्ण नहीं थे, उसने ऐसी कोई सफलताएं प्राप्त नहीं की थीं जिन्हें लेकर शेखी बघारी जा सके, — लेकिन वह था कि विह्वल और भर्राई-सी आवाज़ में बराबर हंसता जा रहा था। अभी पिछले महीने ही, 'ओ' नगर से कोई ढाई सौ मील दूर, भारी मालगुज़ारी देनेवाले एक ठेकेदार के मुनीमी विभाग में उसे काम मिला था। वहां जाते हुए जब उसे मालूम हुआ कि लावरेत्स्की बाहर से लौट आया है तो वह वहां जाने से पहले अपने पुराने साथी से मिलने चला आया। वह अब भी, अपनी युवावस्था की भांति, उतनी ही तुफ़ानी गति से बोल रहा था। उसका वह पुराना आवेग और आवेश — उसका वह जोश — अब भी कायम था। लावरेत्स्की ने अपनी आप-बीती का ज़िक्र शुरू किया, लेकिन मिखलेविच ने बीच में ही रोक दिया। तेज़ी से बोला, "मैं सब सुन चुका हूं, मित्र, मुझे सब मालूम है, — कौन कह सकता था कि ऐसी अघट घटना तुम्हारे साथ घटेगी?" और इसके बाद बातों का सिलसिला उसने आम विषयों की ओर मोड़ दिया।

"कल ही मुझे चल देना है, मित्र" उसने कहा, "सो आज की रात, अगर तुम मानो तो हम देर तक बैठे बात करेंगे। यह जानने के लिए मेरा

हृदय बेचैन है कि किस रंग में अब तुम रंगे हो, किस तरह की बातें तुम सोचते हो, तुम्हारे विश्वास क्या हैं, तुम क्या बन गए हो, जीवन ने तुम्हें क्या-कुछ सिखाया है?" (मिख़लेविच अब भी उसी १८३०-१८४० वाली शब्दावली का प्रयोग करता था) "और जहां तक मेरा अपना सम्बंध है, मैं तो बहुत कुछ बदल गया हूं, मित्र! जीवन की जाने कितनी लहरें मेरे वक्ष पर वार कर चुकी हैं—भला, किसने कहा था यह?—हालांकि मूलतः मैं ज़रा भी नहीं बदला हूं। जो शिव और सत्य है, उसमें अब भी विश्वास करता हूं,—निरा विश्वास ही नहीं करता, बल्कि उसमें मेरी आस्था है,—आस्था! सुनो, यह तो तुम जानते ही हो कि मैं कुछ तुकबन्दियां भी कर लेता हूं। मेरी कविताओं में काव्य चाहे न भी हो, लेकिन सत्य होता है। सुनो, मैं तुम्हें अपनी आखिरी कविता सुनाता हूं। उसमें मैंने अपने आन्तरिक विश्वासों को वाणी प्रदान की है। सुनो ..."

और मिख़लेविच ने अपनी कविता सुनानी शुरू की जो काफ़ी लम्बी थी, और उसकी अन्तिम पंक्तियां इस प्रकार थीं:

नयी भावनाओं के सम्मुख नत है मेरा हृदय,
शिशु-सा बन गया हूं हृदय से अब मैं:
जला दिये हैं वे सब, जिनकी पूजा करता था
और पूज रहा हूं वे सब जिनको फूंक चुका था मैं।

अन्तिम दो पंक्तियों का उच्चारण करते समय उसका गला भर आया, उसके चौड़े मुंह में एक हल्की-सी ऐंठन पड़ गई जो गहरे उद्वेलन की सूचक थी, और उसके सपाट चेहरे में एक निखार-सा पैदा हो गया। लावरेत्स्की बैठा सुनता रहा, सुनता रहा,... और उसके अन्तर में प्रतिरोध करने की एक प्रबल भावना उमड़ने-घुमड़ने लगी। मास्को के इस छात्र के सदा-खुदबुदाते किताबी उछाह से वह झुंझला उठा। पन्द्रह-एक मिनट बीतते न बीतते

दोनों में बहस छिड़ गई, – एक ऐसी अन्तहीन बहस जैसी कि केवल रूसी ही कर सकते हैं। कई साल से दोनों अलग थे, दो भिन्न दुनियाओं में दोनों रह रहे थे, दूसरों के विचारों को समझना तो दूर, अभी वे अपने विचारों को भी मुश्किल से ही समझ पाते थे। लेकिन इससे क्या, – वे मिले और मिलते ही बहस में उलझ गए। उन्होंने बाल की खाल निकाली, शब्दों के गोले दागे, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म विषयों को लेकर उन्होंने खींचतान की, और अपनी-अपनी बात को लेकर इस तरह जूझे जैसे मौत और ज़िन्दगी के सवाल से वे जूझ रहे हों। वे चीखे-चिल्लाए, इतने ज़ोरों से उबले-उफने कि घर के सभी लोग चौंक उठे और बेचारा लेम्म – जो मिखलेविच के आगमन के बाद अपने कमरे में ही सिटकनी चढ़ा कर बैठा था – यह हल्ला-गुल्ला सुन चकरा गया और धुंधले भय तक से थरथरा उठा।

रात आधी से ज़्यादा बीत चुकी थी और मिखलेविच गरज रहा था :

"तो उसके बाद तुम्हारा क्या हश्र हुआ? सारे भरम टूट गए?"

"क्या मैं भरम-टूटे आदमियों की भांति मालूम होता हूं?" लावरेत्स्की ने पलट कर जवाब दिया, "उन लोगों की भांति जो चिर रोगी और पीलिया के शिकार नज़र आते हैं? वाह, अगर चाहो तो मैं तुम्हें अभी एक हाथ से ऊपर उठा सकता हूं।"

"अच्छी बात है, अगर तुम भरम-टूटे लोगों में से नहीं तो आस्था-हीन अवश्य हो जो और भी बुरा है (मिखलेविच के लहजे में उसके जन्मस्थान युक्रेन का पुट था)। यह वहम किस लिए? माना कि भाग्य ने तुम्हारा साथ नहीं दिया। और इसके लिए तुम्हें दोष नहीं दिया जा सकता। प्रेम और उमंगों से हिलोरें लेता हृदय लिए तुम पैदा हुए थे, लेकिन तुम्हें ज़बर्दस्ती स्त्रियों से अलग रखा गया। नतीजा यह कि पहली मुठभेड़ में ही तुम एक स्त्री के हाथों बेवकूफ़ बन गए।"

"तुम खुद भी तो उसी स्त्री के हाथों वेवकूफ़ बन चुके हो!" लावरेत्स्की ने कुछ खीज कर कहा।

"ठीक, बिल्कुल ठीक। भाग्य ने मुझे भी नाच नचाया, – ओह, गोली मारो, यह सब बकवास है, भाग्य-वाग्य कुछ नहीं। यह सब गोलमोल ढंग से व्यक्त करने की पुरानी आदत है। जब कुछ कहते नहीं बनता तो भाग्य की ही दुम पकड़ ली। लेकिन तुम इससे सिद्ध क्या करना चाहते हो?"

"यह कि मैं बचपन में ही कुण्ठित कर दिया गया था।"

"तो अब उस कुण्ठा को निकाल फेंको – आखिर तुम आदमी हो, मर्द हो न? अरे, तुम में ताकत की भी कमी नहीं कि दूसरों का सहारा ढूंढते फिरो। जो हो, यह तय है कि तुम किसी एक व्यक्ति की मिसाल को – जैसे कि कहा जाता है – एक आम सिद्धान्त नहीं बना सकते, उसे एक अपरिवर्तनीय नियम नहीं घोषित कर सकते!"

"नियम की इसमें क्या बात है," लावरेत्स्की फूट पड़ा, "मैं यह नहीं मानता..."

"नहीं, तुम इसे ही नियम मान बैठे हो, इसी की बैसाखी पकड़ कर..." मिख़लेविच ने पलट कर कहा।

"तुम अहंवादी हो, – निरे अहंवादी!" एक घंटा बाद भी वह उसी प्रकार गरज रहा था – "तुम्हें केवल अपने सुख की चाह थी, तुम जीवन में सुख से विचरना चाहते थे, तुम केवल अपने आत्मसुख के लिए जीना चाहते थे..."

"आत्मसुख? – यह किस चिड़िया का नाम है?"

"और हर तरफ़ से तुम्हें धोखा हुआ, सभी कुछ भरभरा कर ढह गया!"

"मैं पूछता हूं, – तुम्हारा यह आत्मसुख क्या बला है?"

"और उसे भरभरा कर गिरना ही था। कारण, तुम वहां पांव जमाना

चाहते थे जहां पांव जमाने की ज़मीन नहीं थी, तुम खिसकते हुए रेत पर अपनी इमारत खड़ी करना चाहते थे।"

"उपमाओं से बाज़ आओ। सीधी-सादी भाषा में बात करो ताकि कुछ पल्ले पड़े, — समझे?"

"क्योंकि — ठीक है, हंस लो चाहो तो क्योंकि न तुम में आस्था है, न तुम्हारे हृदय में उल्लास है। तुम्हारे पास केवल दिमाग है, कौड़ी-भर का। तुम तो एक तुच्छ-से, पुराने ढर्रे के वाल्टेयरपन्थी हो। बस, और कुछ नहीं।"

"क्या कहा! मैं, — और वाल्टेयरपंथी?"

"हां, ठीक अपने पिता की तरह, और तुम्हें इसका पता तक नहीं!"

"तब मैं तुम्हें, कुल मिलाकर, केवल कठमुल्ला कह सकता हूं!" लावरेत्स्की ने चिल्लाकर कहा।

"कह तो सकते हो," मिख़लेविच ने मुंह फुलाया, "लेकिन दुर्भाग्यवश मैं अभी उस ऊंचे पद तक नहीं पहुंचा ..."

"अब समझ में आया कि तुम क्या हो?" रात के दो बज गए थे, लेकिन मिख़लेविच का गरजना अभी भी कम नहीं हुआ था — "तुम न तो आस्थाहीन हो, न भरम-टूटे हो, न ही वाल्टेयरपंथी हो — तुम केवल निकम्मे हो — बिल्कुल निकम्मे, सुघड़ होकर भी निकम्मे। फूहड़ निकम्मे लोगों के पास करने को कुछ नहीं होता, इसलिए वह मक्खियां मारते रहते हैं। क्योंकि सोचना भी उनके लिए दूभर है। लेकिन तुम... तुम सोचने वाले जीव हो, और फिर भी गोबरगणेश बने बैठे हो, तुम खड़े होकर हाथ-पांव मार सकते हो, — लेकिन तुम ऐसा नहीं करते, बस पेट में चारा डाल कर पड़ रहते हो और कहते हो: 'यही अच्छा है। लोग इतना हाथ-पांव मारते हैं, लेकिन सब बेकार, उससे कुछ पल्ले नहीं पड़ता, कोई नतीजा नहीं निकलता!'"

"यह तुमने कैसे जाना कि मैं पड़ा-पड़ा ऐंड़ा करता हूं?" लावरेत्स्की ने विरोध किया, "और तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं ऐसी बातें मानता हूं?"

"इसके अलावा, तुम सब लोग – तुम्हारी समूची बिरादरी," मिख़लेविच अपनी ही धुन में कह रहा था, "पढ़े-लिखे निकम्मे हो। जर्मनों की कमजोरी को तुम कुरेदते हो, अंग्रेज़ों और फ्रान्सीसियों के दोष भी तुम से छिपे नहीं हैं, – और अपनी इस तुच्छ जानकारी की ओट में तुम अपने निर्लज्ज निखट्टू को, अपनी कुत्सित निष्क्रियता को, छिपाना चाहते हो। तुम में से कुछ हैं जो अपनी इस समझदारी में ही मस्त हैं कि वे कुछ नहीं करते, मज़े से ऐंडते रहते हैं जबकि कुछ-मूर्ख कहीं के – नाहक़ उछल-कूद में अपने जीवन की इति कर रहे हैं। हां-हां, हम लोगों की इस बिरादरी में ऐसे रईसजादे भी हैं जो ठाठ के साथ – इन लोगों में तुम अपने-आपको न सभझ बैठना – जो अपना समूचा जीवन अलसाहट में निश्चेष्ट पड़े-पड़े बिताते हैं, इस अजगरी जीवन के आदी हो जाते हैं और उससे चिपके रहते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि ... जैसे कि मसाले में कुकुरमुत्ता!" अपनी उपमा पर खुद ही हंसते हुए मिख़लेविच बलबलाया – "ओह निश्चेष्ट बना देने वाली यह ऊब और अलसाहट हम रूसियों का अन्त कर डालेगी। निकम्मेपन के ये पुतले काम करने की सोचते हैं – हर घड़ी सोचते रहते हैं – बस, सोचते ही रहते हैं ..."

"बहुत चिड़चिड़ाओ नहीं," अब लावरेत्स्की के चिल्लाने की बारी थी, "काम की – यह और वह करने की – बातें बघारना बड़ा भला मालूम होता है... लेकिन अजी तक़रीर-बाज़, झींकने-झल्लाने के बजाय अगर तुम यह बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए तो कहीं अच्छा हो।"

"बस, इतना ही? अच्छा तो सुनो, यह एक ऐसी बात है जिसका हर व्यक्ति को खुद ज्ञान होना चाहिए," तकरीर-बाज़ ने व्यंग कसा,

"लेकिन वह जो भूपति है – बल्कि कहिए कि कुलीन है इतना भी नहीं जानता कि उसे क्या करना चाहिए! तुम्हारा कोई विश्वास नहीं है – धर्म नहीं है, अगर होता तो तुम ऐसा सवाल न करते। जहां विश्वास नहीं होता, वहां प्रकाश भी नहीं होता।"

लावरेत्स्की ने पीछा छुड़ाना चाहा, "अभी तो मैं दो घड़ी सुस्ताना और ज़रा सिर हल्का उठाकर चारों ओर की चीज़ों को कुछ समझना चाहता हूं। ज़रा मौका तो दो कम्बख़्त।"

"सुस्ताने से काम नहीं चलेगा, – नहीं, एक घड़ी के लिए भी नहीं!" हाकिमाना अन्दाज़ में हाथ हिलाते हुए मिख़लेविच ने कहा, "नहीं, सुस्ताने के कोई मानी नहीं होते। मृत्यु किसी की बाट नहीं जोहती – किसी के लिए नहीं रुकती, – तब फिर जीवन ही क्यों रुके?"

रात के चार बज गए थे, आवाज़ बैठ गई थी, लेकिन उनका चिल्लाना अभी भी जारी था।

"और यह तो देखिए कि आलस्य का यह अवतरण भी कहां और कैसे समय में हुआ है?" मिख़लेविच चीख रहा था, "इसका अवतरण हुआ है यहां, हमारे रूस में, और ऐसे समय में जबकि हर व्यक्ति को अपना कर्तव्य पूरा करना है, ख़ुदा की, राष्ट्र की, और ख़ुद अपनी आत्मा की साक्षी में एक गहरी ज़िम्मेदारी को निबाहना है। समय बीतता जा रहा है और हम हैं कि सो रहे हैं – सोए जा रहे हैं..."

"नहीं जनाब," लावरेत्स्की ने टिप्पणी जड़ी, "निश्चय ही हम अब सो नहीं रहे हैं! बल्कि दूसरों को भी सोने से रोक रहे हैं। हम चीख़ रहे हैं, कुड़क-मुर्ग के समान चीख़ रहे हैं। उधर सुनो, बाहर तीसरे याम के मुर्ग़ ने बांग देना शुरू कर दिया है!"

इस चुटकी ने मिख़लेविच को गुदगुदा दिया और वह शान्त हो गया। अपने पाइप को अलग रखते और होठों पर मुसकराहट लाते हुए बोला –

"अच्छी बात है। बाकी कल सही!"

"हां, बाकी कल," लावरेत्स्की ने दोहराया। लेकिन, इसके बाद भी, दोनों मित्र एक घंटे से भी ऊपर तक बतियाते रहे ... इस अन्तर के साथ कि उनकी आवाज़ में अब वह तेज़ी नहीं थी, दबे हुए और उदास स्वर में वे बातें कर रहे थे। उनकी बातों का विषय भी मृदुता से पूर्ण था।

अगले दिन मिख़लेविच चला गया। लावरेत्स्की ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह रुका नहीं। फ़ियोदोर इवानिच उसे रोक रखने में भले ही सफल न हुआ हो, लेकिन बातें उन्होंने जी भर कर ली थीं। साफ़ मालूम होता था कि मिख़लेविच को लक्ष्मी ने अपनी कृपा से दूर ही रखा है। उसमें चिर गरीबी के चिन्हों और आदतों को देख कर लावरेत्स्की का हृदय अकुला उठा था। उसके जूतों की एड़ियां जवाब दे गई थीं, कोट का एक बटन गायब था, उसके हाथ दस्तानों के आदी नहीं थे, उसके बालों में रूई के रेशे लगे थे। आने के बाद उसे यह तक नहीं सूझा कि हाथ-मुंह धोने की भी आवश्यकता हो सकती है। सांझ को खाने बैठा तो इस तरह जाने कब का भूखा हो, – मांस को हाथों से ही नोचता था और अपने काले मज़बूत दांतों से हड्डियों तक को कचर डालता था। पता चला कि सरकारी नौकरी भी तीन-तेरह होने से उसकी रक्षा नहीं कर सकी और उसकी सारी आशाएं अब उसके वर्तमान मालिक पर केन्द्रित थीं जिसने उसे केवल इसलिए रख छोड़ा था कि 'पढ़ा-लिखा' आदमी होने से दफ़्तर की सजावट बढ़ती है। लेकिन इस सब से मिख़लेविच विचलित नहीं हुआ था और अपनें रंग को – अपनी समची अश्रद्धा आदर्शवादिता, और अपने कवि-रूप को – कायम रखा था। मानव के भविष्य और खुद अपने कर्त्तव्य के बारे में वह सच्चे हृदय से सोचता और गहरा लगाव रखता था, लेकिन निजी अभावों से उबरने की बात बहुत ही कम उसके दिमाग में आती। मिख़लेविच ने विवाह नहीं किया था, लेकिन प्रेम

में अनगिनत बार पड़ चुका था, और उसके रचनाभण्डार में उन सभी के लिए कविताएं मौजूद थीं जिन्होंने उसके हृदय में कभी उमंगों का संचार किया था। इनमें से एक खासतौर से अनुप्राणित तुकबंदी वह थी जो ऊंचे कुल की काली लटोंवाली किसी 'पोलिश महिला' के लिए लिखी गई थी... माना कि अफ़वाहों के अनुसार यह उच्चकुलीय पोलिश महिला एक बाज़ारू यहूदिन थी, — वैसी ही जो कि घुड़सवार सैनिक अफ़सरों के लिए इतनी सहज-सुलभ होती हैं... लेकिन इससे क्या, इन सब बातों का उसके लिए कोई खास महत्व नहीं था।

मिख़लेविच की लेम्म से पटरी नहीं बैठी। उसकी तूफ़ानी बातचीत और उतावलेपन ने लेम्म को सहमा दिया। वह ऐसे रंग-ढंग का अभ्यस्त नहीं था... एक कंगाल भिखारी दूसरे को दूर से ही ताड़ लेता है, लेकिन बुढ़ापे में वे कभी मित्र नहीं बन पाते... विरले ही ऐसा होता है। और यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं। उनके पास ऐसा कुछ नहीं होता जिसका समान रूप से वे आदान-प्रदान कर सकें। आशा-आकांक्षाएं तक उनके पास नहीं होतीं।

विदा होने से पहले मिख़लेविच ने लावरेत्स्की को एक और लम्बा भाषण पिलाया। बातचीत के दौरान में उसने भविष्यवाणी की कि अगर वह नहीं चेता तो उसका नाश निश्चित है, अनुरोध किया कि अपने किसानों की भलाई के लिए गम्भीरता के साथ वह प्रयत्नशील हो, और अपने-आपको ऐसा बनाए कि सब उसका अनुकरण करें, उसने दावा किया कि मुसीबतों की भट्ठी में तप कर वह कुन्दन बन गया है; और एक ही सांस में कई बार दोहराया कि वह एक सुखी आदमी है, उतना ही सुखी जितना कि आकाश में स्वच्छन्द उड़नेवाला पक्षी और घाटी में खिलनेवाला कुमुद का फूल...

"लेकिन काले रंग का!" लावरेत्स्की ने चुटकी ली।

"बस रहने दो, बाहर की सफ़ेदी को लेकर इतना न इतराओ," मिख़लेविच ने जवाब दिया, "खुदा का शुक्र करो कि तुम्हारी रगों में भी सच्चे श्रमिक-वर्ग का रक्त बह रहा है,—आम जनता का खरा रक्त। अगर कसर है तो दैवी सांचे में ढली एक विशुद्ध प्रतिमा की जो उदासीनता के इस गर्त से तुम्हें बाहर खींच लाए।"

"धन्यवाद, मित्र!" लावरेत्स्की ने कहा, "स्वर्गिक प्रतिमाओं से मेरा जी पहले ही काफ़ी भर चुका है।"

"बको मत, स्रद्धाहीन!"

"स्रद्धाहीन नहीं, श्रद्धाहीन!" लावरेत्स्की ने उसे ठीक किया।

"एकदम स्रद्धाहीन—विशुद्ध रूप में!" बिना किसी अचकचाहट के मिख़लेविच ने फिर दोहराया।

बग्घी में बैठते समय भी उसका बोलना जारी था। पीले रंग का उसका चपटा बैग भी गाड़ी में रखा गया जो वज़न में इतना हल्का था कि अचरज होता था। वह स्पेनिश काट का चोगा पहने था कि जिसके गले पर मैल की परत चढ़ी थी और जिसमें शेर के दो पंजों के आकार का एक कब्ज़ा लगा था, तपे हुए ताम्बे-ऐसे रंग के अपने हाथों को हवा में हिलाता—जैसे वह सुखी भविष्य के बीज खेत में बिखरा रहा हो—रूस के भाग्य के बारे में अपने विचारों का प्रतिपादन कर रहा था। आखिर घोड़ों ने हरकत की ... "मेरे अन्तिम तीन शब्द याद रखना," गाड़ी में से अपने शरीर को बाहर निकालते और उसे सन्तुलित करते हुए वह चिल्लाया, "धर्म, प्रगति, मानवता ... अच्छा तो अब विदा!" इसके बाद उसका सिर, जिसपर वह नीची, आंखों तक खिंची टोपी पहने था, ओझल हो गया। लावरेत्स्की अब अकेला सीढ़ियों पर खड़ा था और सड़क पर नज़र गड़ाए ओझल होती हुई बग्घी को देख रहा था। "इस में शक नहीं कि उसका कहना ठीक था," घर के भीतर लौटते हुए उसने सोचा, "मैं सचमुच

काहिल हो गया हूं।" मिखलेविच का विरोध करने और उससे असहमति प्रकट करने के बावजूद उसकी अधिकांश बातें उसके हृदय में गहरी बैठ गई थीं। आदमी जब नेक होता है तो उसके सामने कोई टिक नहीं सकता।

२६

दो दिन बाद, अपने वायदे के अनुसार, मारिया दिमीत्रियेवना भी वसीलेवस्कोये आ गई। साथ में परिवार के सभी युवा सदस्य थे। लड़कियां भाग कर सीधी बाग में पहुंच गईं, लेकिन मारिया दिमीत्रियेवना अलस भाव से कमरों में टहलती और अलस भाव से हर चीज़ की सराहना करती रही। लावरेत्स्की के घर अपने इस आगमन को, मन में वह एक बहुत ही बड़ी कृपा—बल्कि कहिए कि दया—समझती थी। अन्तोन और अपराक्सिया ने—बन्धक दासों की पुरानी परिपाटी के अनुसार—जब उसके हाथ को अपने होंठों से छुआया तो वह कृपापूर्ण अन्दाज़ में मुसकराई और सोए-से विलम्बित स्वर में चाय के लिए उसने अपनी इच्छा प्रकट की। लेकिन अन्तोन को—इस अवसर के लिए उसने सफ़ेद दस्तांने पहन रखे थे—बड़ा बुरा मालूम हुआ जब चाय परसने का काम लावरेत्स्की के नये आये रोज़गारी अरदली ने किया जो, अन्तोन के मत से अदब-कायदों से एकदम कोरा था। लेकिन अन्तोन ने भोजन के समय अपनी कसर निकाल ली। दृढ़ता के साथ वह मारिया दिमीत्रियेवना के पीछे जा खड़ा हुआ और अपनी इस जगह पर अन्य किसी को भी उसने कब्जा नहीं करने दिया। वसीलेवस्कोये में मेहमानों के आगमन की इस असाधारण घटना से वृद्ध परेशान और साथ ही प्रसन्न हो गया था। उसे यह बड़ा अच्छा मालूम हो रहा था कि उसके मालिक का कितने बढ़िया कुलीनों से रब्त-जब्त है। और अकेला वही उस दिन उछाह से विचलित नहीं हो उठा था, लेम्म भी कुछ कम

छलछला नहीं रहा था। वह किशमिशी रंग का—छोटा पुछल्लावाला कोट पहने था, गरदन में उसने रूमाल कस रखा था और रह-रहकर—निरन्तर—अपने गले को साफ़ करता हुआ, अत्यन्त मिलनसारी के अन्दाज़ में, लोगों को रास्ता दे रहा था। लावरेत्स्की को यह देख कर खुशी हुई कि खुद उसके और लीज़ा के बीच घनिष्ठता की जिस भावना का सूत्रपात हुआ था, वह अभी तक कायम है। भीतर पांव रखते ही, मित्रतापूर्ण भाव से, लीज़ा ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। भोजन के बाद लेम्म ने अपने पुछल्लेदार कोट की जेब में से—जिसे वह इतनी देर से बराबर टटोल रहा था—स्वर-लिपि का एक छोटा-सा पुलिन्दा बाहर निकाला और फिर अपने होंठों को कस कर भींचते हुए चुपचाप उसे पियानो पर रख दिया। यह एक रोमांज़ा था जिसे उसने पिछली रात ही रचा था। इसके बोल पुराने जर्मन ढंग के थे और उनका विषय तारों से सम्बंध रखता था। लीज़ा तुरत पियानो पर आ बैठी और उसे बजाने लगी ... लेकिन कुछ बना नहीं। गीत के स्वर बहुत ही उलझे और कष्टकर निकले। साफ़ प्रतीत होता था कि गीतकार किन्हीं गहरी और उद्वेगपूर्ण भावनाओं को व्यक्त करना चाहता था, लेकिन सफल नहीं हो सका। प्रयास के सिवा उसमें और कुछ नहीं था। लावरेत्स्की और लीज़ा दोनों ने इसका अनुभव किया, और लेम्म से भी यह छिपा नहीं रहा,—कारण, बिना एक शब्द मुंह से निकाले, स्वर-लिपि को उठा कर उसने अपनी जेब में रख लिया, और लीज़ा ने जब उसे दोबारा बजाने के लिए कहा तो वह केवल सिर हिलाकर रह गया और अर्थपूर्ण स्वर में बोला—"बस, हो गया!" फिर उसने अपने कंधों को बिचकाया और अपने-आप में सिमट कर वहां से खिसक गया।

सांझ के समय सब लोग मछलियों का शिकार करने के लिए बाहर निकल आए। बाग के तल में एक कुण्ड था जो कार्प और ग्राउण्डलिंग

मछलियों से भरा था। मारिया दिमीत्रियेवना के लिए कुण्ड के किनारे छाया में एक आरामकुर्सी लगा दी गई, पांव रखने के लिए एक कालीन बिछा दिया गया और सब से अच्छी कांटा-डोरी उसे दे दी गई। अन्तोन ने जो कि एक पुराना अनुभवी शिकारी था, अपने-आप को उसकी सेवा में अर्पित कर दिया। बड़े उछाह के साथ उसने डोरी को संभाला-संवारा, कांटे में लासा फंसाया, लासे को प्यार से थपथपाया और उसे अपने थूक से तर कर बहुत ही कमनीय अन्दाज़ में अपने बदन को तोड़ते-मोड़ते हुए उसने डोरी को कुण्ड में फेंका। छात्रावासवाली अपनी फ़्रेंच भाषा में लावरेत्स्की से उसका ज़िक्र करते हुए मारिया दिमीत्रियेवना ने उस दिन कहा, "उस जैसे लोग पुराने ज़माने की यादगार हैं। अब देखने को नहीं मिलते।" लेम्म दो छोटी लड़कियों के साथ और भी आगे बांध के निकट चला गया था, और लावरेत्स्की लीज़ा के साथ जमा था। मछलियां लासे को निरन्तर कुतर रही थीं। डोरियां जब जहां-तहां झटका खातीं तो 'कार्प' मछलियों का सुनहारा-रुपहला रंग हवा में चमकता और छोटी लड़कियां खुशी से चहक उठतीं। उनका यह चहकना बराबर जारी था। यहां तक कि मारिया दिमीत्रियेवना भी अपने को न रोक सकी। हल्की कोमल आवाज़ में दो बार वह भी चहक उठी। मछली पकड़ने में लावरेत्स्की और लीज़ा सब से अधिक पिछड़े रहे। वह शायद इसलिए कि मछलियां फंसाने में उनकी दिलचस्पी अन्य सब से कम थी। उन्हें पता तक नहीं चलता था कि मछलियां उनके लासे को चट कर गई हैं और डोरी तिर कर किनारे से आ लगी है। सरकंडों के ऊंचे लाल झुरमुट मृदु मर्मर स्वर में उनके इर्द-गिर्द सरसरा रहे थे, थिर पानी मृदु निनाद में छलछला रहा था, और कोमल स्वर में ही वे बातें कर रहे थे, लीज़ा एक छोटे-से बेड़े के ऊपर खड़ी थी, लावरेत्स्की 'रकीता' के एक झुके हुए तने पर बैठा था। लीज़ा सफ़ेद कपड़े पहने थी, और कमर में सफ़ेद पटका कसी थी। उसके एक हाथ में सींकों

की टोपी झूल रही थी और दूसरे हाथ में कमान की भांति लचीली मछली पकड़ने की छड़ थामे थी। लावरेत्स्की की नज़र सलौने किन्तु कुछ रूखापन लिए उसके चेहरे के अर्द्धभाग पर, उसके बालों पर, जिन्हें खींच कर उसने कानों के पीछे कर लिया था, सूरज की धूप द्वारा चुम्बित बच्चों-ऐसे उसके कोमल गालों पर जमी थी और वह सोच रहा था: "ओ, कितना माधुर्य है इस प्रतिमा में जो मेरे इस कुण्ड के किनारे आज अवतरित हुई है!" लीज़ा मुंह दूसरी तरफ़ किए पानी की ओर देख रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे उसकी आंखें सिकुड़ी हुई हों या मुसकरा रही हों। पास ही लाइम का एक पेड़ उनके ऊपर अपनी छाया किए था।

"सच जानो," लावरेत्स्की ने कहना शुरू किया, "पिछली बार जो बातें हमने की थीं, उनके बारे में मैं बराबर सोचता रहा हूं, और इस नतीजे पर मैं पहुंचा हूं कि तुम अत्यन्त भोली और भली हो!"

"मैं नहीं चाहती कि तुम मुझे..." लीज़ा ने कहना चाहा, लेकिन अचकचा कर रह गई।

"सच, तुम भली हो," लावरेत्स्की ने दोहराया, "मैं देहाती किस्म का आदमी हूं, फिर भी सहज ही कल्पना कर सकता हूं कि शायद ही कोई हो, जो अपने हृदय के कपाट तुम्हारे लिये बन्द रख सके। मिसाल के तौर पर लेम्म को लो। वह तो जैसे तुम्हारे प्रेम में सराबोर है।"

लीज़ा की भौंहें नहीं तनीं, केवल हल्के से बल खाकर रह गईं। अप्रिय बात सुनने पर वह हमेशा ऐसा ही करती थी।

"उसे देखकर आज मुझे बड़ा दुःख हुआ," लावरेत्स्की ने तुरत कहा, "उसका वह अभागा गीत। युवावस्था में अनगढ़पन खप जाता है, लेकिन वृद्धावस्था में अक्षमता अखरती है। और सब से बुरा तो यह कि इस बात का पता तक नहीं चलता कि हमारी शक्तियां जवाब दे रही हैं। वृद्ध के लिये यह बहुत ही कष्टकर है ... अरे देखो, मछली कांटे को

खींच रही है.. मैंने सुना है कि" कुछ रुक कर लावरेत्स्की ने कहा, "व्लादीमिर निकोलाइच ने एक बहुत ही बढ़िया गीत रचा है।"

"हां", लीज़ा ने जवाब दिया, "योंही उड़ती हुई-सी चीज़ है, लेकिन बुरी नहीं।"

"तुम्हारी राय में," लावरेत्स्की ने पूछा, "क्या वह अच्छा संगीतज्ञ है?"

"मालूम तो ऐसा ही होता है कि उसमें संगीत की प्रतिभा है, लेकिन अभी तक इस दिशा में उसने कोई गम्भीर प्रयास नहीं किया।"

"और आदमी ... आदमी के रूप में तुम उसे कैसा समझती हो?"

लीज़ा हंसी और एक क्षिप्र दृष्टि से फ़ियोदोर इवानिच की ओर उसने देखा।

"तुम भी कितना अटपटा सवाल करते हो?" डोरी को खींचते और उसे फिर फेंकते हुए लीज़ा ने चिल्लाकर कहा।

"क्यों, इस में अटपटापन क्या है? एक सम्बंधी के नाते जो अभी हाल में ही इधर आया है, मेरा यह पूछना असंगत नहीं है।"

"सम्बंधी के नाते?"

"हां, अगर भूलता नहीं तो मैं तुम्हारा मामा होता हूं।"

"व्लादीमिर निकोलाइच एक सहृदय आदमी है," लीज़ा ने कहा, "और काफ़ी चतुर है। मां उसे बहुत पसन्द करती है।"

"और तुम–तुम भी उसे पसन्द करती हो?"

"वह एक अच्छा आदमी है। भला, मैं उसे पसन्द क्यों नहीं करूंगी?"

"यह बात?" लावरेत्स्की बुदबुदाया और इसके बाद चुप हो गया। उसके चेहरे पर दुःख और घिन्न का एक मिश्रित भाव छा गया। लीज़ा उसकी एकटक नज़र से सकपका उठी, लेकिन वह पूर्ववत मुसकराती रही।

"अच्छा है," वह अपने-आप बुदबुदाया, "भगवान करे, दोनों का जीवन सुख से बीते।" और उसने अपना मुंह एक ओर मोड़ लिया।

लीज़ा के गालों पर लाली दौड़ गई।

"तुम गलत समझे, फ़ियोदोर इवानिच," लीज़ा ने कहा, "तुम्हारा वह खयाल... लेकिन क्या तुम व्लादीमिर निकोलाइच को पसन्द नहीं करते?" सहसा उसने पूछा।

"नहीं, मैं उसे पसन्द नहीं करता।"

"क्यों?"

"मेरी समझ में उसके पास और चाहे जो हो, लेकिन हृदय कतई नहीं है।"

लीज़ा के चेहरे से मुसकराहट विलीन हो गई।

"लोगों के बारे में तुम काफ़ी कड़ी राय बना लेते हो," एक लम्बे अवकाश के बाद उसने कहा।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता। लोगों के बारे में कड़ी राय कायम करने का भला मुझे क्या अधिकार है, –विशेषकर उस हालत में जबकि मैं खुद अपनी भूलों को दरगुज़र करने का आकांक्षी हूं? ... क्या तुम्हें याद नहीं कि मैं खुद भी उपहास का आस्पद हूं। अरे हां," लावरेत्स्की ने फिर कहा, "तुम ने अपना वचन पूरा किया या नहीं?"

"कौन सा वचन?"

"वही प्रार्थना वाला, –तुमने मेरे लिए प्रार्थना तो की थी न?"

"हां, की थी, और नित्य करती हूं। लेकिन यह ऐसी बात नहीं जिसे इतने हल्के ढंग से लिया जाए।"

लावरेत्स्की ने लीज़ा को आश्वस्त किया कि ऐसी कोई बात उसके दिमाग में नहीं है और यह कि अन्य लोगों के विश्वासों के प्रति अपने हृदय में वह गहरी श्रद्धा का भाव रखता है। इसके बाद उसने धर्म पर, मानव

के इतिहास में उसके स्थान और ईसाई धर्म के महत्व पर एक अच्छा-खासा भाषण ही दे डाला।

"ईसाई होना आवश्यक है," लीज़ा ने सप्रयास कहा, "दैवी ... और भौतिक ... का रहस्य समझने के लिए नहीं, बल्कि इसलिये कि मृत्यु हर मानव के लिए अनिवार्य है!"

लावरेत्स्की ने अचरज से सिर उठाया और लीज़ा की आंखों में डाल कर देखा।

"भला क्या शब्द था जो तुमने अभी कहा?"

"वह शब्द मेरा नहीं है," लीज़ा ने जवाब दिया।

"तुम्हारा नहीं है ... लेकिन मृत्यु का खयाल तुम्हें कैसे आया?"

"पता नहीं। मैं अक्सर उसके बारे में सोचा करती हूं।"

"अक्सर?"

"हां।"

"एकाएक विश्वास नहीं होता। तुम जो इस समय इतनी प्रसन्न दिखाई दे रही हो, चेहरा तुम्हारा खिला हुआ है और होठ तुम्हारे मुसकरा रहे हैं ... तुम जो ..."

"हां, इस समय मैं काफ़ी प्रसन्न हूं," लीजा ने अटपटे अन्दाज़ में जवाब दिया।

उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में लेने और उन्हें कस कर दबोचने के लिए लावरेत्स्की हुमक उठा ...

तभी मारिया दिमीत्रियेवना के चिल्लाने की आवाज़ आई।

"लीज़ा, लीज़ा!" वह कह रही थी, "इधर आओ। देखो, कितनी बड़ी कार्प मैंने पकड़ी है।"

"अभी आई मां!" लीज़ा ने जवाब में कहा और अपनी मां के पास चली गई। लावरेत्स्की वहीं, 'रकीता' वृक्ष पर, बैठा रह गया।

"मैं उससे इस तरह बातें कर रहा हूं मानों मैंने इससे पहले जीवन को देखा ही न हो," लावरेत्स्की मन ही मन सोच रहा था। जाते समय लीज़ा अपनी टोपी एक टहनी पर लटका गई थी। लावरेत्स्की की आंखें इस टोपी पर, उससे बंधे लम्बे और कुछ चुरमुराए से फीतों पर जमी थीं और उसके हृदय में स्नेह में पगे विचित्र भाव उमग रहे थे। लीज़ा शीघ्र ही लौट आई और बेड़े के ऊपर अपनी पहले वाली जगह पर खड़ी हो गई।

"तुमने कैसे जाना कि व्लादीमिर निकोलाइच के पास हृदय नहीं है?" कुछ क्षण बाद उसने पूछा।

"मैंने कहा न कि मेरी बात गलत भी हो सकती है? जो भी हो, समय ही इसका फ़ैसला करेगा।"

लीज़ा विचारों में खो गई। लावरेत्स्की ने अब वसीलेवस्कोये में अपने जीवन के बारे में, मिख़लेविच और अन्तोन के बारे में, बोलना शुरू किया। लीज़ा से बातें करने के लिए वह उमड़ रहा था, अपने हृदय के प्रत्येक भाव को वह उसके सामने खोल कर रख देना चाहता था। वह इतनी आकर्षक थी, और बड़े ध्यान से सुन रही थी। उसकी विरल टिप्पणियां और उद्गार उसे बहुत ही सरल और सूझ से भरे मालूम होते थे। लीज़ा को जब उसने यह बताया तो उसे बड़ा अचरज हुआ।

"क्या सचमुच?" लीज़ा ने कहा, "लेकिन मेरे मन में तो यह बात बैठ गई थी कि अपनी परिचारिका नास्तिया की भांति मेरे पास भी अपने शब्द नहीं हैं। उसने एक बार अपने मंगेतर से कहा था—'तुम मुझसे ऊब जाते होगे। तुम हमेशा इतनी अच्छी-अच्छी बातें करते हो, लेकिन मेरे पास अपने शब्द तक नहीं हैं।'"

"इसके लिए तुम्हें ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए," लावरेत्स्की ने सोचा।

इस बीच सांझ हो आई। मारिया दिमीत्रियेवना ने घोषित किया कि अब घर लौटने का समय हो गया। छोटी लड़कियों को बड़ी मुश्किल से खींच कर मछलियों के कुण्ड से अलग किया गया और उन्हें कपड़ों आदि से लैस कर दिया गया। लावरेत्स्की ने कहा कि मेहमानों को छोड़ने वह भी आधे रास्ते तक उनके साथ आएगा। उसने आदेश दिया कि घोड़े पर ज़ीन कस कर उसे तैयार कर दिया जाए । और उस समय जब कि वह सहारा देकर मारिया दिमीत्रियेवना को गाड़ी में बैठा रहा था, उसे सहसा लेम्म का ध्यान आया। लेकिन वृद्ध जर्मन कहीं दिखाई नहीं दिया। मछलियों का शिकार खत्म होते ही वह न जाने कहां ओझल हो गया था। अन्तोन ने अद्भुत फुर्ती के साथ–जो कि उसकी आयु को देखते हुए एक विरली बात थी–गाड़ी का दरवाज़ा बंद कर दिया और ज़ोर से चिल्लाया, "अब हवा हो जाओ गाड़ीवान!" गाड़ी चल दी। पिछली सीटों पर मारिया दिमीत्रियेवना और लीज़ा बैठी थीं, अगली सीट को छोटी लड़कियों और परिचारिका ने घेर लिया था। सांझ सुहानी और थिर थी। दोनों ओर की खिड़कियां खोल दी गयीं। लावरेत्स्की घोड़े पर सवार गाड़ी के साथ-साथ आगे जा रहा था। सड़क के जिस बाज़ू उसका घोड़ा था, लीज़ा भी उसी बाज़ू बैठी थी। लावरेत्स्की ने मृदुल गति से चलनेवाले घोड़े की गर्दन पर रास ढीली छोड़ दी थी। उसका एक हाथ गाड़ी के द्वार पर था और वह बीच-बीच में उस युवती से दो-एक बातें करता हुआ जा रहा था। सूर्यास्त की लाली परछाइयों में खो गई थी, रात तिरती आ रही थी, वायु अब और भी अधिक सुहानी मालूम होती थी। मारिया दिमीत्रियेवना शीघ्र ही ऊंघने लगी। छोटी लड़कियां और उनकी परिचारिका भी उनींदी हो गईं। गाड़ी तेज़ और समतल गति से बढ़ रही थी। लीज़ा आगे की ओर

झुक ग्राई। उगते हुए चांद की किरनें उसके चेहरे पर थिरक रही थीं; रात की भीनी वायु उसकी ग्रांखों ग्रौर गालों को सहला रही थी। वह प्रसन्न थी। उसका हाथ गाड़ी के दरवाज़े पर टिका था। बराबर में ही लावरेत्स्की घोड़े पर चल रहा था। वह भी खुशी से उमगा, रात के थिर सुहानेपन में तेज़ी से तैर रहा था। उसकी ग्रांखें लीज़ा के मधुर युवा चेहरे से एक क्षण के लिए भी ग्रलग नहीं होती थीं ग्रौर उसके कान युवा कण्ठ से निकली भोली ग्रौर भली बातों का रसपान कर रहे थे। उसकी बातों में संगीत का मिठास था। उसे पता तक नहीं चला कि कब ग्राधा रास्ता पार हो गया। मारिया दिमीत्रियेवना को जगाना उचित न समझ उसने धीरे से लीज़ा का हाथ दबोचा ग्रौर बोला, "ग्रब तो हम पक्के मित्र हो गए न?" लीज़ा ने सिर हिला कर हामी भरी। उसने ग्रपने घोड़े की रास खींची, घोड़ा रुक गया ग्रौर गाड़ी उचकती-डुबकियां खाती ग्रागे बढ़ चली। लावरेत्स्की ने ग्रब ग्रपने घोड़े का मुंह मोड़ा ग्रौर धीमी चाल में उसे चलाता घर की ग्रोर लौटा। ग्रीष्म की रात्रि का सुहावनापन उसके रोम-रोम में थिरक रहा था। चारों ग्रोर की हर चीज़ वहुत ही ग्रद्भुत, दूर होते हुए भी निकट – ग्रपनाव में पगी – मालूम होती थी। दूर ग्रौर पास की हर चीज़ गहरी शान्ति में मग्न थी। नज़र के मार्ग में कोई बाधा नहीं थी – दूर तक वह जा सकती थी – हालांकि जो चीज़ दिखाई पड़ती थी, वह पहचान में नहीं ग्राती थी। लेकिन इस शान्त वातावरण में भी यौवन का वसन्ती उभार कसमसा रहा था। लावरेत्स्की का घोड़ा, थिरकते डगों से, इधर-से-उधर झूमता चल रहा था। उसकी लम्बी काली परछाई उसके साथ-साथ हरकत कर रही थी। उसकी सैलानी पदचापों में एक ग्रजीब ग्राकर्षण था, ग्रौर केवल पक्षियों की गूंजती हुई चहक बहुत ही मोहक तथा हृदय में उछाह का संचार करनेवाली मालूम होती थी। तारे

ग्रालोक की एक झीनी चादर ग्रोढ़े थे। चांद चांदी के हंसिये की भांति चमक रहा था। उसकी किरणें ग्राकाश में नील वर्ण ग्रालोक बिखेर रही थीं ग्रौर पास से तिरते झीने बादलों को जहां-तहां दूधिया सुनहरी ग्राभा में रंग रही थीं। रात की चुस्त हवा ग्रांखों को नम बना रही थी, मृदु स्पर्श से ग्रंग-ग्रंग को सहला रही थी ग्रौर उन्मुक्त भाव से फेफड़ों में प्रवेश कर रही थी। लावरेत्स्की खुशी से इस सब का पान कर रहा था ग्रौर ग्रपनी इस खुशी पर उछाह का ग्रनुभव कर रहा था। "हमें उसने एकदम खा तो नहीं लिया ..." उसने सोचा, "हम ग्रभी जिएंगे।" उसके विचार स्पष्ट नहीं थे कि किसने खा लिया। फिर वह लीज़ा के बारे में सोचने लगा। उसने सोचा कि लीज़ा के लिए पान्शिन से प्रेम करना मुश्किल है, ग्रौर यह कि ग्रौर भिन्न परिस्थितियों में उसकी लीज़ा से भेंट हुई होती, – तो खुदा जाने क्या होता, ग्रौर यह कि वह लेम्म से सहमत है, हालांकि लीज़ा के पास "ग्रपने" शब्द नहीं हैं। लेकिन नहीं, यह बात भी कुछ सच नहीं है ... उसके पास ग्रपने शब्द हैं ... 'यह ऐसी बात नहीं जिसे उतने हल्के ढंग से लिया जाए' ... लावरेत्स्की के मस्तिष्क में लीज़ा के ये शब्द घूम गए। उसका सि[illegible]क गया ग्रौर देर तक वह इसी प्रकार बैठा ग्रागे बढ़ता रहा। फिर उसने ग्रपने-ग्राप को सीधा किया, ग्रौर धीमी ग्रावाज़ में बुदबुदा उठा :

"जला दिये हैं वे सब जिनकी पूजा करता था,
ग्रौर पूज रहा हूं वे सब जिनको फूंक चुका था मैं।"

इसके बाद उसने चाबुक फटकारा ग्रौर तेज़ चाल से घर का सारा रास्ता पार किया। घर पहुंच कर वह घोड़े से उतरा, एक कृतज्ञतापूर्ण मुसकान बरबस उसके होंठों पर खेल गई ग्रौर सिर घुमाते हुए एक बार

फिर उसने अपने चारों ओर देखा। पहाड़ी ढलुवानों और घाटियों पर रात–कोमल और निस्तब्ध रात–छाई थी, कहीं दूर से–महकती रात की गहराइयों में से–यह कहना कठिन था कि आकाश से या कि धरती से–मृदु और कोमल मादकता निःशब्द प्रवाहित हो रही थी। लावरेत्स्की ने मन ही मन आखिरी बार लीज़ा का मौन अभिवादन किया, और फिर तेज़ी से सीढ़ियों पर चढ़ गया।

अगला दिन काफ़ी मुश्किल से बीता। सुबह से ही बारिश की झड़ी लगी थी। लेम्म का तोबड़ा चढ़ा था और उसने अपने होंठ और भी कस कर भींच लिए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे उसने उन्हें कभी न खोलने की कसम खा ली हो।

सोने के लिए जाते समय लावरेत्स्की फ़्रेंच-पत्रिकाओं को जो दो सप्ताह से बिना खुले मेज़ पर पड़ी थीं, बटोर कर अपने बिस्तरे पर लेता गया। अन्यमनस्क भाव से उसने उनके रैपरों को फाड़ा और समाचारपत्रों के शीर्षकों पर एक नज़र डाल गया। कोई नयी बात नज़र नहीं आई। वह उन्हें अलग रखने ही जा रहा था कि सहसा अपने बिस्तरे से उछल पड़ा, मानो किसी ने डंक मार दिया हो। एक समाचारपत्र में हमारे पुराने परिचित मोसिये जूल का लेख छपा था जिसमें उसने अपने पाठकों को एक दुःखद समाचार से अवगत कराया था। उसने लिखा था कि फैशन की रानी, पैरिस के आतिथ्यगृहों की शोभा, मास्को की आकर्षक तथा हृदय को हरने वाली सुन्दरी मदाम दे लावरेत्स्की का अचानक देहान्त हो गया जिसकी खबर–दुःखद किन्तु अति सत्य–अभी उसे, मोसिये जूल को, मिली है। आगे उसने लिखा था–वह उसका मित्र था, और कहना चाहिए कि ...

लावरेत्स्की ने अपने कपड़े पहने और बाहर बाग में निकल आया। सुबह का उजाला फैल चला, लेकिन उसके डग उस समय भी बाग की उसी एक पगडंडी को इधर-से-उधर नाप रहे थे।

२८

अगली सुबह, उस समय जबकि वे चाय पी रहे थे, लेम्म ने लावरेत्स्की से घोड़े कसवाने का अनुरोध किया। वह अब नगर लौट जाना चाहता था। "मुझे अब फिर अपने काम में – अर्थात संगीत की शिक्षा देने के काम में – जुटना चाहिए," उसने कहा, "यहां समय केवल बरबाद हो रहा है।" लावरेत्स्की ने तुरत कोई जवाब नहीं दिया। वह खोया-सा मालूम होता था। "अच्छी बात है," आखिर उसने कहा, "मैं खुद भी तुम्हारे साथ चला चलूंगा।" नौकर की सहायता की प्रतीक्षा न कर, कांखते और भनभनाते हुए लेम्म ने अपने छोटे सूटकेस में कपड़े भरे, स्वर-लिपि-अंकित कुछ कागज़ों को फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े किये और उन्हें जला डाला। घोड़े गाड़ी में जुते तैयार थे। अपने कमरे से बाहर निकलते समय लावरेत्स्की ने वह समाचारपत्र अपनी जेब में खोंस लिया जिसमें मोसिये जूल का लेख छपा था। लेम्म और लावरेत्स्की समूचे रास्ते करीब-करीब गुमसुम बैठ रहे। दोनों अपने-अपने विचारों में खोए थे और प्रसन्न थे कि वे एक-दूसरे के विचारों में खलल नहीं डाल रहे हैं। एक-दूसरे से अलग होते समय भी वे गुमसुम ही थे, जैसा कि – प्रसंगवश – रूस में मित्रों के बीच अक्सर होता है। लावरेत्स्की वृद्ध को उसके छोटे से घर तक छोड़ने गया। लेम्म गाड़ी से नीचे उतरा, अपना सूटकेस उसने उठाया और अपने मित्र से हाथ मिलाए बिना (दोनों हाथों में सूटकेस थामे वह उसे अपनी छाती से सटाए था) और उसकी ओर देखे तक बिना रूसी भाषा में बोला : "विदा।" लावरेत्स्की ने भी दोहराया – "विदा।" और फिर अपने कोचवान को आदेश दिया कि गाड़ी उसके कमरों की ओर ले चले। लावरेत्स्की ने वक्त ज़रूरत के लिए नगर में कमरे ले रखे थे। कुछ पत्र लिखने और

जल्दी से पेट में कुछ डालने के बाद लावरेत्स्की कलीतिन परिवार की ओर चल दिया। दीवानख़ाने में जब पहुंचा तो वहां उसे केवल पान्शिन दिखाई दिया। पान्शिन ने उसे बताया कि मारिया दिमीत्रियेवना अभी आती ही होगी और इसके बाद, अत्यन्त लुभावनी हार्दिकता के साथ, उसने बातों का सिलसिला छेड़ दिया। अब तक पान्शिन अगर अभिभावक की तरह नहीं तो लावरेत्स्की के साथ इस तरह अवश्य पेश आता था जैसे वह कोई बहुत बड़ी कृपा कर रहा हो। लेकिन लीज़ा ने, लावरेत्स्की के यहां अपनी यात्रा का पान्शिन से वर्णन करते समय, एक बहुत ही बढ़िया तथा बुद्धिमान आदमी के रूप में उसका उल्लेख किया था। बस, इतना ही काफ़ी था। पान्शिन ने सुना और इस बढ़िया आदमी पर अपनत्व की छाप लगाने का उसने निश्चय कर लिया। सो सराहना और प्रशंसा के साथ उसने बातों का सिलसिला शुरू किया। कहा कि मारिया दिमीत्रियेवना का समूचा परिवार वसीलेवस्कोये जाकर बहुत आनन्दित हुआ। इसके बाद, अपनी आदत के मुताबिक लन्तरानी के अन्दाज़ में वह खुद अपना बखान करने लगा, – उसने बताया कि जीवन में कैसे-कैसे मोर्चे उसने सर किए हैं, जीवन, दुनिया और सरकारी नौकरी के बारे में उसके क्या विचार हैं, रूस के भविष्य को वह किस रूप में देखता है, प्रादेशिक शासकों – गवर्नरों – को किस प्रकार शिकंजे में कस कर रखना चाहिए कि वे मनमानी न कर सकें। इसी के साथ-साथ उसने अपने को भी नहीं बख़्शा – दो-चार उड़ते हुए छींटे अपने ऊपर भी कसे और अन्त में, योंही प्रसंगवश उसने बताया कि उसे पीटर्सबर्ग में सरकारी कृषि भमि की पड़ताल का काम सौंपा गया है। वह बहुत देर तक बातें करता रहा, निर्बाध आत्मविश्वास के साथ उसने दुनियाभर की समस्याओं का हल पेश किया, प्रशासन और राजनीति की वज़नी समस्याओं को इस तरह उछाला जैसे जादूगर एक साथ अनेक गेंदों को उछालता और लपकता है। "अगर सरकार मेरे हाथ में होती तो मैं यह करता,"

"तुम्हारे जैसे बुद्धिमान आदमी को मेरे साथ सहमत होने में ज़रा भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए"—ये और इसी तरह के अन्य वाक्य उसकी जुबान पर बराबर थिरकते रहे। लावरेत्स्की उदासीन भाव से पान्शिन की शेखी सुन रहा था। उस सुन्दर, चतुर और शाइस्ता युवक को, उसकी उजली मुसकान, लच्छेदार आवाज़ और ताकझांक करनेवाली आंखों को—लावरेत्स्की ने पसन्द नहीं किया। पान्शिन ने, जिसकी ग्रहणशक्ति काफ़ी तेज़ थी, शीघ्र ही भांप लिया कि उसका श्रोता उसकी लैक्चरबाज़ी में कोई खास दिलचस्पी नहीं ले रहा है। सो कोई भला-सा बहाना बना कर वह बाहर खिसक गया और उसने मन ही मन सोचा कि लावरेत्स्की एक बढ़िया आदमी भले ही हो, लेकिन है वह कुछ अरसिक, उतरा हुआ, और तीखा, साथ ही कुछ हास्यास्पद भी। मारिया दिमीत्रियेवना भी वहां आ गई। उसके साथ-साथ गेदेओनोवस्की भी था। फिर मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना और लीज़ा साथ-साथ आ गईं, और कुछ देर में समूचा घर वहां जमा हो गया। इसके बाद संगीत-प्रिय मदाम बेलेनीत्सिना आ मौजूद हुई। वह एक दुबली-पतली छोटी-सी स्त्री थी। उसका थका हुआ चेहरा बच्चों-ऐसा सुन्दर था। वह काले रंग का सरसराता हुआ गाउन और सोने के भारी कड़े पहने थी, और अपने हाथ में एक भड़कीला पंखा लिए थी। उसका पति भी वहां मौजूद था। वह खूब सजा-वजा आदमी था। गाल एकदम लाल, बड़े हाथ और बड़े पांव, पलकें पीलापन लिए, और मोटे होंठों पर एक थिर मुसकराहट। उसकी पत्नी अपने पति से अन्य लोगों के सामने कभी नहीं बोलती थी, केवल घर के भीतर—मृदु क्षणों में—'मेरे नन्हें बछुए' कह कर उसे सम्बोधित करती थी। पान्शिन बाहर से लौटा। कमरे लोगों और उनकी आवाज़ों से भरे थे। इस तरह का जमघट लावरेत्स्की की रुचि के अनुकूल नहीं था। वह बेलेनीत्सिना से खासतौर से झल्ला उठा जो अपने हैण्डलदार चश्मे को आंखों के आगे सटाये बराबर उसकी

ओर घूर रही थी। अगर लीज़ा का खयाल न होता तो वह वहां से चला जाता। वह एकान्त में उससे कुछ कहना चाहता था। लेकिन काफ़ी देर तक उसे कोई उपयुक्त मौका नहीं मिला। बस, हृदय में उछाह लिए, अपनी आंखों से उसका अनुसरण करता रहा। उसके चेहरे पर इतना माधुर्य, इतनी शुभ्रता, उसने पहले कभी नहीं देखी थी। बेलेनीत्सिना के सामीप्य ने—विभिन्नता के रूप में—उसके सौन्दर्य को और भी उभार दिया था। बेलेनीत्सिना अपनी कुर्सी में बैठी निरन्तर किलबिला रही थी, अपने सकरे छोटे-छोटे कंधों को बिचका रही थी, भारी भरकम अन्दाज़ में मुसकरा रही थी, रह-रह कर अपनी आंखों को सिकोड़ और फिर सहसा उन्हें चिकड़ा कर देख रही थी। लीज़ा थिर बैठी थी, लोगों के चेहरे पर सीधी नज़र डाल कर उन्हें देखती थी, और ज़रा भी नहीं हंस रही थी। घर की मालकिन, मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना, बेलेनीत्सिन और गेदेओनोवस्की के साथ ताश खेल रही थी। गेदेओनोवस्की बहुत ही अनाड़ी भाव से खेल रहा था, कदम-कदम पर गलतियां करता था, अपनी आंखों को मिचमिचाता था और रूमाल से अपना मुंह पोंछता जाता था। पान्शिन उदास चेहरा बनाए बैठा था, रूखाई के साथ भेद-भरे उदास स्वर में बोल रहा था,—उस प्रतिभा की भांति जो बाधा के कारण कुंठित हो गई हो। बेलेनीत्सिना उससे खुलकर प्रेमालाप कर रही थी लेकिन उसके लाख अनुरोध करने पर भी उसने अपना रचा हुआ गीत सुनाने से इन्कार कर दिया। लावरेत्स्की की उपस्थिति में उससे गाते नहीं बना। फ़ियोदोर इवानिच भी बहुत कम बोल रहा था। उसके चेहरे पर एक विचित्र भाव छाया था। लीज़ा को यह तुरत खटका,—उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो वह उससे कुछ कहना चाहता है। लेकिन जाने क्यों, वह उससे कुछ पूछने का साहस न कर सकी। आखिर, उस समय जबकि वह चाय लेने दूसरे कमरे में जा

रही थी, उसका सिर ग्रनायास ही उसकी ग्रोर मुड़ा। वह भी, उसके पीछे ही पीछे, तुरत कमरे से बाहर खिसक गया।

"क्यों, ग्राज तुम्हें क्या हुग्रा है?" समोवार पर चायदानी रखते हुए उसने कहा।

"क्यों तुमने कैसे जाना – क्या मैं कुछ ग्रजीब गड़बड़ दिख रहा हूं?" उसने पूछा।

"हां, ग्राज तुम सदा से कुछ भिन्न नज़र ग्राते हो।"

लावरेत्स्की मेज़ के ऊपर झुक गया।

"मैं तुम्हें एक खबर सुनाना चाहता था," उसने कहा, "लेकिन वह ग्रब ग्रसम्भव मालूम होता है। जो हो, इस लेख के जिस पैरे पर निशान लगा है, उसे पढ़ डालना," ग्रपने साथ लाए समाचारपत्र को उसके हाथ में देते हुए उसने कहा, "लेकिन इसे गुप्त ही रखना। मैं कल सुबह ग्राऊंगा।"

लीज़ा को पहेली सी लगी ... तभी दरवाज़े पर पान्शिन दिखाई दिया। समाचारपत्र को उसने ग्रपनी जेब में छिपा लिया।

"ग्रोबरमान को तो तुमने पढ़ लिया न?" पान्शिन ने उदास स्वर में पूछा।

लीज़ा ने बुदबुदा कर जाने क्या कहा ग्रौर ज़ीने से ऊपर चली गई। लावरेत्स्की दीवानख़ाने में लौट ग्राया ग्रौर उस मेज़ के निकट पहुंचा जहां ताश का खेल चल रहा था। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना झुंझलाहट के मारे लाल हो उठी थी, उसकी टोपी की डोरियां खुली हुई फड़फड़ा रही थीं। वह ग्रपने पार्टनर गेदेग्रोनोवस्की से नाराज़ थी जो, उसके शब्दों में, बिल्कुल मिट्टी का माधो था।

"देखो न," उसने शिकायत के स्वर में कहा, "ताश का खेल उतना ग्रासान नहीं है जितना कि जुबान चलाना, – इधर की उधर लगाना!"

लेकिन ताश का वह अनाड़ी खिलाड़ी अपनी आंखों को मिचमिचाता और चेहरे को रूमाल से थपथपाता रहा। लीज़ा ड्राइंगरूम में आकर एक कोने में बैठ गई। लावरेत्स्की ने उसकी ओर देखा और उसने लावरेत्स्की की ओर,—और दोनों ने ऐसा अनुभव किया जैसे भयभीत हो गये हों। लीज़ा के चेहरे पर उसने उलझन और छिपी ताड़ना के भाव का अनुभव किया। लेकिन वह, लाख चाहने पर भी, उससे बात नहीं कर सका। एक ही कमरे में अन्य मेहमानों के बीच निरे मेहमान की भांति बैठ रहना उसे अत्यन्त कष्टकर मालूम हुआ। उसने यहां से चलने का निश्चय किया। लीज़ा से उसने विदा ली और मौका पा कर दुबारा कहा कि मैं कल आऊंगा। उसने यह भी कहा कि मैं तुम्हारी मित्रता पर भरोसा रखता हूं।

"कल ज़रूर आना," लीज़ा ने कहा। उसके चेहरे पर अभी भी उलझन का वही भाव छाया था।

लावरेत्स्की के चले जाने के बाद पान्शिन की जैसे बाहें खिल गईं। उसने गेदेओनोवस्की को ताश के खेल में सलाह देनी शुरू की, मदाम बेलेनीत्सिना से चुटकियां लीं, और अन्त में लीज़ा के साथ अपना रचा हुआ गीत भी सुनाया। लेकिन अभी भी वह पहले की भांति भेद-भरे और कुछ उदास अन्दाज़ में बोल और देख रहा था।

लावरेत्स्की को एक बार फिर रात-भर नींद नहीं आई। वह उदास नहीं था, न ही वह विचलित था, वह एकदम शान्त और थिर था, लेकिन उसे नींद फिर भी नहीं आई। अतीत की स्मृतियां उससे दूर ही रहीं। अपने जीवन की परिणति को स्तब्ध भाव से वह केवल देखता-भर रहा। उसका हृदय ज़ोरों और समगति से धड़क रहा था। एक के बाद एक घंटे गुज़रते गए, लेकिन उसे नींद का खयाल तक नहीं आया। रह-रह कर उसके दिमाग में एक ही विचार उभर उठता—"यह सत्य नहीं है, यह सब झूठ है,"—और उसकी गति रुक जाती, वह अपना सिर झुका लेता, और इसके बाद फिर अपने जीवन का अवलोकन करने लगता।

२६

अगली सुबह जब लावरेत्स्की आया तो मारिया दिमीत्रियेवना ने किसी खास लगाव या अपनत्व का परिचय नहीं दिया। "हाय भगवान," उसने सोचा, "इसे तो यहां आने का चस्का ही पड़ गया।" यों वह पहले भी उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं देती थी। लेकिन पिछली रात मौका देख, पान्शिन ने – जिसके प्रभाव में वह थी – यों ही रस्मी अन्दाज़ में उसकी प्रशंसा में दो-एक शब्द उसके कान में डाल दिए थे। चूंकि वह उसे मेहमानों में नहीं गिनती थी, फिर अपने सम्बंधी की – एकदम घर के ही आदमी की – आवभगत करना आवश्यक भी नहीं होता। इसलिए आधा घंटा बीतते न बीतते वह लीज़ा के साथ अहाते की एक वीथिका में घूम रहा था। लेनोचका और शूरोचका भी, उनसे कुछ ही दूर, फूलों की क्यारियों के बीच दौड़ रही थीं।

लीज़ा सदा की भांति थिर और शान्त थी, लेकिन उसके चेहरे पर सदा से अधिक पीलापन छाया था। उसने अपनी जेब में से समाचारपत्र का पन्ना बाहर निकाला जिसे तहा कर छोटा बना लिया गया था, और उसे लावरेत्स्की को लौटा दिया।

"यह भयानक खबर है," लीज़ा ने कहा।

लावरेत्स्की ने कोई जवाब नहीं दिया।

"लेकिन हो सकता है कि यह खबर अन्ततः सच न हो।"

"इसी लिए मैंने तुम से अनुरोध किया था कि किसी से कहना नहीं।"

लीज़ा कुछ क्षण चुपचाप चलती रही।

"लेकिन यह बताओ," उसने कहना शुरू किया, "क्या तुम इससे दुःखी नहीं हो, – बिलकुल दुःखी नहीं हो?"

"मैं नहीं जानता कि मेरा हृदय कैसा क्या अनुभव कर रहा है?" लावरेत्स्की ने कहा।

"लेकिन पहले तो तुम उससे प्यार करते थे न?"

"हां।"

"खूब प्यार करते थे?"

"हां।"

"और तुम उसकी मृत्यु से दुःखी नहीं हो?"

"मेरे लिए तो वह पहले ही मर चुकी थी।"

"ऐसी बात मुंह से निकालना पाप है... देखो, नाराज़ न होना। तुम मुझे अपनी मित्र कहते हो,—और एक मित्र को सब कुछ कहने का अधिकार होता है। मुझे तो यह सचमुच भयानक मालूम होता है... कल तुम्हारे चेहरे का भाव अच्छा नहीं लगा था... क्या तुम्हें याद है कि उस दिन तुमने उसे कितना भला-बुरा कहा था?—और कौन जानता है कि तब तक वह इस दुनिया से विदा नहीं हो चुकी थी? यह भयानक है। ऐसा मालूम होता है जैसे भगवान ने तुम्हें यह दण्ड दिया हो।"

लावरेत्स्की के होठों पर एक तीखी मुसकान दौड़ गई।

"क्या तुम ऐसा सोचती हो? जो हो, मैं अब उन्मुक्त हूं।"

लीज़ा कांप उठी।

"इस तरह की बातें न करो। यह आज़ादी तुम्हारे किसी काम नहीं आएगी। आज़ादी की नहीं, तुम्हें अब क्षमा की बात सोचनी चाहिए..."

"क्षमा तो मैं उसे बहुत पहले ही कर चुका हूं," प्रतिवाद के स्वर में हवा में हाथ हिलाते हुए लावरेत्स्की ने कहा।

"अरे नहीं, मेरा यह मतलब नहीं," लीज़ा ने लाल पड़ते हुए कहा, "तुमने मुझे गलत समझा। तुम्हें खुद क्षमा की याचना करनी चाहिए।"

"किससे?"

"परमात्मा से। परमात्मा के सिवा हमारे अपराधों को और कौन माफ़ कर सकता है!"

लावरेत्स्की ने लीज़ा का हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

"मेरा विश्वास करो, येलिज़ावेता मिखाइलोवना," वह चीख उठा, "मैं पहले ही काफ़ी दण्डित हो चुका हूं। सच जानो, मैं पूरा भुगतान कर चुका हूं।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो," लीज़ा ने धीमी आवाज़ में कहा, "तुम भूल गए कि अभी हाल ही में, उस समय जबकि तुम उसके बारे में बात कर रहे थे, तुम उसे क्षमा करने के लिए तैयार नहीं थे ..."

वे अब चुपचाप चल रहे थे।

"तुम्हारी लड़की का क्या हुआ?" सहसा लीज़ा ने पूछा और एकदम थिर खड़ी हो गई।

लावरेत्स्की चौंक उठा।

"खैर उसकी चिन्ता न करो। मैंने चारों ओर परवाने भेज दिये हैं। मेरी लड़की का भविष्य, जैसा कि तुम उसको कहती हो—जैसा कि तुम सोचती हो—सुरक्षित है। उसकी चिन्ता न करो।"

लीज़ा चिन्ताशील मुद्रा में मुसकुरायी।

"लेकिन यह तुम ठीक कहती हो," लावरेत्स्की कहता गया, "मेरी यह आज़ादी मेरे किस काम आएगी? उससे मुझे क्या लाभ होगा?"

"यह समाचारपत्र तुम्हें कब मिला?" उसकी बात को दरगुज़र करते हुए लीज़ा ने पूछा।

"तुम्हारे आने के दूसरे दिन।"

"और तुम ... तुम्हारी आंखों में एक आंसू तक नहीं आया?"

"नहीं। मैं सन्न रह गया, फिर आंसू आते भी कहां से? अतीत को लेकर आहोज़ारी करना किस काम का, उस समय जबकि राख बन कर

मेरे हृदय से सब कुछ उड़ चुका था? उसकी अभद्रता ने मेरी खुशी को नष्ट नहीं किया, केवल यह प्रकट कर दिया कि मुझमें खुशी का कभी कोई अस्तित्व नहीं था। फिर रोना किस लिए? लेकिन कौन जानता है? हो सकता है कि अगर यह खबर मुझे एक पखवारा पहले मिली होती तो शायद अधिक रंज होता..."

"एक पखवारा पहले?" लीज़ा ने पूछा, "इन पन्द्रह दिनों में ऐसा क्या उलट-फेर हो गया?"

लावरेत्स्की ने कोई जवाब नहीं दिया, और लीज़ा के गालों पर गहरी लाली दौड़ गई।

"हां, हां, तुमने ठीक समझा," लावरेत्स्की ने सहसा चिल्लाकर कहा, "इस एक पखवारे के भीतर मुझे यह जानने का अवसर मिला कि एक निश्छल स्त्री का हृदय कैसा होता है, और मेरा अतीत मुझसे और भी दूर खिसक गया..."

लीज़ा अचकचा कर फूलों की उन क्यारियों की ओर बढ़ चली जहां लेनोचका और शूरोचका खेल रही थीं।

"तुम्हें वह समाचारपत्र दिखा कर मेरा जी हल्का हो गया," उसके पीछे चलते हुए लावरेत्स्की ने कहा, "मुझे कुछ ऐसी आदत पड़ती जा रही है कि तुमसे कुछ भी छिपा कर नहीं रख सकता, और आशा है कि तुम भी इसी प्रकार मुझे अपने विश्वास का पात्र समझोगी।"

"क्या तुम सचमुच ऐसा समझते हो?" लीज़ा ने रुकते हुए कहा, "तब तो... लेकिन नहीं, यह असम्भव है।"

"कहो न, क्या बात है? बोलो, मुझे बताओ।"

"सच, मैं नहीं समझती कि मुझे वह सब कहना चाहिए... हां, तो," मुसकराहट के साथ लावरेत्स्की की ओर मुड़ते हुए उसने फिर

कहा, "अपनत्व एक तरफ़ा हो तो लाभ क्या? – क्या तुम जानते हो कि आज मुझे एक पत्र मिला है?"

"पान्शिन का?"

"हां... तुमने कैसे जाना?"

"विवाह का प्रस्ताव करते हुए, – क्यों?"

"हां," लीज़ा ने जवाब दिया और सीधी तथा गम्भीर दृष्टि से लावरेत्स्की की आंखों में देखा।

लावरेत्स्की ने भी, लीज़ा को गम्भीरता से देखा।

"हां तो तुमने उसे क्या जवाब दिया?" अन्त में उसने पूछा।

"मैं नहीं जानती कि उसे क्या जवाब दूं," लीज़ा ने कहा और उसके हाथ जिन्हें उसने अपने वक्ष पर जोड़ रखा था, नीचे अगलबगल झूल गये।

"क्यों, जानती क्यों नहीं? तुम उसे प्यार तो करती हो न?"

"हां, मैं उसे पसन्द करती हूं। वह एक अच्छा आदमी मालूम होता है।"

"तीन दिन हुए तब भी यही बात ठीक इन्हीं शब्दों में तुमने कही थी। मैं जो जानना चाहता हूं वह यह कि क्या तुम उसे उस गहरे लगाव और आवेग के साथ चाहती हो जिसे हम प्रेम कहते हैं।"

"तुम्हारी इस व्याख्या के अनुसार, – नहीं!"

"तुम उससे प्रेम नहीं करती?"

"नहीं। लेकिन क्या यह ज़रूरी है?"

"क्या-आ-आ?"

"मां उसे पसन्द करती हैं," लीज़ा कहती गई, "वह भला आदमी है। मुझे तो उसमें कोई दोष नज़र नहीं आता।"

"फिर भी कुछ दुविधा है, – क्यों?"

"हां . . . श्रौर शायद, तुम्हारी वजह से, तुमने जो कुछ कहा उस-की वजह से। क्या तुम्हें याद है कि परसों तुमने क्या कहा था? लेकिन शायद यह कमज़ोरी है।"

"श्रोह, भोली लीज़ा!" लावरेत्स्की के मुंह से निकला। उसकी श्रावाज़ थरथरा रही थी, "श्रपने हृदय को काटने का प्रयत्न न करो, उसे कमज़ोरी न कहो जो कि वस्तुतः तुम्हारे हृदय की पुकार है, – उस हृदय की जो प्रेम के श्रभाव में श्रपने-श्राप को श्रर्पित करना नहीं चाहता। जिसे तुम प्यार नहीं करती श्रौर फिर भी जिसकी तुम बनना चाहती हो, ऐसे श्रादमी के प्रति भयानक ज़िम्मेदारी की फांसी श्रपने गले में न डालो . . ."

"मैं खुद कोई ज़िम्मेदारी श्रपने कंधों पर नहीं लेती, मैं वही कर रही हूं जो मुझसे करने के लिए कहा जा रहा है," लीज़ा ने कहना शुरू किया . . .

"तुम्हें श्रपने हृदय का श्रादेश मानना चाहिए, केवल वही तुम्हें सच्ची राह दिखा सकता है," लावरेत्स्की ने बीच में ही कहा, "श्रनुभव, बुद्धि, – यह सब बकवास है, व्यर्थ का दिखावा है। संसार के महानतम श्रौर एक मात्र सुख से श्रपने-श्राप को वंचित न करो।"

"श्रौर यह तुम कहते हो, फ़ियोदोर इवानिच? तुमने भी तो प्रेम-विवाह किया था, लेकिन क्या तुम सुखी हो सके?"

लावरेत्स्की ने निराशा से हवा में श्रपने हाथ फेंके।

"श्रोह, मेरी बात छोड़ो, तुम्हारे लिए यह समझना तक कठिन है कि एक ऐसा लड़का जो श्रभी युवा है, छल-छन्दों से श्रपरिचित है श्रौर यातनापूर्ण ढंग से जिसका लालन-पालन हुश्रा है, प्रेम के मामले में कितना धोखा खा सकता है . . . इसके सिवा मैं . . . नहीं मैं श्रपने साथ श्रन्याय नहीं करूंगा। मैंने श्रभी तुमसे कहा था कि मैं खुशी से बेगाना था,

—नहीं जानता था कि खुशी क्या होती है... लेकिन यह सच नहीं है। मैं सुखी था।"

"मेरी समझ में तो, फ़ियोदोर इवानिच," लीज़ा ने धीमी ग्रावाज़ में कहा (जब वह किसी से ग्रसहमति प्रकट करती थी तो ग्रपनी ग्रावाज़ धीमी कर लेती थी, इसके ग्रलावा वह ग्रत्यधिक विचलित भी थी), "इस संसार में सुख हमारे ग्रपने वश की बात नहीं है..."

"वश की बात है, सच, हमारे ग्रपने वश की बात है," (उसने लीज़ा के हाथों को ग्रपने हाथों में ले लिया, लीज़ा का चेहरा पीला पड़ गया ग्रौर वह एकटक किन्तु कुछ सहमी-सी नज़र से उसे देखने लगी), "ग्रगर हम खुद ग्रपने जीवन को नष्ट न कर डालें। कुछ लोगों के लिए प्रेम-विवाह दुःखद सिद्ध हो सकता है; लेकिन तुम्हारे लिए ऐसा नहीं हो सकता,—तुम्हारा चरित्र इतना ग्रडिग ग्रौर तुम्हारा हृदय इतना निश्छल है! मेरा तुम से ग्रनुरोध है, केवल कर्त्तव्य, ग्रात्मबलिदान या ऐसी ही ग्रन्य किसी बात के वशीभूत होकर... प्रेम के ग्रभाव में विवाह न करना ... यह धर्महीनता से भी बुरा होगा, उतना ही बुरा जितना कि सौदे का विवाह, बल्कि उससे भी बदतर, मेरा विश्वास करो, मुझे यह कहने का ग्रधिकार है, ग्रौर भारी मूल्य देकर मैंने यह ग्रधिकार प्राप्त किया। ग्रौर ग्रगर तुम्हारा भगवान..."

ग्रब लावरेत्स्की को सहसा चेत हुग्रा कि लेनोचका ग्रौर शूरोचका लीज़ा के पास खड़ी हैं ग्रौर मुंह बाए उसकी ग्रोर ताक रही हैं। उसने लीज़ा के हाथों को छोड़ दिया ग्रौर उतावली में यह बुदबुदा कर कि "माफ़ करना" घर की दिशा में चल दिया।

"तुम से मेरा एक ग्रनुरोध है," मुड़कर लौटते हुए उसने फिर कहा, "जल्दी में कोई निर्णय न करना। ज़रा ठहर कर मैंने जो कहा उसपर शान्ति से सोचो ग्रौर मेरी बात का विश्वास न हो तब भी... उस

हालत में भी, जबकि तुम सहूलियत का ही विवाह करना चाहो... तुम्हें पान्शिन से विवाह नहीं करना चाहिए – वह तुम्हारा पति नहीं हो सकता वायदा करो कि तुम जल्दी नहीं करोगी, – क्यों मेरी बात मानोगी न?"

लीज़ा लावरेत्स्की को जवाब देना चाहती थी, पर उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला, – इसका कारण यह नहीं था कि वह जल्दी करने के पक्ष में थी, बल्कि यह कि उसका हृदय बुरी तरह धड़क रहा था और भय-ऐसे एक भाव ने उसे स्तब्ध कर दिया था।

३०

उस समय जबकि वह कलीतिन परिवार से विदा हो रहा था, पान्शिन से लावरेत्स्की की मुलाक़ात हो गई। उदासीनता से सिर झुका कर दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया और पास से निकल गए। अपने कमरों में पहुंच लावरेत्स्की ने चारों ओर के दरवाज़े बंद कर लिये। उसका हृदय ऐसे भावों से जकड़ा था जैसे कि उसने पहले कभी अनुभव नहीं किए थे। अभी हाल तक उसका जीवन "निश्चल तन्द्रा" की हालत में बीत रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे – खुद उसके ही शब्दों में – नदी की तह ही में जा लगा हो। वह क्या चीज़ थी जिसने उसे तह से उठा कर सतह पर ला पटका? एक ऐसी घटना जो साधारण और अनिवार्य होते हुए भी हमेशा अप्रत्याशित मालूम होती है। वह घटना थी, – मृत्यु। हां, मृत्यु। लेकिन वह अपनी पत्नी की मृत्यु या अपनी आज़ादी के बारे में इतना नहीं सोच रहा था जितना कि इस बारे में कि लीज़ा पान्शिन को क्या जवाब देगी। उसे लगा कि पिछले तीन दिनों के भीतर लीज़ा ने उसकी आंखों में एक नया रूप धारण कर लिया है। उसे याद आया कि किस प्रकार, घर लौटते और रात

के सन्नाटे में उसके वारे में सोचते हुए उसने मन ही मन कहा था– "अगर केवल..." और वह "अगर केवल" जो कि उसके अतीत के साथ, अप्राप्य के साथ सम्बद्ध थी, अब सच हो गई थी–हालांकि वह उस रूप में सच नहीं हुई थी, जिस रूप में कि उसने उसे सोचा था। लेकिन उसकी आज़ादी ही तो सब कुछ नहीं है। "वह अपनी मां का कहना मानेगी," उसने सोचा, "पान्शिन से उसका विवाह हो जाएगा। लेकिन अगर वह उससे विवाह करने से इन्कार भी कर दे,–तब भी मेरे लिए इससे क्या फ़र्क पड़ता है?" शीशे के पास से गुज़रते हुए उसने अपनी छवि पर नज़र डाली और अपने कंधों को बिचका लिया।

इन्हीं सब उलझनों में दिन यों ही गुज़र गया। सांझ हो आई। लावरेत्स्की कलीतिन के यहां गया। वह तेज डगों से चल रहा था, लेकिन घर के निकट पहुंचते समय उसके डग धीमे पड़ गए। पान्शिन की गाड़ी पोर्च में खड़ी थी। "चलो भी," उसने सोचा, "इतना अहंवादी बनना ठीक नहीं!" और वह घर के भीतर दाखिल हो गया। भीतर उसका किसी से सामना नहीं हुआ, और दीवानखाने में भी कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसने दरवाज़ा खोला, और देखा कि मारिया दिमीत्रियेवना पान्शिन के साथ ताश का पिकेट-खेल खेल रही है। पान्शिन ने चुपचाप सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया, और मालकिन अचरज से चिल्ला उठी, "अरे, इस वक्त कैसे,–एकदम अप्रत्याशित!" लावरेत्स्की उसके निकट बैठ गया और उसके ताशों को देखने लगा।

"क्यों तुम पिकेट खेलते हो?" उसने अप्रकट झुंझलाहट से कहा, और इसके बाद तुरत घोषणा की कि मैं गलत पत्ता चला गई।

पान्शिन ने नव्वे नम्बर बनाए और शान्त तथा शालीन भाव से, चेहरे पर धीर तथा रोबीला भाव धारण किए, चाल चलने लगा। ठीक वैसे ही जैसे कि कूटनीतिज्ञ खेलते हैं। सम्भवतः पीटर्सबर्ग में, किसी

ऊंचे अधिकारी पर अपने ठोसपन तथा परिपक्वता का अनुकूल प्रभाव डालने के लिए वह इसी प्रकार खेलता हो। "एक सौ एक, एक सौ दो, पान, एक सौ तीन," नपे-तुले स्वर में उसकी आवाज़ गूंज रही थी, और लावरेत्स्की समझ नहीं सका था कि उसकी इस आवाज़ में शिकायत की ध्वनि गूंज रही थी अथवा आत्म-सन्तोष की।

"क्या मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना से भेंट हो सकती है?" पान्शिन को और भी अधिक रोबीले अन्दाज़ में फिर ताश फेंकते देख लावरेत्स्की ने पूछा। कलाकार होने का ज़रा-सा भी चिन्ह इस समय उसमें नहीं दिखाई दे रहा था।

"मेरी समझ में ज़रूर हो सकती है," मारिया दिमीत्रियेवना ने जवाब दिया, "वह ऊपर अपने कमरे में है। जाकर मालूम कर लो।"

लावरेत्स्की ऊपर चला गया। उसने देखा कि मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना भी ताश के खेल में रमी है। वह नस्तासिया कारपोवना के साथ ओल्डमेन नामक खेल खेल रही थी। रोस्का उसे देख कर भौंका। दोनों वृद्ध महिलाओं ने प्रसन्नता से उसका स्वागत किया। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना खास तौर से अत्यन्त मगन मालूम होती थी।

"अरे, फ़ेद्या, आओ!" उसने चिल्लाकर कहा, "खड़े न रहो बठो, मेरे बेटे। देखो, यह बाज़ी अभी ख़त्म हुई जाती है। क्यों मुरब्बा खाओगे? शूरोचका, क्लूबनीका फल के मर्तबान में से कुछ मुरब्बा तो निकाल लाओ। क्यों, नहीं खाना चाहते? अच्छी बात है, तो ऐसे ही बैठे रहो। लेकिन देखो, धुआं न उड़ाना। तुम्हारे तम्बाकू की भयानक गंध मुझे बरदाश्त नहीं होती। और मात्रोस को तो छींक आने लगती है।"

लावरेत्स्की ने अविलम्ब आश्वासन दिया कि धूम्रपान करने की उसकी ज़रा भी इच्छा नहीं है।

"क्या नीचे दीवानख़ाने में गए थे?" वृद्धा ने पूछा, "वहां कौन-

कौन हैं? पान्शिान क्या अभी तक यहीं चिपका हुआ है? और लीज़ा, —उससे भी भेंट हुई या नहीं? नहीं? वह यहां, ऊपर, आने को कहती थी... अरे यह लो, फ़रिश्ते को याद किया नहीं कि वह..."

लीज़ा कमरे में आ गई और लावरेत्स्की को देख उसके गाल लाल हो उठे।

"मैं अभी लौट जाऊंगी, मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना," उसने कहना शुरू किया...

"क्यों, अभी क्यों लौट जाओगी?" वृद्धा ने उसे बीच में ही टोका, "तुम नयी पीढ़ी के लोगों के ज़मीन पर पांव तक नहीं टिकते,—क्यों? देखो न, यहां एक मेहमान मौजूद हैं। बैठ कर उसके साथ बातें करो, उसकी कुछ हाल-चाल पूछो।"

लीज़ा एक कुर्सी के छोर पर बैठ गई, सिर उठा कर उसने लावरेत्स्की की ओर देखा,—और अनुभव किया कि पान्शिन के साथ अपनी भेंट का नतीजा उसे लावरेत्स्की को बता देना चाहिए। लेकिन यह हो कैसे? परेशानी और लज्जा, दोनों का वह अनुभव कर रही थी। उसके साथ उसका परिचय भी कोई पुराना नहीं था। यह आदमी जो बिरले ही गिरजे की शक्ल देखता था और अपनी पत्नी की मृत्यु को इतने शान्त भाव से जिसने लिया था,—इस आदमी के सामने ही वह अब अपने हृदय का भेद प्रकट करने जा रही थी। यह सच है कि वह उसमें दिलचस्पी लेता था, वह खुद भी उसमें विश्वास रखती थी और उसके प्रति आकर्षित होती थी, लेकिन फिर भी उसे लज्जा मालूम हो रही थी,—लगता था जैसे कोई अजनबी स्वच्छ कुमारी के कमरे में आ निकला हो। तभी मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने उसे उबारा।

"अगर तुम ही उसका मन नहीं बहलाओगी," उसने कहा, "तो मेरी भोली बच्ची, और कौन बहलाएगा? मैं उसके लिए अति वृद्धा हूं,

वह मेरे लिए अति चतुर और नस्तासिया कारपोवना के लिए अति वयस्क, – वह केवल युवा लोगों से ही खुश रहती है।"

"फ़ियोदोर इवानिच का जी बहलाने के लिए मैं क्या कर सकती हूं?" लीज़ा ने पूछा, "अगर वह चाहें तो मैं उनके लिए पियानो पर कुछ बजा सकती हूं," लीज़ा नें दुविधा के साथ कहा।

"बहुत बढ़िया! होशियार लड़की ऐसी ही होती है!" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना नें कहा, "जाओ, तुम दोनों नीचे चले जाओ, पियानो से निबट कर लौट आना। मैं तो ताश के खेल में बुद्धू बन गई। यह लज्जाजनक है, और मुझे इसका भुगतान करना होगा, – सो कर रही हूं।"

लीज़ा उठ खड़ी हुई। लावरेत्स्की भी उसके साथ-साथ नीचे चल दिया। सीढ़ियों पर से उतरते-उतरते लीज़ा ठिठकी।

"किसी ने ठीक ही कहा है," उसने लावरेत्स्की से कहना शुरू किया, "कि मानव विरोधों का पुतला है। तुम्हारा दृष्टान्त देखकर मुझे अपने आपको रोकना तथा प्रेम-विवाह से बचना चाहिए था, लेकिन..."

"तो तुमने इन्कार कर दिया?" लावरेत्स्की ने बीच में ही पूछा।

"नहीं। परन्तु स्वीकार भी नहीं किया। मैंने सब कुछ, – जो भी मैं अनुभव करती थी, – उसके सामने रख दिया, और उससे कहा कि जल्दी में कोई निर्णय नहीं किया जा सकता। क्यों, इससे तुम सन्तुष्ट हो न?" क्षिप्र मुसकराहट के साथ उसने कहा और ज़ीने के सरिये का हल्के से स्पर्श करते हुए तेज़ी से नीचे उतर गई।

"बोलो, क्या सुनना पसंद करोगे?" पियानो का ढक्कन उठाते हुए उसने फिर पूछा।

"वही जो तुम्हें अच्छा लगे," लावरेत्स्की ने बैठते हुए जवाब दिया। वह ऐसी जगह बैठ गया जहां से लीज़ा अच्छी तरह दिखाई देती थी।

लीज़ा ने पियानो बजाना शुरू किया और आंखों को, काफ़ी देर तक, अपनी उंगलियों पर ही जमाए रही। अन्त में सिर उठा कर उसने लावरेत्स्की की ओर देखा और उसके हाथ अनायास ही रुक गए– लावरेत्स्की का चेहरा उसे कुछ इतना अजीब और मार्के का प्रतीत हुआ।

"क्यों, तुम ऐसे क्यों दिख रहे हो?" लीज़ा ने पूछा।

"कुछ नहीं," उसने जवाब में कहा, "मैं बहुत प्रसन्न हूं। मैं खुश हूं तुम्हारे लिए... तुम्हें देख कर... रुको नहीं, बजाए जाओ।"

"मुझे तो ऐसा मालूम होता है," कुछ रुक कर लीज़ा ने कहा, "कि अगर वह सचमुच मुझ से प्रेम करता होता तो पत्र न लिखता। उसे स्वयं ही यह अनुभव कर लेना चाहिए था कि मैं अभी उसे जवाब देने की स्थिति में नहीं हूं।"

"महत्वपूर्ण यह नहीं है," लावरेत्स्की ने कहा, "महत्वपूर्ण यह है कि तुम उससे प्रेम नहीं करती।"

"अरे नहीं, ये सब बातें करना हमें अच्छा नहीं मालूम होता। रह-रह कर मुझे तुम्हारी मृत पत्नी का ख़याल हो आता है, और तुम्हें देख कर मेरा हृदय कांप उठता है।"

"तुम्हें कैसा लगता है, वोल्डेमार," मारिया दिमीत्रियेवना पान्शिन से कह रही थी, "मेरी लीज़ा की उंगलियों में जादू है,–बहुत ही अच्छा पियानो बजाती है।"

"हां," पान्शिन ने कहा, "सचमुच, बहुत अच्छा बजाती है।"

मारिया दिमीत्रियेवना ने अपने युवा पार्टनर पर एक कोमल दृष्टि डाली, लेकिन अपने चेहरे को और भी भारी-भरकम तथा अतिव्यस्त बना कर उसने घोषित किया, "फ़ोर्टीन किंग्स!"

३१

लावरेत्स्की युवा तो था नहीं। लीज़ा के प्रति जिन भावों का उसके हृदय में उदय हुआ था, उन्हें लेकर वह अपने-आपको अधिक भरम में नहीं रख सका। अन्ततः उसने अनुभव किया कि वह उससे – लीज़ा से – प्रेम करता है। लेकिन इस अनुभूति ने उसमें उमंगों का संचार नहीं किया। "मुझे भी यह क्या सूझा," उसने मन ही मन कहा, "जो पैंतीस वर्ष की इस आयु में अपनी आत्मा को फिर एक स्त्री के हाथों में सौंप दिया? लेकिन लीज़ा वैसी नहीं है, वह किसी ऐसे बलिदान की मांग नहीं करेगी जो नीचे गिराने वाला हो, वह मेरे अध्ययन में बाधक सिद्ध नहीं होगी, बल्कि कड़े तथा ईमानदार श्रम के लिए खुद मुझे अनुप्राणित करेगी, और हम दोनों – हाथ में हाथ डाले – उच्च लक्ष्य की ओर प्रयाण करेंगे। हां," अपने मन्थन को समेटते हुए उसने कहा, "यह सब तो ठीक – बहुत ठीक – लेकिन मुसीबत यह है कि मेरे साथ प्रयाण करने की उसमें ज़रा भी उमंग नहीं है। उसने कहा न था कि मुझे देख कर वह कांप उठती है? लेकिन वह पान्शिन से भी प्रेम नहीं करती पर यही ढाढ़स की बात है?"

लावरेत्स्की वसीलेवस्कोये लौट गया, लेकिन वहां चार दिन से अधिक नहीं टिक सका, – इस हद तक भारी मालूम हुआ उसे वहां रहना। इसके अलावा वह अनिश्चय की स्थिति में भी था। मोसिये जूल द्वारा घोषित समाचार की अभी पुष्टि नहीं हो सकी थी, कहीं से भी कोई पत्र उसके पास नहीं आए थे। वह फिर नगर लौट आया और कलीतिन के यहां उसने सांझ बिताई। यह भांपने में उसे कठिनाई नहीं हुई कि मारिया दिमीत्रियेवना उसे अनुकूल नजर से नहीं देखती। लेकिन पिकेट के खेल में पन्द्रह रूबल हार कर उसने उसे ज़रा शान्त किया, और

लगभग आधा घंटा लीज़ा के साथ एकान्त में बिताने में उसने सफलता प्राप्त की, हालांकि विगत सांझ उसकी मां ने फ्रेंच भाषा में उसे झिड़का था कि उसे एक ऐसे आदमी से अधिक नहीं घुलना मिलना चाहिए जो जग हंसाई का विषय बना हो। लावरेत्स्की ने देखा कि वह कुछ बदल गई है, – पहले से अधिक चिन्ताशील नज़र आती है। अनुपस्थिति के लिए लीज़ा ने उसे कोंचा और पूछा कि क्या कल सुबह (अगला दिन रविवार था) गिरजा जाने का उसका इरादा है?

"ज़रूर चलना," उसके जवाब देने से पहले ही लीज़ा ने कहा, "उसकी आत्मा की शान्ति के लिए हम दोनों एक साथ प्रार्थना करेंगे।" इसके बाद उसने बताया कि उसकी समझ में नहीं आता कि वह क्या करे, – यह कि पान्शिन को अपने निर्णय की प्रतीक्षा में और अधिक उलझाए रखना क्या ठीक होगा।

"क्यों?" लावरेत्स्की ने पूछा।

"इसलिए कि," उसने कहा, "अब मुझे कुछ भान हो चला है कि वह निर्णय क्या होगा?"

फिर उसने सिर दर्द की शिकायत की, अनिश्चितता से अपनी उंगलियों के छोर लावरेत्स्की की ओर बढ़ाए और ऊपर अपने कमरे में चली गई।

अगले दिन लावरेत्स्की गिरजा गया।

लीज़ा पहले से ही वहां मौजूद थी। बिना सिर घुमाए लीज़ा ने उसे देखा। उसने पूरी तन्मयता के साथ प्रार्थना की। उसकी आंखों में एक मृदु चमक तैर रही थी। कोमल अन्दाज़ में माथा नवा कर उसने अपना सिर उठाया। लावरेत्स्की को लगा जैसे वह उसके लिए प्रार्थना कर रही है, और उसका हृदय एक अवर्णनीय कोमलता से छलछला उठा। वह खुशी से उमगा था, साथ ही उसका हृदय एक हल्की कसक का भी

अनुभव कर रहा था। इर्दगिर्द खड़े लोगों की गम्भीर मुद्राएं, प्रिय और घनिष्ठ चेहरे, विधिवत पूजा-पाठ, लोबान की गंध, खिड़कियों से आती प्रकाश की तिर्छी लम्बी किरनें, उदास भाव से ताकती दीवारें और गुम्बजनुमा छत, – सभी उसका हृदय छू रहे थे। बहुत दिनों के बाद वह गिरजा आया था, एक मुद्दत से वह ईश्वर को भुलाये था, और इस समय भी उसके होंठ प्रार्थना के शब्दों का उच्चारण नहीं कर रहे थे, लेकिन, क्षण-भर के लिए, शरीर से नहीं बल्कि अपनी समूची आत्मा से, विनीत वन्दना में जैसे धरती पर झुक गया। उसे याद आया कि किस प्रकार बचपन में देर-देर तक वह गिरजे में प्रार्थना किया करता था, यहां तक कि एक ठंडे स्पर्श का उसे अपने माथे पर अनुभव होने लगता था, और वह सोचता था कि यह कोई फ़रिश्ता है जो उसे अपना संरक्षण प्रदान कर रहा, उसके माथे पर अपना वरद हस्त रख रहा है। उसने लीज़ा की ओर देखा... "तुम जो मुझे यहां लाई हो," उसने सोचा, "मुझे, मेरी आत्मा को छू दो!" वह अब भी मृदु भाव से प्रार्थना कर रही थी, उसका चेहरा आनन्द से विभोर मालूम हो रहा था। लावरेत्स्की का हृदय एक बार फिर कोमलता से छलछला उठा, और एक अन्य आत्मा के लिए शान्ति की तथा अपने लिए क्षमा की याचना में उसका माथा झुक गया...

बाहर गिरजे के ओसारे पर दोनों एक-दूसरे से मिले। स्निग्ध और मृदु गम्भीरता से लीज़ा ने उसका अभिवादन किया। गिरजे के अहाते की घास और स्त्रियों के रंगविरंगे कपड़े और गुलूबन्द सूरज के आलोक में चमचमा रहे थे। आसपास के अन्य गिरजों के घंटों की आवाज़ हवा में गूंज रही थी। झाड़ियों में पक्षी चहचहा रहे थे। लावरेत्स्की सिर उघाड़े खड़ा था। उसका चेहरा मुसकान से खिला था। मृदु हवा के

झोंके उसके बालों के गुच्छों और लीज़ा की टोपी के फीतों से खेल रहे थे। लीज़ा और लेनोचका को, जो उसके साथ थी सहारा देकर उसने गाड़ी में चढ़ाया, अपनी जेब की समूची पूंजी गरीबों को बांट दी और धीमे डगों से घर की ओर चल दिया।

३२

फ़ियोदोर इवानिच के लिए कठिन दिनों का सूत्रपात हो गया। हर घड़ी उसे एक बुखार-सा चढ़ा रहता था। हर सुबह वह खुद डाकखाने जाता, लिफ़ाफ़ों और कागज़ी खोलों को अधीरता से खोलता, लेकिन उस अभागे समाचार को पुष्ट या खण्डित करने लायक कोई चीज़ उसे किसी पत्र-पत्रिका में नज़र नहीं आती। कभी-कभी वह अपने-आप से खीज उठता। "मुझे देखो," वह सोचता, "गिद्ध की भांति लाश पर झपटने के लिए, अपनी पत्नी की मृत्यु की निश्चित खबर पाने के लिए, किस बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहा हूं।" कलीतिन के यहां वह बिला नागा जाता, लेकिन वहां भी उसे कुछ चैन नहीं मिलती। मालकिन की रुखाई प्रत्यक्ष थी, और बहुत ही ऊंचे सिंहासन से वह उसका स्वागत करती थी। पान्शिन अतिरंजित शालीनता से उसके साथ पेश आता, लेम्म मानव-वैर का कृत्रिम चोला धारण किए रहता और अभिवादन में सिर तक मुश्किल से ही झुकाता, और सब से बुरा तो यह कि लीज़ा भी उससे बचती मालूम होती। संयोगवश उसके साथ अकेली पड़ जाने पर वह एकदम घबरा जाती। पूर्ण विश्वास से भरा उसका वह पहले वाला रूप अब नहीं रहा था। उसकी समझ में न आता कि वह क्या कहे, और उसकी यह हालत देख कर खुद लावरेत्स्की भी अचकचा जाता। कुछ ही दिनों के भीतर लीज़ा अब पहले वाली लीज़ा नहीं रही जिससे कि वह

परिचित था, बल्कि वह एकदम बदल गई थी। उसकी चालढाल में, उसकी ग्रावाज़ में ग्रौर उसकी हंसी तक में दुविधापूर्ण चिन्ता ग्रौर एक ऐसी थरथराहट थी जो कि पहले कभी उसमें दिखाई नहीं देती थी। ग्रपने-ग्राप में ही लिपटी रहने के कारण मारिया दिमीत्रियेवना इस सब से बेख़बर थी, लेकिन मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की ग्रांखें चौकस हो गईं ग्रौर ग्रपनी प्रिय लीज़ा का ध्यान से निरीक्षण करने लगीं। लावरेत्स्की का हृदय जब-तब कचोटता कि ग्रच्छा होता ग्रगर वह उसे समाचारपत्र न दिखाता, ग्रौर यह ग्राभास उसे परेशान किए बिना नहीं रहता कि उसके मस्तिष्क की स्थिति में कुछ है जो नहीं होना चाहिए, कुछ ऐसा जो निर्मल नहीं है। वह यह भी समझता था कि लीज़ा में यह परिवर्तन उसके भीतर चल रहे उस द्वन्द्व का, उन सन्देहों का नतीजा है जो इस बात से सम्बंध रखते हैं कि पान्शिन को क्या जवाब दिया जाए। एक दिन वह एक पुस्तक–वाल्टर स्काट का एक उपन्यास जो कि उसने पढ़ने के लिए लावरेत्स्की से लिया था, उसे लौटाने लायी।

"इसे पढ़ लिया?" लावरेत्स्की ने पूछा।

"नहीं, इन दिनों पढ़ने के मूड़ में नहीं हूं," वापिस लौटने के लिए मुड़ते हुए उसने जवाब दिया।

"ज़रा ठहरो। इतने दिन हो गए, ग्रब तो तुमसे ग्रकेले में बात करने का मौका ही नहीं मिलता। कोई देखे तो कहे कि तुम मुझसे डरती हो।"

"सो तो ठीक है।"

"हाय मेरे मालिक, लेकिन क्यों?"

"यह मैं नहीं जानती।"

लावरेत्स्की ने कुछ नहीं कहा।

"ग्रच्छा तो यह बताग्रो," उसने फिर कहना शुरू किया, "तुम ग्रभी किसी निश्चय पर पहुंची या नहीं?"

"मतलब ?" उसने कहा, आंखों को झुकाए हुए।

"मतलब तुमसे छिपा नहीं है..."

लीज़ा के गाल सहसा लाल हो उठे।

"ओह, मुझसे यह सब न पूछो," उसने व्यग्रता से कहा, "मैं कुछ नहीं जानती, मैं खुद अपने को भी नहीं जानती..."

और वह चली गई।

अगले दिन लावरेत्स्की दोपहर के भोजन के बाद कलीतिन के यहां पहुंचा। उसने देखा कि संध्या-प्रार्थना की तैयारियां हो रही हैं। भोजन करने के कमरे के एक कोने में चौरस मेज़ पर साफ़ कपड़ा बिछा था। इस मेज़ पर, दीवार से टिकीं, ज़रदार चौखटों और छोटे-छोटे मैले नग जड़े आलोकमण्डल से युक्त लघु देवप्रतिमाएं रखी थीं। भूरा फ़्राक कोट और जूते पहने एक वृद्ध सेवक धीमे और निःशब्द डगों से मेज़ के पास पहुंचा, देवप्रतिमाओं के सामने रखे नाज़ुक बत्ती-दानों में मोमबत्तियां उसने जमा दीं, क्रास का चिन्ह बनाया और माथा नवा कर चुपचाप कमरे से बाहर चला गया। ड्राइंगरूम रोशनी विहीन और सूना पड़ा था। लावरेत्स्की भोजन के कमरे में इधर से उधर टहलता रहा। उसने पूछा कि क्या आज किसी के इष्ट सन्त का दिन है। फुसफुसाहट में उत्तर मिला कि नहीं, संध्या-प्रार्थना का यह आयोजन येलिज़ावेता मिखाइलोवना और मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की इच्छा के अनुसार किया जा रहा है। इरादा तो यह था कि चमत्कार दिखाने वाली देवप्रतिमा को भी लाया जाये, लेकिन उस समय वह यहां से बीसेक मील दूर एक रुग्ण आदमी का दुःख हरने गई हुई थी। शीघ्र ही अपने सहायक पादरियों के साथ पादरी भी आ गया। वह अधेड़ आयु का आदमी था, उसके सिर का काफ़ी बड़ा हिस्सा एकदम सफ़ाचट था। हाल में आकर उसने ज़ोरों से खखारा। बैठने के कमरे में से, एक के बाद

एक पांत बांध कर, उसका आशीर्वाद लेने के लिए स्त्रियां बाहर निकलीं। लावरेत्स्की ने झुक कर उनका मौन अभिवादन किया और उन्होंने भी मौन अभिवादन में अपना सिर झुकाया। पादरी कुछ क्षण इधर उधर करता रहा, एक बार फिर खखारा और इसके बाद गहरी आवाज़ में बोला :

"हां तो अब शुरू करें न ?"

"हां, अब शुरू करिये, धर्मगुरु!" मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा।

उसने अपना लबादा पहनना शुरू किया। सफ़ेद चोगा पहने एक पुजारी ने अतिनम्र स्वर में आग लाने के लिए कहा। लोबान की गंध उठने लगी। नौकर-चाकर, पुरुष भी और स्त्रियाँ भी, हाल में से निकल कर दरवाज़े के सामने जमा हो गए। रोस्का कुत्ता जो पहले कभी सीढ़ियों से नीचे नहीं उतरा था, सहसा भोजन के कमरे में घुस आया। उसे बाहर निकालने के लिए सब शि-शि करने लगे। इससे वह घबरा गया और इधर से उधर भागने लगा। फिर, अनायास ही, वह अपने पेट के बल बैठ गया। एक नौकर आगे बढ़ा और उसे उठा कर ले गया। प्रार्थना शुरू हुई। लावरेत्स्की एक कोने में सट गया। वह विचित्र, करीब-करीब उदास, भावों का अनुभव कर रहा था। वह ठीक समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या अनुभव कर रहा है। मारिया दिमीत्रियेवना सब से आगे, कुर्सियों के सामने, खड़ी थी। उसने अलस अंदाज़ और कुलीन महिला-सुलभ उपेक्षा से क्रास का चिन्ह बनाया, कनखियों से अपने इर्दगिर्द देखा और फिर, सहसा सिर उठा कर, छत की ओर ताकने लगी, वह ऊब उठी थी। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के चेहरे पर चिन्ता की झलक थी। नस्तासिया कारपोवना ने झुक कर धरती पर माथा टेका और फिर सावधान सरसराहट के साथ उठ खड़ी हुई। लीज़ा जैसे एक ही जगह पर जाम हो गई थी, एकदम निश्चल खड़ी थी। केवल उसके चेहरे की

एकाग्र तन्मयता से पता चलता था कि वह थिरता और हृदय की समूची लगन से प्रार्थना कर रही है। पूजा-पाठ के अन्त में क्रास को होंठों से स्पर्श करते समय उसने पादरी के बड़े लाल हाथ का भी अपने होंठों से स्पर्श किया। मारिया दिमीत्रियेवना ने पादरी को चाय के लिए आमंत्रित किया। उसने अपना चोगा बदला और लौकिक मुद्रा में स्त्रियों के साथ ड्राइंगरूम में पहुंच गया। धीमे स्वरों में बातचीत चलने लगी। पादरी ने चाय के चार प्याले पिये, अपने गंजे सिर को रूमाल से बार बार पोंछा और यों ही, प्रसंगवश, बताया कि सौदागर आवोश्निकोव ने गिरजे के गुम्बज पर मुलम्मा चढ़ाने के लिए सात सौ रूबल दान में दिये हैं। इसी के साथ-साथ बिन्दीनुमा दाग मिटाने का एक विश्वसनीय नुस्खा भी उसने बताया।

लावरेत्स्की ने लीज़ा के पास ही एक कुर्सी पर कब्ज़ा जमा लिया था। लेकिन वह अपने-आप में सिमटी, एकदम अलग बैठी थी। लावरेत्स्की की ओर नज़र तक उठा कर उसने नहीं देखा। ऐसा मालूम होता था जैसे वह जानबूझ कर उसे आंखों की ओट कर रही हो जैसे एक प्रकार की शुष्क गम्भीर भावना ने उसे अभिभूत कर लिया हो। लावरेत्स्की, जाने क्यों, मुसकराने और कोई दिलचस्प बात कहने के लिए व्यग्र हो उठा। लेकिन उसका हृदय उलझन में फंसा था, और अन्त में खोया हुआ सा वह वहां से चल दिया... उसने अनुभव किया कि लीज़ा में कुछ है जो उसकी पहुंच के बाहर है।

एक अन्य अवसर पर लावरेत्स्की दीवानखाने में बैठा गेदेओनोवस्की की रंगीन लनतरानियां सुन रहा था कि सहसा, कह नहीं सकता कि क्यों, उसने अपना सिर घुमाया और लीज़ा की आंखों में उसे एक सुस्थिर और मर्मभेदी भाव दिखाई दिया... उसकी रहस्यमयी नज़र एकटक उसकी ओर देख रही थी। लावरेत्स्की सारी रात उसके बारे में सोचता रहा।

उसका प्रेम किसी युवा लड़के का प्रेम नहीं था। आहें भरना और सूख कर कांटा बनना उसकी उम्र के खिलाफ़ था और खुद लीज़ा भी इस तरह के भावों को अनुप्रेरित नहीं करती थी। लेकिन प्रेम किसी भी अवस्था को अपनी यंत्रणाओं से—उनका रूप चाहे जो हो—अछूता नहीं छोड़ता, —सो उसे भी उन सब का भुगतान करना पड़ा।

३३

एक दिन लावरेत्स्की, अपनी आदत के अनुसार, कलीतिन के यहां गया हुआ था। ऊमस-भरे दिन के बाद इतनी सुहावनी सांझ का अवतरण हुआ था कि मारिया दिमीत्रियेवना नें, वायु के झकोरों से कोई खास लगाव न होने पर भी, बाग की ओर की सारी खिड़कियों और दरवाज़ों को खुलवा दिया, और घोषित किया कि वह ताश के पत्तों को हाथ नहीं लगाएगी,—ऐसे मौसम में जब कि प्रकृति का आनन्द लेना चाहिए, ताश खेलना गुनाह है। पान्शिन के सिवा अन्य कोई मेहमान उस समय मौजूद नहीं था। सांझ के सौन्दर्य और अपने हृदय में कलात्मक स्फुरण का वह अनुभव कर रहा था। लेकिन लावरेत्स्की की उपस्थिति में गीत गाने के बजाय कविता-पाठ का उसने सहारा लिया। वह अच्छा कविता-पाठ करता था। लेकिन उसके कविता-पाठ में अनुभूति का अंश इतना नहीं होता था जितना कि अनावश्यक नफ़ासत का। उसने लेर्मोन्तोव की कुछ कविताएं सुनाईं (पुश्किन ने उस समय के फैशन में पुनः प्रवेश नहीं किया था)। इसके बाद, मानो सहसा अपने अतिरंजित हाव-भावों से अचकचा कर, "चिन्तन" नामक सुप्रसिद्ध कविता के लहजे में उसने नई पीढ़ी को लांछित तथा प्रतारित करना शुरू किया। और यह सिद्ध करने से भी वह नहीं चूका कि अगर उसके हाथ में सत्ता होती तो अपने ढंग से किस प्रकार वह हर चीज़ को बदल डालता।

"रूस," उसने कहा, "यूरोप से पिछड़ा हुआ है, हमें उसके समकक्ष पहुंचना होगा। कहा जाता है कि हम अभी नौ-उम्र हैं, लेकिन यह सब बकवास है। असल में हममें आविष्कार बुद्धि की कमी है। खुद ख–व ने भी यह माना है कि हम कभी एक चूहेदान तक नहीं बना सके। नतीजा इसका यह कि हमें, मजबूर होकर, दूसरों के सामने हाथ फैलाना पड़ता है। हम रुग्ण हैं–यह लेर्मोन्तोव ने कहा है। मैं उससे सहमत हूं। लेकिन हमारी रुग्णता का कारण यह है कि हम केवल आधे यूरोपियन बन कर रह गए हैं, जब कि खुमारी उतारने के लिए हमें ज़रूरत थी एक हल्की सी डोज़ की... ('सरकारी कृपिभूमि'... लावरेत्स्की ने सोचा) हमारे श्रेष्ठतम मस्तिष्क," वह कहता गया, "एक मुद्दत से यह कहते आ रहे हैं। सभी राष्ट्र तत्वतः समान होते हैं। बस, अच्छी संस्थाओं के समावेश की ज़रूरत है, बाकी सब अपने-आप ठीक हो जाएगा। मैं तो यहां तक कहता हूं कि मौजूदा राष्ट्रीय प्रथाओं के अनुरूप बहुत कुछ सुधार किया जा सकता था। यह हमारा–राज्य का...(वह राजनयिक कहता-कहता रह गया)... सरकारी अधिकारियों का... काम है। लेकिन, ज़रूरत पड़ने पर–इस बात से निशा-खातिर रहो–संस्थाएं खुद जातीय प्रथाओं का पुनर्निर्माण कर लेंगी।" मारिया दिमीत्रियेवना उसकी हर बात पर आंखें मूंद कर सिर हिला रही थी। "यह देखो," वह सोच रही थी, "मेरे दीवानख़ाने में कितना बुद्धिमान आदमी प्रवचन कर रहा है।" लीज़ा खिड़की की टेक लिए चुपचाप बैठी थी। लावरेत्स्की भी चुपचाप था। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना जो कोने में बैठी अपने साथी के साथ ताश खेल रही थी, अपने आपसे कुछ बुदबुया उठी। पान्शिन इधर-से-उधर कमरे में टहल रहा था और स्वर में झुंझलाहट का पुट लिए धारा प्रवाह बोल रहा था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह एक समूची पीढ़ी को नहीं, बल्कि अपनी जान-पहचान के कुछ लोगों को अपने

शब्दों का निशाना बना रहा हो। बोलते-बोलते जब कभी वह बीच में रुकता था तो बुलबुल पक्षी के संध्यागीत के प्रथम स्वर – कलीतिन के बगीचे में लिलक की झाड़ियों में उसने अपना घोंसला बना रखा था – उस रिक्त को भर देते थे। लाइम के पेड़ों की निश्चल चोटियों के ऊपर गुलाबी आभा से रंजित आकाश में प्रथम तारे टिमटिमाने लगे थे। लावरेत्स्की उठा और पान्शिन का उसने विरोध किया। विवाद शुरू हो गया। लावरेत्स्की ने रूस की जवानी और स्वावलम्बन की हिमायत की और कहा कि मैं अपने-आपको, और अपनी पीढ़ी को, होम करने के लिए तैयार हूं, परन्तु नये मानव की रक्षा करूंगा। पान्शिन ने झुंझलाहट में भरकर तीखी आवाज़ में जवाब दिया। वह इस बात पर अड़ा रहा कि यह बुद्धिमान लोगों का काम है कि वे हर चीज़ को बदलें, और वह यहां तक बढ़ा कि उसे अपने कामरजन्कर-पद तथा अफ़सर होने तक का ध्यान न रहा। लावरेत्स्की को उसने गया-बीता पुराणपंथी कहा, बल्कि यहां तक इशारा किया – माना कि यह इशारा काफ़ी उड़ता हुआ सा था – कि समाज में वह कोई प्रतिष्ठित स्थान नहीं रखता। लावरेत्स्की ने न तो अपने मस्तिष्क का सन्तुलन डिगने दिया, न ही अपनी आवाज़ को तेज़ किया (उसे याद आया कि मिख़लेविच ने भी उसे गया-बीता पुराणपंथी नहीं बल्कि वाल्टेरियन कहा था), और उसने, ठंडे मस्तिष्क से, हर नुक्ते पर पान्शिन को निरुत्तर कर दिया। उसने मनवा लिया कि एक ही छलांग में और ऊपर से – उद्धत अफसरशाही के दिमागों में जन्मे-अपनी मातृभूमि के ज्ञान से शून्य तथा किसी आदर्श के प्रति सच्ची नकारात्मक ही सही, – आस्था से हीन, अधिकारी वर्ग द्वारा परिवर्तन कराना अव्यावहारिक है। उसने खुद अपनी शिक्षा का हवाला दिया, और विनीत भावना से – एक ऐसी भावना से जिसके अभाव में गलतियों को लौहचुनौती देना कोई मानी नहीं रखता लोकबुद्धि के आगे –

अपने-आप को झुकाने की मांग की, और सब से अन्त में, समय और शक्ति के अंधे अपव्यय के अभियोग को – जिसे वह एक पुष्ट और सही अभियोग समझता था – उसने ज़रा भी कम नहीं किया।

"यह सब तो ठीक," पान्शिन ने जो इस समय तक पूर्णतया खीज उठा था, चिल्ला कर कहा, "लेकिन यह बताओ कि अब, जबकि तुम रूस लौट आए हो, – तुम खुद क्या करना चाहते हो?"

"धरती को जोतना," लावरेत्स्की ने जवाब दिया, "जितना भी सम्भव हो सकता है, उतनी अच्छी तरह से जोतना!"

"निस्सन्देह, इरादा शुभ है," पान्शिन ने कहा, "और मैंने सुना है कि इस दिशा में तुम काफ़ी सफल भी हुए हो, लेकिन तुम्हें इस बात की गुंजाइश छोड़नी चाहिए कि यह धंधा हर किसी के वश का नहीं है..."

"जिनके हृदय में कविता बसी है वे," मारिया दिमीत्रियेवना ने भी फ़्रेंच शब्दों के सहारे रंग भरा, "निश्चय ही हल की मूठ नहीं थाम सकते... इसके अलावा भगवान ने तुम्हें, व्लादीमिर निकोलाइच, हर काम शानदार ढंग से करने के लिए पैदा किया है।"

खुद पान्शिन भी इस डोज़ को गले के नीचे नहीं उतार सका। त्रस्त होकर उसने विषय को बदलना चाहा। तारों-भरे आकाश और शुबर्ट के संगीत की ओर उसने बातों का सिलसिला मोड़ा, लेकिन छकड़ा कुछ चला नहीं। अन्त में उसने मारिया दिमीत्रियेवना से पिकेट की एक बाज़ी खेलने का प्रस्ताव किया। "इतनी अच्छी सांझ, और ताश का खेल!" मारिया दिमीत्रियेवना ने क्षीण स्वर में विरोध करते हुए भी, ताश के पत्ते लाने का आदेश दिया।

ताश का नया पैकेट आ गया। पान्शिन ने ज़ोरों की आवाज़ के साथ उसे खोला। लीज़ा और लावरेत्स्की, मानो एक मन हो, वहां से उठ कर मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के निकट चले गये। दोनों ने सहसा एक भारी

उछाह का अनुभव किया, इतना कि निराले में एक साथ रहने में उन्हें कुछ संकोच का – भय का – अनुभव हुआ, उन्हें ऐसा भी आभास हुआ कि जिस उलझन ने पिछले दिनों उन्हें घेर लिया था, वह सदा के लिए विलीन हो गई है। वृद्धा ने लावरेत्स्की के गालों को अनजाने-से अन्दाज़ में थपथपाया, भेद - भरे ढंग से अपनी आंखों को भींचा, कई बार अपने सिर को हिलाया और फुसफुसा कर कहा, "तुमने अच्छा किया जो उस अतिवुद्धिमान का मिज़ाज कुछ हल्का कर दिया। बधाई।" कमरे में अब सन्नाटा छाया था। मोमबत्तियों की धुंधली चरचराहट, जब - तब मेज़ पर हाथ के थपकने, उद्गार या स्कोर गिनने के सिवा अन्य कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, – और बुलबुल के गीत की प्रचुर ध्वनि, मधुर और अति उन्मुक्त, रात की ओससिक्त शीतलता में पगी, खुली खिड़कियों में से भीतर प्रवाहित हो रही थी।

३४

लावरेत्स्की और पान्शिन क बीच विवाद के दौरान में लीज़ा ने मुंह से एक शब्द नहीं कहा था, लेकिन वह उसका बड़े ध्यान से अनुसरण कर रही थी और समूचे हृदय से लावरेत्स्की के पक्ष में थी। राजनीति में उसकी दिलचस्पी न कुछ के बराबर थी, लेकिन दुनियावी अफ़सरी की बू में डूबा पान्शिन का उद्धत लहज़ा (पहले कभी वह इस तरह से बेलगाम नहीं हुआ था) उसे बड़ा घिनौना मालूम हुआ, और रूस के प्रति उसकी तिरस्कार - भावना ने उसे चकित कर दिया। लीज़ा के मस्तिष्क में कभी यह नहीं आया था कि वह देशभक्त है, लेकिन रूसियों के साथ एक सहज अपनत्व का वह अनुभव करती थी, रूसियों की सूझबूझ और सोचने का ढंग उसे आह्लादित करता था और, अपनी मां

की जागीर के किसान कारिन्दे के साथ – जब कभी वह नगर आता था – बराबर की हैसियत से और श्रेष्ठता की ज़रा-सी भी भावना के बिना, सहज भाव से लगातार कई घंटों तक बातें कर सकती थी। इन सब बातों ने लावरेत्स्की के हृदय को छुआ। खुद पान्शिन को जवाब देने की तो वह ज़रा भी चिन्ता न करता। उसकी आंखों के सामने लीज़ा थी, और अकेले उसी के लिए उसने वह सब कुछ कहा। उन्होंने एक शब्द का भी आदान-प्रदान नहीं किया, उनकी आंखें भी बिरले ही एक-दूसरे से मिलीं, लेकिन उस सांझ दोनों ने अपने-आपको और भी घनिष्ठ रूप में गुंथा हुआ अनुभव किया, उन्होंने देखा कि चीज़ों को पसन्द करने या न करने के मामले में उनमें समानता है। केवल एक ही बात में वे एक-दूसरे से भिन्न थे, लेकिन लीज़ा अपने हृदय में यह गुप्त आशा संजोए थी कि वह उसे ईश्वर के निकट लाने में समर्थ हो सकेगी। वे मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की बगल में बैठे थे और खेल का अनुसरण करते मालूम होते थे, – सचमुच अनुसरण कर रहे थे, – लेकिन, इसी के साथ-साथ, उनके हृदय भीतर ही भीतर उछाह से उमड़-घुमड़ रहे थे, बुलबुल का गीत, तारों-भरा आकाश, ग्रीष्म की अलसाहट और तपन से शिथिल पेड़ों की कानाफूसी उनके रोम-रोम में सरसरा रही थी। लावरेत्स्की ने अपने आपको उन भावों की रौ में छोड़ दिया था जो उसके हृदय को प्लावित कर रहे थे, और इसमें उसे बड़ा सुख मिला। लेकिन उन भावों को कोई कैसे व्यक्त करे जो एक कुमारी के स्वच्छ हृदय में उमड़ते-घुमड़ते हैं और खुद उसके लिए भी रहस्यमय होते हैं। सो रहस्यमय ही वे रहें। कोई नहीं जानता, किसी ने यह नहीं देखा और न ही कभी कोई यह देख सकेगा कि बीज, जीने और फूलने-फलने के लिए जो बना है, किस प्रकार धरती के सीने में बढ़ता और परिपक्व होता है।

घड़ी ने दस बजाए। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना, नस्तासिया कारपोवना

के साथ, ऊपर चली गई। लावरेत्स्की और लीज़ा कमरे को पार कर बाग वाले दरवाजे पर जा खड़े हुए। बाहर फैले अंधकार में उन्होंने देखा, फिर एक-दूसरे पर नज़र डाली, और मुसकरा उठे। मन करता था कि हाथ में हाथ डालकर दोनों घंटों—जी भर कर—बातें करते रहें। लेकिन वे मारिया दिमीत्रियेवना और पान्शिन के पास लौट आए। पिकेट का उनका खेल अभी तक खत्म नहीं हुआ था। आखिर अन्तिम हाथ खेला गया और मालकिन, लम्बी सांस छोड़ते और कराहते हुए, गुदगुदी आरामकुर्सी में से उठ खड़ी हुई। पान्शिन ने अपना हैट संभाला मारिया दिमीत्रियेवना के हाथ का अपने होठों से स्पर्श किया, कहा कि भाग्यवान हैं वे जो जब जी चाहा सोने चले गए या सुहावनी रात का आनन्द लेने लगे, लेकिन वह है कि उसे बेहूदा कागज़ों में सिर खपाते-खपाते सुबह हो जाती है। भावशून्य अन्दाज़ से सिर झुका कर उसने लीज़ा का अभिवादन किया (उसे यह उम्मीद नहीं थी कि विवाह-प्रस्ताव करने के बाद उससे रुकने का अनुरोध किया जाएगा,—और इसलिए वह मन ही मन खीज रहा था), विदा हो गया। लावरेत्स्की भी उसके साथ ही साथ चल दिया। बाहर दरवाज़े पर पहुंच दोनों एक-दूसरे से अलग हुए। पान्शिन ने अपने कोचवान की गरदन में छड़ी कोंच कर उसे जगाया और गाड़ी में सवार होकर चला गया। लावरेत्स्की का मन घर लौटने के लिए तैयार नहीं था। वह नगर से निकल कर खुले मैदानों की ओर चला। रात शान्त और स्वच्छ थी, हालांकि चांद गायब था। वह बहुत देर तक ओस में भीगी घास पर चलता रहा। एक सकरा पथ दिखाई दिया। वह उसपर मुड़ गया। यह पथ एक लम्बे बाड़े—फाटक तक—जाता था। अर्द्धचेतन सी अवस्था में उसने फाटक को धकेला। फाटक चरचरा कर इस तरह खुल गया जैसे वह उसके हाथ के स्पर्श की ही प्रतीक्षा कर रहा हो। लावरेत्स्की अब

एक बाग में खड़ा था। सामने एक पगडण्डी थी जिसक इधर-उधर लाइम के पेड़ उगे थे। वह दो-चार डग आगे बढ़ा और फिर चकित-सा खड़ा रह गया। उसने अब पहचाना कि वह फिर कलीतिन के बाग में ही आ पहुंचा है।

लपक कर वह 'हेज़ल' वृक्षों के एक झुरमुट की गहरी परछाइयों की ओट में हो गया और बिना हिले-डुले, अचरज में भरा और अपने कंधों को बिचकाता, देर तक वहीं खड़ा रहा।

"नहीं, यह निरा संयोग ही नहीं है!" वह सोच रहा था।

चारों ओर निस्तब्धता छाई थी। घर की ओर से ज़रा-सी भी आवाज़ नहीं आ रही थी। वह सावधानी से आगे बढ़ा। उद्यानपथ के एक मोड़ पर, सहसा, आंखों के आगे समूचा घर उभर आया। ऊपर की दो खिड़कियों में रोशनी की एक रमक के सिवा अन्य सभी कुछ अंधेरे में डूबा था। लीज़ा के कमरे में, सफ़ेद पर्दे के पीछे, एक मोमबत्ती जल रही थी और मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के शयनकक्ष में, देवप्रतिमाओं के सामने, एक छोटी-सी ढिबरी टिमटिमा और ज़रदार चौखटे को मृदु आभा में रंग रही थी। नीचे, बालकनी वाले दरवाज़े के पट खुल पड़े थे। लावरेत्स्की बाग में लकड़ी के एक बैंच पर बैठ गया। चेहरे को हाथों पर टिकाए वह दरवाज़े और लीज़ा के कमरे की खिड़कियों की ओर देखने लगा। नगर के घंटे ने रात के बारह बजने की सूचना दी, घर में एक छोटी दीवार-घड़ी ने तेज़ आवाज़ में टनटन कर बारह बजाए, रात के चौकीदार ने अपने बोर्ड को खटखटा कर संकेत-ध्वनि की। लावरेत्स्की का मस्तिष्क कुछ सोच नहीं रहा था, वह किसी चीज़ की आकांक्षा नहीं कर रहा था। उसका हृदय इस सुखद अनुभूति से उमगा था कि वह लीज़ा के निकट, उसके बाग में और उसी बैंच पर बैठा है जिसपर वह खुद जाने कितनी बार बैठ चुकी है ... लीज़ा के कमरे की रोशनी विलीन

हो गई। "शुभ रात्रि, मेरी प्यारी लड़की," लावरेत्स्की ने फुसफुसा कर कहा और अपनी उसी जगह पर, बिना हिले-डुले और अंधेरा होती खिड़की पर नज़र जमाए, बैठा रहा।

सहसा निचले तल्ले की एक खिड़की में रोशनी दिखाई दी जो हरकत करती हुई दूसरी और फिर तीसरी खिड़की में पहुंच रही थी... हाथ में मोमबत्ती लिए कोई कमरों में से गुज़र रहा था। "कहीं यह लीज़ा तो नहीं है? नहीं, यह असम्भव है!" लावरेत्स्की उठ खड़ा हुआ... सुपरिचित आकृति की एक झलक उसे दिखाई दी,–लीज़ा दीवानखानें में आ गई थी। वह सफ़ेद गाउन पहने थी, गुंथी हुई लटें उसके कंधों पर झूल रही थीं। दबे पांव वह मेज़ के पास पहुंची, उसके ऊपर झुकी, मोमबत्ती को टिका दिया और कोई चीज़ खोजने लगी। फिर, बाग़ की दिशा में मुड़ते हुए खुले दरवाज़े के निकट वह पहुंची और वहां ठिठक कर खड़ी हो गई,–शुभ्र वस्त्र पहनें एक कृशकाय प्रतिमा-सी। लावरेत्स्की ज़ोरों से थरथरा उठा।

"लीज़ा!" एक मौन फुसफुसाहट उसके होठों से निकली।

चौंक कर उसनें अंधेरे में देखा।

"लीज़ा!" लावरेत्स्की ने इस बार कुछ अधिक ज़ोर से कहा और परछाइयों की ओट में से बाहर निकल आया।

लीज़ा ने सहम कर अपनी गरदन उचकाई और सकपका कर पीछे की ओर सिमट गई। उसनें लावरेत्स्की की आवाज़ पहचान ली थी। उसने उसे तीसरी बार आवाज़ दी और उसकी ओर अपनी बाहें फैला दीं। वह दरवाज़े से खिसक कर बाग में बढ़ आई।

"अरे तुम!" वह फुसफुसा उठी, "तुम यहां?"

"मैं... मैं... सुनो तो," लावरेत्स्की ने फुसफुसा कर कहा और उसका हाथ थामते हुए उसे बैंच की ओर ले गया।

लीज़ा ने कोई विरोध नहीं किया। उसके चेहरे का पीलापन, उसकी थिर दृष्टि, उसका प्रत्येक हाव-भाव, अकथनीय अचरज व्यक्त कर रहा था। लावरेत्स्की नें उसे बैंच पर बैठा दिया और खुद उसके सामने खड़ा रहा।

"मेरा यहां आने का कोई इरादा नहीं था," उसने कहना शुरू किया, "जाने कैसे... खिंच आया... मैं... मैं... मैं तुमसे प्रेम करता हूं," विवश भाव से वह अचकचाया।

लीज़ा ने धीरे-धीरे सिर उठा कर उसकी ओर देखा। ऐसा मालूम होता था जैसे उसे केवल अब इस बात का चेत हुआ हो कि वह कहां है और वह क्या हो रहा है। उसने उठना चाहा, लेकिन उठ न सकी, और उसने हाथों में अपना चेहरा दुबका लिया।

"लीज़ा," लावरेत्स्की ने फुसफुसाकर कहा, "लीज़ा," उसने फिर दोहराया और उसके सामने घुटनों के बल झुक गया...

लीज़ा के कंधों में एक हल्की कंपकंपी सी दौड़ गई। उसके चम्पई हाथों की उंगलियां अभी भी उसके चेहरे पर सटी थीं।

"अरे यह क्या?" लावरेत्स्की बुदबुदाया और उसे एक दबी हुई सिसकी सुनाई दी। उसका हृदय पागलों की भांति धड़क उठा... वह इन आंसुओं का अर्थ समझ गया। "तो क्या तुम भी मुझसे प्रेम करती हो?" लीज़ा के घुटनों को छूते हुए वह फुसफुसा उठा।

"अरे उठो," उसके कानों में लीज़ा की आवाज़ आई, "उठो, फ़ियोदोर इवानिच। हम कर क्या रहे हैं?"

वह उठ कर उसके पास बैठ गया। उसकी सिसकियां अब बन्द हो गयी थीं और अपनी गीली आंखें उसपर जमाए वह ध्यान से उसकी ओर देख रही थी।

"मुझे डर लगता है। यह हम क्या कर रहे हैं?" उसने दुबारा कहा।

"मैं तुमसे प्रेम करता हूं," उसने एक बार फिर दोहराया, "तुम्हारे लिए मैं अपना समूचा जीवन अर्पित करने के लिए तैयार हूं।"

वह एक बार फिर कांप उठी, जैसे किसी ने डंक मार दिया हो, और अपनी आंखें उठा कर आकाश की ओर उसने देखा।

"यह सब ईश्वर के हाथ में है," उसने कहा।

"लेकिन तुम भी तो मुझसे प्रेम करती हो, लीज़ा? हम सुख से रहेंगे?"

लीज़ा ने अपनी आंखें नीचे गिरा लीं। उसने मृदुभाव से उसे अपनी ओर खींचा। लीज़ा का सिर उसके कंधों से टिक गया... उसने अपना सिर झुकाया, और उसके पीले होठों को अपने होठों से छुवा दिया।

* * *

आधा घंटा बाद लावरेत्स्की बाग के दरवाज़े पर खड़ा था। दरवाज़े में ताला पड़ा था, सो बाड़ा फांदने के सिवा और कोई चारा नहीं था। वह नगर में चला आया और नींद में डूबी गलियों से होकर चला। उसका हृदय एक प्रबल अप्रत्याशित आनन्द का अनुभव कर रहा था। उसके सभी सन्देह शान्त हो गए थे। "विदा, अतीत की प्रेत-छाया, विदा!" उसने मन ही मन सोचा, "वह मुझ से प्रेम करती है। वह मेरी होगी।" सहसा उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसके इर्दगिर्द का वायुमंडल एक अत्यन्त उत्कृष्ट विजय संगीत की ध्वनि से गूंज उठा हो। वह रुक गया। स्वरों का अलौकिक सौन्दर्य उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था, और वे एक शक्तिशाली बाढ़ का रूप धारण कर प्रवाहित हो रहे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे हृदय का आह्लाद, अपनी सम्पूर्ण व्यापकता के साथ, उस संगीत की धड़कनों में व्यक्त हो रहा हो,—खुद संगीत बन कर हवा

में तैर रहा हो। उसने अपने चारों ओर देखा। गीत के स्वर एक छोटे से घर की ऊपर की दो खिड़कियों में से आ रहे थे।

"लेम्म!" लावरेत्स्की ने चिल्लाकर कहा और उस घर की ओर दौड़ चला। "लेम्म! लेम्म!" वह ज़ोरों से दोहरा रहा था।

गीत के स्वर शान्त हो गए। खिड़की में रात का चोगा पहने एक वृद्ध की आकृति दिखाई दी। उसका सीना खुला था और बाल अस्तव्यस्त थे।

"ओह," उसने शालीनता के साथ कहा, "यह तुम हो?"

"अद्‌भुत, क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच, अद्‌भुत संगीत था वह! खुदा के लिए, दरवाज़ा खोलो।"

वृद्ध ने मुंह से एक भी शब्द नहीं कहा। शाही अन्दाज़ में उसने अपनी बांह को खिड़की से बाहर निकाला और सड़क वाले दरवाज़े की कुंजी नीचे गिरा दी। लावरेत्स्की एक ही छलांग में जीना चढ़ गया, तेज़ी से कमरे में पांव रख लेम्म की ओर बढ़ चला। लेकिन लेम्म ने, हाकिमाना अन्दाज़ में, हाथ हिलाकर, एक कुर्सी की ओर इशारा करते हुए रूसी भाषा में कहा—"वहां बैठ जाओ, और सुनो।" यह कह उसने पियानो को संभाला, गर्व के साथ और कड़ी नज़र से अपने इधर-उधर देखा और उसकी उंगलियां पर्दों पर थिरकने लगीं। लावरेत्स्की ने बहुत दिनों से ऐसा संगीत नहीं सुना था। मृदु अनुराग-भरे राग के प्रथम स्वर ने ही उसे अभिभूत कर लिया। ऐसा मालूम होता था जैसे प्रेरणा, आह्लाद और सौन्दर्य की जोत से आलोकित प्रकाश का एक पुंज ऊंचा उठ कर हवा में तैर और उसके साथ घुल-मिल कर एकाकार हो रहा हो। इस धरती पर जो कुछ मूल्यवान, वागगोचर और पवित्र था, उस सबको वह व्यक्त कर रहा था। चिरन्तन उदासी की उसांस छोड़ता और उत्तरोत्तर क्षीण होता वह आकाश की गहराइयों को छूता उनमें विलीन होता प्रतीत हो रहा था। लावरेत्स्की संभल कर सीधा बैठ गया और उसके रोम-

रोम में आनन्दातिरेक का कम्पन दौड़ने लगा। ऐसा मालूम होता था जैसे संगीत के स्वरों ने उसके हृदय के तारों को झंझोड़ दिया हो जो कि अभी तक नवआविष्कृत प्रेम की चेतना से थरथरा रहा था, स्वयं प्रेम की स्वरावली से अनुरणित था। "एक बार और," राग के अन्तिम स्वर के शान्त होते न होते उसने फुसफुसा कर कहा। वृद्ध ने बाज़ की भांति तेज़ नज़र से उसे देखा, हाथ से अपने सीने को थपथपाया और अपनी मातृभाषा में धीमी आवाज़ में कहा, "यह मेरी महान साधना का फल है!" इसके बाद अपनी अद्भुत गीत-रचना को उसने दूसरी बार सुनाया। कमरे में मोमबत्तियां नहीं थीं, उगते हुए चांद की तिर्छी किरनें खिड़की में भीतर आ रही थीं, मृदु वायु में स्वरों का कम्पन बसा था, दीन-हीन छोटा-सा कमरा पवित्र तीर्थ की भांति मालूम होता था और वृद्ध का सिर, गोधूलि के रुपहले आलोक से मण्डित, बहुत ही शुभ्र और अनुप्राणित प्रतीत हो रहा था। लावरेत्स्की उसके पास पहुंचा और उसने उसे अपनी बांहों में लपेट लिया। उसका यह आलिंगन पहले तो लेम्म को अच्छा नहीं मालूम हुआ, उसने उसे अपनी कोहनी से अलग तक करना चाहा, फिर बड़ी देर तक वैसे ही निश्चल और कठोर मुद्रा में बैठा रहा, चेहरे पर रूखाई का भाव धारण किए। दो बार 'आह' के सिवा अन्य कोई शब्द उसके मुंह से नहीं निकला। अन्त में उसकी अभिभूत आकृति कुछ ढीली पड़ी, लावरेत्स्की की व्यग्र सराहना के जवाब में एक धुंध की-सी मुसकान उसके होंटों पर दिखाई दी और इसके बाद वह बच्चों की भांति हल्की सिसकियां भरता रो उठा।

"यह एक अद्भुत संयोग है," उसने कहा, "कि तुम ठीक इस समय आए। लेकिन मैं जानता हूं,—मैं सब कुछ जानता हूं।"

"तुम सब कुछ जानते हो?" सकपका कर लावरेत्स्की ने पूछा।

"तुमने मुझे सुना," लेम्म ने जवाब दिया, "क्या तुमने इतना भी अनुभव नहीं किया कि मैं सब कुछ जानता हूं?"

सुबह की सफ़ेदी फैल चली। लेकिन लावरेत्स्की की पलकें नहीं झपकीं। सारी रात वह बिस्तरे पर बैठा रहा। और लीज़ा भी उस रात नहीं सो सकी। सारी रात प्रार्थना करते बीती।

३५

लावरेत्स्की के बचपन और उसकी शिक्षा-दीक्षा के दौर से पाठक परिचित हैं। अब हम लीज़ा की शिक्षा-दीक्षा के बारे में कुछ कहने का प्रयत्न करेंगे। दस वर्ष की अवस्था में उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। लेकिन अपने जीवन-काल में पिता ने उसकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया था। वह सिर से पांव तक व्यापार की चिन्ताओं में डूबा रहता, हर घड़ी अपने धन का अम्बार लगाने की योजनाओं में फंसा रहता। मिज़ाज का वह चिड़चिड़ा था, चुस्त और उतावला। अपने बच्चों के कपड़े-लत्तों, शिक्षकों और गवर्नेसों के लिए धन खर्च करने में वह कोई आपत्ति नहीं करता, लेकिन उन्हें—खुद उसके ही शब्दों में चिचियाते बच्चों को—कंधे पर बैठा कर नाचना उसे बड़ा बुरा मालूम होता। सच तो यह है कि बच्चों को दुलराने के लिए उसके पास समय भी नहीं था,—वह काम करता था, अपने व्यापार को संभालता था, बहुत कम सोता था, मुश्किल से कभी ताश खेलता था, और फिर अपने काम में जुट जाता था। वह अपनी तुलना ढेंकी में जुते घोड़े से किया करता था। "हां," अपने सूखे हुए होंठों पर तीखी मुसकान लाते हुए उसने मृत्युशय्या पर पड़े-पड़े कहा था, "कितनी जल्दी चुक गया मेरा यह जीवन।" मारिया दिमीत्रियेवना ने भी, अपने पति की अपेक्षा लीज़ा पर कुछ अधिक ध्यान नहीं दिया,—हालांकि लावरेत्स्की के सामने शेखी

बघारते हुए उसने कहा था कि अपने बच्चों के लालन-पालन का सारा बोझ अकेले उसी ने उठाया है। गुड़िया की भांति वह उसका सिंगार करती, आगन्तुकों के सामने उसके सिर पर हाथ फेरती और उसके सामने ही उसे चतुर मुनिया और बहुत ही प्यारी लड़की कहती, — और बस। हर घड़ी की देख-भाल उसके — आराम पसन्द इस कुलीन महिला के — बूते की बात नहीं थी। अपने पिता के जीवन-काल में लीज़ा एक गवर्नेस के — पेरिस निवासिनी कुमारी मोरो के — संरक्षण में रही। उसकी मृत्यु के बाद मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने उसकी देख-भाल की। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना से पाठक परिचित हैं। कुमारी मोरो छुहारा-सी एक सिकुड़ी जीव थी। चिड़िया की भांति लघु-सा उसका मस्तिष्क था और चिड़िया की भांति ही उसकी चाल-ढाल थी। अपनी युवावस्था में उसने काफ़ी रंगीन जीवन बिताया था, लेकिन अब वृद्धावस्था में पांव रखते समय — केवल दो ही शौक उसके रह गए थे: मिठाइयां और ताश। जब उसका पेट पूरी तरह भरा होता, न वह ताश खेलती होती, न बतियाती, — तब उसका चेहरा ऐसा मालूम होता जैसे उसपर मृत्यु का नकाब पड़ा हो। बस, विचारों और भावनाओं से प्रत्यक्षतः शून्य वह अपनी जगह पर बैठी रहती, देखती और सांस लेती रहती। यह तक कहना कठिन था कि वह दयालु है। चिड़ियों में दया जैसी कोई चीज़ नहीं होती। कारण चाहे जो भी हो — या तो इसलिए कि उसने अपनी युवावस्था रंगीनियों में बिताई थी, या फिर इसलिए कि बचपन से ही वह पेरिस की हवा में पली थी — एक प्रकार की सस्ती सार्वभौमिक अनास्था ने उसमें घर कर लिया था जो इस तरह के साधारण उद्गारों को जन्म देती थी: "बकवास, — निरी बकवास है यह सब।" वाक्यों को तोड़-मरोड़ कर लेकिन ठेठ पेरिस की बोली का वह प्रयोग करती थी, कानाफूसी की उसे आदत नहीं थी और

अस्थिर बुद्धि से वह मुक्त थी। एक गवर्नेस में इसके सिवा और क्या चाहिए? लेकिन लीज़ा पर उसने कोई खास प्रभाव नहीं डाला, उससे कहीं शक्तिशाली प्रभाव तो अगाफ़िया व्लासियेवना ने डाला जो कि लीज़ा की नर्स थी।

इस स्त्री का – लीज़ा की नर्स का – इतिहास अत्यन्त दिलचस्प था। किसान घराने में उसने जन्म लिया था। सोलह वर्ष की अवस्था में एक दहकान से उसकी शादी हो गई। परन्तु वह अपनी किसान बहनों से एकदम भिन्न थी। उसका पिता इसी जागीर पर बीस साल तक कारिन्दे का काम कर चुका था। उसने भारी धन जमा कर लिया था और उसे खूब दुलराता था, – वह उसकी मुंहचढ़ी बेटी थी। वह बेहद सुन्दर थी, खूब सजधज कर निकलती थी, खूब चतुर, साहसी और मधुर-भाषी। उसके मालिक ने – मारिया दिमीत्रियेवना के पिता दिमीत्री पेस्तोव ने जो शान्त एवं संकोचशील था, – एक बार धान काटते उसे देखा, उससे बातें कीं और उसके प्रेम में बुरी तरह फंस गया। इसके शीघ्र बाद ही वह विधवा हो गई और पेस्तोव ने – विवाहित होने पर भी – उसे अपने घर में रख लिया और कुलीन घराने की महिला की भांति उसे इज़्ज़त से रक्खा। अगाफ़िया ने तुरत सब कुछ अपना लिया और बड़ी खूबी से अपनी नयी भूमिका का निर्वाह करने लगी। ऐसा मालूम होता था जैसे वह सदा से ही इस जीवन की आदी हो। उसका रंग निखर आया, बदन भर चला, और मसलिन की आस्तीनों के नीचे आटे-सी सफ़ेद उसकी बांहें ऐसे झलकतीं जैसे वह किसी सौदागर की पत्नी हो। मेज पर समोवर सदा गर्म रहता, रेशम और मखमल के सिवा अन्य कपड़ों को वह हाथ न लगाती और परों के मुलायम बिछौने पर सोती। पांच साल तक उसने इस स्वर्ग में निवास किया। इसके बाद दिमीत्री पेस्तोव की मृत्यु हो गई। उसकी विधवा पत्नी ने – जो कि एक दयावान स्त्री थी – अपने

स्वर्गीय पति की स्मृति का ध्यान कर, उसके साथ कड़ा व्यवहार नहीं किया इसलिए और भी अधिक कि अगाफ़िया कभी उसके मार्ग में आड़े नहीं आती थी, उससे समुचित दूर रहती थी। फिर भी अपनी गोशाला के रखवाले के साथ उसका विवाह कर उसने उसे अपनी आंखों से ओझल कर दिया। तीन साल गुज़र गए। इसके बाद, गर्मियों के उमस-भरे एक दिन, मालकिन मवेशियों के अपने बाड़े को देखने गई। अगाफ़िया ने इतनी मधुर और ठंडी मलाई से उसका सत्कार किया, इतनी शिष्ट साफ़सुथरी, प्रसन्न और सन्तुष्ट वह दिखायी दी कि उसने उसे माफ़ कर दिया और उसे फिर अपने घर में ले गई। छै महीने बीतते न बीतते वह उसकी इतनी घनिष्ठ बन गई कि उसने उसे हाउसकीपर नियुक्त कर दिया और घर की समूची व्यवस्था उसके हाथों में सौंप दी। अगाफ़िया ने एक बार फिर संभाल लिया, उसका बदन फिर भर चला और रंग निखर आया। उसे अपनी मालकिन का अटूट विश्वास प्राप्त था। इस प्रकार पांच साल और निकल गए। इसके बाद अगाफ़िया को फिर दुःख का मुंह देखना पड़ा। उसका पति जिसे उसने भण्डारी के पद पर नियुक्त रखा दिया था, नशे के फेर में पड़ गया। वह अक्सर घर से गायब रहता, और अन्त में उसने मालकिन की चांदी की छै चम्मचें चुरा लीं और उन्हें, फिलहाल, अपनी पत्नी के बक्से में छिपा कर रख दिया। लेकिन यह छिपा न रह सका। उसे फिर मवेशियों के बाड़े में भेज दिया गया और अगाफ़िया को भी उसके ऊंचे पद से अलग कर दिया गया। उसे घर से तो नहीं निकाला गया, लेकिन उसका पद घटा कर उसे सीने-पिरोने के काम में लगा दिया गया। बेलदार टोपी की जगह अब सिर पर गुलूबन्द बांधने के लिए उसे बाध्य किया गया। अगाफ़िया ने—और यह देखकर सबको अचरज हुआ कि—ज़रा भी चूं नहीं की और चुपचाप इस तूफ़ान के आगे घुटने टेक दिए। उसकी आयु उस समय तीस पार

कर चुकी थी। उसके सभी बच्चे मर चुके थे और उसका पति भी इसके बाद अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहा। समय का तकाज़ा था कि वह चेते और उसने ऐसा ही किया। वह अब किसी से न बोलती, धर्म में डूबी रहती, सुवह या सांझ किसी भी प्रार्थना को कभी खतम न होने देती। अपने सारे बढ़िया कपड़ों को उसने बांट दिया। इस प्रकार चुपचाप, निरीह और गम्भीर न वह किसी से झगड़ा करती और जो कुछ भी होता उसे चुपचाप सह लेती उसने पन्द्रह साल काट दिए। अगर कोई अपमान करता तो वह निरीह भाव से सिर झुका लेती और ताड़ना के लिए कृतज्ञता प्रकट करती। मालकिन ने उसे बहुत पहले ही माफ़ कर दिया था, पहले की भांति फिर उसे अपनी कृपा का पात्र भी वना लिया था, यहां तक कि–उपहार के रूप में–अपनी टोपी भी उसे भेंट कर दी थी, लेकिन अगाफ़िया ने अपने रूमाल को फिर नहीं छोड़ा और सदा अनुज्वल सादे कपड़े ही वह पहनती रही। मालकिन की मृत्यु के बाद वह और भी अधिक शान्त तथा विनत हो गई। रूसी आसानी से डरने और प्रेम करने लगता है, लेकिन उसका सम्मान पाना आसान नहीं। वह जल्दी या विना कसे-परखे प्राप्त नहीं होती। अगाफ़िया का घर में सभी आदर करते। पहले की त्रुटियों की ओर कोई भूल कर भी इशारा नहीं करता, पुराने मालिक के साथ जैसे उन्हें भी दफ़ना दिया गया।

जब कलीतिन ने मारिया दिमीत्रियेवना से विवाह किया तो घर की देख-भाल का काम उसने अगाफ़िया के हाथों में सौंपना चाहा। लेकिन उसका यह भय कि कहीं वह फिर "मायामोह में न फंस जाए," दूर नहीं किया जा सका और उसने घर की व्यवस्था संभालने से उसे मना कर दिया। जब वह उसपर चिल्लाया तो वह विनत भाव से गरदन झुका कर कमरे से बाहर चली गयी। कलीतिन लोगों की कद्र जानता था। उसने अगाफ़िया को भी परखा और सदा उसका ध्यान रखा। जब वह

नगर में आकर बसा तो उसने खुद उसकी इच्छा के अनुसार—उसे लीज़ा की नर्स नियुक्त कर दिया। लीज़ा तब पांचवें वर्ष में पांव रख रही थी।

अपनी नयी नर्स के कड़े और गम्भीर दिखने वाले चेहरे से पहले तो लीज़ा डरी, लेकिन शीघ्र ही वह उसकी अभ्यस्त हो गई और गहरे हृदय से उसे प्रेम करने लगी। वह खुद भी एक गम्भीर लड़की थी। अपने पिता की भांति उसकी आकृति का कटाव भी बहुत कुछ वैसी ही नग्न स्पष्टता का भाव लिए था, केवल उसकी आंखें अपने पिता की आंखों से भिन्न थीं। उनमें तरस और दया की एक ऐसी मृदु भावना झलकती जो बच्चों में बिरले ही मिलती है। गुड़ियों से उसे कोई मोह नहीं था, उसकी हंसी न तो दीर्घ होती थी, न ज़ोरदार, और उसकी चालढाल में गम्भीरता का पुट था। उसका मस्तिष्क मौलिक चिन्तनशील सांचे में ढला था, लेकिन किसी भी विषय पर उसके मन में विचार उत्पन्न हो जाते। कुछ क्षण तक वह चुप रहती और फिर, आम तौर से, कोई ऐसा सवाल पूछ बैठती जिससे पता चलता कि उसका मस्तिष्क किसी नयी छाप या अनुभव में व्यस्त है। बहुत छोटी उम्र में ही उसने तुतलाना छोड़ दिया था, और तीन वर्ष की अवस्था से वह काफ़ी साफ़ बोलने लगी थी। वह अपने पिता से डरती थी, मां के प्रति उसकी भावनाएं अनिश्चित थीं—न तो वह उससे डरती थी और न ही उसके प्रति प्रेम के कोई चिन्ह उसमें दिखाई देते थे। वैसे अगर देखा जाए तो, अगाफ़िया के प्रति भी प्रेम के कोई प्रकट चिन्ह उसमें नज़र नहीं आते थे, हालांकि एक मात्र वही ऐसी थी जिससे वह प्रेम करती थी। अगाफ़िया कभी उससे अलग नहीं होती थी। दोनों एक अजीब दृश्य प्रस्तुत करते थे। एकदम काले कपड़े पहने और सिर पर काला रूमाल बांधे, मोम जैसा पीला किन्तु अभी तक सुन्दर और भावपूर्ण चेहरा लिए अगाफ़िया

सीधी-सतर बैठी मोज़ा बुनती रहती। उसके पांवों के पास ही, एक छोटी-सी आराम कुर्सी पर, उसी प्रकार अपने किसी छोटे काम में व्यस्त या अपनी स्वच्छ आंखों को ऊपर उठाए, गम्भीर मुद्रा में अगाफ़िया की बातें सुनती, लीज़ा भी बैठी रहती। अगाफ़िया परियों की कहानियां नहीं, बल्कि धीमे और समतल स्वरों में मा मरियम, साधु-सन्तों शहीदों और धर्मप्राण पुरुषों-स्त्रियों की जीवनियां सुनाती। वह उसे बताती थी कि सन्त किस प्रकार जंगलों में जाकर रहते थे, किस प्रकार मुक्ति लाभ करते थे, भूख और अभावों का जीवन बिताते थे, राजा-महाराजा किसी से भय नहीं खाते थे और केवल प्रभु ईसा के आगे माथा नवाते थे। वह उसे बताती कि हवा में उड़ने वाले पक्षी किस प्रकार उनके लिए खाना लाते थे और धरती पर चलने वाले वन्य जीव किस प्रकार उनके आदेशों का पालन करते थे और किस प्रकार, जहां-जहां उनके रक्त की बूंदें गिरती थीं, फूलों की क्यारियां वहां खिल उठती थीं। "क्या, वासन्ती पुष्प?" लीज़ा ने एक बार पूछा,—वह फूलों की बहुत शौकीन थी... अगाफ़िया बहुत ही गम्भीर और विनत भाव के साथ लीज़ा से बोली, मानो इतने शुभ्र और पवित्र शब्दों का उच्चारण करने योग्य पात्रता का वह अपने में अनुभव न करती हो। लीज़ा जैसे उसके होंठों से हिलग जाती—और एक सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापी ईश्वर की छवि मधुर ओज के साथ उसकी आत्मा में सरसराने लगती, पवित्र और श्रद्धामय आतंक से वह भर जाती,—जब कि ईसा के अस्तित्व में वह एक निकटता और घनिष्ठता का—निरे अपनत्व का—अनुभव करती। अगाफ़िया ने उसे यह भी सिखाया कि प्रार्थना कैसे की जाती है, कभी-कभी पौ फटते ही, वह लीज़ा को जगा देती, जल्दी से उसे कपड़े पहनाती और उसे अपने साथ लेकर सुबह की प्रार्थना के लिए, चुपचाप घर से चल देती। लीज़ा सांस रोके, अंगूठों के बल, उसका अनुसरण

करती। सुबह का तड़का, पाला और धुंध, सूना गिरजा और ठंड, लुकछिप कर इस प्रकार आकस्मिक ढंग से गायब होना, दबे पांव घर लौट कर फिर बिस्तरे में छिप रहना—यह समूचा अनुभव कुछ इतना विचित्र था – वर्जित, अद्भुत अनुभव और धार्मिकता का उसमें कुछ ऐसा मिश्रण था कि बालिका का हृदय, अन्तर्मन की गहराइयों तक, थरथरा उठता। अगाफ़िया कभी किसी को नहीं झिड़कती और, अनुशासन-बद्ध न होने के लिए लीज़ा को भी नहीं डांटती। जब वह नाराज़ होती तो बस चुप्पी साध लेती। लीज़ा समझ जाती कि इस चुप्पी का क्या अर्थ है। तुरंत पकड़ लेने वाली अपनी बाल-बुद्धि से वह उस समय भी यह समझ लेती जब अगाफ़िया दूसरों से – मारिया दिमीत्रियेवना या खुद कलीतिन से – झुंझलाई होती। तीन साल तक लीज़ा अगाफ़िया की देख-भाल में रही, इसके बाद फ़्रांस की चंचल चित्तवाली कुमारी मोरो ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया। लेकिन बेरस चालढाल और "बकवास, निरी बकवास है यह सब" तकिया कलाम वाली यह फ़्रेंच स्त्री लीज़ा के हृदय में उसकी प्यारी नर्स की भांति स्थान नहीं ग्रहण कर सकी जिसकी जड़ें गहरी जम चुकी थीं। इसके अलावा, लीज़ा की देख-भाल से मुक्त हो जाने पर भी अगाफ़िया अभी घर में ही थी और लीज़ा से बहुधा मिलती रहती थी। लीज़ा अब भी, पहले की भांति, उसकी वफ़ादार थी।

लेकिन कलीतिन के घर में उसके पांव रखने के बाद, मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना से अगाफ़िया की नहीं पटी। चिड़चिड़े और ज़िद्दी स्वभाव वाली वृद्धा मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना को किसान-घर में जन्मी इस स्त्री का गम्भीर और शालीन रंग-ढंग पसन्द नहीं आया। अगाफ़िया तीर्थयात्रा के लिए चल दी और फिर वापिस नहीं लौटी। उड़ती हुई अफ़वाहें ज़रूर सुनने

को मिलीं कि वह रास्कोल्निकी* पन्थ के एक मठ में अपने जीवन के शेष दिन बिता रही है। जो हो, लीज़ा के हृदय पर वह अपनी अमिट छाप छोड़ गई। पहले की भांति वह अब भी उतने ही उछाह से गिरजा जाती, बड़े चाव से प्रार्थना करती और कुछ ऐसे नियंत्रित तथा सलज्ज भाव से विभोर हो उठती कि मारिया दिमीत्रियेवना उसे देख कर ही मन में अचरज से भर जाती थी। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना भी—बावजूद इसके कि वह लीज़ा की स्वतंत्रता पर कभी कोई रोक नहीं लगाती—उसके इस उछाह को संभालने का प्रयत्न करती और उसे इतनी बार धरती पर माथा टेकने से रोकती,—कहती कि कुलीन घराने की लड़की के लिए यह शोभा नहीं देता। लीज़ा अच्छी तरह, मतलब यह कि मेहनत के साथ, पढ़ती। वह कोई खास प्रतिभाशालिनी नहीं थी, न ही उसने कोई भारी दिमाग पाया था। केवल कड़ी मेहनत उसका सम्बल थी, और उसी के सहारे वह सीखती थी। पियानो वह अच्छा बजाती, लेकिन लेम्म के सिवा अन्य कोई नहीं जानता था कि इसके लिए कितनी मेहनत वह करती थी। वह ज़्यादा नहीं पढ़ती थी, उसके पास 'अपने शब्द' नहीं थे, लेकिन उसके पास अपने विचार थे और अपने ढंग से वह चलती थी। वह व्यर्थ ही अपने पिता की बेटी नहीं थी। उस पिता की जो हमेशा अपने मन की करता था और इस प्रकार वह बड़ी होती गई—चुपचाप, बिना किसी उतावली के—और उन्नीसवें वर्ष में उसने पांव रखा। वह बहुत ही सुन्दर थी, और इसका उसे भान तक नहीं

---

* १७वीं शताब्दी में और १८वीं शताब्दी के प्रथम अर्द्ध में रूस में चर्च के अधिकारियों ने चर्च की व्यवस्था को सुधारा था। इसके बाद भी कुछ ऐसे लोग थे जो नये सुधारों को नहीं मानते थे। ये लोग 'रास्कोल्निकी' कहलाये। इनको बड़ी निर्ममता से कुचल दिया गया।

था। उसकी हरकत में एक कमनीयता थी, अप्रयासित और अनगढ़, एक प्रकार का अटपटापन लिए। उसकी आवाज़ में अछूते यौवन का रजत-तन्त्रीसम निनाद था, उछाह की एक हल्की-सी रमक भी सुहावनी मुसकान बन कर उसके होंठों पर उभर आती थी, और उसकी आंखें एक गहरे और दुलराते आलोक से निखर उठती थीं। उसकी कर्तव्य-भावना काफ़ी प्रबल थी, किसी को चोट पहुंचाते वह डरती थी। उसका हृदय कोमल और दया से भरा था। सभी से – विशेष रूप में किसी एक से नहीं – वह प्रेम करती थी। हृदय की समूची उमंग, कोमलता और निरीहता के साथ वह केवल एक को प्यार करती थी, – ईश्वर को। उसके जीवन के इस समतल प्रवाह को जिस व्यक्ति ने सब से पहले विचलित किया, वह था लावरेत्स्की।

एसी थी हमारी यह लीज़ा।

३६

अगले दिन सुबह के ग्यारह बजने के कुछ ही बाद, लावरेत्स्की कलीतिन के यहां गया। रास्ते में उसे पान्शिन मिला जो घोड़े पर सवार तेज़ीं से उसके पास से निकल गया। उसने अपना हैट भौंहों तक नीचे खींच रखा था। कलीतिन के यहां जब वह पहुंचा तो, उनके साथ परिचय होने के बाद पहली बार, किसी ने उससे भेंट नहीं की। मारिया दिमी-त्रियेवना 'आराम' कर रही थी, – चाकर ने बताया, "मालकिन" के सिर में दर्द था। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना और येलिज़ावेता मिखाइलोवना घर पर नहीं थीं। लीज़ा से मिलने की क्षीण आशा हृदय में संजोये लावरेत्स्की बाग में टहलने लगा, लेकिन कोई नज़र नहीं आया। दो घंटे बाद लौटकर जब उसने फिर मालूम किया तो चाकर ने, कनखियों से उसकी ओर देखते हुए, पहले वाली बातों को दोहरा दिया। एक ही दिन में

तीसरी बार खटखटाना उसे बड़ा अटपटा मालूम हुआ। सो उसने वसीलेवस्कोये जाने का निश्चय किया। आखिर वहां का काम-धाम तो देखना ही होगा। रास्ते में उसने अनेक योजनाएं बनाईं। हर योजना दूसरी से बढ़चढ़ कर थी। लेकिन जब वह अपनी बुआ के छोटे से गांव में पहुंचा तो उसका सारा उछाह बैठ गया। उसने अन्तोन से बातचीत शुरू की। लेकिन संयोग की बात, वृद्ध का हृदय उस समय उदास स्मृतियों से उमड़घुमड़ रहा था। उसने लावरेत्स्की को बताया कि मरने से पहले ग्लाफ़ीरा पेत्रोवना ने किस प्रकार खुद अपने हाथ का मांस दांतों से नोच लिया था, और फिर, कुछ रुक कर, उसांस छोड़ते हुए बोला, "हर आदमी की किसमत में, मेरे अन्नदाता, अपने को खाना बदा ही है।" जब लावरेत्स्की शहर के लिए चल पड़ा तब काफ़ी रात गुज़र चुकी थी। विगत सांझ के संगीत के स्वर उसके मस्तिष्क में गूंज रहे थे, अपनी समूची कोमल स्पष्टता के साथ लीजा की छवि उसकी कल्पना में तैर रही थी। यह सोच कर कि वह उससे प्यार करती है, उसका रोम-रोम उमगा था। मस्तिष्क में एक प्रकार की थिरता और हृदय में खुशी का भाव लिए वह अपने नगरवाले घर की ओर जा रहा था।

हाल में पांव रखते ही सब से पहले पतचौली की गंध ने—जो उसे बड़ी बुरी मालूम होती थी—उसके मुंह पर थपेड़े मारे। यहां भी बड़े-बड़े मुसाफ़िरी बक्सों और सूटकेसों का अम्बार लगा था। अपने वालेट का चेहरा जो उसके आने की भनक मिलते ही बाहर दौड़ आया था, उसे बड़ा अजीब मालूम हुआ। लेकिन इन सब बातों की खोजबीन में उलझे बिना ही उसने ड्राइंगरूम में पांव रखा... उससे मिलने के लिए सोफ़ा पर से एक महिला उठी। वह काले रेशम की झब्बेदार पोशाक पहने थी। केम्बिक के रूमाल अपने पीले चेहरे की ओर ले जाते हुए वह दो-चार डग आगे बढ़ी, पूरे जंचाव के साथ संवारे अपने सुगंधित सिर को उसने

झुकाया, – और उसके पांवों पर गिर पड़ी... केवल तभी वह उसे पहचान सका। यह महिला उसकी पत्नी थी।

उसकी सांस जहां-की-तहां रह गयी... दीवार ने उसे सहारा दिया।

"देखो थियोडोर, मुझे दुतकारना नहीं," उसने फ्रेंच में कहा।

उसकी आवाज़ छुरे की धार की भांति उसके हृदय को काटती चली गई।

वह सूनी आंखों से उसकी ओर ताक रहा था। फिर भी, उसे ऐसा आभास हुआ, जैसे वह पहले से अधिक चिट्टी और अधिक भरी भरी हो गई है।

"थियोडोर," उसने फिर कहना शुरू किया, – अपनी आंखों को ऊपर उठाते और पालिश किए गुलाबी नाखूनों से युक्त अपने सुन्दर हाथों को सावधानी से मरोड़ते हुए, "थियोडोर, मैंने तुम्हें चोट पहुंचाई, गहरी चोट पहुंचाई, – इतना ही नहीं, बल्कि मैं एक बदकार स्त्री हूं! फिर भी, देखो, मुझे दुतकारना नहीं। पश्चाताप ने मुझे झंझोड़ डाला है, खुद अपने लिए मैं एक बोझ बन गई हूं, अपनी इस स्थिति को मैं अब बरदाश्त नहीं कर सकती, जाने कितनी बार मैंने तुमसे मनुहार करनी चाही, लेकिन तुम्हारे गुस्से का ध्यान कर रह गई; मैंने अतीत से नाता तोड़ने का निश्चय कर लिया है... मैं इतनी ग्रस्त और खिन्न थी," अपनी भौंहों और गालों पर हाथ फेरते हुए फ्रेंच शब्दावली में उसने कहा – "मैं इतनी रुग्ण थी, कि अपनी मृत्यु की अफ़वाहों का लाभ उठा कर मैंने उस सब से नाता तोड़ लिया, और दिन या रात, एक क्षण का भी विराम लिए बिना मैं यहां खिंची चली आई। एक लम्बे अर्से तक मुझे अपने हृदय से जूझना पड़ा, तब कहीं जाकर तुम्हारे – अपने न्यायाधीश के... अपने भाग्य निर्णायक के... सामने आने का मैं साहस कर सकी।

अपनी सारी दुविधाओं को मैंने परास्त किया, और मैंने याद किया कि कितनी मेहरबानी से तुम सदा मेरे साथ व्यवहार करते थे। मास्को में मुझे तुम्हारा अतापता मिला" और, फ़र्श पर से धीरे-धीरे उठते और आरामकुर्सी के कगारे पर बैठते हुए उसने कहा, "सच मानो, मैं इस जीवन से ऊब चुकी थी। मौत का खयाल बराबर मेरे मस्तिष्क में मंडराता रहता था, और मैं उस भयानक डग को उठाने में ज़रा भी नहीं अचकचाती—ओह, यह जीवन अब एक असह्य बोझ बन गया है—लेकिन अपनी लड़की का—नन्हीं आदा का—खयाल कर मैं अपने जीवन का अन्त नहीं कर सकी। वह यहीं है, दूसरे कमरे में सो रही है,—अभागी बालिका, एकदम निरीह! वह थक गई थी,—खुद अपनी आंखों से तुम उसे देखोगे। जो हो, वह निरपराध है, उसने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। ओह मेरे भगवान, मेरा क्या होगा, मैं कितनी दुःखी हूं!" मदाम लावरेत्स्काया चीखी और फूट-फूट कर रोने लगी।

आखिर लावरेत्स्की सचेत हुआ। दीवार से वह अलग हट गया और दरवाज़े की ओर मुड़ा।

"अरे, क्या तुम जा रहे हो?" उसकी पत्नी ने निराशा से चीख कर कहा, "ओह, तुम कितने क्रूर हो। बिना एक शब्द कहे, या बिना कोई शिकवा-शिकायत ही किए... यह उपेक्षा सहन नहीं होती, यह भयानक है!"

लावरेत्स्की रुका।

"तुम मुझसे क्या सुनना चाहती हो?" उसने भावशून्य आवाज़ में कहा।

"कुछ नहीं,—कुछ भी नहीं," वह उतावली से फूट पड़ी, "मैं जानती हूं कि मैं किसी चीज़ का दावा नहीं कर सकती। विश्वास करो, मैं पागल नहीं हूं। मैं आशा नहीं करती—आशा करने का साहस तक

नहीं करती – कि तुम मुझे माफ़ कर दोगे। मैं केवल एक ही अनुरोध करना चाहती हूं, – बस मुझे आदेश दो कि मैं क्या करूं, – कहां रहूं? तुम्हारे आदेश का, जो भी तुम दोगे बन्धक-दास की भांति मैं पालन करूंगी।"

"मुझे तुम्हें कोई आदेश नहीं देना है," लावरेत्स्की ने उसी जीव-शून्य लहजे में कहा, "तुम जानती हो कि हम दोनों के बीच कुछ शेष नहीं रहा है... अब तो और भी अधिक। तुम जहां मन हो रह सकती हो, और अगर तुम्हें यह अलाउन्स काफ़ी न मालूम..."

"ओह, इतने भयावह शब्द मुंह से न निकालो," वरवारा पावलोवना ने बीच में ही कहा, "कम से कम मेरे साथ इतनी दया करो... इस देव-कन्या की खातिर..."

यह कह, बेसुध-सी, वह पास वाले कमरे में भागी हुई गई और बहुत ही नफासत से कपड़े पहने एक छोटी लड़की को अपनी बाहों में लिए उसी क्षण लौट आई। उसके छोटे-से गुलाबी चेहरे के इर्दगिर्द सुनहरी लम्बे बाल लहरा रहे थे, उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखों में नींद भरी थी, उसके होठों पर मुसकराहट थिरक रही थी और रोशनी से उसकी आंखें मिचमिचा रही थीं, और उसका छोटा-सा भंवर पड़ा हाथ मां की गरदन का सहारा लिए था।

"आदा, यह देखो तुम्हारे पिताजी आये हैं," उसकी आंखों के ऊपर से बालों की लटें हटाते और उसका मुंह चूमते हुए वरवारा पावलोवना ने फ़्रेंच भाषा में कहा, "मेरे साथ अब तुम इनसे कहो..."

"क्या यह सचमुच पापा है?" बालिका ने फ़्रेंच ही भाषा में तोतली जुबान में कहा।

"हां मेरी बच्ची," वरवारा पावलोवना ने कहा, "तू इन्हें प्यार करती है? करती है न?"

लावरेत्स्की अब और अधिक सहन नहीं कर सका।

"किस नाटक में हूबहू ऐसा ही एक दृश्य आता है ?" उसने बुदबुदाते हुए कहा और बाहर चला गया।

वरवारा पावलोवना, कुछ क्षणों तक, निश्चल खड़ी रहीं। फिर उसने धीरे से अपने कंधों को बिचकाया, छोटी लड़की को पासवाले कमरे में ले गई और उसके कपड़े उतार कर उसे फिर बिस्तरे पर सुला दिया। इसके बाद उसने एक पुस्तक उठाई, लैम्प के पास रोशनी में बैठी और करीब एक घंटे तक बाट जोहने के बाद खुद भी बिस्तरे पर पहुंच गई।

"सब ठीक तो है न, मदाम ?" चोली के बंद खोलते हुए उसकी नौकरानी ने फ़्रेंच भाषा में पूछा। वह फ़्रेंच थी और पेरिस से उसे वह अपने साथ ले आई थी।

"हां सब ठीक है, जूस्टीन," उसने फ़्रेंच भाषा में जवाब दिया। फिर बोली, "वह कुछ ढला हुआ मालूम होता है। लेकिन मैं समझती हूं कि अब भी वह उतना ही सदय है जितना कि वह पहले था। मेरे रात के दस्ताने ले आओ, और कल के लिए ऊंचे कालर वाला मेरा सलेटी गाउन निकाल लेना। और देखो, आदा के लिए, कबाब न भूलना... मैं जानती हूं कि कबाब यहां मिलना आसान न होगा, फिर भी कोशिश तो करना ही।"

"जब वार करना चाहते हो तो वार सहने के लिए भी तैयार रहो" जूस्टीन ने फ़्रेंच भाषा में कहा, और बत्ती बुझा दी।

३७

नगर की सड़कों पर दो घंटे से भी अधिक तक लावरेत्स्की चक्कर लगाता रहा। इसी प्रकार, उसे याद आया, एक रात पेरिस की बाह्य बस्तियों में भी उसने चक्कर लगाए थे। उसका हृदय दुःख से छलनी

हो रहा था और उसका मस्तिष्क, बोझिल और सुन्न, वैसे ही अंधियाले निरर्थक और झुंझलाहट भरे विचारों के बवंडर में घूम रहा था। "वह जीवित है, वह फिर लौट आई है," चकित और भ्रमित धीमी फुसफुसाहट में वह बार-बार दोहरा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि वह अब लीज़ा को नहीं पा सकेगा। वह गुस्से से उफन रहा था। इस आकस्मिक आघात ने, आकाश से गिरी गाज की भांति, उसे कुचल दिया था। वह भी कितना बुद्धू था जो उस टुकड़ियल पत्र के टुकड़ियल लेख पर उसने विश्वास कर लिया? "लेकिन, अगर मैं विश्वास न करता तब भी," उसने सोचा, "इससे क्या फ़र्क पड़ता? मुझे यह कैसे मालूम होता कि लीज़ा मुझ से प्यार करती है, और वह खुद भी इससे अनजान ही रहती।" प्रयत्न करने पर भी वह अपनी पत्नी की छवि को, उसकी आवाज़ और आंखों को, झटक कर अपने से अलग नहीं कर सका... और उसने अपने-आप को, और समूची दुनिया को कोसा।

थकान और दर्द से चूर, पौ फटने से कुछ पहले, वह लेम्म के यहां पहुंचा। काफ़ी देर तक वह खटखटाता रहा, लेकिन भीतर से किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। आखिर, घर की खिड़की पर, रात की टोपी पहने वृद्ध का चेहरा दिखाई दिया। बासी और चुरमुरा,—उस अनुप्राणित और प्रभावशाली मुख-मुद्रा से सर्वथा भिन्न जिसमें कि उसने, चौबीस घंटा पहले की ही तो बात है, कलाकार की शुभ्र ऊंचाई से लावरेत्स्की का पर्यवेक्षण किया था।

"अरे, तुम क्या चाहते हो?" लेम्म ने कहा, "मैं हर रात पियानो बजाकर तुम्हारा मन नहीं बहला सकता। मैंने काढ़ा पी लिया है।"

लावरेत्स्की की मुखाकृति निश्चय ही उसे कुछ अजीब मालूम हुई होगी। आंखों पर हाथों की दूरबीन-सी बनाकर उसने इतनी गई रात आए अपने इस मेहमान पर नज़र जमाकर उसका निरीक्षण किया। फिर, नीचे आकर दरवाज़ा खोला।

लावरेत्स्की कमरे में आकर एक कुर्सी पर ढह गया। वृद्ध लेम्म उसके सामने खड़ा जहां वहां कान-निकले अपने अटपटे लबादे को बदन के इर्द-गिर्द समेट रहा था। उसे कंपकंपी-सी चढ़ी थी और दांतों से वह अपने होंठ चबा रहा था।

"मेरी पत्नी आ गई," लावरेत्स्की ने कहा। फिर उसने अपना सिर उठाया और सहसा ऐसी हंसी हंसा जिसमें उछाह का नाम तक नहीं था।

लेम्म सकते की स्थिति में खड़ा था। उसके चेहरे पर मुसकान की एक हल्की रेखा तक नहीं थी। उसने, केवल, अपने लबादे को बदन के और भी निकट खींचा, – और बस।

"सच, तुम्हें मालूम नहीं," लावरेत्स्की कह रहा था। "मैं तो समझा था... एक पत्र में मैंने पढ़ा था कि उसकी मृत्यु हो गई।"

"ओह... यह क्या हाल की बात है?" लेम्म ने पूछा।

"हां, अभी कुछ दिन पहले की।"

"ओ–ओह!" अपनी भौंहों को उठाते हुए वृद्ध ने फिर दोहराया, "और वह अब यहां मौजूद है?"

"हां। मेरे घर पर है। मैं... मैं भी कितना अभागा हूं।"

उसके होठों पर एक तीखी मुसकान फैल गई।

"तुम अ-भा-गे आदमी हो," लेम्म ने धीरे-धीरे दोहराया।

"क्रिस्टोफ़ोर फ़ियोदोरिच," लावरेत्स्की ने फिर कहना शुरू किया, "क्या तुम मेरा एक पुर्ज़ा पहुंचा सकोगे?"

"हूं-ऊं-ऊं। लेकिन किसे?"

"येलिज़ावे..."

"ओ ठीक। मैं समझा। अच्छी बात है। मैं दे आऊंगा, – कब तक यह काम करना होगा?"

"कल तक, जितनी भी जल्दी हो सके।"

"हम्म। जाने को तो मेरी रसोईदारन कैत्रीन भी जा सकती है। लेकिन नहीं, मैं खुद ही दे आऊंगा।"

"और तुम उसका जवाब भी ले आओगे न?"

"हां, ले आऊंगा।"

लेम्म ने एक उसांस भरी।

"ओह, मेरे युवा मित्र, तुम्हें देखकर तरस आता है। तुम सचमुच भाग्यहीन युवक हो।"

लावरेत्स्की ने एक पुर्ज़े पर कुछ शब्द लिखे – उसने लीज़ा को बताया कि उसकी पत्नी आ गई है, उसने अनुरोध किया कि वह उससे – लीज़ा से – मिलना चाहता है। इसके बाद वह सकरे सोफ़े पर ढह गया और दीवार की ओर मुंह कर पड़ा रहा। वृद्ध अपने बिस्तरे पर लेट गया। उसे चैन नहीं थी। वह बराबर करवटें बदल रहा था, खांस रहा था, और अपना काढ़ा घूंट-घूंट कर पी रहा था।

सुबह हुई। दोनों उठ खड़े हुए। विचित्र नज़र से दोनों ने एक-दूसरे को देखा। लावरेत्स्की को उस समय ऐसा लगा कि आत्महत्या कर लूं। कैत्रीन काफ़ी ले आई जो अच्छी नहीं बनी थी। घड़ी ने आठ बजाए। लेम्म ने अपना हैट उठाया और कहा कि संगीत का अभ्यास कराने का उसका समय यों दस बजे है, लेकिन वह कोई भला-सा बहाना बना लेगा, वहां से रवाना हो गया। लावरेत्स्की फिर उसी सकरे सोफ़े पर पसर गया और एक कठोर खुशी की नयी बाढ़ उसके अन्तर की गहराइयों को आन्दोलित करने लगी। उसे याद आया कि किस प्रकार उसकी पत्नी ने उसे घर से बाहर खदेड़ दिया था, फिर लीज़ा का उसे ध्यान आया और उसकी स्थिति उसकी कल्पना में मूर्त्त हो उठी, उसने अपनी आंखें मूंद लीं और हाथों को अपने सिर के पीछे ले जाकर जोड़ लिया। आखिर लेम्म लौटा और कागज़ का एक पुर्जा उसके हाथ में थमा दिया जिसपर लीज़ा

40—1

ने पैन्सिल में लिखा था, "आज भेंट नहीं हो सकती। शायद कल सांझ को हो। विदा।" लावरेत्स्की ने खोए हुए और रूखे अन्दाज़ में लेम्म को धन्यवाद दिया और घर की ओर चल दिया।

वह जब घर पहुंचा तो उसकी पत्नी नाश्ते की मेज़ पर थी। आदा जिसका सिर घुंघराले बालों से सजा था और जो नीले फीतों वाली एक सफ़ेद फ़ाक पहने थी, कबाब खा रही थी। लावरेत्स्की को देखते ही वरवारा पावलोवना तुरत उठ कर खड़ी हुई और विनत अन्दाज़ में उसे भेंटने के लिए आगे बढ़ी। वह उसे अपने साथ अध्ययनकक्ष में ले गया, भीतर से उसने ताला बंद कर लिया और कमरे में इधर-से-उधर डग भरने लगा। हाथों को जोड़े वह गम्भीर भाव से बैठ गई और अपनी आंखों से – जो काजल की हल्की रेखा के बावजूद अभी भी सुन्दर थीं – उसकी प्रत्येक हरकत का अनुसरण करने लगी।

लावरेत्स्की, काफ़ी देर तक, अपने मुंह से एक शब्द भी नहीं निकाल सका। उसे लगा जैसे उसका अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रहा है। साथ ही यह भी उसने साफ़ तौर से अनुभव किया कि वरवारा पावलोवना उससे भयभीत नहीं है और केवल जान-बूझ कर भाव धारण किए है मानो अभी बेसुध हो जायेगी।

"देखो, देवीजी," भारी सांस लेते और अपने दांतों को भींचते हुए आखिर उसने कहना शुरू किया, "एक-दूसरे को धोखा देने की आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हारे पश्चाताप में विश्वास नहीं करता। अगर वह सच हो तब भी मैं तुम्हें अपने हृदय में फिर से स्थापित नहीं कर सकता, तुम्हारे साथ जीवन नहीं बिता सकता।"

वरवारा पावलोवना अपने होंठों को कसे और आंखों को सिकोड़े बैठी थी।

"यह उपेक्षा है,—पूर्ण उपेक्षा," वह सोच रही थी, "कुछ बाकी नहीं रहा। उसकी आंखों में मैं एक स्त्री तक नहीं हूं।"

"असम्भव," लावरेत्स्की ने फिर दोहराया, "मैं नहीं जानता कि क्या सोचकर तुम यहां आईं। शायद धन का अभाव..."

"ओह, मेरा अपमान न करो," वरवारा पावलोवना फुसफुसा उठी।

"जो हो, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि तुम—दुर्भाग्यवश —अभी भी मेरी पत्नी हो। मैं सचमुच तुम्हें घर से बाहर नहीं कर सकता... तो सुनो, मेरा तुम से एक प्रस्ताव है। अगर तुम चाहो तो, इसी समय, लावरिकी जा सकती हो। वहां रहो। वहां काफ़ी अच्छा घर मौजूद है, यह तुम जानती हो। अपने अलाउन्स के अलावा जिस चीज़ की भी आवश्यकता होगी, तुम्हें मिल जाएगी... बोलो, मंजूर है?"

वरवारा पावलोवना ने एक कामदार रूमाल अपनी आंखों पर लगाया।

"मैं पहले ही कह चुकी हूं कि," विचलित भाव से अपने होंठों में बल डालते हुए उसने कहा, "जो कुछ भी तुम मुझे करने के लिए कहोगे, वह मुझे मंजूर होगा। अब केवल एक अनुरोध मुझे और करना है,—वह यह कि, कम से कम अपनी इस उदारता के लिए तुम मेरा धन्यवाद स्वीकार करोगे?"

"धन्यवाद रहने दो। वही ठीक होगा," लावरेत्स्की ने तुरत कहा, "हां तो यह..."

"मैं कल लावरिकी पहुंच जाऊंगी," अदब के साथ अपनी जगह से उठते हुए वरवारा पावलोवना ने कहा, "लेकिन, फ़ियोदोर इवानिच..." (उसने अब थियोदोर कह कर सम्बोधित नहीं किया।)

"बोलो, और क्या चाहती हो?"

"यही कि तुम अभी तक मुझे क्षमा नहीं कर सके। लेकिन क्या मैं आशा करूं कि समय बीतने पर..."

"ओह, वरवारा पावलोवना," लावरेत्स्की ने बीच में ही कहा, "तुम बहुत ही चतुर स्त्री हो, लेकिन मैं भी निरा बेवकूफ़ नहीं हूं। मैं जानता हूं कि इन सब बातों में तुम्हारा ज़रा भी विश्वास नहीं है। क्षमा तो मैंने तुम्हें बहुत पहले ही कर दिया था, लेकिन एक खाई हमारे बीच में थी जो कभी नहीं पट सकी।"

"तुम देखोगे कि मैं अब काफ़ी विनम्र हो गई हूं," अपने सिर को झुकाते हुए वरवारा पावलोवना ने फिर कहा, "मुझे अपना गुनाह याद है, और यह जान कर मुझे ज़रा भी अचरज नहीं होगा कि मेरी मृत्यु की बात सुन कर तुम खुश हुए," मेज़ पर पड़े समाचारपत्र की ओर संकेत करते हुए उसने दबी हुई आवाज़ में कहा।

फ़ियोदोर इवानिच—जो मेज़ पर समाचारपत्र को डाल कर भूल गया था—चौंक उठा। लेख पर पैन्सिल का निशान लगा था। वरवारा पावलोवना और भी गहरी विनम्रता से—पश्चाताप में डूबी भावना से—उसकी ओर देख रही थी। उस समय उसका रूप देखते ही बनता था। सलेटी रंग का पेरिस में बना उसका गाउन लड़कियों ऐसे उसके लोचदार बदन से चिपका था, उसकी सुघड़ कोमल गरदन के चारों ओर सफ़ेद कालर बहुत ही भला मालूम होता था, उसके उरोज सांस के साथ मृदु भाव से उठ-गिर रहे थे, चूड़ी-छल्लों से मुक्त उसकी कोरी बांहें खूब संवारे हुए सिर से लेकर मुश्किल से दिखाई पड़ने वाली जूतों की नोक तक उसका समूचा ढांचा कुछ इतना रोचक था...

घृणा से उबलते हुए लावरेत्स्की ने उसकी ओर देखा, करीब-करीब चीख उठा, "बदमाश!" उसका हाथ मूठ बांधकर वरवारा की कनपटी पर पड़ने को तरसकर रह गया। फिर, उसी क्षण वह कमरे से बाहर चला गया। इसके एक घंटे बाद वह वसीलेवस्कोये के पथ पर था, और दो घंटे बाद—नगर की सब से लकदक गाड़ी किराये पर

ले कर और सादी-सी ओढ़नी तथा काली जाली से युक्त सींकों का एक मामूली हैट पहन, आदा को जूस्टीन के पास छोड़, वरवारा पावलोवना कलीतिन के घर की ओर चल दी। नौकर-चाकरों से उसे यह मालूम हो गया था कि उसका पति, बिला नागा, वहां जाता है।

३८

लावरेत्स्की के लिए, साथ ही लीज़ा के लिए भी, वह एक बहुत ही मनहूस और भयानक दिन सिद्ध हुआ, —जिस दिन कि उसकी पत्नी ने 'ओ' नगर में पांव रखा। लीज़ा ने नीचे उतर कर अभी अपनी मां का अभिवादन किया ही था कि बाहर घोड़े की टापों की आवाज़ सुनाई दी, और यह देख कर उसके सारे बदन में एक घबराहट-सी दौड़ गई कि पान्शिन अहाते में प्रवेश कर रहा है। "अपने प्रस्ताव का जवाब लेने के लिए ही वह इतने तड़के आ धमका है," उसने सोचा, और उसका ऐसा सोचना गलत नहीं था। दीवानखाने में कुछ क्षण इधर-उधर करने के बाद उसने सुझाव दिया कि चलो, ज़रा बाग में चल कर टहलें, और वहां पहुंचते ही उसने जानना चाहा कि उसके भाग्य के बारे में क्या फ़ैसला किया गया। किसी तरह साहस बटोर लीज़ा ने कहा कि वह उसकी पत्नी नहीं बन सकती। उसने उसकी बात सुनी। हैट को नीचे माथे तक खींचे वह बगल के रुख खड़ा था। विनम्रता से, किन्तु बदली हुई आवाज़ में, उसने फिर पूछा कि क्या यह उसका आखिरी फ़ैसला है, और यह कि क्या उससे कोई गलती हुई जो इस तरह उसने अपना रुख बदल लिया। इसके बाद हाथ से उसने अपनी आंखों को दबाया, एक छोटी-सी भर्राई उसांस भरी और अपने हाथ को आंखों से हटा लिया।

"मैं पुरानी लीक पीटना नहीं चाहता था," उसने खोखली ग्रावाज़ में कहा, "मैं ऐसी जीवनसंगिनी चुनना चाहता था जो मेरे हृदय के ग्रनुकूल हो। लेकिन प्रत्यक्ष है कि विधाता को यह मंज़ूर नहीं था। ग्रच्छा तो विदा, मेरे सुखद स्वप्न।" झुक कर उसने लीज़ा का ग्रभिवादन किया ग्रौर बाग से घर की ग्रोर मुड़ गया।

लीज़ा को उम्मीद थी कि वह ग्रब रुकेगा नहीं, तुरत यहां से चला जाएगा। लेकिन वह मारिया दिमीत्रियेवना के कमरे में गया ग्रौर वहां करीब एक घंटे तक रुका रहा। जाते समय उसने लीज़ा से फ़्रेंच भाषा में कहा, "जाग्रो, तुम्हारी मां तुम्हें बुला रही हैं, हमेशा के लिए विदा, ," घोड़े पर सवार हुग्रा, ग्रौर धीमी चाल से ग्रोसारे से विदा हो गया। लीज़ा ग्रपनी मां के पास गई। वह ग्रांसुग्रों में तर थी। पान्शिन ने उसे ग्रपने दुर्भाग्य से ग्रवगत करा दिया था।

"तुमने तो मुझे मार डाला,–क्या कर दिया तुमने?" संत्रस्त विधवा ने झींकना शुरू किया, "ग्राखिर तुम किसे चाहती हो? क्या वह तुम्हें कुछ नहीं जंचा? वह कामेरजंकर है! तुम्हारी जायदाद की उसे कोई परवाह नहीं। ग्रगर वह चाहे तो सन्त पीटर्सबर्ग के ऊंचे-से-ऊंचे घराने की किसी भी लड़की से शादी कर सकता है। हाय भगवान, मैं कितनी ग्राशा से इस घड़ी की बाट जोह रही थी। ग्रौर तुम्हारे मन में यह फेर-बदल हुग्रा कब ग्रौर कहां से? ग्राखिर वह ग्रासमान से तो गिरा नहीं होगा। निश्चय ही किसी ने तुम्हारे कान में यह मंत्र फूंका है। कोई ताज्जुब नहीं ग्रगर भतीजे के बच्चे ने यह खुराफ़ात रची हो। ग्रच्छे ग्रादमी को तुमने ग्रपना विश्वासपात्र बनाया!"

"ग्रौर वह," मारिया दिमीत्रियेवना कहती गई, "ग्रोह, कितने सलीके का, कितना मान रखने वाला ग्रादमी है वह। खुद मुसीबत में होने पर भी हमारा ध्यान रखना नहीं भूलता। उसने वायदा किया था

कि वह कभी हमारा साथ नहीं छोड़ेगा। हाय भगवान, यह मुझ से सहन नहीं होगा। मेरा तो सिर फटा जाता है। पलाशा को मेरे पास भेजो। तुम मेरी जान लेकर छोड़ोगी, — अगर तुम्हें चेत न हुआ तो — सुन रही हो न?" और कर्तव्य से भटकी अपनी लड़की को डांटने-झिड़कने के बाद मारिया दिमीत्रियेवना ने उसे दफ़ा कर दिया।

लीज़ा अपने कमरे में चली आई। पान्शिन और अपनी मां से मिलने के बाद वह अभी से ही अपने को सन्तुलित कर भी न पाई थी कि फिर एक नया तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। इस बार यह तूफ़ान सर्वथा अप्रत्याशित दिशा से आया। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना, एकाएक कमरे में चली आई और दरवाजा बंद किया। वृद्धा का चेहरा पीला पड़ा था, टोपी सिर से खिसक गई थी, आंखें धधक रही थीं, उसके हाथ और होंठ थरथरा रहे थे। लीज़ा स्तब्ध रह गई, — अपनी धीर गम्भीर चाची को इस रूप में उसने पहले कभी नहीं देखा था।

"यह निराला तमाशा है, देवीजी," कांपती हुई फुसफुसाती आवाज़ में मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना बड़बड़ा रही थी, "एकदम निराला! मुझे भी तो पता चले कि ये सब गुण कहां से तुम में आ गए! ... ओह, पानी... मुझे कुछ पानी दो। मैं बोल तक नहीं सकती।"

"ज़रा सांस लो, बुआ। आखिर बात क्या है?" पानी का गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए लीज़ा ने कहा, "सच, मैं तो समझती थी कि तुम खुद भी पान्शिन को कुछ अधिक पसन्द नहीं करती।"

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने गिलास एक ओर रख दिया।

"नहीं, पानी-वानी कुछ नहीं। मेरी तो जान गले में अटकी है। लेकिन यह पान्शिन... पान्शिन का भला क्या वास्ता? सुनो, लड़की, मुझे यह बताओ कि रात में मुलाकातें करना तुमने किससे सीखा? — बोलो, क्या कहती हो तुम?"

लीज़ा का चेहरा पीला पड़ गया।

"देखो, मुकरने से काम नहीं चलेगा," मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना कहती गई, "शूरोचका ने खुद अपनी आंखों से सब कुछ देखा और मुझसे आकर कहा। मैंने उसे ताक़ीद कर दी है कि ज़्यादा न बलबलाए। लेकिन मैं जानती हूं कि वह झूठ नहीं बोलती।"

"मैं किसी चीज़ से नहीं मुकरती, चाची," लीज़ा ने धीमी आवाज़ में कहा।

"ओह, यह बात है। हां तो लड़की, तुम उस नम्र चेहरेवाले पापी से मिलीं?"

"नहीं।"

"तो फिर?"

"मैं एक पुस्तक लेने ड्राइंगरूम में गई थी। वह बाग में था। उसने मुझे आवाज़ दी।"

"और तुम चली गईं? बहुत खूब। तुम उससे प्रेम करती हो क्या? —क्यों?"

"हां... प्रेम करती हूं," लीज़ा ने बुदबुदा कर कहा।

"हाय मेरे मालिक! तुम उससे प्रेम करती हो!" कहते हुए मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने अपने सिर से टोपी खींच ली, "एक विवाहित आदमी से तुम प्रेम करती हो। क्यों, सुन रही हो न, तुम उससे—एक विवाहित आदमी से—प्रेम करती हो?"

"उसने मुझ से कहा था..." लीज़ा ने कहना शुरू किया।

"क्या कहा था उसने, बड़ा प्यारा जीव है, क्यों?"

"उसने कहा था कि उसकी पत्नी मर गई है।"

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने क्रास का चिन्ह बनाया, "ईश्वर उसकी आत्मा को शान्ति दे," फुसफुसा कर उसने कहा, "वह एक निकम्मी

कुतिया थी, ईश्वर उसे क्षमा करे। हां तो अब समझ में आया। वह विधुर है। काफ़ी चतुर बछेरा मालूम होता है। एक पत्नी को खत्म किए देर नहीं हुई कि दूसरी के पीछे लग गया। बड़ा शान्त बना फिरता है! लेकिन एक बात मैं तुम्हें बताती हूं: उन दिनों में जबकि मैं जवान थी, इस तरह की हरकतों के लिए लड़कियों के कान लाल कर दिए जाते थे। नाराज़ न होना, लड़की, सच्ची बात से केवल मूर्ख ही नाराज़ होते हैं। मैंने कह दिया है कि वह आज आए तो उसे घर में न घुसने दिया जाए। मैं उसे चाहती हूं, लेकिन इस हरकत के लिए कभी उसे माफ़ नहीं कर सकती। वाह, क्या विधुरता का स्वांग रचा है! ओह, मुझे कुछ पानी दो... और जहां तक पान्शिन का सम्बंध है, तुमने बहुत अच्छा किया जो उसे उसका रास्ता दिखा दिया। बड़ी होशियारी का काम किया तुमने! लेकिन अज-परिवार के लोगों के साथ—मर्द कहलाने वाले जीवों के साथ—रात में बतियाना छोड़ो। मेरे इस बूढ़े हृदय को चूर-चूर न करो... मैं केवल दुलार और प्यार की ही पोट नहीं हूं, चिन्दियां बिखेरना भी जानती हूं... ऊंह, क्या विधुर बना है!"

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना चली गई, और लीज़ा एक कोने में बैठ कर रोने लगी। उसका हृदय बहुत ही दुःखी था। उसने लांछन का ऐसा कोई काम नहीं किया था। प्रेम से उसके हृदय में उल्लास का संचार नहीं हुआ। कल रात से दो बार वह आंसुओं में डूब चुकी थी। प्रेम की उस नयी और अद्भुत लहर ने अभी अच्छी तरह सिर उठाया भी नहीं था कि उसका भारी भुगतान शुरू हो गया और उसके हृदय का पवित्र रहस्य गैर हाथों में बेरहमी से उछलने लगा। वह लाज का, कड़ुवाहट और आहत् भावना का अनुभव कर रही थी। लेकिन उसके मन में कोई संशय या दुविधा नहीं थी। लावरेत्स्की के प्रति वह और भी दुगुने प्रेम का अनुभव कर रही थी। वह केवल तभी तक ढुलमुल रही जब तक कि उसने अपने मन

को नहीं पहचाना था। लेकिन उस भेंट और उस चुम्बन के बाद वह फिर ढुलमुल नहीं हुई। वह अब जान गई थी कि वह प्रेम करती है, —और उसने उस प्रेम को हृदय से अपनाया, —ईमानदारी से, समूची लगन से, एक ऐसे चाव से जो सबल, जीवन-व्यापी था और किसी भी बाधा को स्वीकार करने वाला नहीं था। उसका रोम-रोम साक्षी था कि धरती की कोई शक्ति इस बन्धन को नहीं तोड़ सकेगी।

३६

दरबान से यह सूचना पाकर कि वरवारा पावलोवना लावरेत्स्काया मिलना चाहती है, मारिया दिमीत्रियेवना को बड़ी परेशानी हुई। उस की समझ में नहीं आया वह उससे मिले अथवा नहीं। उसे डर था कि कहीं फ़ियोदोर इवानिच बुरा न माने। अंत में, उत्सुकता की विजय हुई। "जो हो," उसने सोचा, "आखिर वह कोई गैर तो है नहीं," और अपनी आरामकुर्सी में बदन को ढीला छोड़ते हुए उसने दरबान से कहा, "उसे भीतर ले आओ।" कई क्षण गुज़र गए। दरवाज़ा खुला। वरवारा पावलोवना न कमरे में पांव रखा और द्रुत गति से फिसलती मारिया दिमीत्रियेवना के पास पहुंच गई। उसने उसे कुर्सी से उठने तक का मौका नहीं दिया और उसके सामने करीब-करीब घुटनों के बल ढह गई।

"कहते नहीं बनता कि तुम्हें कितना धन्यवाद दूं, प्यारी चाची," रूसी भाषा में बोलते हुए उसने धीमी कम्पनशील आवाज़ में कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे कतई उम्मीद नहीं थी कि तुम इतनी सदाशयता दिखाओगी। सच, तुम इतनी नेक हो जैसे फ़रिश्ता!"

यह कहते न कहते वरवारा पावलोवना ने सहसा मारिया दिमीत्रियेवना का एक हाथ अपने हाथों में थामा, बैंगनी रंग के दस्तानों में हल्के

से उसे दबाया और पूरी तन्मयता के साथ उसे अपने मदभरे, गुलाबी होठों से लगा लिया। इस सुन्दर, बहुत ही सलीके से सजी स्त्री को इतने विनत भाव से अपने आगे पसरते-बिछते देख मारिया दिमीत्रियेवना इतनी चकरा गई कि उससे कुछ कहते नहीं बना। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे। बजाय इसके कि वह अपना हाथ छुड़ाकर उससे बैठने के लिए कहती, जी हल्का करने वाली बातें उससे करती, —यह सब कुछ न कर वह उठ खड़ी हुई और वरवारा पावलोवना के साफ़-सुथरे सुगंधित माथे पर एक चुम्बन उसने अंकित कर दिया। वरवारा पावलोवना गदगद हो गयी।

"जीती रहो," मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा, "तुम... सच... खूब आई... मुझे कतई उम्मीद नहीं थी... बेशक, तुम्हें देख कर खुशी हुई... तुम तो जानती हो, मेरी प्रिय, पुरुष-स्त्री के झगड़े के बीच में फ़ैसला देना मेरा काम नहीं..."

"मेरा पति पूर्णतया निर्दोष है," वरवारा पावलोवना ने बीच में ही कहा, "कसूर मेरा है—केवल मेरा।"

"यह बहुत ही अच्छी भावना है," मारिया दिमीत्रियेवना ने सराहना की, "सच, बहुत अच्छी! तुम इधर कब आईं? उससे भेंट हुई? लेकिन तुम खड़ी क्यों हो? अरे, बैठो न।"

"मैं कल आई थी," विनम्र भाव से बैठते हुए वरवारा पावलोवना ने जवाब दिया, "फ़ियोदोर इवानिच से मैं मिल चुकी हूं, मैंने उससे बातें भी कीं।"

"हां तो... क्या कहा उसने?"

"मुझे डर था कि मेरे इतने अप्रत्याशित आगमन से कहीं वह नाराज़ न हो जाए," वरवारा पावलोवना ने कहना शुरू किया, "लेकिन वह मिला, उसने मुझे अपने दर्शनों से वंचित नहीं किया।"

"यानी उसने... हां, हां, मैं सब जानती हूं," मारिया दिमीत्रियेवना ने अपनी सम्मति दी, "बाहर से भले ही वह कुछ रूखा हो, लेकिन उसका हृदय अच्छा है।"

"फ़ियोदोर इवानिच ने मुझे क्षमा नहीं किया। उसने मुझे पूरी तरह सुना भी नहीं... लेकिन वह इतना सदय है कि उसने कहा, मैं लावरिकी जाकर रह सकती हूं।"

"ओह, वह बहुत ही सुन्दर जागीर है।"

"मैं कल ही वहां जा रही हूं। उसके आदेश का मैं पालन करूंगी। लेकिन, मैंने सोचा, जाने से पहले तुमसे मिलना मेरा एक ज़रूरी कर्त्तव्य है।"

"धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद, मेरी प्रिय," मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा, "अपने सम्बंधियों को कभी नहीं भूलना चाहिए। और सुनो, तुम इतनी अच्छी रूसी बोलती हो कि मैं तो चकित रह गई।" फिर फ़्रेंच भाषा में जोड़ा, "अद्भुत।"

वरवारा पावलोवना ने एक उसांस भरी।

"मारिया दिमीत्रियेवना, इतने लम्बे अर्से तक मैं विदेशों में रही, यह मैं जानती हूं लेकिन मैं सदा रूसी रही और अपने देश को मैं भूल नहीं गई हूं।"

"ठीक, बहुत ठीक, सो तो होना ही चाहिए। फ़ियोदोर इवानिच को, मेरी पूछो तो, उम्मीद नहीं थी कि तुम कभी लौट कर आओगी... सच, मेरी इस बात को पक्का मानो अपना देश सबसे बढ़ कर"—उसने फ़्रेंच भाषा में जोड़ा। "ओह, तुम्हारी वह ओढ़नी कितनी सुन्दर है। ज़रा दिखाओ तो!"

"सच, तुम्हें पसन्द आई?" ओढ़नी को अपने कंधों पर से जल्दी से उतारते हुए वरवारा पावलोवना ने कहा, "बहुत ही सीधी सादी चीज है। मदाम बौदराण की कारीगरी।"

"यह तो साफ़ दिखाई देता है। मदाम बौदराण... ओह, कितनी आकर्षक और कितनी रोचक। मुझे विश्वास है कि तुम और भी बहुत सी लुभावनी चीज़ें अपने साथ लाई होगी। देखने को जी ललकता है।"

"प्रियतमा चाची, सिंगार की मेरी समूची सामग्री तुम्हारे लिए हाज़िर है। अगर अनुमति हो तो तुम्हारी परिचारिका को कुछ चीज़ें बता सकती हूं। मैं पेरिस से अपने साथ एक परिचारिका लाई हूं,—वह बहुत ही बढ़िया कपड़े बनाती है।"

"ओह, तुम बहुत भली हो। लेकिन, सच, मेरा मन नहीं करता कि तुम्हें तकलीफ़ दूं।"

"तकलीफ़..." वरवारा पावलोवना ने हल्की शिकायत के स्वर में कहा, "अगर तुम मुझे खुश करना चाहती हो तो तुम वैसे ही मुझसे काम लो जैसे कि अपनी सम्पत्ति से।"

मारिया दिमीत्रियेवना पसीज गयी।

"तुम कितनी आकर्षक हो," फ़्रेंच भाषा में उसने बुदबुदा कर कहा। फिर बोली, "लेकिन तुम अपना हैट और दस्ताने उतार कर आराम से क्यों नहीं बैठती?"

"ओह, क्या मुझे आज्ञा है?" दयनीय भाव से अपने हाथों को मलते हुए वरवारा पावलोवना ने कहा।

"और नहीं तो क्या... हमारे साथ क्या भोजन भी नहीं करोगी... मैं... मैं अभी अपनी लड़की से तुम्हारा परिचय कराऊंगी!" मारिया दिमीत्रियेवना का चेहरा कुछ बेचैन-सा हो उठा। "मुफ़्त में मैंने भी यह क्या मुसीबत मोल ली..." उसने सोचा, "उसका मिज़ाज आज वैसे ही गड़बड़ाया हुआ है।"

"ओह, मेरी चाची, तुम कितनी अच्छी हो!" वरवारा पावलोवना के मुंह से अनायास ही निकला और रूमाल से उसने अपनी आंखों को पोंछा।

तभी छोकरा-नौकर ने गेदेग्रोनोवस्की के आने की सूचना दी। वृद्ध बातूनी, मुसकानों और अभिवादनों में लिपटा, आ मौजूद हुआ। मारिया दिमीत्रियेवना ने नयी मेहमान से उसका परिचय कराया। पहले तो वह सकपका गया, लेकिन वरवारा पावलोवना कुछ इतनी मुग्धकर और सलीकेदार थी कि शीघ्र ही उसके कान खुदबुदाने लगे और इधर-उधर के किस्से भेद-भरी बातें और खुशामद-भरे उद्गार, बिना किसी रोक के, शहद की भांति उसकी ज़ुबान से चूने लगे। होठों पर संयत मुसकान लिए वरवारा पावलोवना उसकी बातें सुनती रही और फिर, धीरे-धीरे खुद भी बातों में खिंच आई। विनम्र अन्दाज़ में उसने पेरिस का, अपनी यात्राओं और बाडेन का ज़िक्र किया। उसकी बातें सुनकर दो बार मारिया दिमीत्रियेवना हंसी और हर बार वरवारा पावलोवना ने अपने उस उछाह पर जैसे अटपटेपन का अनुभव कर एक हल्की-सी उसांस छोड़ी, —मानो मन ही मन अपने को झिड़क रही हो। इतना ही नहीं, वरवारा पावलोवना ने अगली बार जब वह आए तो आदा को भी साथ लाने की अनुमति ले ली। उसने दस्ताने उतारे और सुगन्धित साबुन की महक में बसे अपने चिकने हाथों से बताया कि झब्बे पर बेल और फीतों के फूल कहां और कैसे पहनने चाहिए। उसने वायदा किया कि वह विक्टोरिया इसैन्स की एक बोतल, एक नये अंग्रेज़ी इत्र की शीशी उसे भेंट करेगी, और इन उपहारों को स्वीकार करने की जब मारिया दिमीत्रियेवना ने स्वीकृति दी तो वह बच्चों की भांति खुश हो उठी। और यह बताते समय कि यहां आने के बाद रूसी गिरजे के घंटों की आवाज़ जब पहली बार उसने सुनी तो वह किस प्रकार रोमांचित हो उठी थी, उसकी आंखें गीली हो आईं। "मेरे हृदय के सारे तार झंकार कर उठे," उसने बुदबुदा कर कहा।

इसी समय लीज़ा ने कमरे में प्रवेश किया।

सुबह से ही—उस क्षण से जबकि उसने, भय से जड़ होकर लावरेत्स्की

का पुर्ज़ा पढ़ा था, लीज़ा उसकी पत्नी का सामना करने के लिए अपने मन को पक्का बना रही थी। उसे ऐसा भाव आ रहा था कि वह उससे भेंट करेगी। उसने मन में तय किया कि वह उससे अपना मुंह नहीं छिपाएगी। अपने हृदय में पापपूर्ण आशाएं संजोने के लिए–ये खुद उसी के शब्द थे–उसे ऐसी ही सजा मिलनी चाहिए। जीवन के इस आकस्मिक त्रास ने उसे जड़-मूल से हिला दिया था। दो घंटे के भीतर ही उसका चेहरा झटक गया, लेकिन उसकी आंखों से आंसू की एक बूंद तक नहीं निकली। "मेरी यही सज़ा है," उसने मन ही मन कहा और बड़ी कठिनाई तथा प्रयास के साथ तीखे विक्षोभ की उस बाढ़ को दबाया जो कि उसे त्रस्त किए थी। "हां तो अब चलना चाहिए," लावरेत्स्काया के आने की सूचना मिलते ही उसने सोचा, और नीचे चली गई ... दीवानखाने के दरवाज़े के पास पहुंच वह ठिठक गई और वहां खड़ी काफ़ी देर तक साहस बटोरती रही। अन्त में यह सोचते हुए कि मैंने उसके साथ अपराध किया है, उसने ड्राइंगरूम में पांव रखा। उसकी ओर नज़र उठा कर उसे देखने और अपने होठों पर मुसकराहट लाने में उसे काफ़ी प्रयास करना पड़ा। जैसे ही वरवारा पावलोवना न उसे देखा, मिलने के लिए वह आगे बढ़ी, तनिक-सा किन्तु सम्मान की मुद्रा में उसने सिर झुकाया। "मैं अपना परिचय करा दूं," विभोर हो उसने कहा, "तुम्हारी मां हृदय की इतनी अच्छी हैं, और मुझे उम्मीद है कि तुम भी ... मुझसे मुंह न मोड़ोगी।" अन्तिम शब्द कहते समय वरवारा पावलोवना के चेहरे का भाव, उसकी छली मुसकान, सर्द किन्तु कोमल आंखें, उसके हाथों और कंधों का संचालन, यहां तक कि वह गाउन जिसे वह पहने थी,–उसका समूचा अस्तित्व कुछ ऐसा था कि लीजा का हृदय घिन से भर गया–यहां तक कि वह कोई जवाब नहीं दे सकी, और केवल अपना हाथ आगे बढ़ाने के सिवा और कुछ न कर सकी। "यह कुमारी

मुझसे जुगुप्सा करती है," लीज़ा की ठंडी उंगलियों को अपने हाथ में दबोचते हुए वरवारा पावलोवना ने सोचा, फिर मारिया दिमीत्रियेवना की ओर मुड़ते हुए फ्रेंच भाषा में बुदबुदा उठी, "बड़ी सलोनी लड़की है यह।"

लीज़ा के गालों पर एक हल्की लाली दौड़ गई। इस उद्‌गार में उसे उपहास और अपमान के पुट का आभास हुआ। लेकिन अपने इन आभासों को दरगुज़र कर वह खिड़की के पास जा बैठी जहां उसका कसीदा काढ़ने का ढांचा लगा था। लेकिन वरवारा पावलोवना ने यहां भी उसे चैन से नहीं बैठने दिया। वह उसके पास गई, उसकी रुचि और दक्षता की सराहना करने लगी ... लीज़ा का हृदय दुःखी हुआ और बुरी तरह धड़क रहा था, और अपनी समूची शक्ति से वह अपने को संभाले रखने का प्रयत्न कर रही थी। उसे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वरवारा पावलोवना सब कुछ जानती है और कुत्सित प्रसन्नता के साथ उसे सता रही है। तभी गेदेओनोवस्की ने वरवारा पावलोवना को अपनी बातों में उलझा लिया और उसका ध्यान उसकी ओर से हट गया। लीज़ा ने भारी राहत का अनुभव किया।

लीज़ा कसीदा काढ़ने के अपने ढांचे पर झुक गई और छिपी नज़रों से वरवारा पावलोवना की ओर देखने लगी। "तो यह है वह स्त्री," उसने सोचा, "जिसे वह कभी प्यार करता था।" लेकिन, अगले ही क्षण, लावरेत्स्की के ख्याल को उसने अपने दिमाग से निकाल दिया। उसे डर था कि कहीं वह फिर सन्तुलन न खो बैठे। उसे लगा जैसे उसका सिर चकरा रहा है। मारिया दिमीत्रियेवना ने अब संगीत के बारे में बातें शुरू कीं।

"मैंने सुना है, मेरी प्रिय," उसने कहना शुरू किया, "कि संगीत में तुम बेजोड़ हो।"

"एक मुद्दत हुई मुझे उसे हाथ से छुवे," पियानो पर तुरत बैठते

और उसके पर्दों पर बड़ी सुघड़ता से उंगलियां दौड़ाते हुए वरवारा पावलोवना ने जवाब में कहा, "अगर अनुमति हो तो ..."

"हां, ज़रूर।"

वरवारा पावलोवना ने बहुत ही कठिन और दक्षता-साध्य हर्ट्ज़ की एक चमत्कारपूर्ण धुन बजाई। उसके वादन में अद्भुत शक्ति और कौशल था।

"एकदम दैवी!" गेदेओनोवस्की चहक उठा।

"अद्भुत!" मारिया दिमीत्रियेवना ने स्वर में स्वर मिलाया। "सच, वरवारा पावलोवना," पहली बार उसे उसके नाम से सम्बोधित करते हुए उसने कहा, "तुमने तो चकित कर दिया। तुम्हें तो बाकायदा कन्सर्टों में जाना चाहिए। हमारे यहां एक संगीतज्ञ है, — जर्मन। बुढ़ापे में कुछ सनकी ज़रूर हो गया है, लेकिन बहुत ही जानकार संगीतज्ञ है। वह लीज़ा को संगीत का अभ्यास कराता है। तुमपर तो वह बस मुग्ध हो जाएगा!"

"क्या येलिज़ावेता मिख़ाइलोवना भी पियानो बजाती है?" अपने सिर को थोड़ा उसकी ओर घुमाते हुए वरवारा पावलोवना ने पूछा।

"हां, थोड़ा-बहुत बजा लेती है, और संगीत का उसे शौक है। लेकिन कहां तुम और कहां वह! यहां एक युवा आदमी और है, ऐसा कि तुम्हें उससे मिलना चाहिए। उसका हृदय कलाकार का हृदय है, और वह बहुत ही प्यारी धुनें रचता बजाता है। केवल वही एक ऐसा है जो तुम्हारे गुणों की पूरी तरह सराहना कर सकता है।"

"युवा आदमी?" वरवारा पावलोवना ने कहा, "कौन है वह? — होगा कोई निरीह जीव?"

"ओह नहीं, मेरी प्रिय, निरीह वह ज़रा भी नहीं है। स्त्रियां उस पर सब से अधिक जान देती हैं। केवल यहां ही नहीं, पीटर्सबर्ग में भी। वह कामरजंकर है, ऊंचे समाज में उसका प्रवेश है। शायद तुमने उसका

नाम सुना भी हो—पान्शिन, व्लादीमिर निकोलाइच पान्शिन। सरकारी काम से यहां आया हुआ है... एक दिन वह मंत्रिपद प्राप्त करेगा, यह निश्चित ही समझो।"

"और वह कलाकार है?"

"हां, हृदय से कलाकार, और बहुत ही उदार। तुम्हारी उससे भेंट होगी। वह अक्सर यहां आता है। आज सांझ के लिए वह निमंत्रित है। उम्मीद है कि ज़रूर आएगा," एक हल्की सी उसांस छोड़ते और एक छिपी झुंझलाहट के साथ मुसकराते हुए मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा।

लीज़ा से इस मुसकराहट का भेद छिपा नहीं रहा। लेकिन वह ऐसे मूड में थी कि उसने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

"और वह युवा है?" वरवारा पावलोवना ने लहजे के साथ पूछा।

"अठाईस वर्ष का, देखने में अत्यन्त सुन्दर—सच, बहुत ही अच्छा जवान है," उसने फ़्रेंच में जोड़ा।

"एक युवा आदमी को जैसा होना चाहिए, ठीक वैसा ही,—एकदम आदर्श," गेदेओनोवस्की ने भी राय प्रकट की।

वरवारा पावलोवना ने, सहसा, स्ट्रास वाल्ट्ज़ नृत्य की एक उन्मत्त धुन बजानी शुरू कर दी और इतनी तूफ़ानी, चौंधिया देने वाली, गति से उसे उठाया कि गेदेओनोवस्की अचकचा गया। वाल्ट्ज़ के मध्य में, अप्रत्याशित रूप में, उसने फिर एक उदास ध्वनि का समावेश किया और 'लूचिया' के एरिया "फ्रापोको" से उसका अन्त किया... ऐसा मालूम होता था जैसे बीच में ही एकाएक सचेत होकर उसने यह अनुभव किया हो कि आह्लादपूर्ण संगीत उसकी मौजूदा स्थिति से मेल नहीं खाता, सो उसने उदास धुन बजानी शुरू कर दी। 'लूचिया' के इस एरिया ने जो खूब भावुकतापूर्ण था, मारिया दिमीत्रियेवना को अत्यधिक अभिभूत कर दिया।

"कितना हृदयस्पर्शी है," दब हुए स्वर में उसने गदेश्रोनोवस्की से कहा।

"एकदम दैवी!" अपनी आंखों को घुमाते हुए गेदेश्रोनोवस्की ने दोहराया।

भोजन का समय हो गया। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना जब नीचे आई तब रसा-परसा जा चुका था। रुखाई के साथ उसने वरवारा पावलोवना का अभिवादन किया, हूं-हां के साथ उसकी शिष्टता में पगी बातों को जवाब दिया और नज़र तक उठा कर उसकी ओर नहीं देखा। वरवारा पावलोवना ने शीघ्र ही समझ लिया कि इस वृद्धा को पिघलाना कठिन है, और उसने उसे रिझाना छोड़ दिया। मारिया दिमीत्रियेवना जो अपनी इस मेहमान पर और भी ज़्यादा मेहरबान हो उठी थी, वृद्धा की इस रुखाई से क्षुब्ध हुई। लेकिन मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना केवल वरवारा पावलोवना की ओर ही नहीं, बल्कि लीज़ा की ओर भी नहीं देख रही थी, हालांकि उसकी आंखों में चमक की कोई कमी नहीं थी। वह बस पत्थर के बुत की भांति बैठी रही, — चेहरे पर पीलापन और सफ़ेदी लिए, अपने होठों को कसकर भींचे। उसने कुछ भी नहीं खाया। लीज़ा शान्त दिखाई देती थी, और सचमुच उसके हृदय में जो तूफ़ान उमड़ा था वह अब तिरोहित हो गया था, और दण्डप्राप्त व्यक्ति की भांति वह एक अजीब स्पन्दनहीनता का अनुभव कर रही थी। वरवारा पावलोवना भी, भोजन के समय, कुछ अधिक नहीं बोली। वह फिर अन्यमनस्क हो गई थी और उसके चेहरे पर संकोचपूर्ण उदासी का भाव छाया था। केवल गेदेश्रोनोवस्की ने ही अपने किस्सों से बातचीत के सिलसिले को जीवित रखा। रह-रह कर बेचैनी से वह मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की ओर ताक कर देखता, अपने गले को साफ़ करता — उसकी उपस्थिति में झूठ बोलते समय उसका गला हमेशा भरभरा जाता था — लेकिन मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने न तो उसे रोका, न

कोई बाधा दी। भोजन समाप्त होने के बाद मालूम हुआ कि वरवारा पावलोवना ताश के विस्ट खेल की बहुत शौकीन है। मारिया दिमीत्रियेवना यह जान कर इतनी खुश हुई कि अभिभूत हो गई। मन ही मन बोली – "सचमुच, फ़ियोदोर इवानिच बड़ा बेवकूफ़ है। ज़रा कल्पना तो करो, इतनी अच्छी स्त्री को भी वह पसन्द नहीं कर सका!"

वह उससे और गेदेओनोवस्की के साथ ताश लेकर जम गई। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना, यह कहते हुए कि लीज़ा की तबीयत ठीक नहीं है और उसके सिर में दर्द है, उसको अपने साथ ऊपर लिवा ले गई।

"सचमुच, इसका सिर बुरी तरह दर्द कर रहा है," अपनी आंखों को घुमाते और वरवारा पावलोवना को सम्बोधित करते हुए मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा, "खुद मेरे भी आधे सिर में अक्सर बुरी तरह दर्द आता है।"

"क्या सचमुच?" वरवारा पावलोवना ने बुदबुदा कर कहा।

लीज़ा अपनी बुआ के कमरे में चली गई और बदन को ढीला छोड़ कुर्सी में ढह गई। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने देर तक बिना कुछ कहे उसकी ओर देखा, फिर चुपचाप उसके सामने घुटनों के बल बैठ गई और बिना कुछ कहे – चुपचाप – उसके हाथों को चूमने लगी। लीज़ा आगे को झुक आई, उसके गाल तमतमा उठे, – और आंखों से आंसू बह निकले। न तो उसने मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना से उठने का अनुरोध किया, न अपने हाथों को ही हटाया। उसे लगा जैसे उसे अपने हाथों को हटाने का अधिकार नहीं है, पश्चाताप और संवेदनशीलता के उस आवेग को रोकने का अधिकार नहीं है जो कि वृद्ध महिला के हृदय से उमड़ रहा था, और उस सन्ताप को प्रकट कर रहा था जो कि वह विगत दिन वाली बातों के कारण अनुभव कर रही थी। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना उन निरीह, पीले, शक्तिहीन हाथों को चूम रही थी – चूमती जा रही थी – और उसकी तथा लीज़ा की आंखों

से मौन आंसू बह रहे थे—बहते जा रहे थे। मात्रोस बिल्ली, चौड़ी आरामकुर्सी पर, बिनने की ऊन के बीच बैठी गुरगुरा रही थी, देव-प्रतिमा के सामने रखे छोटे तेल-लैम्प की लम्बी लौ थिरक और कांप रही थी, साथ ही पासवाले कमरे में, दरवाज़े के पीछे, अपने चारखाने के रूमाल को समेट कर एक छोटी-सी गेंद बनाए, नस्तासिया कारपोवना—इस डर से कि कहीं कोई देख न ले—रह-रह कर अपने आंसुओं को पोंछ रही थी।

४०

इस बीच, नीचे ड्राइंगरूम में, ताश का विस्ट खेल चल रहा था। मारिया दिमीत्रियेवना जीत रही थी और खूब मगन थी। तभी एक नौकर ने आकर सूचना दी कि पान्शिन आया है।

मारिया दिमीत्रियेवना ने ताश के पत्ते नीचे डाल दिए और अपनी कुर्सी में कसमसाने लगी। वरवारा पावलोवना ने भेद-भरी मुसकान से उसकी ओर देखा और फिर दरवाज़े की ओर उसकी आंखें घूम गईं। पान्शिन ने कमरे में प्रवेश किया। वह काले रंग और ऊंचे अंग्रेज़ी कालर वाला फ़्राक कोट पहने था। बटन ऊपर तक बंद थे। "तुम्हारे आदेश का पालन करना आसान नहीं था, फिर भी—देखो न—मैं चला ही आया," उसका मुसकराहट-विहीन और ताज़ा हजामत किया चेहरा कहता प्रतीत होता था।

"सचमुच, वोल्डेमार!" मारिया दिमीत्रियेवना ने बरबस कहा, "अन्यथा तुम हमेशा सीधे चले आते थे,—बिना नौकर से सूचना करवाए!"

पान्शिन ने केवल अपनी आंखों से मारिया दिमीत्रियेवना की बात का जवाब दिया, विनम्रता से सिर झुका कर अभिवादन किया, लेकिन उसने उसका हाथ नहीं चूमा। मारिया दिमीत्रियेवना ने वरवारा पावलोवना से उसका परिचय कराया। अचकचा कर वह कुछ पीछे हटा, फिर उतनी ही

विनम्रता किन्तु नफ़ासत और न्यौछावर होने ऐसी भावना के पुट के साथ उसने सिर झुकाया, और ताश की मेज़ के पास बैठ गया। खेल जल्दी ही खत्म हो गया। पान्शिन ने येलिज़ावेता मिखाइलोवना के बारे में पूछा, यह जानकर कि उसका जी ठीक नहीं है उसने खेद प्रकट किया, और इसके बाद वरवारा पावलोवना से बातें करने लगा। कूटनीतिज्ञ की भांति वह अपने प्रत्येक शब्द को जांच-तोल और तराश कर बोल रहा था और उसके जवाबों को बड़े सलीके से कान लगा कर सुनता था। लेकिन उसके इस कूटनीतिक रोब-दाब का वरवारा पावलोवना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और उसके हृदय के किसी तार को वह अनुरणित नहीं कर सका। इसके प्रतिकूल वह प्रसन्न भाव से उसका निरीक्षण कर रही थी, निर्लिप्त लहजे में उससे बातें कर रही थी और उसके सुघड़ नथुने मानो दबे हुए उल्लास से न-मालूम से फड़क रहे थे। मारिया दिमीत्रियेवना ने उसके—वरवारा पावलोवना के—गुणों का बखान शुरू किया। पान्शिन ने सलीके से—जहां तक कि उसका ऊंचा कालर इसकी इजाज़त देता था—अपना सिर झुकाए बताया कि मुझे इन गुणों के अस्तित्व का पहले ही से विश्वास था। इसके बाद बातों का एक ऐसा सिलसिला उसने शुरू किया कि खुद मैटरनिक तक जा पहुंचा। वरवारा पावलोवना ने अपनी मख़मली आंखों को सिकोड़ा और धीमे स्वर में फ़्रेंच भाषा में बुदबुदाई, "अरे छोड़ो, आखिर तुम कलाकार भी तो हो न,—मन के मीत।" फिर पियानो की ओर सिर हिलाकर संकेत करती हुई दबे स्वर में फ़्रेंच भाषा में बोली, "आओ!" उसके मुंह से निकले इस एक शब्द "आओ" का पान्शिन पर तुरत—एकदम जादू-सा—असर हुआ। उसका भारी-भरकम अन्दाज़ विलीन हो गया, चेहरा मुसकराहटों से खिल उठा, रोम-रोम में एक चेतना-सी दौड़ गई, कोट के बटन उसने खोल डाले और वरवारा पावलोवना की बात को दोहराते हुए बोला, "कलाकार-वलाकार तो खैर मैं क्या हूं! लेकिन, मैंने

सुना है, तुम वास्तव में कलाकार हो!" कहते हुए वह वरवारा पावलोवना के साथ पियानो पर पहुंच गया।

"कहो कि यह अपना गीत सुनाए—वही तैरते हुए चांद वाला," मारिया दिमीत्रियेवना ने छलछला कर कहा।

"अरे, तुम गाते भी हो?" क्षिप्र मुसकान से उसे चौंधियाते हुए वरवारा पावलोवना ने पूछा, "खड़े क्यों हो, बैठो न?"

पान्शिन ने टालना चाहा।

"अरे, बैठो न," कुर्सी की पीठ पर अपनी उंगलियों से बरबस तबला बजाते हुए वरवारा पावलोवना ने दोहराया।

वह बैठ गया। खखार कर उसने अपना गला साफ़ किया। कालर को खींच कर ज़रा ढीला किया और गाने लगा।

"शाबाश," वरवारा पावलोवना के मुंह से निकला। फिर बोली—"तुम बहुत अच्छा गाते हो—तुम्हारी एक अपनी शैली है। एक बार और सुनाओ।"

पियानो का चक्कर लगा वह ठीक पान्शिन के चेहरे की सीध में आ खड़ी हुई। उसने अपने गीत को दोहराया। इस बार उसने आवाज़ में नाटकीय थरथराहट ला दी थी। वरवारा पावलोवना एक टक उसकी ओर देख रही थी, उसकी कोहनियां पियानो पर टिकी थीं और उसके चिट्टे हाथ उसके होठों के समतल आ गए थे। पान्शिन ने गीत समाप्त कर दिया।

"शाबाश! बहुत खूब!" एक पारखी के स्थिर अंदाज़ में—आश्वस्त भाव से—उसने कहा, "लेकिन सुनो, स्त्रीकण्ठ के लिए भी तुमने ऐसी कोई चीज़ रची है?"

"ओह नहीं, रचना-वचना मैं कुछ नहीं करता," पान्शिन ने कहा, "यों ही अपना मन बहलाने के लिए कुछ जोड़-तोड़ कर लेता हूं... लेकिन गाती तो तुम भी हो?"

"हां।

"हां, तो कुछ सुनाओ न!" मारिया दिमीत्रियेवना ने अनुरोध किया।

वरवारा पावलोवना ने लाल हो रहे अपने गालों पर झूलते बालों को हटा कर पीछे किया और अपना सिर झटकाया।

"हम दोनों की आवाज़ें खूब मिल सकेंगी," पान्शिन की ओर मुड़ते हुए वह गुनगुना उठी, "आओ, एक-दो गाना गाएं। क्या तुम्हें—'देखो चांद निकल आया' या और कोई गाना आता है?"

"किसी ज़माने में मैं—'देखो चांद निकल आया' गाता था," पान्शिन ने जवाब दिया, "लेकिन यह एक मुद्दत पहले की बात है। अब कुछ याद नहीं।"

"इसकी चिन्ता न करो। धीमी आवाज़ में पहले हम उसका रिहर्सल कर लेंगे। हां तो शुरू करूं न?"

वरवारा पावलोवना पियानो पर बैठ गई। पान्शिन उसके पास खड़ा हो गया। धीमे स्वर में दोनों ने दो गाने का अभ्यास किया। वरवारा पावलोवना, जहां वह अटक जाता, उसे सही कर देती। अनेक बार ऐसा हुआ। इसके बाद उन्होंने उसे सस्वर गाया और इस कड़ी को दो बार दोहराया: "देखो चांद नि-क-ल आ-या।" वरवारा पावलोवना की आवाज़ में अब वह ताज़गी नहीं थी, लेकिन उसने बड़े कौशल से उसे संभाला। पान्शिन शुरू में संकोच में उलझा रहा, कुछ बेसुरा भी हो गया, लेकिन वह शीघ्र ही गरमा गया। हो सकता है कि उसकी अदायगी एकदम त्रुटिहीन न हो, लेकिन अपने हाव-भाव से उसने उस कमी को प्रकट नहीं होने दिया। उसके कंधे फड़क रहे थे, बदन झूम रहा था और उसका हाथ एक सच्चे गायक की भांति, जब-तब हवा में लहराने लगता था। वरवारा पावलोवना ने थालबर्ग की दो या तीन कृतियां सुनाईं और चंचल हाव-भाव के साथ एक लघु फ्रेंच एरिया का गान किया। मारिया दिमीत्रियेवना इतनी खुश थी कि शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकी। कई बार उसके मन में

हुआ कि लीज़ा को भी बुला ले। गेदेओनोवस्की भी, सराहना के लिए उपयुक्त शब्दों के अभाव में, चुपचाप अपनी गर्दन हिला रहा था—सहसा उसे जमुहाई आई। प्रयत्न करने पर भी वह अपनी इस जमुहाई को न छिपा सका। वरवारा पावलोवना की उस पर नज़र पड़ी। वह सहसा घूमी, पियानो की ओर से उसने मुंह मोड़ा और फ़्रेंच भाषा में बुदबुदा उठी—"बहुत हो गया गाना, अब बातें करें," कहते हुए उसने अपनी बांहें मोड़ लीं। "हां, बहुत हो गया गाना," प्रसन्न मुद्रा में पान्शिन ने दोहराया और फ़्रेंच भाषा में हल्की-फुल्की, छलछलाती लघु बातों की पिटारी खोल दी। "ठीक पेरिस के श्रेष्ठतम आतिथ्यगृहों की भांति," उनकी क्रमहीन, मगर सलीके की बातों को सुन कर मारिया दिमीत्रियेवना ने सोचा। पान्शिन अत्यन्त मगन था: उसकी आंखें चमक रही थीं, चेहरा मुसकानों से खिला था। शुरू में मारिया दिमीत्रियेवना से जब कभी उसकी नज़र मिलती थी तो वह अपने चेहरे पर हाथ फेरता था अपनी भौंहों में बल डालता और बरबस उसांस छोड़ता, लेकिन बाद में वह उसे एकदम भूल गया और बातों के इस अर्द्ध-भौतिक तथा अर्द्ध-कलात्मक झरने का आनन्द लेने में पूर्णतया निमग्न हो गया। वरवारा पावलोवना अच्छी-खासी दार्शनिक मालूम होती थी,—उसके पास हर चीज़ का जवाब तैयार था। वह लड़खड़ाती नहीं थी, कभी कोई दुविधा प्रकट नहीं करती थी। साफ़ मालूम होता था कि हर काट और छांट के आदमी से बातें करने का उसे पूरा और पक्का अभ्यास है। उसके सभी विचार, सारी भावनाएं पेरिस के इर्दगिर्द घूम रही थीं। पान्शिन ने साहित्य की चर्चा छेड़ी। मालूम हुआ कि उसने भी उसकी ही भांति, केवल फ़्रेंच पुस्तकें पढ़ी थीं। ज्यार्ज सैण्ड से वह भन्नाती थी, बालज़ाक का आदर करती थी हालांकि वह उसे कुछ बोझिल मालूम होता था। स्यू और स्क्राइब उसकी समझ से, मानव-स्वभाव की गहरी जानकारी के धनी थे, ड्यूमा और फेवाल की वह

पूजा करती थी और, भीतरी हृदय से, पाल डि कौक को वह इन सबसे ज़्यादा चाहती थी, हालांकि – कहने की आवश्यकता नहीं – उसने उसके नाम का उल्लेख तक नहीं किया। यों, सच पूछो तो, साहित्य में उसकी कुछ ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी। जब कोई ऐसी बात छिड़ी जिससे उसकी वर्तमान स्थिति का स्मरण हो सकता था, तो वह बड़ी चतुराई से साफ़ कतरा गई। अपनी बातचीत में प्रेम का एक बार भी उसने ज़िक्र नहीं किया। बल्कि कहना चाहिए कि रागात्मक मामलों में अपेक्षाकृत अधिक रुखाई, विभ्रम और विनीत भावना का समर्थन किया। पान्शिन प्रतिवाद करता, पर वह सहमत नहीं होती ... और अजीब बात तो यह थी कि एक ओर उसके होंठ जहां निषेध के, और कभी-कभी तो सख़्त झिड़कियों तक के शब्दों का उच्चारण करते, वहां उन शब्दों की ध्वनि दुलराती सहलाती-सी प्रतीत होती, उसकी आंखें बोलतीं ... उसकी वे सुन्दर आंखें ठीक क्या कहती थीं यह बताना कठिन है, लेकिन उनका आशय कुछ भेद-भरा, मधुर और अनिषेधात्मक था। पान्शिन ने उन आंखों के रहस्य की थाह लेनी चाही, लेकिन उसे अपने सभी प्रयत्न व्यर्थ होते मालूम हुए। उसे ऐसा लगा कि यह विदेशी परी मुझसे कहीं ऊपर है। फलस्वरूप वह एक तरह की बेचैनी का अनुभव करता रहा। वरवारा पावलोवना जब किसी से बातें करती थी तो, अपनी आदत के अनुसार, आस्तीन का हल्का स्पर्श किए बिना नहीं रहती। उसके इन क्षणिक स्पर्शों से व्लादीमिर निकोलाइच काफ़ी विचलित हो उठा। फिर, वरवारा पावलोवना लोगों के साथ सहज ही घुलमिल जाती थी। दो घंटों के भीतर ही पान्शिन को ऐसा लगा जैसे वह उसे वर्षों से जानता हो। इसके प्रतिकूल लीज़ा – जिसे वह वास्तव में प्यार करता था और विगत सांझ ही विवाह का जिससे उसने प्रस्ताव किया था – जैसे एक धुंध में लिपटी थी। चाय आई और बातचीत का सिल-सिला और भी उन्मुक्त हो चला। मारिया दिमीत्रियेवना ने अपने छोकरा-

नौकर के लिए घंटी बजाई और उससे कहा कि अगर तबीयत कुछ ठीक हो तो लीज़ा को नीचे बुला लाए। लीज़ा का नाम सुनते ही पान्शिन ने आत्म-बलिदान की चर्चा छेड़ दी और यह प्रश्न छेड़ा कि आत्म-बलिदान का माद्दा किस में अधिक है—पुरुषों में, अथवा स्त्रियों में। मारिया दिमीत्रियेवना तुरत आवेश के साथ बहस में खिंच आई। उसने दावा दिया कि पुरुषों की अपेक्षा आत्म-बलिदान का माद्दा स्त्रियों में कहीं अधिक होता है, उसने घोषणा की कि इसे वह अभी इसी समय सिद्ध कर सकती है। वह उलझ गई और एक बहुत ही लंगड़ी मिसाल के साथ उसने अपनी बहस का अन्त किया। वरवारा पावलोवना ने स्वर-लिपियों की एक पुस्तक उठाई, उसकी ओट में अपना चेहरा किया, एक केक को दांतों से कुतरती पान्शिन की ओर झुकी और फ़्रेंच भाषा में धीमे स्वर में बोली—"यह भद्र महिला अक्लमन्दी से बेगाना है"। पान्शिन सकपका गया, वरवारा पावलोवना की धृष्टता ने उसे चकित कर दिया। लेकिन वह यह न जान सका कि ढीठपन के इस आकस्मिक उद्वेलन का खुद उससे कितना सम्बंध है। वह उस सारी मेहरबानी और लगाव को भूल गया जो कि मारिया दिमीत्रियेवना उसके प्रति दिखाती थी, उन भोजों का भी उसे ध्यान नहीं रहा जो कि उसने दिए थे, वह धन भी उसे याद नहीं रहा जो कि ऋण के रूप में उसने प्राप्त किया था, और—कितना कृतघ्न होता है पुरुष—उसी मुसकराहट और उसी लहजे के साथ फ़्रेंच भाषा में बोला—"मैं मानता हूं, मानता हूं"।

स्नेहभरी नज़र से उसकी ओर देखकर वरवारा पावलोवना खड़ी हो गई। तभी लीज़ा ने प्रवेश किया। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने बहुतेरा रोका, लेकिन वह रुकी नहीं। उसने निश्चय कर लिया था कि जो हो, वह पूरी अग्नि-परीक्षा में से गुज़रेगी। वरवारा पावलोवना, पान्शिन के साथ जो अब फिर कूटनीति का अपना नकाब किये था, उससे मिलने के लिए आगे बढ़ी।

"अब कैसी तबीयत है?" पान्शिन ने पूछा।

"अब ठीक है। धन्यवाद," उसने जवाब दिया।

"अभी हम कुछ गाना-बजाना कर रहे थे। काश कि तुम भी यहां होती, और वरवारा पावलोवना को सुनती। वह बहुत ही अच्छा गाती है—पूरी कलाकार ही समझो," फ्रेंच भाषा में अन्त में उसने जोड़ा।

"इधर आओ मेरी बेटी!" मारिया दिमीत्रियेवना ने उसे आवाज़ दी।

वरवारा पावलोवना ने आज्ञाकारी बच्चे की भांति आदेश का पालन किया और उसके पांवों के पास एक छोटे से स्टूल पर बैठ गई। मारिया दिमीत्रियेवना ने जानबूझ कर उसे अपने पास बुलाया था,—इस उद्देश्य से कि, कुछ क्षणों के लिए ही सही, लीज़ा पान्शिन के साथ अकेली रह सके। वह अब भी यह आशा बांधे थी कि हो सकता है, लड़की की मति कुछ सुधर जाए। इसके अलावा एक विचार उसके मस्तिष्क में और आया था जिसे प्रकट करने के लिए वह व्यग्र थी।

"क्या तुम जानती हो," उसने वरवारा पावलोवना से फुसफुसाकर कहा, "कि मैं तुम्हारे और तुम्हारे पति के बीच फिर मेल कराने की कोशिश करना चाहती हूं। यह तो मैं नहीं कहती कि सफलता मिलेगी ही, लेकिन फिर भी कोशिश करके देखना चाहिए। तुम जानती ही हो, वह मेरा भारी मान करता है।"

वरवारा पावलोवना ने धीरे-धीरे अपनी भौंहें उठा कर मारिया दिमीत्रियेवना की ओर देखा और बहुत ही कमनीय अंदाज़ में अपने हाथों को त्रास की मुद्रा में कर लिया।

"सच, चाची, ऐसा करके तुम मुझे उबार लोगी," दयनीय भाव से उसने कहा, "समझ में नहीं आता कि इस भलाई के लिए किन शब्दों में तुम्हें धन्यवाद दूं। लेकिन फ़ियोदोर इवानिच को मैंने बहुत ही गहरी चोट पहुँचाई है। वह मुझे माफ़ नहीं कर सकता।"

"लेकिन तुमने ... क्या सचमुच ... " मारिया दिमीत्रियेवना ने कुरेद कर पूछना चाहा।

"क्या करोगी यह सब पूछ कर," अपनी पलकों को गिराते हुए वरवारा पावलोवना ने कहा, "एक तो युवावस्था, फिर चंचलता ... लेकिन नहीं, मैं अपने अपराध को कम करना नहीं चाहती।"

"जो हो, कोशिश करने में क्या हर्ज है? इस तरह जी न तोड़ो," मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा और उसका गाल सहलाने के लिए अपना हाथ बढ़ा ही रही थी कि उसके चेहरे का भाव देख कर ठिठक गई। "देखो न," उसने सोचा, "किस तरह मुंह लटका कर बैठी है। लेकिन, इसमें संदेह नहीं, भीतर शेरनी के पंजे छिपाए हैं।"

उधर पान्शिन लीज़ा से कह रहा था:

"क्या तुम अस्वस्थ हो?"

"हां, जी कुछ ठीक नहीं है।"

"ऐसा ही होता है," एक लम्बी खामोशी के बाद पान्शिन ने कहा, "तुम्हारी स्थिति का मैं अनुभव कर सकता हूं।"

"मतलब?"

"हां, सहज ही मैं अनुभव कर सकता हूं," पान्शिन ने जानकार की भांति दोहराया। इसके सिवा और कुछ उसके मुंह से नहीं निकल सका।

लीज़ा कुछ अस्तव्यस्त-सी हुई। फिर उसने सोचा—"अनुभव करते हो तो करो।" रहस्यात्मकता का भाव धारण कर पान्शिन चुप हो गया और कठोर मुद्रा बनाये दूसरी ओर देखने लगा।

"मेरी समझ में ग्यारह तो ज़रूर बज गए होंगे," मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा।

अतिथियों ने इशारा समझा और विदा लेने के लिए उठ खड़े हुए।

वरवारा पावलोवना को वायदा करना पड़ा कि वह कल यहीं भोजन करेगी और आदा को भी अपने साथ लेकर आएगी। गेदेओनोवस्की जो एक कोने में बैठा करीब-करीब ऊंघ चला था, उसे घर तक पहुँचाने के लिए तैयार हो गया। पान्शिन ने गम्भीर मुद्रा में झुक कर सब का अभिवादन किया, और बाहर पोर्च की सीढ़ियों के पास, गाड़ी में सवार होने के लिए वरवारा पावलोवना को सहारा देते समय, उसने उसका हाथ दबाया और गाड़ी के चलने पर फ्रेंच भाषा में चिल्ला कर कहा—"फिर मिलेंगे"। गेदेओनोवस्की वरवारा पावलोवना के बराबर में बैठा था। रास्ते-भर, अपना जी बहलाने के लिए, मानो भूल से, अपने कोमल पांव की नोक उसके पांव पर टिका कर वह खेल-सा करती रही। वह विह्वल हो उठता और उसकी तारीफ़ के पुल बांधता। सड़क के लैम्प की रोशनी जब कभी गाड़ी में पड़ती तो वह मुसकराती और आंख बिचकाकर उसकी ओर देखती। वाल्ट्ज़ नृत्य की धुन जो उसने पियानो पर बजाई थी, उसके मस्तिष्क में गूंज रही थी, उसका रोम-रोम विह्वलता से उमग रहा था। जहां कहीं भी वह हो ज्यों ही रोशनियां, नृत्यभवन, संगीत की ध्वनि के साथ थिरकती-घूमती आकृतियां उसकी कल्पना की आंखों के सामने मूर्त्त हो उठतीं,—त्यों ही उसका रक्त लपट बनकर लपकने लगता, आंखों में एक विचित्र धुंधलापन सा छा जाता, होठों पर मुसकान खेलने लगती और उसका समूचा शरीर मदमाती अदा से थिरक उठता। घर पहुंचने पर वरवारा पावलोवना जैसे हवा में तैर कर गाड़ी से बाहर आ गई—परी के सिवा अन्य कोई भी उस तरह नहीं कर सकती जैसे कि उसने किया—फिर घूम कर वह गेदेओनोवस्की की ओर मुड़ी और सहसा, उसके ठीक सामने आह्लादपूर्ण हंसी से खिलखिला उठी।

"बहुत ही रोचक जीव है," घर लौटते हुए—जहां उसका नौकर काढ़े का गिलास तैयार किए उसकी बाट जोह रहा था—गेदेओनोवस्की

ने सोचा, "अच्छा यही है कि मैं भावुक नहीं हूं ... लेकिन, समझ नहीं पड़ता, वह हंसी क्यों ?"

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना सारी रात लीज़ा के सिरहाने बैठी रही।

४१

लावरेत्स्की वसीलेवस्कोये में डेढ़ दिन रहा और उसका अधिकांश समय आस-पास की बस्तियों में चक्कर काटते बीता। किसी एक जगह अधिक देर तक टिकना उसके लिए कठिन था। उसका हृदय दुःख से क्षत-विक्षत था। एक क्षण के लिए भी न रुकने वाले प्रचंड और पंगु उद्वेगों की यंत्रणा ने उसे पूरी तरह झंझोड़ दिया था। उसे भावों की उस बाढ़ का ध्यान हो आया जिसने कि देश लौटने के अगले दिन उसे आप्लावित कर दिया था। उसे उन योजनाओं का भी ध्यान आया जो कि उसने बनाई थीं। इन सब की याद कर वह अपने-आप पर झुंझला उठा। किसने उसे उस चीज़ से विच्छिन्न कर दिया जिसे कि वह अपना कर्त्तव्य – अपने भावी जीवन का एक मात्र कार्य – समझता था ? सुख की लालसा ... वह फिर उसी लालसा के चक्र में उलझ गया। "मालूम होता है कि मिखलेविच ने ठीक ही कहा था," उसने सोचा, "जीवन के सुखों को तुम फिर से चखना चाहते थे," उसने अपने-आप से कहा। "तुम भूल गये कि यह एक विरली वस्तु, एक दुर्लभ वरदान है, जो जब मिलती है, तो एक ही बार। तुम कहते हो कि वह पूर्ण नहीं था, – वह सच्चा नहीं था। अच्छा तो अब सिद्ध करो कि तुम वास्तव में पूर्ण और सच्चे सुख के अधिकारी हो ? अपने चारों ओर देखो, – क्या कोई सुखी, आह्लाद से पूर्ण, दिखाई देता है ? उस किसान को देखो जो हाथ में हंसिया लिए चरागाह की ओर जा रहा है, – हो सकता है कि वह अपने भाग्य से सन्तुष्ट हो ? .. हां, तो क्या तुम उसके भाग्य

से अपना भाग्य बदलना चाहोगे? अपनी मां का ध्यान करो: उसने जीवन से इतनी कम, अत्यन्त नगण्य, आकांक्षा की थी,—लेकिन उसे मिला क्या? लगता है कि पान्शिन से तुम्हारा यह कहना कि हल की मूठ पकड़ने के लिए तुम रूस लौटे हो, एक शेखी मात्र था,—तुम केवल दून की हांक रहे थे। असल में तुम, इस वृद्धावस्था में लड़कियों के पीछे चक्कर लगाने के लिए यहां लौटे हो। जैसे ही तुम्हें अपने उन्मुक्त होने का समाचार मिला, दीन-दुनिया को भूल स्कूली लड़के की भांति तुम तितली के पीछे दौड़ पड़े ..." वह यही सब सोच रहा था और लीज़ा की छवि उसकी कल्पना से दूर होने का नाम नहीं लेती थी। बड़ी मुश्किल से उसने उससे पीछा छुड़ाया। ठीक वैसे ही जैसे कि उसने एक अन्य अमिट छवि से,—संकोचहीन, चतुर, सुन्दर और घिनौनी छवि,—अपना पीछा छुड़ाया था। वृद्ध अन्तोन ने देखा कि उसके मालिक का चित्त कुछ ठिकाने पर नहीं है। एक या दो बार दरवाज़े की ओट में और एक या दो बार द्वार-मार्ग पर उसांस छोड़ने के बाद साहस बटोर कर अन्त में वह उसके पास पहुंचा और सलाह दी कि मालिक को कोई गर्मी पहुंचाने वाला पेय लेना चाहिए। लावरेत्स्की उस पर बरस पड़ा, बाहर निकल जाने का उसे आदेश दिया, और उसके बाद उससे माफ़ी मांगी। लेकिन अन्तोन का जी इससे और भी उदास हो गया। लावरेत्स्की दीवानख़ाने में टिका नहीं रह सका। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे दीवार पर लगा उसके दादा का चित्र अपने इस पंगु वंशज को उपहास-भरी नज़र से देख रहा है। "निकम्मे कहीं के!" अपने होंठों में बल डाले जैसे वह कह रहा था। "बस, बहुत हो लिया," उसने मन ही मन कहा, "इस ज़रा-सी खरोंच के पीछे जान देने की ज़रूरत नहीं!" (युद्ध में बुरी तरह घायल लोग हमेशा अपने घाव का ज़रा-सी खरोंच कह कर उल्लेख करते हैं। अगर मानव अपने-आप को इस तरह भुलावे में न डाले तो इस धरती पर जीना मुश्किल हो जाए।) "आख़िर मैं कोई बच्चा तो

हूं नहीं जो झींकना-रोना शुरू कर दूं। माना कि जीवन-भर सुखी रहने के अवसर को मैंने बहुत ही निकट से देखा, यहां तक कि वह मेरे हाथ में भी आ गया, और फिर—सहसा गायब हो गया। लेकिन लाटरी में भी तो ऐसा ही होता है,—ज़रा-सा चक्का घूमा, और भिखारी लखपति बन गया। जो नहीं होना था, वह नहीं हुआ,—और बस। दांत भींच कर अब काम में जुटना है, किसी तरह भी अपने-आप को विचलित नहीं होने देना है। यह पहला ही मौका नहीं है जबकि मुझे अपने-आप को काबू में करना पड़ा है। मैं क्यों भागा? शुतुरमुर्ग की भांति झाड़ी में सिर छिपाए मैं यहां क्यों पड़ा हूं? क्या इसलिए कि जीवन से टक्कर नहीं ले सकता?—निरी बकवास!—अन्तोन," उसने ज़ोर से आवाज़ दी, "गाड़ी को तुरत तैयार करके ले आओ!" "हां," उसने फिर सोचा, "मुझे अपने को इस तरह विचलित नहीं होने देना है। अपने-आप को बटोर कर रखना है ..."

इस तरह के तर्क-वितर्क से लावरेत्स्की ने अपने दुःख को हल्का करना चाहा, लेकिन दुःख इतना गहरा और इतना तीखा था कि अपराक्सिया ने भी—जो बुद्धिशून्य इतनी नहीं थी जितनी कि भावशून्य—अपना सिर हिलाया और उदास आंखों से नगर जाने के लिए उसे गाड़ी में सवार होते देखती रही। घोड़ों ने सहज भाव से डग बढ़ाए। वह काठ की भांति निश्चल बैठा निष्पन्द भाव से सामने फैली सड़क की ओर ताक रहा था।

४२

कल भेजे गए अपने पुर्ज़े में लीज़ा ने लावरेत्स्की से आज सांझ मिलने के लिए कहा था। लेकिन वह पहले अपने घर पहुंचा। हां उसे न तो अपनी पत्नी दिखाई दी, और न लड़की। नौकरों से पता चला कि लड़की को साथ लेकर वह कलीतिन के यहां गई है। इस खबर को सुनकर वह चौंका और

क्रोध से उसका हृदय भर गया। "ऐसा मालूम होता है," उसने सोचा, "वह मेरे जीवन को जहन्नुम बनाने पर तुली है।" उसका समूचा बदन घृणा से जल रहा था। वह इधर से उधर डग नापने लगा। जो भी चीज़ सामने पड़ती – खिलौने, पुस्तकें, स्त्रियों की साज सज्जा की चीज़ें – उसकी ठोकर का निशाना बनती। उसने जूस्टीन को आवाज़ दी और 'यह सारा-कूड़ा-करकट' साफ़ करने का आदेश दिया। "हां, मोसिये," उसने मुंह बिचकाते हुए कहा और कमरे की चीज़ों को ठीक-ठाक करने लगी। वह बहुत ही कमनीय अन्दाज़ में झुकी थी और उसकी प्रत्येक हरकत जैसे यह जताती प्रतीत होती थी कि वह लावरेत्स्की को निपट भालू समझती है। वह घृणा के साथ पेरिस-काट के उसके अनैतिक चेहरे की ओर – अपने शोख अन्दाज़ में जो अभी भी उपहास-सा करता मालूम होता था, उसके लबादे की सफ़ेद आस्तीनों और उसके रेशमी पिनाफोर तथा छोटी-सी टोपी की ओर ताक रहा था। आखिर उसने उसे विदा किया और एक लम्बी हिचकिचाहट के बाद – वरवारा पावलोवना अभी तक नहीं लौटी थी – उसने कलीतिन के यहां जाने का निश्चय किया। उसने तय किया कि वह मारिया दिमीत्रियेवना के पास नहीं (वह उसके दीवानखाने में जहां उसकी पत्नी होगी, किसी भाव पर भी पांव नहीं रखेगा) बल्कि मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के पास जाएगा। उसे याद आया कि नौकरों के प्रवेशद्वार वाला ज़ीना सीधा उसके कमरे में पहुंचा देता है। उसने इसी रास्ते जाने का निश्चय किया। अहाते में उसे शूरोचका दिखाई दी जो उसे मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के पास लिवा ले गई। अपनी रोज़ की आदत के प्रतिकूल मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना उस समय अकेली थी। वह एक कोने में बैठी थी। उसका सिर नंगा था, बदन गुड़मुड़ी-सा बना था और उसके हाथ, त्रास की मुद्रा में, वक्ष पर रखे थे। लावरेत्स्की को देख वह बुरी तरह परेशान हो गई। सकपका कर वह उठी और कमरे में इधर-से-उधर – मानो टोपी खोज रही हो – मंडराने लगी।

"अरे, तुम हो," उसकी नज़र बचाते और कमरे में इधर-से-उधर फटफटाते हुए उसने कहना शुरू किया, "हां तो शुभ दिन। ओह, ठीक। तो तुम आ गये। कल कहां थे,–दिखाई नहीं दिए? सो वह आ गई। बेशक, आ गई। इसमें कोई कर भी क्या सकता है?"

लावरेत्स्की एक कुर्सी पर ढह गया।

"अरे हां, बैठो–बैठ जाओ," वृद्धा कहती गई, "सो तुम सीधे ऊपर चले आए? ठीक, एकदम सीधे। हां तो?.. सो तुम मुझसे मिलने आए हो?–धन्यवाद!"

वृद्धा रुक गई। लावरेत्स्की की समझ में नहीं आया कि वह वृद्धा से क्या कहे। लेकिन वह समझ गई।

"लीज़ा ... हां, थोड़ी देर हुई तब वह यहां थी," अपने जालीदार बटुवे की डोरियों को खोलती और बंद करती वह कह रही थी, "उसका जी ठीक नहीं है। शूरोचका,–अरे कहां चली गई तू? यहां आ, मेरी बिटिया, तुझसे ज़रा भी निचला नहीं बैठा जाता। मेरा सिर भी दर्द कर रहा है। यह सब उस गाने-बजाने से हुआ।"

"गाना-बजाना कैसा, चाची?"

"अरे वही ... भला, क्या कहते हैं उसे ... दो जने मिलकर गाते हैं ... और सब इतालवी की बोली में ... ची-ची, चा-चा, लाल मुनिया चिड़िया की भांति। ऐसे-ऐसे स्वर निकाले कि समूची बत्तीसी दर्द करने लगे। वही दोनों थे,–पान्शिन और तुम्हारी वह। कितनी जल्दी वे घुल-मिल गए। ज़रा भी रस्मी अलगाव नहीं, बिल्कुल घर के लोगों की भांति। यों सोचो तो एक कुत्ता तक ठिकाना खोजने का प्रयत्न करता है। जब तक लोग उसे खदेड़ कर बाहर नहीं कर देते, वह अपने-आपको क्यों नष्ट होने दे!"

"जो हो, मैं कभी इसका विश्वास नहीं करता," लावरेत्स्की ने कहा, "इसके लिए काफ़ी कड़ा कलेजा चाहिए।"

"अरे नहीं, मेरे प्रिय, कलेजा नहीं, बल्कि थोड़ा हिसाबी मस्तिष्क चाहिए। ईश्वर उसे माफ़ करे। सुना है, तुम उसे लावरिकी भेज रहे हो?"

"हां, मैं वह जागीर वरवारा पावलोवना के लिए छोड़ दे रहा हूं।"

"क्यों उसने धन की इच्छा प्रकट की थी?"

"नहीं, अभी तक तो नहीं की।"

"खैर, शीघ्र ही करेगी। लेकिन अरे, यह तुम कैसे दिख रहे हो? मेरा अब तक इधर ध्यान ही नहीं गया। क्या तुम बीमार हो?"

"नहीं।"

"शूरोचका!" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने आवाज़ दी, "जरा जाकर येलिज़ावेता मिखाइलोवना से कहना ... मतलब, नहीं, उससे पूछना ... वह नीचे ही है न?"

"हां।"

"हां तो उससे पूछना कि मेरी पुस्तक का उसने क्या किया। वह समझ जाएगी।"

"अच्छा जाती हूं।"

वृद्धा फिर कमरे में सटपट करने लगी। कभी वह अलमारी की दराज़ों को खोलती, और फिर बंद कर देती।

लावरेत्स्की निश्चल बैठा था।

सहसा जीने पर हल्की पदचाप सुनाई दी, और लीज़ा ने भीतर पांव रखा।

लावरेत्स्की खड़ा हो गया और सिर झुका कर उसने अभिवादन किया। लीज़ा वहीं, दरवाज़े में ही ठिठक कर खड़ी हो गई।

"लीज़ा, मेरी प्यारी मुनिया," मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने फटफटाते

हुए पूछा, "मेरी पुस्तक का जाने तुमने क्या किया, उसे कहां पटक दिया?"

"कौन पुस्तक, चाची?"

"हाय दैव, – पुस्तक! लेकिन मैंने तुम्हें नहीं बुलाया था ... छोड़ो, उसकी चिन्ता न करो। नीचे क्या हो रहा है? यह देखो, फ़ियोदोर इवानिच यहां मौजूद है। तुम्हारे सिर का दर्द अब कैसा है?"

"अब बिल्कुल ठीक है।"

"बिल्कुल ठीक, – तुम हमेशा यही कहती हो। हां तो, नीचे क्या हो रहा है, – क्या फिर पियानो के पर्दे तोड़े जा रहे हैं?"

"नहीं, इस समय वे ताश खेल रहे हैं।"

"इसमें क्या शक है। वह हर चीज़ में ताक है। शूरोचका, मैं साफ़ देखती हूं कि तू बाग में जाकर खेलने के लिए मन ही मन मचल रही है। अच्छा तो जा, बाग में जाकर कुलाचें भर!"

"ओह नहीं, मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ..."

"बस - बस, ज़्यादा बातें न बना। जा, बाग़ में लपक जा। नास्तास्या कारपोवना पहले से ही वहां मौजूद है। वह अकेली होगी। जा, उसका दिल बहला।" शूरोचका चली गई। "मेरी टोपी जाने कहां है? पता नहीं, कहां पाताल में समा गई!"

"ठहरो, मैं अभी ढूंढ़े देती हूं," लीज़ा ने कहा।

"न, तुम वहीं बैठी रहो। मेरी टांगें अभी काम देती हैं। लगता है, सोने के कमरे में मैं अपनी टोपी भूल आई।"

कनखियों से लावरेत्स्की की ओर एक नज़र डाल मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना कमरे से बाहर चली गई। दरवाज़ा खुला छूट गया था। सहसा वह लौटी और दरवाज़ा बंद कर दिया।

लीज़ा अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर पाठ झुका कर बैठ गई। धीरे

धीरे हाथ उठा कर अपने चेहरे को उसने ढक लिया। लावरेत्स्की अपनी जगह से नहीं हिला।

"सो हमारे भाग्य में अब इस तरह मिलना बदा था", उसने खामोशी तोड़ी।

लीज़ा ने चेहरे पर से हाथों को हटा लिया।

"हां," उसने धीमी आवाज़ में कहा, "सज़ा देने में विधाता ने ज़रा भी देर नहीं की!"

"सज़ा!" लावरेत्स्की बुदबुदाया, "तुम्हें सज़ा किसलिए?"

लीज़ा ने आँखें उठाकर उसकी ओर देखा। उसकी आंखों में न वेदना थी, न चिन्ता। वे चुरमुर और धुंधली-सी दिखती थीं। उसके चेहरे और थोड़ा खुले होठों पर पीलापन छाया था।

संवेदन और प्रेम से लावरेत्स्की का हृदय कसमसा उठा।

"तुमने अपने पुर्ज़े में लिखा था कि सब कुछ शेष हो गया," उसने फुसफुसाकर कहा, "ओह सब कुछ शेष हो गया, — शुरू होने से पहले हो शेष हो गया!"

"वह सब अब भूल जाना होगा," लीज़ा ने धीमी आवाज़ में कहा, "यह अच्छा किया जो तुम आ गए। मैं तुम्हें पत्र लिखना चाहती थी। लेकिन यह कहीं अच्छा है। केवल इन क्षणों को यों ही बेकार नहीं गंवाना है। हम दोनों को अपना कर्तव्य निबाहना है। तुम्हें, फ़ियोदोर इवानिच, अपनी पत्नी से सुलह कर लेनी चाहिए।"

"लीज़ा!"

"यह मेरा तुमसे अनुरोध है। केवल इसी तरह हम मार्जन कर सकते हैं... जो हो गया है, उसे सुधार सकते हैं। इसपर सोचो। आशा है, मुझे तुम निराश नहीं करोगे।"

"लीज़ा, ईश्वर के लिए ... यह तुम एक असम्भव चीज़ की मांग

कर रही हो। मैं तुम्हारे हर आदेश का पालन करने के लिए तैयार हूं, लेकिन उसे फिर गले से लगाना ... ऐसा कुछ नहीं है जो मैं न सह सकूं, और सब कुछ मैं भूल सकता हूं, क्षमा कर सकता हूं, लेकिन मैं अपने हृदय को मजबूर नहीं कर सकता ... सच, ऐसा करना ज़ुल्म होगा।"

"मेरा अनुरोध यह नहीं है ... कि तुम वह सब करो जो कि तुम नहीं कर सकते। अगर तुम उसके साथ नहीं रह सकते तो न रहो, लेकिन उससे सुलह तो रखो," लीज़ा ने जवाब दिया और हाथों से फिर अपने चेहरे को ढक लिया, "अपनी छोटी लड़की का खयाल करो। मेरी खातिर क्या इतना भी नहीं करोगे?"

"अच्छी बात है," भिंचे हुए दांतों के बीच से लावरेत्स्की ने कहा, "यह मैं करूंगा,–अपना कर्त्तव्य समझ कर करूंगा। लेकिन तुम ... तुमने अपना क्या कर्त्तव्य निश्चित किया है?"

"मैं अपना कर्त्तव्य जानती हूं।"

लावरेत्स्की चौंका।

"तुम ... कहीं तुम उस पान्शिन से विवाह करने की बात तो नहीं सोच रही हो,–क्यों?" लावरेत्स्की ने पूछा।

लीज़ा के चेहरे पर एक क्षीण मुसकान रेंग गई।

"ओह, नहीं!" उसने कहा।

"ओह लीज़ा, लीज़ा!" लावरेत्स्की चीख उठा, "कितने सुखी हो सकते थे हम दोनों!"

लीज़ा की आंखें एक बार फिर उठीं।

"फ़ियोदोर इवानिच, अब तुम खुद यह देख सकते हो कि सुख हमपर नहीं, ईश्वर पर निर्भर करता है।"

"हां, और यह इसलिए कि तुम ..."

बराबर के कमरे में जाने वाला दरवाज़ा तेज़ी से खुला और हाथ में टोपी लिये मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना कमरे में लौट आई।

"बड़ा परेशान किया इस कम्बख्त टोपी ने," लावरेत्स्की और लीज़ा के बीच में खड़े होते हुए मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने कहा, "शायद मैं खुद ही इसे रख कर भूल गई थी। यह सब इस बुढ़ापे की करामात है। लेकिन, यों सोचो तो, युवावस्था भी कुछ कम खेल नहीं खिलाती। अपनी पत्नी के साथ क्या तुम भी लावरिकी जा रहे हो?" फ़ियोदोर इवानिच की ओर मुड़ते हुए उसने पूछा।

"उसके साथ लावरिकी? – यह मैं खुद नहीं जानता," एक क्षण रुक कर वह बुदबुदाया।

"क्या तुम नीचे, दीवानखाने में जाओगे?"

"नहीं, आज नहीं।"

"अच्छी बात है। जैसा तुम ठीक समझो। लेकिन लीज़ा, तुम्हें नीचे पहुंचना चाहिए। ओह मेरे भगवान, अपने बुलफिंच पक्षी को मैं दाना तक डालना भूल गई। ज़रा ठहरो, मैं अभी ..."

और मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना, नंगे ही सिर, कमरे से बाहर लपक गई।

लावरेत्स्की, देखते-न-देखते, लीज़ा के निकट खिसक आया।

"लीज़ा," अनुनय के स्वर में उसने कहना शुरू किया, "हम सदा के लिए एक-दूसरे से विदा हो रहे हैं। मेरा हृदय टूट रहा है। विदा के समय अपना हाथ दो।"

लीज़ा ने अपना सिर उठाया, धुंधली निढाल आंखों से उसकी ओर देखा।

"नहीं," वह धीमी आवाज़ में बुदबुदाई और अनायास ही आगे बढ़े अपने हाथ को उसने वापिस खींच लिया, "नहीं, लावरेत्स्की (यह पहली बार उसने उसके नाम का प्रयोग किया था) मैं तुम्हें अपना हाथ नहीं दे सकती। किसलिए? अब जाओ, मेरी तुमसे बिनती है। तुम जानते हो कि

मैं तुमसे प्रेम करती हूं ... हां, मैं तुमसे प्रेम करती हूं," उसने कुछ प्रयास के साथ कहा, "लेकिन नहीं ... नहीं! ... "

लीज़ा ने रूमाल से अपने होठों को ढक लिया।

"कम-से-कम अपनी यादगार–यह रूमाल ही मुझे दे दो।"

तभी दरवाज़े के चरमराने की आवाज़ आई ... रूमाल खिसक कर लीज़ा की गोदी में गिर चला। इससे पहले कि वह गिरता, लावरेत्स्की ने उसे लपका और जल्दी से अपनी जेब में रख लिया। फिर मुड़ते हुए मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की नज़र से उसकी आंखें टकराईं।

"लीज़ा, मेरी बिटिया, लगता है तुम्हारी मां तुम्हें नीचे बुला रही है," वृद्धा ने कहा।

लीज़ा तुरत उठ कर कमरे से चली गई।

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना फिर अपने उसी कोने में बैठ गई।

लावरेत्स्की ने भी अब विदा लेनी शुरू की।

"फ़ेदिया," सहसा मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने कहा।

"क्या है, चाची?"

"तुम अपनी बात के सच्चे आदमी हो न?"

"यह तुम क्या कह रही हो, चाची?"

"मैं पूछ रही हूं–तुम अपनी बात के सच्चे आदमी हो न?"

"समझता तो ऐसा ही हूं।"

"ठीक, तो मुझे वचन दो कि तुम अपनी बात के सच्चे रहोगे।"

"जैसा तुम चाहो। लेकिन यह सब किस लिए?"

"मैं जानती हूं यह सब किस लिए। और तुम खुद भी, मेरे प्रिय, अगर थोड़ा सोचोगे तो सब समझ जाओगे। तुम इतने नासमझ नहीं हो जो यह भी न समझ सको कि मेरी मन्शा क्या है, हां तो अब विदा। तुम मुझ से मिलने आए, इसके लिए धन्यवाद। और याद रखना, तुमने मुझे

अपना वचन दिया है, फ़ेदिया! इधर आओ, मेरा चुम्मा लो। ओह, मेरे मुन्ने, मैं जानती हूं कि यह तुम्हारे लिए कठिन है। लेकिन, सच पूछो तो, आसान यह किसी के लिए भी नहीं है। एक दिन था जब मैं मक्खियों से ईर्ष्या करती थी – सोचती थी, कितना अच्छा जीवन है इनका। लेकिन एक रात मुझे कुछ भनभनाहट सुनाई दी। देखा कि एक मक्खी मकड़ी के चंगुल में फंसी छटपटा रही है। तब मैंने सोचा, – नहीं, दुःख से ये भी मुक्त नहीं है। यह अपने बस की बात नहीं, फ़ेदिया। हां तो अपना वचन याद रखना। अब जाओ। विदा!"

लावरेत्स्की पिछले ज़ीने से उतर दरवाज़े से बाहर जा ही रहा था कि एक नौकर लपक कर उसके पास पहुंचा।

"मारिया दिमीत्रियेवना आप से मिलना चाहती हैं," उसने लावरेत्स्की से कहा।

"उनसे कहना, मेरे भाई, कि अभी इस समय ..." फ़ियोदोर इवानिच ने कहना चाहा।

"मालकिन ने कहा है कि मिलना बहुत ज़रूरी है," वह कहता गया, "इस समय वह अकेली हैं।"

"क्या मेहमान चले गए?" लावरेत्स्की ने पूछा।

"हां, मालिक," नौकर ने बत्तीसी चमकाते हुए कहा।

लावरेत्स्की ने अपने कंधे बिचकाए और नौकर के साथ हो लिया।

४३

मारिया दिमीत्रियेवना अपने निजी कक्ष में वाल्टेयर-युग की एक कुर्सी पर अकेली बैठी थी। वह युडिकोलोन सूंघ रही थी। बगल में एक छोटी सी मेज़ पर संतरे के पानी का गिलास रखा था। वह विचलित और कुछ आशंकित सी प्रतीत होती थी।

लावरेत्स्की ने प्रवेश किया।

"तुमने मुझे बुलाया था," रुखाई से सिर झुकाते हुए उसने कहा।

"हाँ," मारिया दिमीत्रियेवना ने जवाब दिया और कुछ पानी पी लिया, "मैंने सुना कि तुम आए और सीधे बुआ के पास चले गए। सो मैंने आदेश दिया कि जाने से पहले तुम्हें यहां लिवा लाएं। मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहती थी। लेकिन तुम खड़े क्यों हो, बैठ जाओ," मारिया दिमीत्रियेवना ने एक गहरी सांस खींची। "तुम जानते ही हो," फिर उसने कहा, "कि तुम्हारी पत्नी आई हुई है।"

"हां, मैं जानता हूं," लावरेत्स्की ने स्वीकार किया।

"हां तो, यानी, मैं यह कहना चाहती थी कि वह मुझसे मिलने आई, और मैं उससे मिली। इसी बारे में मैं तुमसे बात करना चाहती थी, फ़ियोदोर इवानिच। यह ईश्वर की कृपा है जो सब मेरा मान करते हैं, और मैं किसी के भी कहने से ऐसा काम नहीं कर सकती जो प्रतिष्ठा के अनुकूल या उपयुक्त न हो। हालांकि यह बात पहले ही मुझे भास गई थी कि तुम इससे नाराज़ होगे, लेकिन – फ़ियोदोर इवानिच – मैं उससे इन्कार करने का साहस नहीं कर सकी। आखिर वह भी तो – तुम्हारे द्वारा – हमारे परिवार का ही एक अंग है। तुम ज़रा मेरी स्थिति में अपने-आपको रख कर सोचो। भला उसके लिए मैं अपने घर के दरवाज़े कैसे बंद कर सकती थी? क्यों, तुम मेरी इस बात से सहमत हो न?"

"इस बात को लेकर बेकार परेशान होने की ज़रूरत नहीं, मारिया दिमीत्रियेवना," लावरेत्स्की ने जवाब दिया, "तुमने ठीक ही किया। मैं ज़रा भी नाराज़ नहीं हूं। मेरा यह ज़रा भी इरादा नहीं है कि वरवारा पावलोवना को उसके परिचितों के संसर्ग से वंचित कर दिया जाए। आज

मैं केवल इसलिए तुम्हारे पास नहीं आया कि मैं उससे मिलना नहीं चाहता था। बस, और कुछ नहीं।"

"ओह, फ़ियोदोर इवानिच, तुम्हारे मुंह से यह सुन कर मुझे बड़ी खुशी हुई," मारिया दिमीत्रियेवना कह उठी, "और मुझे स्वीकार करना चाहिए कि तुम्हारी उदार प्रकृति से मैं सदा ऐसी ही आशा करती थी। और जहां तक मेरे परेशान होने का सम्बंध है,—वह कोई अजीब चीज़ नहीं। कारण, आखिर मैं भी एक स्त्री और मां हूं। और तुम्हारी पत्नी, तुम जानो ... बेशक, मैं तुम्हारी मुन्सिफ़ नहीं हो सकती, और यह बात मैंने खुद उससे भी कही थी ... लेकिन वह बहुत ही मिलनसार, बहुत ही आह्लादपूर्ण जीव है। मेरी समझ में नहीं आता कि उसे बिना प्यार किए कोई कैसे रह सकता है।"

लावरेत्स्की के होंठों पर एक व्यंगपूर्ण मुसकान दौड़ गई, और वह अपने हैट से खेल करता रहा।

"हां तो, फ़ियोदोर इवानिच, इसके अलावा मैं तुमसे एक बात और कहना चाहती थी," उसके निकट खिसकते हुए मारिया दिमीत्रियेवना कह रही थी, "वह यह कि अगर तुम देख पाते कि वह कितनी विनम्र, और कितनी सम्मानपूर्ण है! सच, देख कर हृदय अभिभूत हो जाता है। और अगर तुम सुन पाते कि किन शब्दों में वह तुम्हारा ज़िक्र करती है! कहती है: दोष पूर्णतया मेरा है। मैं उन्हें पहचान न सकी। वह आदमी नहीं, देवता हैं, सच, ये उसी के शब्द हैं। देवता कह कर वह तुम्हें याद करती है। सच, उसका हृदय पश्चात्ताप और शोक से इतना भरा है कि ... मेरी बात का यकीन करो। इतनी सन्तप्त आत्मा जीवन में मैंने पहले कभी नहीं देखी।"

"बुरा न मानो तो मैं एक बात पूछना चाहता हूं, मारिया दिमीत्रियेवना," लावरेत्स्की ने बुदबुदा कर कहा, "मैंने सुना है कि वरवारा पावलोवना

ने यहां खूब गाना-बजाना किया ... यह संगीत भी शायद उसकी सन्तप्त आत्मा से ही फूटा होगा-क्यों?"

"ओह, ऐसी लज्जाजनक बात तुम्हें मुंह से नहीं निकालनी चाहिए। केवल मुझे खुश करने के लिए उसने गाया और पियानो वजाया था। सो भी तब जब मैंने बार-बार उससे अनुरोध किया,—बल्कि कहना चाहिए कि आदेश दिया। वह उदास दिख रही थी,—ओह, बहुत ही उदास। सो, मैंने मन में सोचा, ऐसा क्या किया जाए जो उसका जी बहले। तभी किसी ने कहा कि वह अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न है। मेरा यकीन करो, फ़ियोदोर इवानिच, वह पूर्णतया संत्रस्त है,—चाहो तो सेर्गेई पेत्रोविच से पूछ सकते हो—एकदम खंडित हृदय—सच, पूर्णतया भग्नमना पूर्णतया..." उसने फ़्रेंच में जोड़ा।

लावरेत्स्की ने केवल अपने कंधों को बिचकाया।

"और तुम्हारी यह लड़की आदा,—वह तो एकदम फ़रिश्ता है। देखते ही प्यार करने को जी चाहता है। इतनी चतुर, और इतनी मधुर नन्ही मुन्नी है वह। और फ़्रेंच इतनी बढ़िया बोलती है कि कुछ कहना नहीं। साथ ही रूसी भी समझ लेती है। चाची कह कर मुझसे लिपट गई। और तुम जानो, उसकी आयु के अधिकांश बच्चों की भांति वह ज़रा भी नहीं लजाती—बिल्कुल नहीं लजाती। और, फ़ियोदोर इवानिच, तुमसे वह कितनी मिलती है। एकदम असाधारण रूप में। उसकी आंखें, उसकी भौंहें ... सच हू-ब-हू तुम्हारी ही छवि। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि छोटे बच्चों की मैं कोई खास शौकीन नहीं हूं, लेकिन तुम्हारी नन्ही-मुन्नी ने तो मेरा मन ही हर लिया!"

"मारिया दिमीत्रियेवना," लावरेत्स्की ने पूछा, "क्या मैं जान सकता हूं कि ये सब बताने का तुम्हारा लक्ष्य क्या है?"

"मेरा लक्ष्य," युडिकोलोन को एक बार फिर सूंघते और सन्तरे के

पानी से गला तर करते हुए मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा, "हां तो मैं यह सब तुम्हें इसलिए बता रही हूं कि ... आखिर मैं तुम्हारी रिश्तेदार हूं, और हृदय से तुम्हारा हित चाहती हूं ... मैं जानती हूं कि तुमने सोने का हृदय पाया है। हां तो सुनो, मेरे भाई, मैंने दुनिया देखी है और मैं बेकार की बात नहीं करती। तुम उसे, अपनी पत्नी को, माफ़ कर दो!" मारिया दिमीत्रियेवना की आंखों में सहसा आंसू तैर आए, "तुम्हीं सोचो, वह युवा थी, अनुभवहीन थी ... और शायद एक बुरा नमूना थी। ऐसी मां उसे नहीं मिली जो सही रास्ता दिखाती। उसे माफ़ करो। फ़ियोदोर इवानिच, उसे माफ़ करो। वह पहले ही काफ़ी यातना पा चुकी है।"

मारिया दिमीत्रियेवना के गालों पर से आंसू ढलक कर नीचे गिर रहे थे। उसने उन्हें पोंछा तक नहीं। उसे रोना सुहा रहा था। लावरेत्स्की के पांवों के नीचे जैसे कांटे बिछे थे। "हे मेरे भगवान," वह सोच रहा था, "कितनी बड़ी यंत्रणा है यह! कितना मनहूस दिन है आज का!"

"तुम कोई जवाब नहीं दे रहे," मारिया दिमीत्रियेवना ने फिर कहना शुरू किया, "इसका मैं क्या अर्थ समझूं? क्या तुम सचमुच इतने क्रूर हो सकते हो? नहीं, मैं यह विश्वास नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि मेरे शब्दों ने तुम्हें कायल कर दिया है। फ़ियोदोर इवानिच, इस उदारता के लिए भगवान तुम्हें पुरस्कृत करेगा। हां तो यह लो, अपनी पत्नी को मेरे हाथों स्वीकार करो ..."

लावरेत्स्की अनायास ही कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। मारिया दिमीत्रियेवना भी उठी, तेज़ी से हरकत करती एक पर्दे के पीछे गई और वरवारा पावलोवना का हाथ थामे फिर प्रकट हो गई। वरवारा पावलोवना रक्तहीन एवं निर्जीव दिख रही थी और आंखें नीचे किए हुए थी। ऐसा मालूम होता था जैसे उसने अपनी समूची चेतना और शक्ति को तिलांजलि दे दी हो,— और अपने-आपको पूर्णतया मारिया दिमीत्रियेवना के हाथों में सौंप दिया हो।

लावरेत्स्की का जैसे अंगारे पर पैर पड़ गया।

"तुम, इस समूचे दौरान में, यहां ही मौजूद थी?" उसन चीख कर कहा।

"दोष इसका नहीं," मारिया दिमीत्रियेवना ने अविलम्ब जवाब दिया, "यह किसी तरह भी ठहरने के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन मैंने इसे बाध्य किया कि यहां रहे। मैंने उसे पर्दे के पीछे बैठा दिया। इसने कसमें खाईं कि ऐसा करने से तुम और भी नाराज़ हो उठोगे। लेकिन मैंने एक नहीं सुनी। मैं तुम्हें इसके मुकाबिले, ज़्यादा अच्छी तरह जानती हूं। यह लो, और मेरे हाथों से अपनी पत्नी को ग्रहण करो। और वार्या, डरो नहीं, तुम भी इधर आओ, घुटनों के बल बैठो, (उसने उसकी बांह को एक झटका दिया)—मैं आशीर्वाद ..."

"एक मिनट ठहरो, मारिया दिमीत्रियेवना," धीमी किन्तु भयानक आवाज़ में लावरेत्स्की ने बीच में ही रोका, "क्या मैं यह कहने की धृष्टता कर सकता हूं कि तुम्हें नाटकीय दृश्य रचने में आनन्द आता है," (लावरेत्स्की का कहना ग़लत नहीं था; मारिया दिमीत्रियेवना अभी भी नाटकीयता में उतना ही रस लेती थी जितना कि स्कूल में पढ़ते समय लेती थी।) "नाटकीय दृश्य तुम्हें रोचक मालूम होते हैं, लेकिन अन्य लोगों के लिए वे अत्यन्त दुःखद भी हो सकते हैं। जो हो, मैं तुम से बात नहीं करूंगा,—इस दृश्य की मुख्य पात्री तुम नहीं हो। बोलो, देवी जी, तुम मुझसे और क्या चाहती हो?" अपनी पत्नी की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "जो कुछ मैं कर सकता था, वह सब क्या मैं तुम्हारे लिए कर नहीं चुका हूं? वह कहने की कोशिश न करना कि इस जाल को तुमने नहीं रचा है। मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करूंगा,—तुम जानती हो कि मैं तुम्हारा विश्वास नहीं कर सकता। तब तुम और क्या चाहती हो? तुम एक चतुर स्त्री हो,—बिना मतलब के तुम कोई कार्य नहीं करतीं। तुम्हें यह समझ लेना चाहिए

कि तुम्हारे साथ रहने का,– वैसे ही जैसे कि मैं पहले रहता था,– कोई प्रश्न ही नहीं है। इसलिए नहीं कि मैं तुमसे नाराज़ हूं, बल्कि इसी लिए कि अब मैं वह नहीं हूं जो कि पहले था। तुम्हारे आने के दूसरे ही दिन यह मैंने तुम्हें बता दिया था। और तुम खुद भी, अपने हृदय के अन्तरतम में, इस बात में मुझसे सहमत हो। लेकिन तुम, दुनिया की आंखों में अपने-आप को फिर से प्रतिष्ठित करना चाहती हो। तुम्हारे लिए मेरे घर में रहना ही काफ़ी नहीं है, तुम मुझे भी उसी छत के नीचे अपने साथ रखना चाहती हो। क्यों, ठीक है न?"

"मैं तुमसे क्षमा का दान चाहती हूं," अपनी आंखों को उठाए बिना ही वरवारा पावलोवना ने कहा।

"सुना तुमने, वह तुमसे क्षमा का दान चाहती है," मारिया दिमीत्रियेवना ने दोहराते हुए कहा।

"अपने लिए नहीं, बल्कि आदा के लिए," वरवारा पावलोवना ने फुसफुसा कर कहा।

"हां, अपने लिए नहीं, बल्कि आदा के लिए," मारिया दिमीत्रियेवना ने प्रतिध्वनि की।

"बहुत ठीक। सो यही तुम चाहती हो न?" लावरेत्स्की ने कुछ प्रयास के साथ कहा, "अच्छी बात है। मुझे यह भी मंजूर है।"

वरवारा पावलोवना ने एक गहरी नज़र से देखा, और मारिया दिमीत्रियेवना उछाह से चीख उठी, "ओह, शुक्र है परमात्मा का," और बांह पकड़ कर वरवारा पावलोवना को खींचा। "हां तो अब मेरे हाथों से ले लो..."

"एक मिनट ठहरो, अभी बताता हूं," लावरेत्स्की ने बीच में ही टोका, "मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए तैयार हूं, वरवारा पावलोवना," वह कहता गया, "यानी, मैं तुम्हें लावरिकी ले जाऊंगा और वहां तुम्हारे

साथ रहूंगा, — जब तक कि मैं उकता नहीं जाता। इसके बाद मैं चला जाऊंगा और बीच-बीच में वहां के चक्कर लगाता रहूंगा। समझ लिया न, मैं तुम्हें किसी भुलावे में नहीं रखना चाहता, और इसके सिवा तुम्हें और किसी चीज की मुझसे मांग भी नहीं करनी चाहिये। इससे अधिक हास्यास्पद बात और कोई नहीं हो सकती कि अपनी नेक बुआ की बात को वेद वाक्य मान कर मैं तुम्हें हृदय से लगा लूं और तुम्हें यकीन दिलाना शुरू कर दूं ... कि जो हो चुका है वह कुछ नहीं था, और यह कि कटे हुए वृक्ष में फिर से बौर आ सकते हैं। लेकिन, में देखता हूं, होनहार के आगे सिर झुकाए बिना भी कोई गति नहीं है। तुम इन शब्दों का अर्थ नहीं समझ सकोगी, — उस रूप में जिसमें कि में इन्हें कह रहा हूं ... लेकिन कोई बात नहीं। में फिर दोहरा कर कहता हूं कि मैं तुम्हारे साथ रहूंगा ... नहीं, यह वचन में नहीं दे सकता ... हां, मैं तुमसे समझौता कर लूंगा। तुम्हें फिर अपनी पत्नी समझने लगूंगा..."

"इसपर कम से कम, अपना हाथ तो इधर लाओ," मारिया दिमीत्रियेवना ने कहा जिसके आंसू अब सूख चले थे।

"वरवारा पावलोवना को आज तक मैंने कभी धोखा नहीं दिया," लावरेत्स्की नें पलट कर कहा, "मेरा शब्द ही उसके लिए काफ़ी है। मैं उसे लावरिकी पहुंचा आऊंगा। लेकिन, वरवारा पावलोवना, यह याद रखना कि अगर तुमने लावरिकी छोड़ दिया तो यह समझौता तुरत खत्म हो जाएगा। हां, तो अब मैं तुमसे विदा लेना चाहता हूं।"

सिर झुका कर उसने दोनों महिलाओं का अभिवादन किया और लपक कर बाहर आ गया।

"तुम इसे अपने साथ नहीं ले जा रहे हो?" मारिया दिमीत्रियेवना ने पुकार कर कहा।

"जाने दो उसे," वरवारा पावलोवना ने फुसफुसा कर उससे कहा और फिर, कृतज्ञतापूर्ण उद्गारों की बौछार करती, उसके हाथों को चूमती और उसे अपना मुक्तिदाता कहती, तुरत उसके गले से लिपट गई।

मारिया दिमीत्रियेवना ने, शालीनता के साथ, उसके इन खुशामदी उद्गारों को ग्रहण किया। लेकिन भीतरी मन से वह नाराज़ थी,–लावरेत्स्की से, वरवारा पावलोवना से, और उस समूचे नाटक से जो कि उसने रचा था। वह ठीक उतना हृदयस्पर्शी नहीं हुआ जितना कि उसे आशा थी। वरवारा पावलोवना को–वह सोच रही थी–तुरत उसके पांवों पर गिर जाना चाहिए था।

"पता नहीं क्या हो गया था तुम्हें कि मेरी बात समझ में नहीं आई?" उसने पूछा, "जाने कितनी बार मैंने तुमसे कहा कि गिरो,–उसके पांवों पर गिरो!"

"लेकिन प्यारी चाची, न गिरना और भी अच्छा हुआ। तुम चिन्ता न करो–समूचा दृश्य बहुत ही शानदार था," वरवारा पावलोवना ने उसे आश्वस्त किया।

"बेशक, वह बर्फ़ की भांति सहृदयताहीन है," मारिया दिमीत्रियेवना ने टिप्पणी कसी, "और तुमने भी, सच, एक आंसू तक नहीं गिराया, लेकिन मैंने तो आंसू बहाते बहाते अपनी आंखें रीती कर डालीं। सो वह तुम्हें लावरिकी में कैद करके रखना चाहता है। इसका मतलब यह कि तुम मुझसे मिलने तक के लिए यहां नहीं आ सकतीं? ओह, पुरुष कितने हृदयहीन होते हैं,–एक सिरे से सब के सब!" विश्वास के साथ अपने सिर को हिलाते हुए उसने अपनी बात समाप्त की।

"लेकिन स्त्रियां इतनी कृतघ्न नहीं होतीं कि नेकी और उदारता की सराहना न कर सकें," वरवारा पावलोवना ने बुदबुदा कर कहा और फिर, मारिया दिमीत्रियेवना के सामने घुटनों के बल नीचे फिसलते हुए, उसने

अपनी बांहें उसकी भरी-पूरी कमर में डाल दीं और सिर उसके बदन में दुबका लिया। उसके चेहरे पर एक छिपी-सी मुसकान फैल गई और मारिया दिमीत्रियेवना की आंखें एक बार फिर आंसू चुआने लगीं।

घर पहुंच कर लावरेत्स्की ने वालेट के कमरे में अपनें-आपको बंद कर लिया, एक सोफ़े पर ढह गया और समूची रात इसी प्रकार पड़ा रहा।

४४

अगले दिन रविवार था। प्रातः प्रार्थना के लिए गिरजे की घंटियों की आवाज़ लावरेत्स्की को नहीं जगा सकी—सारी रात उसकी पलक नहीं लगी थी,—लेकिन उन घंटियों ने उस रविवार की याद अवश्य ताज़ा कर दी जब कि वह, लीज़ा के अनुरोध से, गिरजा गया था। वह तुरत उठ खड़ा हुआ। उसका अन्तर्मन कहता था कि आज भी वह उसे वहां दिखाई देगी। वह चुपचाप घर से बाहर आ गया। वरवारा पावलोवना के लिए, जो अभी सो रही थी, उसने यह सूचना छोड़ी कि वह भोजन के वक्त तक लौट आएगा, और उस दिशा में चल दिया जिधर से कि घंटियों की उदास एक ढर्रे की आवाज उसके हृदय को अपनी ओर खींच रही थी। वह जल्दी ही वहां पहुंच गया। गिरजे में अभी मुश्किल से ही कोई जीव दिखाई देता था। पादरी, कोरस मंच से, मन्त्रोच्चार कर रहा था। उसकी गहरी भनभनाहट हिलोरें ले रही थीं। बीच-बीच में वह खांसता-खखारता भी जाता था। लावरेत्स्की ने दरवाज़े के पास एक जगह ग्रहण की। एक के बाद एक भक्तगण आते, रुक कर क्रास का चिन्ह बनाते, चहुं ओर सिर झुकाते। शान्त और सूने गिरजे में उनकी पदचाप गूंजती और गुम्बदनुमा छत एक खोखली ध्वनि से थरथराने लगती। एक छोटी-सी जर्जर स्त्री, जर्जर चोगा

ग्रौर कनटोप पहने, लावरेत्स्की के निकट घुटनों के बल बैठी, ग्रावेग के साथ प्रार्थना कर रही थी। उसका पीला, झुर्रियां-पड़ा चुरमुर दन्त-विहीन चेहरा भक्ति-भाव से विह्वल था। ऊपर उठी हुई उसकी लाल ग्रांखें देव-प्रतिमाग्रों के सिंहासन पर जमी थीं। जब-तब चोगे के भीतर से वह ग्रपना हड़ियल हाथ निकालती ग्रौर धीमे ग्रावेग के साथ क्रास का एक लम्बा चौड़ा काष्ठवत् चिन्ह बनाती। झाड़ीनुमा दाढ़ी ग्रौर गम्भीर चेहरे वाला एक किसान, विचलित ग्रौर ग्रस्तव्यस्त, गिरजे में ग्राया। ग्राते ही, वह एकदम घुटनों के बल ढह गया ग्रौर जल्दी-जल्दी क्रास के चिन्ह बनाने लगा। माथा नवाने के बाद जब वह सीधा होता तो हर बार ग्रपने बदन को पीछे की ग्रोर फेंकता ग्रौर सिर को उछालता। उसका चेहरा ग्रौर उसका प्रत्येक हाव-भाव इतने मर्मवेधी शोक में डूबा था कि लावरेत्स्की से न रहा गया। उसने उसे टोक कर पूछा कि वह किस बात से इतना दुःखी है। किसान चौंक कर सकपकाया ग्रौर व्यग्रता के साथ उसकी ग्रोर घूर कर देखने लगा। उसका चेहरा भय से सहमा हुग्रा था ... "मेरा लड़का जाता रहा," उसके मुंह से निकला ग्रौर वह फिर क्रास के चिन्ह बनाने लगा ... "गिरजे की शान्ति के ग्रलावा इन लोगों के लिए ग्रौर सहारा भी क्या है," लावरेत्स्की ने सोचा, ग्रौर खुद भी प्रार्थना करने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन उसका हृदय भारी ग्रौर कड़वाहट से भरा था, ग्रौर उसका मस्तिष्क थिर नहीं था। वह लीज़ा की बाट जोह रहा था, लेकिन लीज़ा नहीं ग्राई। गिरजा लोगों से भर चला, लेकिन वह ग्रब भी नहीं ग्राई। पूजा-पाठ शुरू हुग्रा, पादरी मसीहा के सन्देश का पाठ भी कर चुका, ग्रन्तिम प्रार्थना के लिए घंटी बजी। ऊब ग्रौर थक कर लावरेत्स्की ने ग्रपने बदन का भार बदला,—ग्रौर तभी, सहसा, लीज़ा की उसे एक झलक दिखाई दी। वह उसके ग्राने से भी पहले से गिरजे में मौजूद थी, लेकिन उसकी नज़र नहीं पड़ी। वह दीवार ग्रौर कोरस-मंच के बीच

दुबकी-सिमटी-सी बैठी थी। न वह हिली-डुली, न उसने सिर घुमा कर देखा। लावरेत्स्की, प्रार्थना के समूचे काल में, एकटक उसकी ओर देखता रहा,—जैसे उससे मौन विदा ले रहा हो। प्रार्थना समाप्त हुई, लोग जाने लगे, लेकिन वह अभी भी नहीं हिलती थी। लगता था जैसे वह लावरेत्स्की के खिसकने की बाट देख रही हो। आखिर उसने अन्तिम बार क्रास का चिन्ह बनाया और बिना मुड़ कर देखे बाहर चली गई। उसके साथ एक दासी भी थी। लावरेत्स्की ने भी उसका अनुसरण किया और आगे बढ़ सड़क पर उसके निकट पहुंच गया। अपना सिर झुकाए वह तेज डगों से जा रही थी। चेहरे पर जाली पड़ी थी।

"नमस्ते, येलिज़ावेता मिखाइलोवना," बाधित अनमनेपन से उसने पुकारा, "कहो बुरा न मानो तो घर तक छोड़ आऊं।"

उसने कुछ नहीं कहा। वह उसके साथ-साथ चलता रहा।

"अब तो तुम मुझसे सन्तुष्ट हो न?" अपनी आवाज़ को धीमा करते हुए उसने पूछा, "कल जो कुछ हुआ, वह सब तो तुमने सुन लिया होगा?"

"हां, सुन लिया," उसने जवाब दिया, "तुमने ठीक किया।" वह और भी तेज़ चलने लगी।

"तुम सन्तुष्ट हो न?"

लीज़ा ने केवल सिर हिला कर हामी भरी।

"फ़ियोदोर इवानिच," धुंधली किन्तु थिर आवाज़ में फिर उसने कहना शुरू किया, "मैं तुमसे अनुरोध करना चाहती थी,—अच्छा हो कि तुम अब मुझसे मिलने का प्रयत्न न करो, जितनी जल्दी हो यहां से चले जाओ। हम बाद में—फिर कभी—शायद सालभर में—एक दूसरे से मिल सकते हैं। लेकिन अब, मेरी खातिर, मैं तुम से अनुरोध बिनती करती हूं कि मेरी बात मान कर यहां से चले जाओ।"

"मैं तुम्हारी हर बात मानने के लिए तैयार हूं, येलिज़ावेता मिख़ाइलोवना। लेकिन क्या यह ज़रूरी है कि हम इस तरह विदा हों? क्या तुम एक शब्द भी ..."

"फ़ियोदोर इवानिच, यों इस समय तुम मेरे बराबर में चल रहे हो... लेकिन तुम मुझसे दूर–बहुत दूर–हो चुके हो। और न केवल तुम्हीं ..."

"कहो, मैं तुमसे अनुनय करता हूं," लावरेत्स्की चीख उठा, "कहो, तुम क्या कहना चाहती हो?"

"तुम्हें सब मालूम हो जाएगा एक दिन ... लेकिन चाहे जो भी हो, भूल जाना ... नहीं, भूलना नहीं, मुझे याद रखना।"

"ओह, क्या मैं तुम्हें भूल सकता हूं?"

"बस, अब और नहीं। विदा। मेरा पीछा न करो।"

"लीज़ा," लावरेत्स्की ने कहना चाहा ...

"विदा,–विदा!" अपने चेहरे की जाली और भी नीचे खींचते हुए लीज़ा ने दोहराया और तेज़ी से करीब करीब दौड़ कर, आगे बढ़ गई।

लावरेत्स्की दूर होती हुई उसकी आकृति को देखता रहा, फिर सिर झुकाए सड़क पर उल्टा लौट चला। तभी वह लेम्म से टकराते-टकराते बचा जो अपने हैट को नाक तक खींचे और आंखों को ज़मीन में गड़ाए उधर से चला जा रहा था।

दोनों ने चुपचाप एक-दूसरे पर नज़र डाली।

"बोलो, तुम अब क्या कहते हो?" लावरेत्स्की ने आख़िर कहा।

"मैं भला क्या कह सकता हूं?" लेम्म ने जवाब दिया, "मुझे कुछ नहीं कहना। हर चीज़ मर चुकी है और हम भी मरे हुए हैं।" यही वाक्य उसने जरमन में दोहराया। फिर बोला, "तुम्हें दाहिनी ओर जाना है न?"

"हां।"

"और मुझे बाईं ओर। अच्छा तो विदा!"

* * *

अगली सुबह लावरेत्स्की अपनी पत्नी के साथ लावरिकी के लिए चल दिया। वह आदा और जूस्टीन के साथ गाड़ी में बैठी थी। गाड़ी आगे-आगे चल रही थी और उसके पीछे लावरेत्स्की गाड़ी में सवार था। छोटी मुनिया रास्ते-भर खिड़की से चिपकी रही। हर चीज़ उसे अचरज से भरी मालूम होती थी – किसान, झोंपड़ियां, कुंवें, घोड़ों की गर्दनों पर पड़े जूए, टुनटुनाती हुई घंटियां और अनगिनत कौवे। जूस्टीन भी उसी की भांति अचरज से भरी थी। वरवारा पावलोवना उनकी टिप्पणियों और उद्‌गारों को सुन-सुन कर हंस रही थी। वह बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में थी। रवाना होने से पहले उसने अपने पति से सारी बात साफ़ कर ली थी।

"तुम्हारी स्थिति मैं समझती हूं," उसने उससे कहा, और सचमुच उसकी सूक्ष्मदर्शी आंखें देखने से पता चलता था कि वह उसकी स्थिति को पूर्णतया समझती है, "लेकिन तुम्हें कम से कम इतना श्रेय तो मुझे देना चाहिए कि मैं सहूलियत से रहना जानती हूं। मैं न तो तुम्हारे लिए बोझ बनूंगी, न ही तुम्हारे मार्ग में कभी आड़े आऊंगी। मैं केवल आदा के भविष्य को सुनिश्चित बनाना चाहती हूं। बस, इतना ही, और कुछ नहीं।"

"अब तो कोई कसर नहीं रही। जो तुम चाहती थी, वह सब हो गया," फ़ियोदोर इवानिच ने कहा।

"केवल एक ही चीज़ अब मैं चाहती हूं, – वह यह कि हमेशा के लिए, दीन-दुनिया से दूर, कहीं निराले में मैं पड़ी रहूं। तुम्हारी इस उदारता को मैं कभी नहीं भूल सकूंगी।"

"बस-बस, रहने दो ..." उसने टोका।

"और मैं कोशिश करूंगी कि तुम्हारी स्वतंत्रता और मस्तिष्क की शांति पर कभी कोई आंच न आए," पहल से तयार किए अपने वाक्य को पूरा करते हुए उसने कहा।

लावरेत्स्की ने सिर झुका कर उसका अभिवादन किया। वरवारा पावलोवना ने अनुभव किया कि उसका पति मन ही मन उसके प्रति कृतज्ञ है।

अगले दिन, सांझ के समय, वे लावरिकी पहुंचे। एक सप्ताह बाद लावरेत्स्की मास्को चला गया। जेब-खर्च के लिए पांच हज़ार रूबल वह अपनी पत्नी को सौंप गया। उसके जाने के बाद, अगले ही दिन, पान्शिन वहां आ मौजूद हुआ। वरवारा पावलोवना ने उससे कहा था कि बैरागिन समझ कर कहीं मुझे भूल न जाना। उसका स्वागत करने में उसने अति कर दी। घर के ऊंचे कमरे और बाग गाने-बजाने और आह्लादपूर्ण फ्रैंच बोली से गई रात तक गूंजते रहे। तीन दिन तक पान्शिन वरवारा पावलोवना के आतिथ्य में सराबोर रहा। विदा के समय उसने उसके सुन्दर हाथों को अपने हाथ में लेकर दबाया और शीघ्र ही फिर आने का वायदा किया। और सच, वह अपने वायदे का खरा निकला।

४५

अपनी मां के घर में, दूसरे तल्ले पर, लीज़ा का एक छोटा-सा कमरा था। यह एक बहुत हवादार कक्ष था। इसमें एक सफ़ेद पलंग बिछा था, कोनों और खिड़कियों के सामने फूलों के गमले सजे थे, एक पढ़ने-लिखने की मेज़ थी, एक पुस्तक रखने की अलमारी और दीवार पर प्रभु ईसा के बलिदान की छवि लटकी थी। यह कक्ष शिशुघर कहलाता था। लीज़ा का जन्म इसी में हुआ था। लावरेत्स्की से भेंट के बाद गिरजे से लौटने पर उसने अपने कमरे को, अन्य दिनों की अपेक्षा, खूब साफ़ किया और संवारा, हर चीज़ की धूल झाड़ी, अपनी सभी कापियों और सहेलियों के पत्रों को फीतों से बांधा, सभी दराज़ों को बंद कर चाबी लगा दी, फूलों को सींचा, प्रत्येक फूल को अपनी उंगलियों से दुलराया। चुपचाप, फुरसत के साथ

19—1

ग्रौर चेहरे पर एकाग्र तथा कोमल संलग्नता का भाव लिए उसने यह सब सम्पन्न किया। इसके बाद कमरे के बीचोंबीच वह थिर खड़ी हो गई, ग्रलस भाव से चारों ग्रोर उसने नज़र डाली। फिर प्रभु ईसा की छवि के नीचे लगी मेज़ के निकट पहुंच घुटनों के बल गिर गई, जुड़े हुए हाथों पर उसने ग्रपना सिर टिकाया ग्रौर इसी प्रकार निश्चल बैठी रही।

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना जब कमरे में ग्राई तब वह इसी मुद्रा में बैठी थी। लीज़ा को उसके ग्राने का पता तक नहीं चला। वृद्धा ने पंजों के बल बाहर लौट कर कई बार खखारने की ग्रावाज़ की। लीज़ा जल्दी से उठ खड़ी हुई, ग्रपनी ग्रांखों को उसने पोंछा जिनमें ग्रनढलके उजले ग्रांसू चमक रहे थे।

"ग्राज तो तुम्हारा यह छोटा कक्ष खूब साफ़-सुथरा मालूम होता है," मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने कहा ग्रौर गुलाब के एक किशोर पौधे के ऊपर झुकते हुए बोली, "कितनी प्यारी महक है!"

लीज़ा उदास चेहरे से ग्रपनी बुग्रा की ग्रोर देख रही थी।

"वह क्या शब्द था जो तुमने कहा?" लीज़ा फुसफुसाई।

"कौन सा शब्द, भला?" वृद्धा ने तुरत कहा, "किस शब्द से मतलब है तुम्हारा? उफ, कितना भयानक है यह," लीज़ा के छोटे पलंग पर बैठते हुए वह चीख उठी, "बस, बहुत हो चुका। ग्रब ग्रौर ग्रधिक सहना मेरे बस की बात नहीं। चार दिन हो गए इस परेशानी का बोझ ढोते-ढोते। मैं कब तक ग्रांखें मूंदे रहूं कि नहीं, कुछ नहीं है। तुम्हें दिन-दिन पीला होते, क्षीण पड़ते ग्रौर ग्रांसू चुग्राते देखना मेरे बस की बात नहीं, — नहीं, मुझसे यह सहन नहीं होता!"

"वाह बुग्रा, तुम्हें यह क्या हुग्रा," लीज़ा ने कहा, "मैं तो बिल्कुल ठीक हूं ..."

"बिल्कुल ठीक हो!" मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना चीख उठी, "यह तुम

किसी ग्रौर से कहना, मुझसे नहीं! बिल्कुल ठीक! ग्रभी घुटनों को ताड़ कौन बैठा था? ग्रांसुग्रों से किस की पलकें ग्रभी तक भीगी हैं? बिल्कुल ठीक! ज़रा ग्रपनी ग्रोर तो देखो कि तुमने ग्रपना क्या हाल ग्रौर क्या गत बना रखी है, – ग्रपने इस चौखटे ग्रौर ग्रपनी इन ग्रांखों का ज़रा मुग्राइना तो करो। बेशक, बिल्कुल ठीक! मानो मैं बच्ची हूं जिसे कुछ मालूम नहीं!"

"कुछ नहीं बुग्रा, कुछ समय बाद यह सब ग्रपने-ग्राप ठीक हो जाएगा।"

"ठीक हो जाएगा – लेकिन कब? हे मेरे भगवान! मैं नहीं जानती थी कि तुम इसके पीछे इतना पगला गई हो। लेकिन, लीज़ा बिटिया, उम्र में वह तुमसे कितना बड़ा है। माना कि वह ग्रच्छा ग्रादमी है, – किसी को काटता-नोचता नहीं – लेकिन इससे क्या? ग्रच्छे तो हम सभी हैं, ग्रौर इस इतनी बड़ी दुनिया में ऐसे ग्रच्छे लोग तो इतने पड़े हैं कि ज़रूरत से ज़्यादा।"

"मैं कहती तो हूं कि ग्रब ठीक हो जाएगा, – बल्कि बहुत कुछ ठीक हो भी चुका है।"

"मेरी बात सुनो, लीज़ा बिटिया," एकाएक मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने कहा ग्रौर लीज़ा को ग्रपने पास बैठा कर कभी उसके बालों कभी कंधे पर के रूमाल को दुलारते हुए बोली, "घाव ग्रभी ताज़ा है, इसलिए तुम्हें ऐसा मालूम होता है कि यह दुःख कभी नहीं पुरेगा। लेकिन, मेरी प्यारी बिटिया, इस दुनिया में हर चीज का इलाज है, – केवल मृत्यु को छोड़ कर। तुम्हें केवल ग्रपने मन को संभालना है। मन ही मन कहना है – 'नहीं, तुम किसी भाव मुझे ग्रपने चंगुल में नहीं जकड़ सकोगे!' ग्रौर बस, तुम्हें ऐसा मालूम होगा जैसे एक बोझ था जो उतर गया। तुम्हें खुद इस पर ग्रचरज होगा। ग्रपने दांतों को भींचो ग्रौर जी को ज़रा कड़ा रखो!"

"अब आकाश साफ़ है, बुआ," लीज़ा ने जवाब दिया, "जो आंधी आई थी, वह गुज़र गई। अब सब ठीक है!"

"सब ठीक है! बेशक, सब ठीक है! ज़रा देखो तो, तुम्हारी यह नन्हीं नाक किस तरह बिसूर रही है,—और तुम कहती हो कि सब ठीक है! क्या इसी तरह सब ठीक होता है!"

"हां बुआ, अब सब ठीक है,—बस, तुम अपने सहारे से मुझे वंचित न करना!" सहसा आवेग में आकर लीज़ा ने अपनी बांहें मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना के गले में डाल दीं, "मेरी प्यारी बुआ, मेरी मित्र, मेरी टेक, गुस्सा न करो, ज़रा समझने की..."

"अरे यह क्या,—यह तुम क्या करने लगी, मेरी रानी बिटिया? तुमने तो मुझे डरा दिया। ओह, मुझे इस तरह डराओ मत, वरना मैं चीख़ उठूंगी। बोलो ,जल्दी कहो जो तुम कहना चाहती हो!"

"मैं ... मैं ..." लीज़ा ने अपना मुंह मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना की गोद में छिपा लिया। "मैं ... मैं मठ में जाना चाहती हूं," उसने धीमी आवाज़ में फुसफुसा कर कहा।

वृद्धा बुरी तरह चौंक उठी,—बिस्तरे से गिरते गिरते बची।

"क्रास का चिन्ह बनाओ, मेरी प्यारी लीज़ा!" आख़िर कुछ संभल कर मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, "तुम नहीं जानती कि तुम यह क्या कह रही हो। हे मेरे भगवान, तुम्हें भी यह क्या सूझी, सो जाओ, मेरी बिटिया, थोड़ी नींद ले लो। यह सब रात-रात-भर जागने का नतीजा है, मेरी मुनिया!"

लीज़ा ने अपना सिर उठाया। उसके गाल अंगारों की भांति लाल थे।

"नहीं बुआ," उसने कहा, "तुम ऐसी बात न कहो। मैं निश्चय कर चुकी हूं। काफ़ी प्रार्थना-विंनती के बाद ईश्वर का यह आदेश मुझे प्राप्त हुआ है। सब चुक गया। तुम्हारे साथ मेरे जीवन का संयोग शेष हो गया।

यों ही, बिना कारण, मुझे यह सीख नहीं मिली है, और पहली बार ही यह मेरे मस्तिष्क में नहीं कौंधा है। सुख के लिए मुझे विधाता ने नहीं रचा था। उस समय भी जबकि सुख की आशा से मैं छलछला रही थी, मेरा हृदय भारी और अनेक आशंकाओं से भरा था। मैं सभी कुछ जानती हूं, – खुद मैंने जो गुनाह किए हैं उन्हें भी, और दूसरों के गुनाहों को भी। मैं जानती हूं कि पिताजी ने किस प्रकार यह ऐश्वर्य बटोरा। कुछ भी मुझसे छिपा नहीं है। प्रार्थना, ईश-भजन, ही इस सारे कलुष को धो सकता है। मैं तुम्हारे लिए दुःखी हूं, मां और लेनोच्का के लिए दुःखी हूं, लेकिन इसके सिवा और कोई चारा भी नहीं है। मुझे लगता है कि यहां का जीवन मेरे लिए नहीं है। घर की सभी और हर चीज़ से मैं आख़िरी बार विदा कह चुकी हूं। बुलावा आया है और मैं जा रही हूं। मेरा हृदय दुःख से सन्तप्त है। सदा के लिए मैं इन सब से अलग, इस सब से दूर रहना चाहती हूं। मेरे पांवों को बोझिल और मुझे इस राह से विलग करने का प्रयत्न न कर मुझे सहारा दो, मेरी मदद करो, अन्यथा मैं अकेली ही चली जाऊंगी ..."

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना, – जैसे उसे काठ मार गया हो – अपनी भतीजी की बात सुन रही थी।

"इसका जी ठीक नहीं है, इसका मस्तिष्क बहक गया मालूम होता है," उसने सोचा, "डाक्टर को बुलाना चाहिए, – लेकिन किस डाक्टर को? गेदेओनोवस्की उस दिन एक की बड़ी तारीफ़ कर रहा था, – लेकिन उस बतक्कड़ का क्या भरोसा, – या कौन जाने वह सच ही तारीफ़ कर रहा हो?" लेकिन अपने तमाम समझाने-बुझाने का हर बार लीज़ा के मुंह से एक वही उत्तर पाकर जब उसे यह चेत हुआ कि न तो लीज़ा बीमार है और न ही उसे सरसाम हुआ है, तो मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना भयभीत और अकथनीय रूप में त्रस्त हो उठी। "तुम्हें कुछ पता नहीं, मेरी बिटिया,"

मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने अब कातर होकर कहना शुरू किया, "इन मठों में जीवन कैसे बीतता है। तुम्हें वे, मेरी रानी बिटिया, पटुवे का कचरा तेल – उफ, कितना भयानक – खाने को देंगे, पहनने के लिए इतना मोटा कपड़ा देंगे कि खाल छिल जाएगी, कड़ाके की ठंड में तुम्हें बाहर भेजेंगे, यह सब तुम कभी बरदाश्त नहीं कर सकोगी, मेरी लीज़ा रानी ! यह सब अगाफ़िया की करतूत है, – उसी ने तुम्हारे दिमाग में यह खुराफ़ात भरी है। लेकिन उसका क्या, वह तो जीवन का स्वाद ले चुकी थी, मनचीता सुख भोग चुकी थी। लेकिन तुम... तुम्हारा तो अभी सारा जीवन पड़ा है। कम से कम मुझे शान्ति से मर जाने दो। इसके बाद जो मन में आए करना। फिर एक बकर-दाढ़ी के – ईश्वर हमें माफ़ करे – एक पुरुष के – पीछे मठ की शरण लेते क्या तुमने अन्य किसी को भी देखा है? अगर तुम्हारा चित्त इतना खिन्न है तो तीर्थ-यात्रा के लिए चली जाओ, सन्तों की मानता मानो – उसकी विनती करो, पूजा-पाठ कराओ, लेकिन, मेरी प्यारी मुनिया, मेरी बच्ची, अपने सिर पर, यह काला कनटोप न धारण करो ..."

और मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना फूट-फूट कर तीखे आंसू बहाने लगी।

लीज़ा ने उसे ढारस दिया, उसके आंसुओं को पोंछा, खुद भी आंसू बहाए, लेकिन अपने निश्चय से नहीं डिगी। और कोई चारा न देख मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना ने धमकियों-झिड़कियों का सहारा लिया, – कहा कि तुम्हारी मां से सब कुछ कह दूंगी, – लेकिन सब बेकार। अन्त में, वृद्धा के सच्चे अनुरोध और अनुनय-विनय से, अपने निश्चय को छै महीने के लिए स्थगित करने के लिए लीज़ा राज़ी हो गई। लेकिन, इसके बदले में, उसने मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना से बचन लिया कि अगर इस अवधि में उसका निश्चय नहीं बदला तो मारिया दिमीत्रियेवना की स्वीकृति लेने में वह उसकी मदद करेगी।

* * *

शीत ऋतु के पड़ते न पड़ते, एकान्त जीवन बिताने के अपने वचन के बावजूद, वरवारा पावलोवना ने पीटर्सबर्ग में आकर रहना शुरू कर दिया। पूंजी का बन्दोबस्त करने के बाद, पान्शिन की मदद से, जो और भी पहले 'ओ' नगर छोड़ चुका था, उसने एक छोटा-सा किन्तु आकर्षक घर किराये पर ले लिया। 'ओ' नगर में अपने आवासकाल के उत्तरार्द्ध में वह मारिया दिमीत्रियेवना की नज़रों से पूर्णतया उतर गया था। उसने एकाएक उसके यहां जाना बंद कर दिया और लावरिकी में ही वह स्थायी रूप में जाम हो गया। वरवारा पावलोवना ने उसे, कम न वेश, अपना दास बना लिया था। जिस सीमाहीन, अकाट्य और अखंड शक्ति से वह उस पर हावी थी, उसे अन्य किसी शब्द से व्यक्त नहीं किया जा सकता।

लावरेत्स्की ने जाड़ों के दिन मास्को में बिताए। वसन्त में उसे खबर मिली कि लीज़ा ने काला कनटोप धारण कर लिया है,—रूस के एक सुदूरतम कोने 'बी' के मठ में वह दाखिल हो गई है।

उपसंहार

आठ साल बाद। वसन्त के ही दिन थे ... लेकिन पहले मिखलेविच, पान्शिन और मदाम लावरेत्स्काया के बारे में कुछ कह दें, – यह कि उनके साथ कैसे क्या बीती, और उनसे छुट्टी लें। मिखलेविच, काफ़ी पापड़ बेलने के बाद, ठीक-ठिकाने से लग गया। एक सरकारी स्कूल में उसे सीनियर सहायक की जगह मिल गई। वह अपने भाग्य से खूब सन्तुष्ट है, और उसके छात्र उसे खूब 'चाहते' हैं, हालांकि पीठ-पीछे वे उसकी नकल उतारते हैं। पान्शिन सरकारी पदों की सीढ़ियों पर खूब ऊंचे चढ़ गया है और डाइरैक्टरशिप पर अब अपनी नज़र जमाए है। वह कुछ झुक कर चलता है, निस्सन्देह उस व्लादीमिर-पदक के बोझ के कारण, जिसे वह सदा गले में पहने रहता है। उसके भीतर का अफ़सर कलाकार पर हावी हो गया है। उसका चेहरा जो अभी भी युवा दिखता है, पीला पड़ गया है। उसके बाल पतले हो गये हैं। वह अब न तो गाता, न चित्र बनाता, लेकिन लुके-छिपे साहित्य में कुछ उलट-फेर करता रहता है। "मुहाविरे" की शैली में उसने हास्यरस की एक रचना लिखी थी। जिस प्रकार आजकल के सारे लेखक किसी चीज़ या व्यक्ति का खाका खींचे बिना नहीं रहते, वैसे ही उसने भी अपनी रचना में एक तितली का खाका खींचा है और अपनी इस रचना को, निजी तौर से, अपने परिचय की दो या तीन

अनुरागी महिलाओं को सुनाता है। लेकिन, यह सब कुछ होते हुए भी, उसने विवाह का जुवा अपनी गरदन पर नहीं रखा, हालांकि अनेक बार बहुत ही बढ़िया अवसर उसके जीवन में आए। वरवारा पावलोवना इसके लिए दोषी थी। जहां तक खुद उसका—वरवारा पावलोवना का—संबंध था, पहले की भांति स्थायी रूप से वह पेरिस में रहती थी। फ़ियोदोर इवानिच, ने, अपने नाम से, एक प्रामीसरी नोट उसे दे दिया था और इसके बदले में उससे छुटकारा तथा उसके आकस्मिक धावों से मुक्ति प्राप्त कर ली थी। वह अब वयस्क और पुष्ट हो गई थी, लेकिन अभी भी आकर्षक तथा चुस्त-दुरुस्त मालूम होती थी। हर आदमी का अपना एक प्रिय आदर्श होता है। वरवारा पावलोवना को अपना आदर्श ड्यूमा फिल्स* के नाटकों में प्रकट होता था। नाटक देखने की उसे धुन थी जिनमें तपेदिक की मरीज़ और अपने-आप में घुलने वाली कैमेलिया स्त्रियां मंच पर उतरती थीं। मदाम दोश बनना उसे मानवीय सुख का उच्चतम आदर्श मालूम होता था। एक बार उसने घोषणा की कि अपनी लड़की के लिए इससे अच्छे आदर्श की वह कल्पना नहीं कर सकती। लेकिन, भगवान न करे कि कुमारी आदा कभी ऐसे सुख के चक्कर में फंसे। कितने गुलाबी गालों वाली लड़की थी वह, लेकिन अब उसका रंग पीला पड़ गया है, छाती कमज़ोर पड़ गई है, और हृदय के तार अभी से बेसुरे झनझनाने लगे हैं। वरवारा पावलोवना के प्रशंसकों की संख्या कम हो गई, लेकिन अब भी वह अच्छी-खासी नुमाइश लेती है, और उनमें से कुछ को तो शायद अपने जीवन की आखिरी घड़ियों तक वह साथ लगाये रक्खेगी। उसके इन प्रेमियों में, आजकल, ज़ाकुरदालो-स्कुबीर्निकोव नामक एक व्यक्ति उसपर सब से अधिक जान देता था। वह एक पैन्शन याफ़्ता

---

* विख्यात फ्रांसीसी लेखक अलेक्सान्दर ड्यूमा के पुत्र जो स्वयं विख्यात लेखक हुए हैं।

गारदमैन था, – गलमुच्छ रखने वाली जाति का जीव, अड़तीस वर्ष की आयु, असाधारण रूप में सबल शरीर। मदाम लावरेत्स्काया के आतिथ्यगृह के फ़्रेंच पंछी उसे 'युक्रेन का सांड़' कहते थे, और वरवारा पावलोवना अपनी सांझ की फ़ैशनेबुल पार्टियों में उसे कभी आमंत्रित नहीं करती थी। अलबत्ता, उसे वरवारा पावलोवना की सद्भावना प्राप्त है।

और इस प्रकार ... आठ वर्ष गुज़र गए। सदा की भांति एक बार फिर आकाश में वसन्त के उजले रंग घुलने लगे, धरती पर और लोगों के चेहरे पर वसन्त मुसकराने लगा, हृदय में गुदगुदी लिए लोग एक बार फिर फूलों, प्रेम और संगीत की स्वरलहरियों की दुनिया में तैरने लगे। 'ओ' नगर, इन आठ वर्षों के बाद अब भी करीब-करीब वैसा ही है, लेकिन मारिया दिमीत्रियेवना के घर पर जैसे नया यौवन छाया है। हाल ही में नयी पुती हुई उसकी दीवारें शुभ्र आभा से निखरी हैं और खुली हुई खिड़कियों के शीशे छिपते हुए सूरज की लाली में दमक रहे हैं। इन खिड़कियों से होकर स्वच्छ जवानी भरे कंठों की कोमल एवं उल्लासपूर्ण ध्वनि हवा में तैर कर बाहर जाती है। समूचा घर उमड़ते हुए जीवन की हिलोरें लेता और प्रसन्नता से छलछलाता मालूम होता है। घर की मालकिन को कब्र में सोए काफ़ी दिन हो गए, – लीज़ा के मठ-प्रवेश करने के दो साल बाद ही वह मर गई थी। मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना भी इसके बाद अधिक दिनों तक जीवित नहीं रही। नगर के कब्रिस्तान में दोनों बराबर-बराबर चिर निद्रा में सोई हैं। नस्तासिया कार्पोवना भी अब नहीं है। वफ़ादार वृद्धा, कई साल तक, प्रति सप्ताह अपनी सहेली की कब्र पर जाती और उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करती रही ... आख़िर उसका समय भी आ गया, और उसकी हड्डियों ने नम धरती में चिर विश्राम ग्रहण किया। लेकिन, यह सब होने पर भी, मारिया दिमीत्रियेवना का घर गैरों के हाथों में नहीं गया, परिवार से बाहर नहीं हुआ, घोंसला

नष्ट होने से बच रहा। लेनोचका जो छरहरे बदन की बहुत सुन्दर युवती बन गई थी, और उसका मंगेतर—जिसके बाल सुनहरे थे और हुस्सारों की घुड़सवार सेना का जो एक अफ़सर था, मारिया दिमीत्रियेवना का लड़का जिसने अभी हाल ही में पीटर्सबर्ग में शादी की थी और युवा पत्नी के साथ वसन्त के इन दिनों में यहां आ गया था; उसकी पत्नी की बहिन—सोलह वर्ष की एक स्कूली लड़की, गुलाब से गाल और निढाल-सी आंखें; और शूरोचका,—वह भी अब बड़ी और अपनी खूब सुन्दर हो गई थी—इन युवा सदस्यों की प्रसन्न हंसी और चहचहाहट से कलीतिन के घर की दीवारें अब गूंजती थीं। घर की हर चीज़ नये निवासियों के रंग में रंगी थी। थिर चेहरे वाले पहले के वृद्ध नौकर विदा हो गए थे और बत्तीसी चमकाते, सफ़ाचट, हंसी-मज़ाक और नटखटी से भरे युवा-नौकरों ने उनकी जगह ले ली थी। रोस्का कुत्ते की जगह जो नवाबी ठाठ के साथ आराम से अलसाया करता था, अब दो तेज़-तर्रार कुत्ते बिना सांस लिए इधर से उधर लपकते और सोफ़ों पर उछलते नज़र आते थे। अस्तबल में अब छरहरे नसली घोड़े, गाड़ी में जुतनेवाले दमदार घोड़े, गुंथी हुई अयालों वाले शीघ्रगामी घोड़े, दोन प्रदेश के, काठियों से लैस, हृष्ट-पुष्ट सवारी के घोड़े, हिनहिनाते थे। कलेवा, दोपहर और सांझ का भोजन,—इनमें कोई भेद नहीं रहा था और, पड़ौसियों के शब्दों में, घर में 'नये गड़बड़ा ढंग' का राज्य छाया था।

उस सांझ कलीतिन परिवार के सदस्य (लेनोचका का मंगेतर उनमें सबसे बड़ा था—आयु, चौबीस वर्ष) एक बहुत ही सरल—और उनकी मगन खिलखिलाहट को देखते हुए अत्यन्त रोचक—खेल में व्यस्त थे: कमरों में एक-दूसरे का पीछा करते और पकड़ने की कोशिश करते। कुत्ते भी इस खेल में उनके साथ लपक रहे थे और आवेग के साथ भौंक रहे थे। खिड़कियों के ऊपर लटके पिंजरों के पक्षी वायु को छिन्न-भिन्न करते बींध

डालने वाली अपनी बेसुध टिटियाहट से आम होहल्ले में वृद्धि कर रहे थे। ठीक उस समय जबकि यह कानफोड़ होहल्ला अपने उच्चतम शिखर पर था, कीचड़ से लदी-फंदी एक गाड़ी दरवाज़े पर आकर रुकी; मुसाफ़िरी लबादा पहने पैंतालीस वर्ष का एक आदमी उसमें से उतरा और चकित भाव से थिर खड़ा रह गया। कुछ देर तक वह इसी प्रकार खड़ा रहा, न हिला न डुला, गहरी नज़र से उसने घर की ओर देखा, दरवाज़े को पार कर अहाते में उसने पांव रखा और धीरे-धीरे पोर्च की सीढ़ियों पर उसने चढ़ना शुरू किया। हाल में उसकी किसी से मुठभेड़ नहीं हुई। सहसा भीतर के कमरे का दरवाज़ा फटाक से खुला और शूरोचका, गालों को लाल किए, भागती हुई बाहर निकली। बाकी युवा समुदाय भी, चीखता-चिल्लाता, उसे पकड़ने का प्रयत्न करता बाहर लपक आया। अजनबी पर उनकी नज़र पड़ी। सकपका कर वे संभले, लेकिन उनकी चमकदार आंखें जो अजनबी का निरीक्षण कर रही थीं, अब भी उसी हार्दिकता से छलछला रही थीं और उनके ताज़ा चेहरों पर अभी भी मुसकराहट खिली थी। मारिया दिमीत्रियेवना का लड़का आगे बढ़ आगन्तुक के पास पहुंचा और मित्रतापूर्ण आवाज़ में उसने पूछा कि कहिए, कैसे आना हुआ।

"मैं लावरेत्स्की हूं," आगन्तुक ने कहा।

जवाब में वे सब एक साथ चहक उठे—इसलिए नहीं कि दूर के, करीब-करीब एकदम भूले हुए, संबंधी के आगमन ने उन्हें इतना आह्लादित कर दिया था, बल्कि इसलिए कि खुशी से चहकने और आसमान सिर पर उठाने के लिए ज़रा-सा बहाना भी उनके लिए पर्याप्त होता था। लावरेत्स्की को उन्होंने तुरत घेर लिया। लेनोचका ने, पुराना परिचय होने के नाते, सबसे पहले अपने-आपको आगे करते हुए ऐलान किया कि अगर वह अपना नाम न बताते तब भी, कुछ देर में, निश्चय ही वह उन्हें पहचान लेती। फिर उसने अन्य सबका,—यहां तक कि अपने मंगेतर का भी—

बारी-बारी से उनके प्यार के नाम लेकर परिचय कराया। इसके बाद वे सब, एक के बाद एक, भोजन के कमरे में से होते दीवानख़ाने में पहुंचे। दोनों कमरों की दीवारों पर नया काग़ज़ चढ़ा था, लेकिन फ़र्नीचर अभी भी वैसा ही बना था। लावरेत्स्की ने पियानो को पहचाना। खिड़की के पास कसीदेकारी का ढांचा भी वही और उसी मुद्रा में रखा था, और ऐसा मालूम होता था कि कसीदेकारी का काम – जो उसमें कसा था – आठ साल से वैसा ही अधूरा पड़ा हो। एक आरामदेह कुर्सी में उन्होंने उसे बैठाया और खुद, उसके इर्दगिर्द, सलीके से बैठ गए। एक के बाद एक, द्रुतगति से, सवालों, उद्गारों और वर्णनों का सिलसिला बंध चला।

"ओह, एक मुद्दत हो गई आप को – और बरवारा पावलोवना को भी – देखे हुए," लेनोचका ने अल्हड़पन से कहा।

"इसमें भी क्या शक है," उसके भाई ने तुरत जवाब दिया, "मैं तुम्हें पीटर्सबर्ग लिवा ले गया और फ़ियोदोर इवानिच उस बीच, देहात में ही रहता रहा।"

"हां, और इस बीच मां का भी देहान्त हो गया।"

"और मारफ़ा तिमोफ़ेयेवना का भी," शूरोचका बुदबुदाई।

"और नस्तासिया कारपोवना भी अब नहीं रही," लेनोचका ने बताया, "और मोसिये लेम्म..."

"क्या? – क्या लेम्म भी मर गया?" लावरेत्स्की ने पूछा।

"हां," युवा कलीतिन ने जवाब दिया, "वह ओदेस्सा चला गया था। कहते हैं कि किसी के जादू में आकर वह यहां से चला गया, और वहां जाकर मर गया।"

"वह अपनी कुछ स्वर-लिपियां तो नहीं छोड़ गया?"

"पता नहीं। ऐसा मालूम तो नहीं होता।"

सब चुप हो गए और एक-दूसरे की ओर उन्होंने देखा। युवा चेहरों पर उदासी की एक छाया-सी दौड़ गई।

"लेकिन मात्रोस अभी जीवित है," सहसा लेनोचका ने कहा।

"और गेदेओनोवस्की भी," उसके भाई ने जोड़ा।

गेदेओनोवस्की के नाम पर एक आह्लादपूर्ण खिलखिलाहट गूंज गई।

"हां, वह जीवित है," मारिया दिमीत्रियेवना के लड़के ने कहा, "और उसका दून की हांकना आज भी पहले की भांति जारी है। और तुम सोच भी नहीं सकते कि इस शैतान ने (स्कूली लड़की – अपनी साली – की ओर इशारा करते हुए उसने कहा) कल उसकी सुंघनी की डिबिया में मिर्चें मिला दी थीं।"

"ओह, इसके बाद जो उसने छींकना शुरू किया!" लेनोचका ने हुमक कर कहा और उसकी आवाज़ हंसी की एक अदम्य बाढ़ में डूब गई।

"हाल ही में लीज़ा का भी हमें समाचार मिला था," युवा कलीतिन ने कहा और एक बार फिर सब के चेहरे सन्न हो गए, "वह अच्छी तरह है। उसका स्वास्थ्य भी अब कुछ ठीक है।"

"क्या वह अब भी उसी मठ में है?" लावरेत्स्की ने पूछा। उसका हृदय कसमसा रहा था।

"हां।"

"क्या कभी पत्र लिखती है?"

"नहीं, कभी नहीं। लेकिन अन्य लोगों से खबर मिलती रहती है।"

सहसा एक गहरा सन्नाटा छा गया। "एक मधुर फ़रिश्ता गुज़र रहा है," सब के मन में जैसे यह भाव व्याप्त था।

"चलिए, अगर इच्छा हो तो ज़रा बाग में चलें," कलीतिन ने कहा, "वहां बड़ा सुहावना है, हालांकि हम उसे कुछ अधिक संवार कर नहीं रख सके!"

बाग में पहुंचने पर लावरेत्स्की की नज़र सबसे पहले उस बैंच की ओर गई जहां, किसी ज़माने में अविस्मरणीय सुख के वे उड़ते हुए क्षण

लीज़ा के साथ उसने बिताए थे। वह अब काला और टेढ़ाबांका पड़ गया था। लावरेत्स्की का हृदय उमड़ आया—अत्यन्त मधुर और तीखे भावों का उसने अनुभव किया—मधुर, उस खुशी के कारण जो कि उसने कभी प्राप्त की थी, और तीखा—उस यौवन की याद कर जो अब विलीन हो गया था। युवा समुदाय के साथ वह बाग की पगडंडियों पर घूमा। लाइम के पेड़ अब भी वैसे ही थे,—न तो अधिक बुढ़ाए थे, न अधिक ऊंचे हुए थे। लेकिन उनकी छाया अब घनी हो गई थी। झाड़ियां—एक सिरे से—सभी बढ़ आई थीं। रसभरी की झाड़ियां खूब पुष्ट हो गई थीं, हेज़ल भी खूब बढ़ और फैल कर सब के ऊपर छा गई थी। हर चीज़ वन की ताज़गी, घास और लिलक के फूलों की सुहानी गंध से महक रही थी।

"भई वाह," लाइम के पेड़ों से घिरे घास के एक छोटे से मैदान में पांव रखते हुए सहसा लेनोचका ने कहा, "पूस का कोना खेल के लिए यह बहुत बढ़िया जगह है। इस वक्त हम ठीक पांच जने हैं भी!"

"फ़ियोदोर इवानिच क्या योंही छुट गए?" उसके भाई ने कहा, "या तुम खुद अपने को गिनना भूल गई?"

लेनोचका के गालों पर हल्की लाली दौड़ गई।

"लेकिन फ़ियोदोर इवानिच, इस उमर में ..." उसने कहना चाहा।

"अरे मुझे छोड़ो," लावरेत्स्की ने तुरत बीच ही में कहा, "तुम लोग अपना खेल शुरू करो। मेरे लिए यही क्या कम है कि तुम लोगों को निर्बाध खेलता देखता रहूं। फिर मेरा जी बहलाने की चिन्ता करने की ऐसी कोई आवश्यकता भी नहीं। हम बूढ़े लोग एक दूसरी ही चीज़ में मगन रहना चाहते हैं जिससे तुम अभी परिचित नहीं हो, और कोई भी मनबहलाव जिसका स्थान नहीं ले सकता,—वह चीज़ है स्मृतियाँ।"

एक ऐसी विनम्रता से जिसमें कौतुक का पुट मिला था, युवा मण्डली लावरेत्स्की की बात सुन रही थी,—जैसे कोई शिक्षक उन्हें पाठ दे रहा हो।

इसके बाद, सहसा, वे घास के मैदान में बिखर गए। उनमें से चार तो लाइम के पेड़ों के नीचे अलग-अलग जा खड़े हुए, एक बीच में खड़ा हो गया, और वे खेल में रम गए।

लावरेत्स्की घर वापिस लौट आया, भोजन के कमरे में पहुंचा, पियानो के निकट जाकर एक पर्दे का उसने स्पर्श किया, एक धीमा किन्तु सुस्पष्ट स्वर हवा में थरथराया और उसके हृदय के तार झनझना उठे। यह उसी अनुप्राणित संगीत का प्रारम्भिक स्वर था जिससे कि लेम्म ने—दिवंगत लेम्म ने—एक मुद्दत पहले की उस स्मरणीय और आह्लादपूर्ण रात उसे आनन्द-विभोर कर दिया था। इसके बाद लावरेत्स्की दीवानख़ाने में पहुंचा और काफ़ी देर तक वहीं हिलगा रहा। यहां, इस कमरे में जहां उसने लीज़ा को इतनी बार देखा था, उसका चित्र और भी अधिक सजीव रूप में उसकी आंखों के सामने मूर्त्त हो उठा, उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे इस समय भी वह यहां मौजूद हो, लेकिन उसका हृदय लीज़ा की वेदना से इतना व्यथित था कि वह सहन नहीं कर पा रहा था,—एक ऐसी वेदना जिसमें वह थिर शान्ति भी नहीं थी जो कि मृत्यु अपने साथ लाती है। लीज़ा जीवित थी, कहीं बहुत दूर और पहुंच से बाहर। जीवित रूप में वह उसकी कल्पना कर रहा था और बैरागिन के वेष तथा लोबान के घूमदार धुएं के बीच तैरती लीज़ा की धुंधली पीली आकृति—उस लड़की की आकृति जिसे वह कभी प्यार करता था—प्रयत्न करने पर भी उसकी कल्पना में नहीं समा रही थी। वह खुद अपने को भी न पहचान पाता अगर उसके लिए लीज़ा की भांति खुद अपनी छवि को भी मानस-पट पर उतारना सम्भव होता। इन आठ सालों में, अन्ततः उसने अपने जीवन की दिशा बदल डाली थी, जिसे कतिपय लोग बिना बदले ही गुज़ार देते हैं, लेकिन जिसे बदले बिना कोई भी आदमी पूरी तरह ईमानदार नहीं रह सकता। उसने, वस्तुतः, अपने निजी सुख और निजी हितों के बारे में सोचना छोड़ दिया था। उसकी

आत्मा निश्चल हो गई थी और—अगर सच पूछो तो—न केवल चेह॰ और शरीर से ही, बल्कि हृदय से भी वह बूढ़ा हो गया था। बुढ़ापे में हृदय को युवा रखना, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, कठिन भी है और बेहूदा भी। सन्तोष के लिए यही क्या कम है कि अच्छाई में विश्वास बना रहे, उद्देश्य की दृढ़ता और काम करने की इच्छा-शक्ति का अभाव न हो। इस नाते लावरेत्स्की को सन्तुष्ट होने का अधिकार था। वह सचमुच में एक अच्छा खेतीहर बन गया था, उसने सचमुच में धरती को जोतना सीख लिया था, और वह अकेले अपने स्वार्थ के लिए ही श्रम नहीं करता था। अपने किसानों की खुशहाली को पाने तथा सुदृढ़ बनाने में उसने भरसक कोई कसर उठा नहीं रखी थी।

लावरेत्स्की फिर बाहर बाग़ में आ गया और वहीं, बाग़ के उस चिर परिचित बैंच पर बैठ गया। बैंच का मुंह घर की ओर था जहां उसने, प्रसन्नता की मदिरा से छलछलाते तथा चमचम करते चिरवांछित प्याले की ओर व्यर्थ ही अन्तिम बार अपने हाथ बढ़ाए थे। अपनी उसी अत्यन्त प्रिय जगह पर बैठ कर उसने—गृहविहीन अकेले यायावर ने—पीछे मुड़ कर अपने जीवन पर नज़र डालना शुरू किया। युवा पीढ़ी की आह्लादपूर्ण आवाज़ें, बाग़ में से तैरतीं, उसके पास मंडरा रही थीं। वह जीवन की रौ से हट गया था, और उसका स्थान इस युवा पीढ़ी ने ले लिया था। उसका हृदय उदास था, लेकिन उसकी इस उदासी में तीखापन या त्रास नहीं था। बहुत कुछ था जो उसके हृदय में खेदजनक था, लेकिन ऐसा कुछ नहीं था जो लज्जाजनक हो। "खेलो, मौज करो, फूलो और फलो प्राणवान युवा समुदाय !" उसने सोचा, और उसके इस सोचने में खीज नहीं थी चिड़चिड़ापन नहीं था—"तुम्हारा जीवन तुम्हारे सामने है, और तुम्हारा यह जीवन सहज होगा—आसान होगा। राह के लिए तुम्हें उस तरह भटकना, संघर्षों से जूझना और अंधकार के बीच गिर-गिर कर

ना नहीं पड़ेगा जैसे कि हमें करना पड़ा। किसी प्रकार अपने को जीवित रखने की घिसघिस में ही हमारी शक्ति चुक जाती थी, — फिर भी हम में से कितने थे जो जीवित नहीं रह पाते थे — लेकिन तुम, तुम्हारे सामने एक दायित्व है, काम है, — और हम बूढ़े लोगों के आशीर्वाद का सम्बल है। जहां तक मेरा अपना संबंध है, आज दिन के बाद — इन सब अनुभवों के बाद — के लिए केवल एक ही काम और रह जाता है। वह काम है तुम लोगों से अन्तिम विदा लेना, — और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि अन्त सिर पर आ गया है और एक खुदा है जो हमारी बाट जोह रहा है, — उदास भाव किन्तु बिना किसी ईर्ष्या और बिना किसी दुर्भावना के यह कामना करना : "स्वागत, एकाकी आयु! जलकर भस्म हो जा, बेकार जीवन!"

लावरेत्स्की चुपचाप उठ कर खड़ा हो गया और चुपचाप वहां से चल दिया। किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, किसी ने उसे नहीं रोका। आह्लादपूर्ण आवाज़ें और भी अधिक उभार के साथ लाइम के ऊंचे पेड़ों की हरी दीवार के पीछे बाग़ में गूंज रही थीं। वह अपनी गाड़ी में सवार हुआ और अपने कोचवान को उसने आदेश दिया कि बिना किसी उतावली के, सहज भाव से, घर की ओर गाड़ी हांक चले।

* * *

"क्या यही अन्त है?" निराश पाठक शायद यह प्रश्न करे, "इसके बाद लावरेत्स्की का क्या हुआ? लीज़ा के साथ कैसे बीती?" लेकिन उन लोगों के बारे में जो दुनिया और उसके संघर्षों से विलग हो गए हैं, कहने को और रह भी क्या जाता है, और उनकी ओर मुड़ कर देखने की आवश्यकता भी क्या है? लावरेत्स्की, कहते हैं कि उस दूरस्थित एकान्त मठ में गया था जहां लीज़ा ने शरण ली थी। उसने लीज़ा को देखा। एक

Bhushan Lal

Dr. M. M. Joshi

Bhushan Lal

...सहस्त

अपनी रचनाओं में आम

से—जहां तक परिस्थितियां

इजाज़त देती थीं—प्रायः व

सजीव महत्व के प्रश्नों क

ध्यान दिलाते थे, जो स

अस्पष्ट कुलबुलाहट पैदा क

दोभ